1998 से निरंतर प्रकाशित

RNI. No. MPHIN/2017/73838

ISSN 2581-446X

वर्ष-4, अंक-3, दिसम्बर 2020-जनवरी 2021 ₹ 25/-

कला समय

कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

विश्वरंग 2020
विशेषांक

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

फुल टाइम. पार्ट टाइम. एनी टाइम !

कमाइए, सीखिए और प्रगति कीजिए
भारत की विशालतम जीवन बीमा कंपनी के साथ.

- अपने समय के अनुसार काम कीजिए
- विस्तृत बेनिफिट पैकेज
- पुरस्कार और सम्मान
- फुल टाइम या पार्ट टाइम करियर... आप तय कीजिए

एजेंट के रूप में एलआईसी के साथ जुड़ने के लिए SMS करें 'Agent City-Name'
(Agent space City-Name) जैसे कि 'Agent Mumbai' और भेज दें 56767474 पर या
हमारी वेबसाइट www.licindia.in के माध्यम से रजिस्टर करें
या नज़दीकी एलआईसी शाखा से संपर्क कीजिए.

Follow us : YouTube LIC India Forever

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

LIC/02/16-17/12/HIN

IRDAI Regn No.: 512

ज़िन्दगी के साथ भी, ज़िन्दगी के बाद भी.

"मध्य क्षेत्र, भोपाल"

1998 से निरंतर प्रकाशित
RNI NO. MPHIN/2017/73838

कला समय पत्रिका अब वेबसाइट पर उपलब्ध
www.kalasamaymagazine.com

ISSN 2581-446X
(पंजीयन पूर्व प्रकाशित अंक, वर्ष सम्मिलित)
(वर्ष : 20+04) पूर्णांक-108
वर्ष-4, अंक-3, दिसम्बर 2020-जनवरी-2021

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा 'रामेश्वर गुरू सम्मान' से पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा उर्मिला तिवारी स्मृति 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत

कला समय

कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

संरक्षक
नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
डॉ. महेन्द्र भानावत
पं. विजय शंकर मिश्र
श्यामसुंदर दुबे
पं. सुरेश तातेड़
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
ललित शर्मा
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल

सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास

वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

कानूनी सलाहकार
जयंत कुमार मेढ़े (एडवोकेट)

रेखांकन : रमेश गौतम

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

सलाहकार संपादक
डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा

सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग

उप संपादक
राहुल श्रीवास

संपादक मंडल
रामेश्वर शर्मा 'रामूभैया'
साहित्य
हरीश श्रीवास
कला
डॉ. मुक्ति पाराशर
संस्कृति
नरिन्दर कौर
प्रबंध

सदस्यता सहयोग राशि:

वार्षिक	: 150 /-	(व्यक्तिगत)
	: 175 /-	(संस्थागत)
द्वैवार्षिक	: 300 /-	(व्यक्तिगत)
	: 350 /-	(संस्थागत)
चार वर्ष	: 500 /-	(व्यक्तिगत)
	: 600 /-	(संस्थागत)
आजीवन	: 5,000/-	(व्यक्तिगत)
(केवल 15 वर्षों के लिए)	: 6,000/-	(संस्थागत)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा कला समय के नाम से उक्त पते पर भेजें)

कार्यालय सम्पर्क :
संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल (म.प्र.)-462016
फोन : 0755-2562294, मो.- 94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
bhanwarlalshrivas@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :
'कला समय' का बैंक खाता विवरण
पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हों। पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे।
सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक/अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस काम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) - 462016 से प्रकाशित। संपादक- भँवरलाल श्रीवास

प्रतिष्ठापूर्ण विशेषांक के विद्वान रचनाकार...

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

संतोष चौबे

प्रो. रामनाथ झा

डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग

डॉ. मंजुला चतुर्वेदी

डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू

डॉ. सत्येन्द्र शर्मा

मुकेश वर्मा

बलराम गुमास्ता

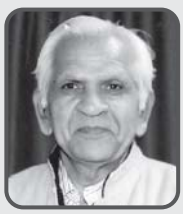
युगेश शर्मा

जगदीश कौशल

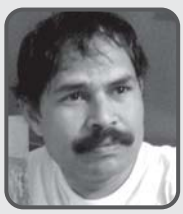
चेतन औदिच्य

विनय उपाध्याय

संजय सिंह राठौर

इस बार

- संपादकीय / 5
  अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव विश्वरंग 2020
- आलेख / 6
  अखंडित भारतीय अस्मिता का मर्म : इतिहास और साहित्य ... / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
- लोक में अद्वैत / 7
  अद्वैत दर्शन एवं लोकजीवन / प्रो. रामनाथ झा
- आलेख / 9
  हिन्दी कथा की जय-यात्रा / मुकेश वर्मा
- उपन्यास अंश / 13
  दूत / संतोष चौबे
- समाधान/ 24
  ध्रुवपद-गायकी / डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग
- आलेख
  आकस्मिक रूपाकारों में जीवन की तलाश... / डॉ. मंजुला चतुर्वेदी / 26
  आपको पढ़कर एक हूक सी उठती है ! / डॉ. सत्येन्द्र शर्मा / 29
  चित्रकला और देहगठन का ज्ञान / डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' / 32
- संस्मरण / 34
  स्वामी पागलदास जी की रामकहानी उन्हीं की जुबानी / जगदीश कौशल
- आवरण कथा / 26
  भारतीय लघुचित्र तथा संस्कृत व रीतिकालीन .... / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
- मध्यांतर / 35
  इराकी अमेरिकी कवयित्री दून्या मिखाइल की कविताएँ, अनुवाद: मणि मोहन
  रमेश गौतम के नवगीत / 36
  बलराम गुमास्ता की कविताएँ / 37
  डॉ. अली अब्बास 'उम्मीद' की ग़ज़लें / 38
- आलेख / 39
  दर्द भरी दास्तां : चित्रकार वोनगोग / चेतन औदिच्य
- पुस्तक समीक्षा / 41
  संस्मरण संग्रह 'मोहि ब्रज बिसरत नाही' / युगेश शर्मा
- शोध पत्र / 47
  सुप्रसिद्ध गायिका मालविका भट्टाचार्य से पं. विजय शंकर मिश्र की भेंटवार्ता
- संस्था आयोजन
  कला समय संस्था का प्रतिष्ठापूर्ण आयोजन : संस्कृति पर्व-4 / 43
  डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग एवं डॉ. महेन्द्र भानावत को कला समय शिखर सम्मान / 45
  कला और साहित्य में डॉ. कपिल तिवारी एवं भूरी बाई को पद्मश्री सम्मान / 45
- विश्वरंग
  विश्वरंग साहित्य एवं कला को लेकर डिजिटल .... / बलराम गुमास्ता / 50
  महफिलों के महकते मंज़र ... / विनय उपाध्याय / 52
  विश्व रंग टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव / संजय सिंह राठौर / 54
  विश्व रंग 2020 समाचार / 50-71
- मानव संग्रहालय / 72
  इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल की सांस्कृतिक गतिविधियां
- संस्था आयोजन/ 78
  नगरीय जीवन से आगे है जनजातीय समुदाय - सुश्री उषा ठाकुर / वैदिक, पौराणिक और आरण्य जगत सब एक ही है - डॉ. धर्मेन्द्र पारे / हम किसी जनजाति के व्यक्ति, उनकी संस्कृति को बाहरी आदमी क्या बता सकता है, जितना हमें उनसे सीखने की जरूरत है - डॉ. कपिल तिवारी
- सम्मान : राष्ट्रीय कवि प्रदीप अलंकरण समारोह / 80
- समवेत / 81
  परम्परा समारोह 2020 संपन्न / राष्ट्रीय राजा मानसिंह तोमर सम्मान से अलंकृत हुए अभिनव कला परिषद के सचिव पं. सुरेश तांतेड़ / अभिनव शब्द शिल्पी अलंकरण / कृति 'एक कम साठ राजूरकर राज' (जीवनी संग्रह) लेखक वामनकर लोकार्पित / प्रो. एस.के. मावल का निधन / भूरी बाई और डॉ. कपिल तिवारी को पद्मश्री सम्मान / संस्कृति पर्व -4 में वरिष्ठ छायाकार जगदीश कौशल के दुर्लभ छायाचित्रों की प्रदर्शनी
- समय की धरोहर/ 86

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888 | **आवरण छायाचित्र** - इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल से साभार | **रेखांकन** - रमेश गौतम | **छायाचित्र** - मनीष सराठे, सुनील सेन | **सहयोग** - धन सिंह, लता श्रीवास | **आवरण सज्जा** - मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव विश्वरंग 2020

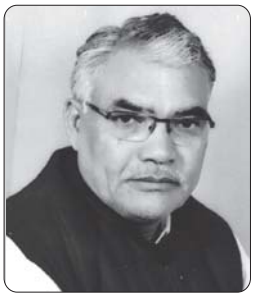

'विश्वरंग बार-बार आएगा
इसी रंग के साथ आएगा'

- श्री संतोष चौबे

विश्वरंग महोत्सव 2019 अपनी रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ मिंटो हाल के प्रागंण में समापन अवसर पर हाथों में लिये रंग-बिरंगे झंडे और आतिशबाजी की अनुगूंज में विश्वरंग के निदेशक संतोष चौबे ने कहा था कि 'विश्वरंग बार-बार आएगा इसी रंग के साथ आएगा' और इससे अच्छे रंगों के साथ आएगा। विश्वरंग 2020 का पूरा महोत्सव कोविड-19 के कारण वर्चुअल प्लेटफार्म पर आयोजित हुआ। दुनिया ने इस ऑनलाइन सांस्कृतिक, साहित्य-कला महोत्सव को खूब सराहा। जब दुनिया कोविड-19 की महामारी से जूझ रही थी, दुनिया का चक्र जैसे थम सा गया था। हर व्यक्ति इस महामारी से संघर्ष कर रहा था, तब विश्वरंग 2020 ने अपनी दस्तक दी। यह दुनिया के सामने इस तरह की विश्व स्तर पर टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र द्वारा अपने तरह की अनोखी पहल थी। विश्व में फेले एक तरह के अवसाद के बीच विश्वरंग 2020 वर्चुअल प्लेटफार्म पर दुनिया के सबसे बड़े ऑनलाईन कला, साहित्य महोत्सव के माध्यम से दुनिया के 16 देशों में अद्‌भुत आयोजन हुए। इसमें 50 से अधिक देशों के हजारों रचनाकारों ने अपनी रचनात्मक उपस्थिति दर्ज कराकर दुनिया का दुनिया से संवाद स्थापित किया यह इतिहास में पहली बार महामारी के माहौल के बीच एक शैक्षिक संस्थान रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय की पहल पर डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, आईसेक्ट विश्वविद्यालय टैगोर विश्वकला एवं संस्कृति केन्द्र, वनमाला सृजन पीठ सहित देश-विदेश की 100 से अधिक सांस्कृतिक संस्थाओं को साथ में लेकर यह इतिहास रचा गया। निश्चित ही इसका श्रेय स्वप्न दृष्टा जो खुद एक वरिष्ठ कवि, कथाकार तथा उपन्यासकार के साथ रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति को जाता है। यह दूसरा अवसर है जब विश्वरंग 2020 अपने अलग अंदाज में 16 देशों में आयोजित महोत्सव को लगभग 30 लाख लोगों से अधिक ने देखा, 300 से अधिक प्रदर्शन हुए और विश्व भर के 2000 से अधिक कलाकारों, रचनाकारों ने अपनी रचनात्मक भागीदारी की। यह प्रथम अवसर था जब इसमें बाल साहित्य को भी शामिल किया गया। इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित हुई जिसमें भी 1000 से अधिक प्रतिभागियों ने अपनी भागीदारी की। विश्वरंग 2020 में इसके अलावा 100 से अधिक विज्ञान कथाओं को संग्रहित कर विज्ञान कथाकोश तथा 400 से अधिक विज्ञान कविताओं के कविताकोश का प्रकाशन भी इसी अवसर पर हुआ। रचनापाठ, पुस्तकों का लोकार्पण, पूर्व रंग के तहत कथा यात्रा के ऐतिहासिक आयोजन में वरिष्ठ कथाकार एवं वनमाली सृजनपीठ के अध्यक्ष श्री मुकेश वर्मा की 18 खंडों पर केंद्रित कथा यात्रा में विशेष भूमिका रही। इस दौरान कोविड के बाद की दुनिया पर भी गंभीर विचार मंथन किया गया। अपनी तरह का अनूठा आयोजन विश्वरंग 2020 जो कि 20 से 29 नवम्बर 2020 का मुख्य आकर्षण अपने रंगारंग, जगमग आतिशबाजी के साथ 'फिर मिलेंगे' के संकल्प को दोहराते हुए सम्पन्न हुआ।

इस विश्वरंग विशेषांक के लेखकगण जिनका रचनात्मक सहयोग हमें मिला, नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, संतोष चौबे, प्रो. रामनाथ झा, बलराम गुमास्ता, मुकेश वर्मा, डॉ. मंजुला चतुर्वेदी, डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, डॉ. श्री कृष्ण 'जुगनू', डॉ. सत्येन्द्र शर्मा, डॉ. अशोक कुमार शर्मा, डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा, रमेश गौतम, डॉ. मणि मोहन, डॉ. अली अब्बास उम्मीद, चेतन औदिच्य, युगेश शर्मा, जगदीश कौशल, विनय उपाध्याय, संजय सिंह राठौर, जय प्रभा भट्टाचार्य, इन सब रचनाकारों के हम आभारी हैं।

कला समय संस्था का चौथा आयोजन संस्कृति पर्व- 21 जनवरी 2021 को रवीन्द्र भवन सभागार में संस्कृति संचालनालय म.प्र. शासन के सहयोग से नागेश अडगांवकर, पुणे का शास्त्रीय गायन तथा नीरजा सक्सेना का भारतनाट्यम सहयोगी कलाकारों सहित वरिष्ठ छायाकार जगदीश कौशल के छाया चित्रों की प्रदर्शनी के मुख्य अतिथि विजय मनोहर तिवारी सूचना आयुक्त, डॉ. मुकेश कुमार मिश्र निदेशक दन्तोपन्त ठेंगड़ी शोध संस्थान, वरिष्ठ आलोचक डॉ. विजय बहादुर सिंह, वरिष्ठ पत्रकार घनश्याम सक्सेना, संस्था कला समय अध्यक्ष पं. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग' विशेष रूप से उपस्थित थे। इस बार के कला समय शिखर सम्मान डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग हाथरस को कला समय संगीत शिखर सम्मान तथा डॉ. महेन्द्र भानावत उदयपुर राजस्थान को कला समय लोक शिखर सम्मान कोविड-19 के कारण हाथरस और उदयपुर में उनके निवास पर जाकर प्रदान किये गए।

नव वर्ष और गणतंत्र दिवस की मंगलमय शुभकामनाओं के साथ आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

- भँवरलाल श्रीवास

आलेख

अखंडित भारतीय अस्मिता का मर्म : इतिहास और साहित्य के अर्तसंबंध

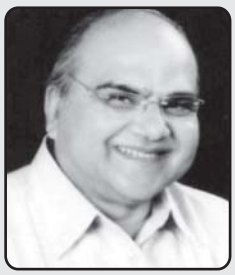

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

साहित्य और इतिहास यों तो पृथक-पृथक अनुशासन हैं लेकिन उनका उत्स एक ही है यह प्रासंगिक होगा कि बड़े संक्षेप में इतिहास और साहित्य के आशय क्या हैं ? इन्हें जाना जाए और फिर इनके अर्न्तसंबंधों के बारे में कुछ रेखांकित किया जाए।

इतिहास, इति+हा+आस इन तीन शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ है ऐसा निश्चय था या ऐसी घटना हुई थी अंग्रेज़ी में History शब्द, ग्रीक शब्द हिस्टॉर या हिस्टोरिया से बना है जिसका ग्रीक में अर्थ है बुनना। History को एनल्स, फैबल्स, ट्रेडीशन या स्टोरी के रूप में भी जाना जाता है। जिससे इसकी व्याप्ति का बोध होता है

भारत में भीमबैठका की गुफाओं से लेकर, विभिन्न कालखण्डों में विभिन्न यात्रियों के द्वारा की गई यात्राओं के दस्तावेज़ हैं, चित्रांकन, मुद्राशास्त्र व पुरातत्व की खोजों सहित समृद्ध वाचिक परम्परा और वेदों से लेकर उपनिषद्, पुराण विभिन्न चरित, रासोकाव्य व राजतरंगिणी जैसा वैज्ञानिक दृष्टि से लिखा गया ग्रंथ है। भारत में विपुल लोक साहित्य है, राम तथा कृष्ण काव्य की प्रत्येक युग में अविरल बहती धारा है तथा उस लोकधर्मी परम्परा का आख्यान भी जो भारतीय इतिहास के विभिन्न आयामों को उद्घाटित करती है। भारत में जैन व बौद्ध इतिहास के विभिन्न ग्रंथ हैं तथा प्राय: प्रत्येक राजवंश का इतिहास भी। सल्तनत काल तथा मुगलकाल तो इतिहास परक ग्रंथों से भरपूर है जिसमें स्वयं बादशाहों के द्वारा लिखे गए ग्रंथ हैं। डॉ. ईश्वरी प्रसाद व डॉ. आर.सी. मजूमदार तथा डॉ. यदुनाथ सरकार से लेकर डॉ. रोमिला थापर तक इतिहासकारों की लम्बी श्रृंखला है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल व डॉ. रघुवीर सिंह तथा दिनकर जैसे साहित्यकारों के रूप में भी हमारे यहां संस्कृति के इतिहासकार हैं। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि भारत में धर्मग्रंथों में भी इतिहास है और इतिहास ग्रंथों में भी धर्म। महाभारत जैसा इतिहास ग्रंथ यदि हमारे यहां है तो रामायण जैसा साहित्येतिहासिक ग्रंथ भी है। हमारे यहां धर्म का आख्यान करने वाले पुराणों में राजवंशों की वंशावलियां भी हैं

यह विवरण सिद्ध करता है कि भारत में इतिहास लेखन की रससिक्त, सधी-बधी समृद्ध व वैज्ञानिक दृष्टिसंपन्न परम्परा रही है।

जहां तक साहित्य का प्रश्न है, साहित्य सहित शब्द में आकारत्व के साथ 'य' प्रत्यय के योग से बना है। प्रख्यात वैयाकरण भामह ने अपने ग्रंथ का काव्यालंकार में साहित्य की परिभाषा देते हुए कहा है, 'सहितस्य भाव: साहित्यम'। भारत में साहित्य का अर्थ सबको साथ लेकर चलने का है। इसलिए भारतीय साहित्य की भित्ति बड़ी व्यापक है। इसीलिए 19 वीं सदी मे गार्सादा तासी से लेकर मिश्र बंधु, रामचन्द्र शुक्ल, बाबू श्यामसुन्दर दास, हरिऔध व हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने भारतीय साहित्य के कालखण्डों का विभाजन किया जो इतिहास आधारित है। यूरोप की तरह भारत में विशिष्ट इतिहास नहीं रहा इसीलिए इन दोनों अनुशासनों की आवाजाही एक दूसरे से बनी रही।

जहां तक साहित्य का प्रश्न है, साहित्य सहित शब्द में आकारत्व के साथ 'य' प्रत्यय के योग से बना है। प्रख्यात वैयाकरण भामह ने अपने ग्रंथ का काव्यालंकार में साहित्य की परिभाषा देते हुए कहा है, 'सहितस्य भावः साहित्यम'। भारत में साहित्य का अर्थ सबको साथ लेकर चलने का है। इसलिए भारतीय साहित्य की भित्ति बड़ी व्यापक है।

यह अवश्य है कि जब हमारे इतिहास आधारित साहित्य की रचना हुई तो उसमें ऐतिहासिक तथ्यों पर बहुत जोर नहीं दिया गया। कल्पनाशीलता विद्यमान रही। साहित्यकार तथा इतिहासकार में यही मूलभूत अंतर है कि साहित्यकार ऐतिहासिक सच के प्रति आग्रही नहीं होता जबकि इतिहासकार की पहली प्रतिबद्धता ऐतिहासिक सत्य के प्रति होती है। यह स्थिति पुराने समय से ही विद्यमान रही है लेकिन बदलते समय के साथ अवधारणाओं में भी परिवर्तन हुए।

वर्तमान काल में मार्क्सवादी इतिहासकारों ने यह दृष्टि विकसित की कि भारतीय परम्परा में चले आ रहे मिथकों के पीछे तार्किक दृष्टि या सिद्धांत क्या हैं। इनकी खोज की जाए, इस दृष्टि से अन्य इतिहासकारों का विरोध है।

इतिहास और साहित्य के संबंधों में कला का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, साथ ही भाषा की यात्रा का भी। बिना कलात्मक व सांस्कृतिक इतिहास को जाने इतिहास की व्याप्ति को नहीं जा सकता। यह भी आवश्यक है कि घटी हुई घटनाओं का आलोचनात्मक परीक्षण भी किया जाए। उन विषम धरातलों को खोजा जाए जो भिन्न हैं तथा उन भूमियों की भी खोज की जाए जहां इतिहास और साहित्य के अनुशासन एक हो जाते हैं। हम पाएंगे कि ऐसे अनेक धरातल हैं जहां समता है, इसलिए कि इतिहास और साहित्य का स्रोत भारतीय परिप्रेक्ष्य में एक ही है और वह है संवेदना का समग्र भाव, सबको साथ लेकर चलने की आकांक्षा, विरत न होकर सहित बने रहने की अदम्य इच्छाशक्ति ।

पहिले इसी कारण विभिन्न अनुशासनों के विद्वानों का पारस्परिक संवाद निरन्तर होता रहता था लेकिन ऐसा अर्न्तअनुशासिक संवाद अब प्राय: नहीं होता। विधागत रूप से लेखन करने वाले सर्जकों के बीच संवादहीनता की स्थिति उत्पन्न हो गई है। यह समग्रता का नहीं बल्कि खंडित होने की दिशा में बढ़ रही यात्रा का सूचक है। इस परिदृश्य में यदि यह संवाद हो रहा है तो यह निश्चय ही एक आशा से भरपूर भविष्य का सूचक है। हमारे देश का भविष्य उसके अखंडित बने रहने में ही है और साहित्य तथा इतिहास के अनुशासनों की परस्पर संबंद्धता ही इस अखंडता का उद्घोष कर सकती है।

लेखक प्रख्यात ललित निबंधकार तथा कलाविद् है।
-85, इन्दिरा गांधी नगर, आर.टी.ओ. कार्यालय के पास, केसरबाग रोड, इन्दौर (म.प्र.)
पिन-452001 मो. नं.-94250 92893

■

अद्वैत दर्शन एवं लोकजीवन

प्रो. रामनाथ झा

लोक का अनुभव ही दर्शन है एवं दर्शन पर आधारित ही जीवन है। व्यक्ति जो कुछ भी इन्द्रियों के द्वारा जानता है उसके अनुसार ही जीवन में व्यवहार करता है। उदाहरण के द्वारा समझें तो रस्सी को देखने एवं जानने के बाद ही व्यक्ति रस्सी का उपयोग करता है। किन्तु कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अल्प प्रकाश या आँख से कम दिखने के कारण व्यक्ति रस्सी को सर्प समझ लेता है। किन्तु जब उसे भगाने या पकड़कर बाहर फेंकने के लिये उद्यत होता है तब उसे सर्प के स्थान में रस्सी का अनुभव ज्ञान हो जाता है। ऐसा होने पर सर्प को भगाने या बाहर फेंकने के स्थान पर रस्सी को किसी और काम के लिये सहेज का रख लेता है। जब तक रस्सी का ज्ञान नहीं हुआ था तब तक सर्प उसके लिये वास्तविक था, किन्तु रस्सी का ज्ञान होते ही सर्प तत्काल अवास्तविक लगने लगा है। एक दूसरा उदाहरण लें जो हमारे जीवन में प्राय: उपस्थित होता रहता है। हम स्वर्णाभूषण बेचने वाले के यहाँ आभूषण खरीदने हेतु जाते हैं। प्राय: हम ऐसा सोचकर जाते हैं कि अमुक आभूषण खरीदना है। वहाँ जाकर स्वर्ण से निर्मित अनेक प्रकार के आभूषणों को देखते हैं। कुछ पसंद आते हैं तथा कुछ नहीं भी आते हैं। यद्यपि जो आभूषण पसंद नहीं आते वे भी स्वर्ण से निर्मित हैं, फिर भी वे पसंद नहीं आते। कई बार आभूषणों के आकार-प्रकार को लेकर विवाद भी हो जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम आकार-प्रकार को अधिक महत्व देते हैं, स्वर्ण गौण हो जाता है। किन्तु यदि आभूषण बेचने वाले की दृष्टि से देखें तो उसका एक ही उद्देश्य है कि अधिक से अधिक आभूषण बिके। वह किसी भी आकार-प्रकार का हो, किसी भी नाम का हो। उसके लिये आभूषण का आकार-प्रकार, नाम आदि गौण है, स्वर्ण का बिकना प्रधान है। अब यदि इस विषय पर विचार किया जाए तो स्पष्ट है कि आकार-प्रकार प्रधान होने पर स्वर्णाभूषण अलग-अलग नाम के हो जाते हैं, उनमें गुणों का आधिक्य या न्यूनता का भान होने लगता है तथा कभी-कभी आकार-प्रकार एवं नाम विवाद का भी कारण बन जाता है। यथा कई बार व्यक्ति कहता है कि मुझे यही आभूषण लेना है, वह नहीं लेना है। अपनी पसंद का आभूषण नहीं मिलने से वह क्रुद्ध भी होता है, कई बार अनुचित आचरण भी कर बैठता है। किन्तु आकार-प्रकार या नाम की दृष्टि से उदासीन स्वर्णकार उससे विचलित नहीं होता, उसमें आकार-प्रकार या नाम को लेकर किसी प्रकार का विकार नहीं होता। निष्कर्ष यह है कि सभी प्रकार के स्वर्णाभूषणों के सार तत्व स्वर्ण मात्र, जो कि सभी आभूषणों में एक ही है, को जानने वाला एवं इस ज्ञान में स्थिर रहने वाला स्वर्णकार आकार-प्रकार या नाम से प्रभावित नहीं होता। उसे पता है कि अमुक आकार-प्रकार एवं अमुक नाम वाले आभूषणों को दूसरा आकार-प्रकार एवं नाम दिया जा सकता है, किन्तु सार रूप में स्थित स्वर्ण अपरिवर्तनशील एवं एक ही रहेगा। तात्पर्य यह है कि आकार-प्रकार एवं नाम परिवर्तनशील है जबकि उसका सार स्वर्ण अपरिवर्तनशील। परिवर्तनशील वस्तु सीमित होने के कारण बुद्धि को सीमित कर देती है जबकि सार तत्व असीमित होने के कारण बुद्धिको अपरिवर्तनशील एवं व्यापक बनाती है। सीमित एवं परिवर्तनशील अथवा चंचल बुद्धि सीमित सुख प्रदान करती है, जबकि असीमित एवं अपरिवर्तनशील बुद्धि असीमित एवं व्यापक सुख प्रदान करती है। यही लोकानुभूति एवं लोक जीवन है।

ऐसी ही लोकानुभूति के आधार पर वेद के ऋषियों ने अद्वैत दर्शन को समझाने का प्रयास किया है। इस सृष्टि में अनेक वस्तुएँ हैं। अनेक प्रकार के आकार-प्रकार एवं नाम से युक्त हैं। हमारी इंद्रियाँ इन्हें जानती हैं। कुछ को पसंद करती हैं कुछ को नापसंद। कुछ को अच्छा मानती है, कुछ को बुरा। किसी व्यक्ति को बड़ा मानती है, किसी को छोटा। किसी को जाति के आधार पर आँकती है, किसी को धर्म के आधार पर। किसी को स्त्री समझती है तो किसी को पुरूष। किन्तु यदि इसका सूक्ष्म विचार किया जाए तो सभी शरीर जड़ हो या चेतन, पञ्च महाभूतों से बना है, वहाँ किसी प्रकार का भेद नहीं है। पञ्च महाभूत भी तन्मात्राओं (सूक्ष्म कणों) से बना हुआ है। सूक्ष्म कण या तन्मात्रा भी शक्ति से बना है। वह शक्ति एक है तथा चेतन है। जब वह आकार-प्रकार के रूप में अभिव्यक्त होती है तो नाना प्रकार के जीव एवं अनेकात्मक जगत कहलाती है तथा जब वह अपने मूल स्वभाव में रहती है या दूसरे शब्दों में सभी आकार-प्रकार एवं नामों को अपने अंदर समाहित कर लेती है तब कारण कहलाती है। पहली स्थिति में सगुण एवं दूसरी स्थिति में निर्गुण एवं निराकार। पहली स्थिति में अनेक आकार-प्रकार एवं नामों में रहने के कारण सीमित एवं परिवर्तनशील सी प्रतीक होती है किन्तु इसी में सार रूप में रहने के कारण असीमित एवं अपरिवर्तनशील। आकार-प्रकार एवं नामों के कारण लोक मन को उद्वेलित करती है तथा दु:ख का कारण बन जाती है, किन्तु जो व्यक्ति उसके सार तत्व, जो कि एकात्मक एवं अद्वैत है, को जान ले उसका दु:ख समाप्त हो जाता है तथा परम आनन्द का अनुभव करने लगता है। जैसे प्रत्येक आभूषण स्वर्ण ही है और दूसरे स्वर्णाभूषणों से अभिन्न है वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति एकात्मक चैतन्य एवं शक्ति स्वरूप है तथा अन्य सभी जड़ अथवा चेतन से अभिन्न है। जैसे स्वर्णाभूति होने से स्वर्णकार आभूषणों के आकार-प्रकार एवं नाम से बिना प्रभावित हुए स्वर्ण मात्र को ध्यान में रखकर व्यवहार करता है वैसे ही एक ब्रह्म मात्र को जानकर व्यक्ति नाना प्रकार के जड़-चेतनों से प्रभावित हुए बिना सभी को समान मानकर सार रूप अद्वैत में स्थित रह सर्वत्र समदर्शन के आधार पर व्यवहार करता है।

अद्वैत की इसी स्थिति को समझाते हुए ऋषि आरूणि उद्दालक अपने पुत्र श्वेत केतु को कहते हैं कि तुम हाड़ मांस का बना हुआ सीमित व्यक्ति नहीं हो तुम सार रूप में वह तत्व हो जो सभी में व्याप्त है। तुम जिससे ईर्ष्या करते हो वह आकार-प्रकार एवं नाम के आधार पर करते हो। सार रूप में तुम वही हो -

ऐसी ही लोकानुभूति के आधार पर वेद के ऋषियों ने अद्वैत दर्शन को समझाने का प्रयास किया है। इस सृष्टि में अनेक वस्तुएँ हैं। अनेक प्रकार के आकार-प्रकार एवं नाम से युक्त हैं। हमारी इंद्रियाँ इन्हें जानती हैं। कुछ को पसंद करती हैं कुछ को नापसंद। कुछ को अच्छा मानती है, कुछ को बुरा। किसी व्यक्ति को बड़ा मानती है, किसी को छोटा। किसी को जाति के आधार पर आँकती है, किसी को धर्म के आधार पर। किसी को स्त्री समझती है तो किसी को पुरूष। किन्तु यदि इसका सूक्ष्म विचार किया जाए तो सभी शरीर जड़ हो या चेतन, पञ्च महाभूतों से बना है, वहाँ किसी प्रकार का भेद नहीं है। पञ्च महाभूत भी तन्मात्राओं (सूक्ष्म कणों) से बना हुआ है। सूक्ष्म कण या तन्मात्रा भी शक्ति से बना है। वह शक्ति एक है तथा चेतन है। जब वह आकार-प्रकार के रूप में अभिव्यक्त होती है तो नाना प्रकार के जीव एवं अनेकात्मक जगत कहलाती है तथा जब वह अपने मूल स्वभाव में रहती है या दूसरे शब्दों में सभी आकार-प्रकार एवं नामों को अपने अंदर समाहित कर लेती है तब कारण कहलाती है। पहली स्थिति में सगुण एवं दूसरी स्थिति में निर्गुण एवं निराकार। पहली स्थिति में अनेक आकार-प्रकार एवं नामों में रहने के कारण सीमित एवं परिवर्तनशील सी प्रतीक होती है किन्तु इसी में सार रूप में रहने के कारण असीमित एवं अपरिवर्तनशील। आकार-प्रकार एवं नामों के कारण लोक मन को उद्वेलित करती है तथा दुःख का कारण बन जाती है, किन्तु जो व्यक्ति उसके सार तत्व, जो कि एकात्मक एवं अद्वैत है, को जान ले उसका दुःख समाप्त हो जाता है तथा परम आनन्द का अनुभव करने लगता है। जैसे प्रत्येक आभूषण स्वर्ण ही है और दूसरे स्वर्णाभूषणों से अभिन्न है वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति एकात्मक चैतन्य एवं शक्ति स्वरूप है तथा अन्य सभी जड़ अथवा चेतन से अभिन्न है। जैसे स्वर्णाभूति होने से स्वर्णकार आभूषणों के आकार-प्रकार एवं नाम से बिना प्रभावित हुए स्वर्ण मात्र को ध्यान में रखकर व्यवहार करता है वैसे ही एक ब्रह्म मात्र को जानकर व्यक्ति नाना प्रकार के जड़-चेतनों से प्रभावित हुए बिना सभी को समान मानकर सार रूप अद्वैत में स्थित रह सर्वत्र समदर्शन के आधार पर व्यवहार करता है।

'तत्वमसि श्वेत केतो' व्यक्ति में घृणा का भाव या ऊँच-नीच का भाव तभी आता है जब वह नाम-रूप के आधार पर सत्ता का आकलन करता है। अद्वैत या एकत्व रूप मूल तत्व को जानने के बाद घृणा आदि का भाव समाप्त हो जाता है। ऋषि स्पष्ट रूप से कहते हैं –

यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूत् विजानतः।
तत्र को मोह कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः।।
यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते।।

ईशावास्योपनिषद् (6-7)

भगवत्पाद आचार्य शंकर, जो अद्वैत दर्शन के प्रतिपादक हैं, परिवर्तनशील एवं सीमित सभी आकार-प्रकार एवं नाम-रूप को मिथ्या मानते हैं। मिथ्या इसलिये क्योंकि वह बदल जाती है, इसलिये नहीं कि वह है ही नहीं। मिथ्या या बदलने वाली वस्तु सीमित होने के कारण दुःख उत्पन्न करती है। स्वर्णाभूषण का आकार-प्रकार एवं नाम स्वर्ण की दृष्टि से मिथ्या है। आभूषण के आकार-प्रकार बदलते रहते हैं, स्वर्ण नहीं। वैसे ही रस्सी में दिखने वाला सर्प रस्सी की दृष्टि से मिथ्या है। किन्तु रस्सी के ज्ञान होने से पूर्व वह वास्तविक किन्तु परिवर्तनशील है। वैसे ही हम सभी का शरीर, इन्द्रिय, मन आदि वास्तविक है, किन्तु परिवर्तनशील है। किन्तु इसी शरीर, इन्द्रिय, मन आदि में अन्वेषण करते हुए हम अपने सार रूप आत्मतत्व, जो कि चैतन्य स्वरूप, अद्वैत, अपरिवर्तनशील, अनन्त एवं आनन्द स्वरूप है; का अनुभव करते हैं तो उस स्थिति में शरीर आदि आकार-प्रकार तथा नाम-रूप आत्मा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, अतः मिथ्या है।

अतः आत्मा या ब्रह्म की दृष्टि से शरीरादि मिथ्या है, न कि स्वयं में। जब आचार्य शंकर **'ब्रह्म सत्यं जगनिमथ्या'** कहते हैं तो उसका अभिप्राय है सार रूप ब्रह्म या आत्मा की दृष्टि से जगत मिथ्या है जैसे रस्सी की दृष्टि से सर्व एवं स्वर्ण की दृष्टि आभूषणों के आकार-प्रकार एवं नाम। जैसे सर्प रस्सी के अतिरिक्त कुछ नहीं है, आभूषणों के आकार-प्रकार एवं नाम स्वर्ण से अतिरिक्त कुछ नहीं है, वैसे ही यह शरीर, इन्द्रिय आदि या नानात्मक जगत ब्रह्म या आत्मा के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इस दृष्टि से इनका मिथ्यात्व है। यद्यपि अपनी दृष्टि से वह वास्तविक है, जैसे सर्प अपनी दृष्टि से तथा आभूषणों का आकार-प्रकार एवं नाम अपने आप में वास्तविक है।

अद्वैत दर्शन एवं लोकानुभूति का सबसे महत्वपूर्ण विषय यह है कि शरीर आदि या जगत जो कुछ भी हमारे समक्ष है उसी में अद्वैत का अनुसंधान करना है, भेद में ही अभेद को जानना है तथा अन्ततः भेद में रहते हुए अभेद जैसा व्यवहार करना है। केनोपनिषद् के ऋषि कहते हैं –

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।।(2.5)

विज्ञान भी इसी प्रकार भेद से अभेद तक पहुँचा है। वहाँ भी जो कुछ भी स्थूल वस्तु उपलब्ध है उसी में परमाणु को जाना है, परमाणु में ही उसके सूक्ष्म कणों (Sub-Particles) को जाना है तथा सूक्ष्म कणों में ही एकात्मिका शक्ति (Unified field or energy) को जाना है। विज्ञान का भी यही निष्कर्ष है कि जो भी स्थूल वस्तु है वह मूल रूप से शक्ति है तथा शक्ति एक है तथा एकात्मिका शक्ति ही नाना रूप में अभिव्यक्त होती है। कारण की दृष्टि से कोई भी वस्तु शक्ति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। वैसे इन्द्रिय की दृष्टि से सब अलग-अलग है।

भारतीय जीवन दर्शन में गुरू या आचार्य का अत्यधिक महत्व है। ऐसा इसलिये क्योंकि गुरू हमें स्थूल में भी सूक्ष्म, परिवर्तनशील में भी अपरिवर्तनशील, सीमित में भी असीमित तथा दुःखद वस्तु में परमानन्द का अनुभव कराते हैं। यही कारण है कि अद्वैत दर्शन में गुरू का सान्निध्य अनिवार्य है। छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है – **'आचार्यवान् पुरुषो वेद'** अर्थात – अनुभूत आचार्य या गुरू के द्वारा ही व्यक्ति अद्वैत सत्ता का अनुभव कर सकता है। निष्कर्ष रूप में **'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्' या 'वसुधैव कुटुम्बकम्'** जैसे आदर्श वाक्य अद्वैत दर्शन का ही लोक जीवन में प्रयोग है। यदि आनन्दमय एवं सकारात्मक वातावरण बनाना है तो अद्वैत दर्शन का लोक जीवन में अनुभव एवं प्रयोग ही एक मात्र उपाय है।

लेखक – अद्वैत वेदांत के मर्मज्ञ है।
जवाहर लाल नेहरू वि.वि. नई दिल्ली 110067, मोबा. 9810652760

■

आलेख

हिन्दी कथा की जय-यात्रा

मुकेश वर्मा

कुछ वर्षों पहले सुपरिचित कवि, कथाकार, उपन्यासकार, समीक्षक, अनुवादक और संस्कृतिकर्मी संतोष चौबे ने कथा-साहित्य की प्रवृत्तियों और धारणाओं को ऐतिहासिक परिवेश में समकालीन चिन्ताओं से संलग्न कर गद्य के पुनराविष्कार का एक अनूठा स्वप्न देखा, जिसकी परिधि में अपने मित्रों और सहकर्मियों को शामिल किया और फिर उसे साकार और सार्थक करने के लिए अनवरत् प्रयत्नों का एक ऐसा सिलसिला प्रारंभ हुआ जिसकी पूर्णाहुति में मध्य-प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पूर्ववर्ती अविभाजित प्रदेश की कथा सम्पदा को 'कथा - मध्यप्रदेश' का एक वृहत् संकलन उपलब्ध हुआ जिसमें हिन्दी की पहली कहानी से लेकर इस यशस्वी भूमि में अवस्थित कथा की गंगोत्री से लेकर आधुनिक काल के सभी समर्थ कहानीकारों की कहानियों को शामिल किया गया।

कथादेश का प्रभावी और प्रासंगिक भाग श्री संतोष चौबे द्वारा लिखी गई महती भूमिका है जो हिन्दी कथा के गर्व और गौरव की विवेचना को सुन्दर ढंग से दर्शाती है। वे लिखते हैं कि ''हालांकि हिंदी में कहानी का उद्भव 20वीं शताब्दी के प्रारंभ से माना जाता है पर कहानी के स्फुरण 19वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही मिलने शुरु हो जाते हैं। 'रानी केतकी की कहानी' 1803 के आसपास लिखी गई। हमने कथा देश का प्रारंभ इसीलिये 19 वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही किया है। 'धरोहर' खंड में 19 वीं शताब्दी के वे सभी कथाकार स्थान पाते हैं जिन्होंने कहानी लेखन की शुरुआत की थी और जिन्होंने हमारी भाषा को बनाने में योगदान दिया। इनमें सैयद इंशा अल्ला खां से लेकर भारतेंदु और रेवरेंड न्यूटन तक अनेक कथाकार शामिल हैं।

आज हम उसी कथा-यात्रा की पृष्ठभूमि के बारे में संतोष जी से उन्हीं के शब्दों में जानने की कोशिश करते हैं। वे लिखते हैं कि ''**आज से करीब तीन साल पहले कथा मध्यप्रदेश का प्रकाशन हुआ था जिसमें अविभाजित मध्यप्रदेश के लगभग दो सौ से अधिक कथाकार एवं देशभर के तीस से अधिक आलोचक शामिल थे। 'कथा मध्यप्रदेश' ने हिंदी कहानी की करीब सौ सालों की परंपरा और प्रवृत्तियों को प्रस्तुत किया और देशभर में एक व्यापक चर्चा को जन्म दिया। डॉ. नामवर सिंह और डॉ. धनंजय वर्मा जैसे ख्यात आलोचकों से लेकर कथाकारों एवं रचनाकारों के विशाल समूह ने इस प्रयास की प्रशंसा की। मध्यप्रदेश के अतिरिक्त अन्य प्रदेशों जैसे उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान के रचनाकारों ने माना कि ऐसा काम उन प्रदेशों के रचनाकारों को लेकर भी किया जाना चाहिये। कई लेखकों और शुभचिंतकों का मानना था कि वास्तव में तो सरकार को ये काम करना चाहिये था। कुछ लोगों का कहना था कि 'कथा मध्यप्रदेश' जैसा काम सरकार के दायरे के बाहर ही संभव था और विश्वविद्यालयों ने ये बीड़ा उठाया, ये और भी प्रशंसनीय है। बहरहाल कथा मध्यप्रदेश को जिस तरह की सराहना मिली उससे उत्साहित होकर ये विचार बना कि इसी तरह का काम देशभर के प्रमुख कथाकारों को लेकर किया जाये।**''

इस परियोजना का नाम ''**कथा देश**'' रखा गया लेकिन नाम के अनुरूप इस संकल्प का क्रियान्वयन कठिन था क्योंकि हिन्दी भाषा के कथा-साहित्य का वितान इतना बड़ा और विस्तृत है तथा हिन्दी पट्टी का विस्तार देश के बहुत व्यापक क्षेत्र में है कि इतने बड़े कलेवर को जानने-समझने-चयन करने के लिए एक लम्बी कालावधि, गहन शोध तथा वस्तु-परक विश्लेषण की महती आवश्यकता हुई। इसके अलावा यह एक बड़ा श्रमसाध्य कार्य भी था क्योंकि हमारा उद्देश्य सिर्फ विविध कहानियों का संकलन नहीं बल्कि एक बड़े कालखण्ड में फैली हिन्दी कथाओं की ऐतिहासिक जय-यात्रा का विभिन्न मुकामों पर आई चरित्रगत विषेषताओं का गुणवत्ता के आधार पर मूल्यांकन, वर्गीकरण, प्रस्तुतीकरण और उनका आकलन कर एक अभिनव दस्तावेज की प्रस्तुति करना था।

बहुत सारी कठनाईयों और उलझनों के चलते यह महत्वपूर्ण कार्य समयावधि में भी करना था ताकि हमारे महत्वाकांक्षी महोत्सव ''विश्व रंग'' में लोकार्पित किया जा सके। बहरहाल सभी अपने काम में जुटे। टैगोर विश्वद्यिालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे के ऊर्जामय नेतृत्व में एक बहुत छोटी सी टीम ने जिसमें कथाकार-आलोचक मुकेश वर्मा, युवा आलोचक अरुणेश शुक्ल, कवि-संपादक डॉ. आरती और देवेनदास देवनानी थे, काम को अंज़ाम तक पहुँचाने का संकल्प किया। सुख्यात साहित्यकारों में डॉ. धनंजय वर्मा, शशांक, बलराम गुमास्ता, हरि भटनागर, ब्रजेश कृष्ण, शंभु गुप्त, राकेश बिहारी, भालचंद्र जोशी, ऋतु भानोट, मोहन सगोरिया के परामर्श और महेन्द्र गगन का सहयोग भरपूर मिला जिससे कहानियों का यथासंभव कालक्रम निर्धारण, प्रतिष्ठित कथाकारों की उल्लेखनीय कहानियों का नई और पुरानी पत्रिकाओं तथा संग्रहों से चयन एवं कथा-प्रवृत्तियों और संबंधित आंदोलनों के परिपेक्ष्य में खंडों का समुचित निर्माण संभव हो सका। इस पूरे दौर में यह चिंता हावी रही कि कल और आज का कोई गुणी कहानीकार छूट ना जाए। कई विशिष्ट कहानियों की प्राप्ति के लिए अनेकानेक प्रयास किए। सहयोगियों ने उत्तरी-पूर्वी प्रदेशों के अलावा दक्षिण और उत्तरी भारत के क्षेत्रों का भ्रमण किया ताकि इस संकलन को एक ठोस भारतीय स्वरूप दिया जा सके। इस उपक्रम के परिणामस्वरूप 600 से अधिक लेखकों की रचनाएँ और लेख हासिल हो सके, फिर भी यह आशंका बनी रहती है कि कुछ ऐसे कथाकारों की रचनाएँ रह गई हों जिन्हें शामिल किया जाना चाहिए था। इस बात पर मन में खेद की स्थाई भावना तो रहती ही है।

इस महा-ग्रंथ में विशेष रूप से यह प्रयास किया गया कि हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियों के अलावा कथा-साहित्य पर उन आलोचनात्मक आलेखों को भी रखा जाए जो इस ऐतिहासिक कथा-यात्रा को बेहतर तरीकों से विश्लेषित कर सकें ताकि हिन्दी भाषा के समृद्ध कथा-सम्पदा के वैभव और

सौन्दर्य का आस्वाद सरल-सहज रूप से सामान्य पाठक भी ग्रहण कर सकें। इसी उद्देश्य से प्रत्येक कहानी पर एक समकालीन-युवा आलोचक की समीक्षात्मक टिप्पणी भी संलग्न की गई ताकि कहानी के निहितार्थों और मन्तव्यों को समझने तथा कहन के विविध शिल्प और शैलियों को जानने-समझने का लाभकारी अवसर भी पाठकों को मिल सके। इस तरह लगभग तीन वर्षों की मेधा और मेहनत के अथक प्रयासों के बाद 'कथादेश' देश की जनता को लोकार्पित किया जा सका। सभी अठारह खंडों में कथाकारों को समुचित सम्मान देने के ध्येय से उन्हें किसी अन्य क्रम में ना रखते हुए वर्णानुक्रम में रखा गया है। उनके संक्षिप्त परिचय देने की यथासंभव बेहतर कोशिश की गई है। टिप्पणीकारों का परिचय परिशिष्ट में दिया गया है और प्रत्येक खंड के अंत में सुविधा की दृष्टि से सभी कथाकारों की सूची दी गई है ताकि किस रचनाकार की कहानी किस खण्ड में है इसकी जानकारी सहूलियत से मिल सके। प्रत्येक खंड अलग-अलग होते हुए भी परस्पर सम्बद्ध है। पाठक चाहें तो इन्हें स्वतंत्र संग्रह के रूप में भी पढ़ सकते हैं। क्रमवार अध्ययन हिन्दी कहानी की प्रांजल विरासत का आज के पाठक से अवश्य ही साक्षात् करवा सकेगा। इसकी उपयोगिता कहानी के शोधार्थियों के लिए तो है ही, कथा-रस के सामान्य आस्वादकों के लिए भी है।

कथादेश का प्रभावी और प्रासंगिक भाग श्री संतोष चौबे द्वारा लिखी गई महती भूमिका है जो हिन्दी कथा के गर्व और गौरव की विवेचना को सुन्दर ढंग से दर्शाती है। वे लिखते हैं कि ''**हालांकि हिंदी में कहानी का उद्भव 20वीं शताब्दी के प्रारंभ से माना जाता है पर कहानी के स्फुरण 19वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही मिलने शुरु हो जाते हैं। 'रानी केतकी की कहानी' 1803 के आसपास लिखी गई। हमने कथा देश का प्रारंभ इसीलिये 19 वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही किया है। 'धरोहर' खंड में 19 वीं शताब्दी के वे सभी कथाकार स्थान पाते हैं जिन्होंने कहानी लेखन की शुरुआत की थी और जिन्होंने हमारी भाषा को बनाने में योगदान दिया। इनमें सैयद इंशा अल्ला खां से लेकर भारतेंदु और रेवरेंड न्यूटन तक अनेक कथाकार शामिल हैं। बीसवीं शताब्दी के आते-आते कहानी अपना स्वरूप ग्रहण करने लगती है। अब रामचंद्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधवराव सप्रे जैसे कथाकार सामने आते हैं। गुलेरी जी एवं प्रेमचंद के साथ हम प्रेमचंद युग में प्रवेश करते हैं। प्रेमचंद ने कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में जिस तरह की भाषा का निर्माण किया और आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का जो आधार निर्मित किया उसने हिंदी कथा को दूर तक प्रभावित किया। सभी छायावादी कवियों ने कहानियाँ भी लिखीं और प्रसाद जी, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत तथा निराला ने भी कई सुंदर कहानियाँ हिंदी कथा संसार को दीं। इन सभी को 'धरोहर' खंड में शामिल किया गया है।**''

बीसवीं सदी के आरम्भ से लेकर छायावाद के अवसान तक के लगभग चार दशकों में लिखी जाने वाली 51 प्रतिनिधि कहानियाँ 'कथादेश' के पहले खंड 'धरोहर' में शामिल की गयी हैं। इन कहानियों से गुजरते हुए कहानी विधा के विकास की एक स्पष्ट रूपरेखा गोचर होती है।

इस खंड के अन्तर्गत एक तरफ जहाँ किशोरीलाल गोस्वामी, माधवप्रसाद सप्रे, राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, गोपालराम गहमरी, इंशाअल्ला खाँ आदि की कहानियाँ हैं जिनसे कहानी विधा की जन्मजात प्रवृत्तियों के अभिदर्शन होते हैं, तो दूसरी ओर चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद सदृश मास्टर कथाकारों की भी प्रतिनिधि कहानियाँ संकलित हैं, जिनकी रचनाओं ने कहानी के आगत स्वरूप को सुनिश्चित किया।

अलावा इसके, इस खंड के अन्तर्गत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बालकृष्ण भट्ट, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, माखनलाल चतुर्वेदी, सुमित्रानन्दन पन्त, सियारामशरण गुप्त जैसे रचनाकारों की कहानियों की भी शमूलियत है, जिनको हिन्दी साहित्य में अन्य विधाओं में उनकी महत्ता के कारण वह ध्यान नहीं मिल पाया जिसकी वे वाकई हक़दार हैं। बंग महिला, महादेवी वर्मा, शिवरानी देवी सदृश महिला कथाकारों की उपस्थिति भी इस खंड को समृद्ध करती है।

खण्ड -2 और 3 को प्रेमचंदोत्तर कहानी का नाम रखा गया है क्योंकि सन् 1936 में प्रेमचन्द की सदारत में प्रगतिशील लेखक संघ का शुभारंभ भारतीय साहित्य की ऐतिहासिक परिघटना है। 1936 में ही प्रेमचन्द के अवसान के बाद हिन्दी कहानी में प्रत्यक्ष रूप से दो अन्तरवर्ती धाराओं को लक्षित किया जाने लगा। एक तरफ तो जैनेन्द्र और अज्ञेय की व्यक्तिवादी सोच व कलात्मक वैशिष्ट्य-प्रधान रचनाएँ थीं तो दूसरी ओर यशपाल, वृन्दावनलाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन आदि की कथ्य-प्रधान रचनाएँ भी।

'**कथादेश**' का दूसरा व तीसरा खंड '**प्रेमचन्दोत्तर कहानी**' के इस बहुरंगी परिदृश्य को समेकित करता है। दोनों खंडों में जैनेन्द्र कुमार, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय, यशपाल, अमृतलाल नागर, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', उपेन्द्रनाथ अश्क, रांगेय राघव, जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली', विष्णु प्रभाकर, वृन्दावनलाल वर्मा, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, आचार्य चतुरसेन, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, रामप्रसाद घिल्डियाल पहाड़ी, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, शिवपूजन सहाय, देवेन्द्र सत्यार्थी आदि प्रतिनिधि रचनाकारों की 60 से अधिक कहानियाँ हैं।

इनके अतिरिक्त इन खंडों में कन्हैयालाल माणकलाल मुंशी, गजानन माधव मुक्तिबोध, अयोध्या प्रसाद गोयलीय, गणेश शंकर विद्यार्थी, नलिन विलोचन शर्मा, प्रभाकर माचवे, रामविलास शर्मा, राहुल सांकृत्यायन,

'कथादेश' का दूसरा व तीसरा खंड 'प्रेमचन्दोत्तर कहानी' के इस बहुरंगी परिदृश्य को समेकित करता है। दोनों खंडों में जैनेन्द्र कुमार, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय, यशपाल, अमृतलाल नागर, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', उपेन्द्रनाथ अश्क, रांगेय राघव, जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली', विष्णु प्रभाकर, वृन्दावनलाल वर्मा, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, आचार्य चतुरसेन, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, रामप्रसाद घिल्डियाल पहाड़ी, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, शिवपूजन सहाय, देवेन्द्र सत्यार्थी आदि प्रतिनिधि रचनाकारों की 60 से अधिक कहानियाँ हैं। इनके अतिरिक्त इन खंडों में कन्हैयालाल माणकलाल मुंशी, गजानन माधव मुक्ति बोध, अयोध्या प्रसाद गोयलीय, गणेश शंकर विद्यार्थी, नलिन विलोचन शर्मा, प्रभाकर माचवे, रामविलास शर्मा, राहुल सांकृत्यायन, सुभद्राकुमारी चौहान, रामवृक्ष बेनीपुरी, हरिवंशराय बच्चन, जी.पी. श्रीवास्तव, बालशौरि रेड्डी सदृश ऐसे रचनाकारों की भी कहानियाँ शामिल हैं, जिन्हें हम साहित्य की अन्य विधाओं में अधिक सक्रिय पाते आये हैं। कमलेश्वर, देवीशंकर अवस्थी, अमरकान्त, बच्चन सिंह व राधावल्लभ त्रिपाठी के सारगर्भित आलेख इस कालखंड की कहानियों की सम्यक् पड़ताल करते हैं।

सुभद्राकुमारी चौहान, रामवृक्ष बेनीपुरी, हरिवंशराय बच्चन, जी.पी. श्रीवास्तव, बालशौरि रेड्डी सदृश ऐसे रचनाकारों की भी कहानियाँ शामिल हैं, जिन्हें हम साहित्य की अन्य विधाओं में अधिक सक्रिय पाते आये हैं। कमलेश्वर, देवीशंकर अवस्थी, अमरकान्त, बच्चन सिंह व राधावल्लभ त्रिपाठी के सारगर्भित आलेख इस कालखंड की कहानियों की सम्यक् पड़ताल करते हैं।

कथादेश' का चौथा और पाँचवाँ खंड '**नयी कहानी**' के उस दौर को समर्पित है जिसने सन् 47 में भारत की आजादी ने कथा-परिदृश्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। आजादी से पूर्व जिस समाज की परिकल्पना की गयी थी, गाँधी के सपनों के उस 'सुराज' की सम्भाव्यता पर सन्देह की छाया पड़ने लगी थी। दूसरे महायुद्ध, विभाजन व तज्जनित दंगों के परिदृश्य ने रचनाकारों में मोहभंग का बीजारोपण कर दिया।

पाँचवें दशक तक आते-आते इस प्रवृत्ति ने हिन्दी कहानी में 'अनुभव की प्रामाणिकता' को बल प्रदान किया और कहानी में नयी प्रवृत्तियों के उन्मेष ने 'नयी कहानी' आन्दोलन को हवा दी। राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश और कमलेश्वर इस आन्दोलन के झंडाबरदार बने। साथ ही, रेणु, निर्मल वर्मा, अमरकान्त, भीष्म साहनी, शेखर जोशी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी आदि की उपस्थिति ने इस कालखंड को हिन्दी कहानी का स्वर्णयुग बना दिया तथा 'कहानी' हिन्दी साहित्य की केन्द्रीय विधा बन गयी।

दोनों खंडों में राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, अमरकान्त, निर्मल वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, भुवनेश्वर, अमृत राय, उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, मार्कण्डेय, विजयदान देथा, कृष्णबलदेव वैद, गुलशेर खान शानी, शिवप्रसाद सिंह, शिवानी आदि की लगभग 70 कहानियाँ सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त ये दोनों खंड पाठकों को कुँवर नारायण, त्रिलोचन, धनंजय वर्मा, धर्मवीर भारती, बलराज साहनी, भैरवप्रसाद गुप्त, शमशेरबहादुर सिंह, हरिशंकर परसाई, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना आदि के कथाकार-रूप से भी परिचित कराते हैं। इन खंडों में 'नयी कहानी' आन्दोलन व इस दौर में लिखी गयीं कहानियों की पड़ताल करते आलोचनात्मक आलेखों को भी पर्याप्त स्थान दिया गया है। इन आलोचकों में नामवर सिंह, देवीशंकर अवस्थी, सुरेन्द्र चौधरी, राजेन्द्र यादव व रामदरश मिश्र के नाम प्रमुख हैं।

सन् साठ के बाद की कहानी को उसके विद्रोहात्मक तेवर के कारण पहचाना जाता है जिसकी पहचान कथा देश में साठोत्तरी कहानी के नाम से होती है। चीन का आक्रमण व नेहरू का पर्यावसान हिन्दुस्तानी इतिहास को निर्णायक मोड़ प्रदान करता है। विभाजन, फसाद, मोहभंग, यान्त्रिकता, सरकारी परियोजनाओं के प्रति असन्तोष, भ्रष्टाचार, लाल फीताशाही आदि के बीच घुटते हुए आम आदमी की नियति को साठोत्तरी कहानी ने स्वर दिया। पूर्ववर्ती राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर और मोहन राकेश ने 'नयी कहानी' का जो परचम ऊँचा किया था, साठोत्तरी कहानीकार उसके प्रति भी विद्रोह का रुख अपनाते दिख पड़ते हैं। कहानी में कथा-मात्र की उपस्थिति भी एक अतिरिक्त बोझ की तरह लगने लगती है एवं अ-कविता की तर्ज पर अ-कहानी का दौर शुरू होना भी माना जाता है।

'**कथादेश**' के छठे और सातवें खंड में छठे व सातवें दशक की लगभग 80 प्रतिनिधि कहानियों को शामिल किया गया है। इन रचनाकारों में ज्ञानरंजन, रवीन्द्र कालिया, काशीनाथ सिंह, दूधनाथ सिंह, राजकमल चौधरी, शैलेश मटियानी, श्रीलाल शुक्ल, विजयमोहन सिंह, विद्यासागर नौटियाल, असगर वजाहत, अवधनारायण मुद्गल, गंगाप्रसाद विमल, सतीश जमाली, से. रा. यात्री, कामतानाथ, गिरिराज किशोर, ममता कालिया, मनोहर श्याम जोशी, चित्रा मुद्गल, मुद्राराक्षस, रमेश बतरा आदि की प्रतिनिधि कहानियों को इन खंडों में जगह दी गयी है। विश्वनाथ त्रिपाठी, परमानन्द श्रीवास्तव, रामदरश मिश्र, शुकदेव सिंह आदि के आलोचनात्मक आलेखों ने इस दौर की कहानियों की प्रमुख प्रवृत्तियों का आकलन किया है।

साठोत्तरी कहानी के बाद से उन्नीसवीं सदी के आखिरी दशक तक लगभग तीन दशकों के कालखंड में लिखी जाने वाली कहानियों को '**कथादेश**' के '**समकालीन कहानी**' नामक सात खंडों में शामिल किया गया है। निकट अतीत की समयावधि में लिखी जाने वाली इन कहानियों की तादाद इतनी अधिक है कि इस खंड को 7 उपखंडों में विभाजित करना पड़ा। वस्तुत: भारतीय इतिहास में ये तीन दशक सर्वाधिक उथल-पुथल वाले रहे भी हैं। परिवर्तन इतनी त्वरित गति से हुए और उसके आयाम इतने बहुविध थे कि उन्हें साहित्य की किसी विधा में सम्पूर्ण रूप से दर्ज करना पहले-सा सरल नहीं रहा। अन्तिम दशक में भूमंडलीकरण व क्षेत्रीयतावाद, बाजार व उपभोक्तावाद, भावनाओं का वस्तूकरण, साम्प्रदायिकता का नवीनीकरण, पुनरुत्थानवादी ताकतों का उभार, राजनीति का अपराधीकरण आदि ने यथार्थ के एकांगी चेहरे को पूर्णतया बदल दिया।

इसी कालावधि में अस्मितावादी विमर्शों के अन्तर्गत स्त्री, दलित व आदिवासी चिन्तनों का उभार देखा गया। मंडल कमीशन तथा राजेन्द्र यादव के सम्पादन में 'हंस' का इसमें रेखांकनीय योग था। संकलित रचनाकारों की कहानियाँ इस दौर के कटु यथार्थ की विभिन्न प्रतिच्छवियाँ हैं। भाषा-शिल्प जैसे उपकरणों को यथार्थ के प्रकटीकरण के अनुरूप ढाला गया। कहन का लहजा परिवर्तित किया गया। समकालीन कथाकारों में स्वयं प्रकाश, उदय प्रकाश, अखिलेश, ओमप्रकाश वाल्मीकि, गोविन्द मिश्र, रमेश चन्द्र शाह, धीरेन्द्र अस्थाना, नासिरा शर्मा, प्रियंवद, मंजूर एहतेशाम, मनोज रूपड़ा, शशांक, संजीव, शिवमूर्ति आदि ने अपने समय के जटिल यथार्थ को कहानियों में दर्ज किया। इनकी कहानियाँ समकालीन जीवन के बीहड़ में साहसपूर्वक प्रवेश करती हैं और एक बेहतर निजाम वेफ लिए पूर्णतया प्रतिबद्ध होती हैं।

'कथादेश' के इन खंडों में लगभग 250 समकालीन कथाकारों की प्रतिनिधि कहानियाँ संकलित हैं। इनमें प्रमुख हैं- उदय प्रकाश, अखिलेश,

गोविन्द मिश्र, ओमप्रकाश वाल्मीकि, अब्दुल बिस्मिल्लाह, नासिरा शर्मा, मंजूर एहतेशाम, पंकज बिष्ट, प्रियंवद, शशांक, रघुनन्दन त्रिवेदी, रमेश चन्द्र शाह, संजीव, शिवमूर्ति, संतोष चौबे, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, स्वदेश दीपक, मुकेश वर्मा, योगेन्द्र आहूजा, प्रभु जोशी, मनोज रूपड़ा, अलका सरावगी, नवीन सागर, हरि भटनागर, देवेन्द्र, हिमांशु जोशी, गीतांजलि श्री, अवधेश प्रीत, जयनन्दन, धीरेन्द्र अस्थाना, नवीन कुमार नैथानी, आनन्द हर्षुल, कैलाश बनवासी, भगवान दास मोरवाल, राजू शर्मा आदि। इन खंडों को साहित्य की दूसरी विधाओं में अपेक्षया अधिक ख्यात विनोदकुमार शुक्ल, राजेश जोशी, विष्णु नागर, कुमार अम्बुज, कृष्ण कुमार, राधावल्लभ त्रिपाठी, ज्ञान चतुर्वेदी, ध्रुव शुक्ल, नरेन्द्र कोहली, पुरुषोत्तम अग्रवाल, प्रभात त्रिपाठी, ब्रजेश्वर मदान, यशवन्त व्यास आदि की कहानियाँ समृद्ध करती हैं।

समकालीन कहानी को विभिन्न कोणों से पड़ताल करते आलोचनात्मक लेखों में सुरेन्द्र चौधरी, गोपाल राय, शशांक, वरयाम सिंह, विनय दुबे, परमानन्द श्रीवास्तव, रमेश उपाध्याय, खगेन्द्र ठाकुर, अखिलेश, शम्भुनाथ, नीरज खरे, जयशंकर, शम्भु गुप्त, पल्लव, पुन्नी सिंह, कैलाश बनवासी, हरिओम राजोरिया, शशिधरन, ऋतु भनोट व राजीव कुमार के आलेख महत्वपूर्ण हैं।

कथा देश के आख़िरी चार खण्ड यानि क्रमश: 15, 16, 17 और 18वाँ खण्ड युवा कहानी को समर्पित है। बीसवीं सदी के अन्त तक यह तथ्य पूरी तरह स्वीकार्य हो चुका था कि हिन्दी कहानी इतनी सशक्त और सक्षम हो चुकी है कि उसका दर्जा आज विश्व की किसी भी महत्वपूर्ण या प्रतिष्ठित भाषा में लिखे जा रहे साहित्य के समकक्ष है। नयी सदी में कहानीकारों की एक नयी पौध आई, जिसने इस विधा में पूर्ववर्ती तमाम परिवर्तनों की निस्बत कहीं अधिक परिवर्तन घटित किया। चाहे वह कथ्य के चुनाव का सवाल हो या उसके अनुरूप भाषा-शैली का निर्माण, इस पीढ़ी ने कहानी के प्रत्येक उपकरण का नवीनीकरण किया। अनुभव के क्षेत्र अत्यन्त व्यापक व विस्तीर्ण हो चुके थे। नयी कथा-युक्तियों के प्रयोग का बाहुल्य लक्षित किया जा सकता था। भाषा में ताजगी व टटकापन विस्मित कर देने वाला था। साथ ही इस पीढ़ी में उन लोगों का भी शुमार किया जा सकता है, जो वैसे तो पिछली सदी के आखिरी दशक से लिख रहे हैं, लेकिन उनकी पहचान नयी सदी की इस नवागत पीढ़ी के साथ ही बनी।

'कथादेश' का युवा कहानी खंड 4 उपखंडों में विभाजित है, जिनमें युवी पीढ़ी के लगभग सवा सौ कहानीकारों की कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानीकारों में अल्पना मिश्र, नीलाक्षी सिंह, मनीषा कुलश्रेष्ठ, वन्दना राग, प्रियदर्शन, पंकज मित्र, प्रभात रंजन, मनोज पांडेय, गीत चतुर्वेदी, शशिभूषण द्विवेदी, चन्दन पांडेय, कुणाल सिंह, विमलचन्द्र पांडेय, अजय नावरिया, राकेश मिश्र, उमाशंकर चौधरी, रवि बुले, रणेन्द्र, पंकज सुबीर, तरुण भटनागर, बसन्त त्रिपाठी, कविता, गीताश्री, पंखुरी सिंहा, पराग माँदले, अनुज, आशुतोष, सत्यनारायण पटेल, सूरज बड़तिया, कैलाश वानखेड़े, सविता पाठक, सुभाषचन्द्र कुशवाहा, अरुणकुमार असफल, शिवेन्द्र, मानव कौल, किरण सिंह, प्रत्यक्षा, कबीर संजय, संज्ञा उपाध्याय, इन्दिरा दाँगी, उपासना, गौरव सोलंकी, योगिता यादव, ज्योति चावला, शर्मिला जालान, संजीव चन्दन, श्रद्धा थवाईत, राहुल सिंह, संजना तिवारी, दीपक श्रीवास्तव, हुस्न तबस्सुम निहाँ, राजीव वुफ्मार, हरिओम, सीमा शफक, सोनाली सिंह, सौमित्र आदि प्रमुख हैं। अभी भी ऐसे अनेक उदीयमान और सम्भावनाशील कथाकार रह गए हैं जो भविष्य में इस विधा का नाम-रौशन करेंगे लेकिन उन्हें नाउम्मीद होने की ज़रूरत नहीं है, 'आईसेक्ट' विश्वविद्यालयों का समूह और 'आईसेक्ट प्रकाशन' अपनी अगली साहित्यिक गतिविधियों में उन्हें बहुत प्रेम और आदर से याद करने की आयोजना निर्धारित कर रहा है।

इस पूरी कथा यात्रा में लब्धप्रतिष्ठ आलोचकों के साथ युवा प्रतिभावान युवा आलोचक भी हमारे साथ साथ चल रहे हैं। प्रारंभिक दिनों के भवदेय पांडेय और गोपाल राय से लेकर धनंजय वर्मा, नामवर सिह, सुरेंद्र चौधरी, विजय मोहन सिह, देवीशंकर अवस्थी, रामदरश मिश्र, विश्वनाथ त्रिपाठी जैसे प्रखर आलोचकों ने 'कथादेश' में स्थान पाया है। नये लोगों में विनोद तिवारी, राहुल सिह, जयशंकर, जीतेंद्र गुप्ता ने युवा कहानी का भाष्य करने की कोशिश की है। कथाकारों की ओर से राजेंद्र यादव, रवींद्र कालिया, कमलेश्वर, शशांक और संतोष चौबे के आलेखों में उनका पक्ष रखा गया है। 'कथादेश' में अन्य प्रदेशों की हिदी कहानी का पुरावलोकन भी है जैसे केरल की हिदी कहानी पर शशिधरन ने दृष्टिपात किया है तो पंजाब की हिदी कहानी पर ऋतु भनोट ने विचार किया है। भूमिका के अगले खंडों में मैंने इन्हीं आलोचकों के विचार लेकर एक ऐसा नरेटिव तैयार करने की कोशिश की है जिससे हिदी की पूरी कथा यात्रा का एक संक्षिप्त स्वरूप उभर सके।

कुल मिलाकर इस दौरान कथा भाषा अपना नया स्वरूप ग्रहण कर रही है और देश बहुत उम्मीद से इन युवा और युवतर कहानीकारों को देख रहा है जिनकी समय और समय को अभिव्यक्त करने की प्रतिभा और प्रासंगिकता, कहन की बहुस्तरीयता और विलक्षण प्रयोगधर्मिता ने आज कहानी को साहित्य के केन्द्र में स्थापित कर दिया है।

इस तरह ''कथा देश'' के अठारह खण्डों में उत्कीर्ण हिन्दी कहानी की जय-यात्रा के विविधवर्णी परिदृश्य को ना केवल विस्तारित किया गया है बल्कि अपनी भाषा के वक्त-वक्त पर प्रशंसा पाए सभी कथाकारों, आलोचकों, समीक्षकों और विचारकों को मान-सम्मान और आदर के साथ याद किया गया है। इस महत्वपूर्ण दस्तावेजीकरण में अखिल भारतीय स्तर के लेखकों के योगदान, परामर्श और सक्रिय सहयोग को हम कृतज्ञतापूर्वक सराहते हैं, स्मरण करते हैं और धन्यवाद देते हैं।

आज हिन्दी भाषा का कथा-साहित्य अपने रचनात्मक वैभव, संवेदनशील अनुभूतियों के सामर्थ्य और भावात्मक सौन्दर्य की सम्प्रेषणीयता के बल पर लगभग सौ-सवासौ वर्षों की छोटी समयावधि में जिस अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जा पहुँचा है, वह निष्चित ही सराहनीय और प्रशंसनीय है। इस आशातीत उपलब्धि के आधार पर सृजनधर्मी और संस्कृतिकर्मी संतोष चौबे ने हिन्दी भाषा के कथा-साहित्य के सम्पूर्ण कलेवर को समेटते हुए ''कथा देश'' के रूप में जिस महाकोश के निर्माण का स्वप्न देखा, उसे रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल के अंतर्गत वनमाली सृजन पीठ द्वारा अपने मित्रों, शुभचिंतकों और साथियों के संग-साथ और सहयोग से साकार किए जाने का प्रयत्न किया लेकिन कहानी की जय-यात्रा यहीं समाप्त नहीं होती। अभी संतोष जी की आँखों में सपने और भी है जिनसे कथा के अंतरिक्ष को विविध रंग में सजना-सँवरना है। दूसरे विश्व रंग के बाद अब तीसरे विश्व रंग के तहत कहानी विधा के विभिन्न आयामों पर कार्यवाही ज़ारी है और ''कथा विश्व'' की आयोजना पर काम चल रहा है।।

लेखक वरिष्ठ कथाकार, संपादक, समार्वतन हैं।
एफ-1, सुरेन्द्र गार्डन अहमदपुर होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)मोबाइल 9425014166

■

उपन्यास अंश सुविख्यात कवि, कथाकार, उपन्यासकार श्री संतोष चौबे द्वारा लिखित उपन्यास 'जलतरंग' का एक अंश

द्रुत

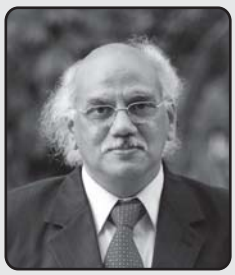

संतोष चौबे

असल में पिछले बीस वर्षों मे देवाशीष अपने काम और संगीत में इस कदर डूबा रहा था कि उसे मालूम ही नहीं पड़ा कि कब शहर ने उसे पूरी तरह से घेर लिया है।

उसके सुंदर से घर के उत्तर में, जहाँ पिता के द्वारा लगाया आम का पेड़ उसे अब भी सुकून देता था, एक बहुत बड़ी सरकारी कॉलोनी बन गई थी जिसमें करीब दो हज़ार से अधिक परिवार रहने लगे थे। उसके दक्षिण में निजी निवासों का जमघट खड़ा हो गया था और उसमें तरह-तरह के लोग रहने आ गये थे। क्योंकि इन दो। बसाहटों को जोड़ने वाली मेन सड़क अब देवाशीष के घर के बगल से गुजरती थी, उस पर सुबह से वाहनों का तांता लग जाता। दो पहिया और चार पहिया वाहन अनावश्यक रूप से इधर से उधर भागते रहते,या कम से कम देवाशीष को ऐसा ही लगता था। बाजार में तरह-तरह के हॉर्न आ गये थे जिन्हें दो पहिया चालक कुछ अधिक ही ज़ोर से बजाते। सुबह सात बजे से शुरू होने वाला यह सिलसिला रात में दस ग्यारह बजे तक चलता रहता।

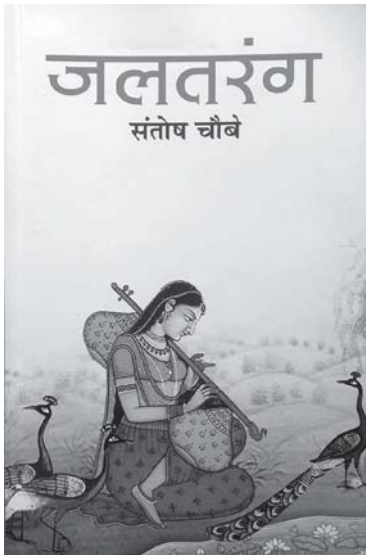

सबसे पहले देवाशीष और स्मृति का बालकनी में बैठना बंद हुआ। उसके बाद सुबह की चाय के साथ सुने जाने वाले भजन या सुबह के राग और उनको दिनभर की शक्ति प्रदान करने वाली ताज़गी भरी बातचीत भी बंद हुई। वे भीतर के कमरे में ही रहते और जल्दी जल्दी चाय तथा अखबार निबटा कर काम पर चले जाते। रियाज़ करने के लिए उन्हें सुबह पांच बजे उठना पड़ता या देर रात का इंतजार करना पड़ता और दोनों ही स्थितियों में उन पर थकान हावी हो जाती। घर के दरवाजे खिड़कियाँ अकसर बंद होते क्योंकि धूल और शोर प्रचुर मात्रा में आसपास फैला रहता।

देवाशीष का जीवन इस कदर सुर में था कि ट्रैफिक का यह शोर उसकी बर्दाश्त के बाहर होने लगा। वह एक सुंदर, संगीतमय व्यक्ति से चिड़चिड़े व्यक्ति के रूप में बदलने लगा। उसमें एक अजीब सा परिवर्तन आने लगा।

उसको हर तरह के शोर से दिक्कत होने लगी। घर के काम में अगर बाई बर्तन पटकती तो वह उस पर गुस्सा हो जाता, बगल के घर में अगर कुछ ठोकपीट होती तो वह उन्हें टोकने पहुँच जाता, सबह अगर पानी चढ़ाने वाली मोटर कुछ देर तक चलाई जाती तो उसे बेचैनी होने लगती। यहाँ तक कि अगर स्मृति पंखा भी तेज़ करती तो उससे बर्दाश्त नहीं होता, वह कहता, 'ये पंखा शोर कितना कर रहा है। तुम्हें कितनी हवा चाहिए? पहले भी तो हवा आ रही थी।'

स्मृति उसके स्वभाव में हो रहे इस परिवर्तन को देख रही थी। वह कुछ नहीं कहती, बस पंखा थोड़ा धीमा कर देती। बढ़ते शोर से वह खुद भी तो परेशान रहती थी।

शोर से अव्यवस्थित हुए अंतर्मन की प्रतिक्रिया में देवाशीष हर चीज को व्यवस्थित करने और रखने में जया रहता। वह अकसर अपनी किताबें, कैसेट्स और सी.डी., अखबारों और पत्रिकाओं, फर्नीचर और बिस्तर आदि को व्यवस्थित करने लगता। उसे कागज़ का एक टुकड़ा या चादर पर एक सिलवट तक खटकती। कई बार तो वह किचन में चला जाता और मसालों तथा नाश्ते के डिब्बों को तरतीब से सजाने लगा। खाते समय लोगों के मुँह से आने वाली कचर कचर की आवाज से वह चिढ़ जाता था और चाय सुड़कने वालों से तो वह बात करना ही बंद कर देता था। स्मृति कहती, 'ये तुमने क्या नई आदत पाल ली है? किचन मैं ठीक कर लूँगी। तुम अपनी किताबें देख लो।'

तो वह जवाब देता, 'मुझे घर में कोई भी चीज़ बेतरतीब अच्छी नहीं लगती।'

स्मृति थोड़ा झुंझला कर कहती- 'अब घर कोई म्युज़ियम तो है नहीं वह चलेगा तो अव्यवस्थित तो होगा ही।'

पर देवाशीष पर उसकी इस बात का कोई प्रभाव से नहीं पड़ता था वह ऑफिस आता तो घर व्यवस्थित करने में जट जाता। अब वे शाम के कार्यक्रम अकसर मिस करने लगे। स्मृति कभी कभी सितार लेकर बैठती। रविवार को नफीस खाँ साहब भी आ जाते पर देवाशीष का मन नहीं लगता था। वह पुस्तकों में ही उलझा रहता। वह शाम को घर के दरवाजे अकसर बंद रखने लगा क्योंकि वह ट्रैफिक का पीक टाइम होता था और सबसे ज्यादा शोर उसी समय होता था।

धीरे-धीरे देवाशीष एक प्रिय, संगीतमय, मीठे और सुंदर व्यक्तित्व चिड़चिड़े, उलझे हुए, गुस्सैल व्यक्तित्त्व में बदलने लगा। अब वह स्मति से संगीत पर नहीं शोर पर चर्चा करता था।

बहुत दिनों के बाद उस दिन देवाशीष अपनी बालकनी में सुबह-सुबह बैठा था।

कल रात वह पंडित जसराज का गायन सुनने गया था जिसकी अनुगूँज अभी भी उसके मन में बाकी थी। वह उनके हमीर और केदार को गुनगुनाता चाय का इंतजार कर रहा था कि अचानक करीब दो-ढाई सौ मोटरसाइकिलों ने धड़-धड़, धड-धड़। करते हुए बाजू वाले बहुमंजिला मकान पर दस्तक दी। पूरी सड़क पर और सामने वाले छोटे पार्क में मोटर साइकिलें

पार्क कर दी गई तथा लड़के लड़कियों के हँसी ठट्टे की आवाजों से आकाश भर गया।

देवाशीष ने खड़े होकर देखा। घर के बायें वाले बहुमंजिला मकान पर एक महाविद्यालय का बोर्ड लटक रहा था। तो क्या इस रिहायशी कॉलोनी के बीचोबीच यह कॉलेज बन गया? पहले जब भवन बन रहा था तब तो इस बारे में कोई घोषणा नहीं की गई थी। शायद इस बात को गुप्त रखा गया हो। यदि घोषणा होती तो शायद लोग आपत्ति लेते, अन्यथा किसी को क्या शंका हो सकती थी कि यहाँ कोई कॉलेज बन रहा है? देवाशीष का मन घबरा गया। तो क्या अब रोज नॉर्मल ट्रैफिक के शोर के साथ साथ इन दो-ढ़ाई सौ मोटर साइकिलों के शोर को भी सहन करना होगा?

आज कॉलेज का पहला दिन था। शायद कोई उद्घाटन समारोह भी आयोजित था। जल्द ही लाउडस्पीकर पर गांधी, सुभाष, टैगोर, तिलक आदि होने लगा। देवाशीष को समझ नहीं आया कि उन महान व्यक्तियों का इस घटिया से महाविद्यालय से क्या संबंध हो सकता था। जिसने कॉलेज खोला था वह देश की एक प्रमुख पार्टी का नेता था, जो स्वतंत्रता आंदोलन के बाद मिली सत्ता को अपनी बपौती मानती थी। 'दे दी हमें आजादी...''छोड़ो कल की बातें...', 'मेरे देश की धरती...' जैसे गीत जो खास ऐसे अवसरों या चुनाव के अवसरों पर ही बजाये जाते थे और जो अगर नॉर्मल वॉल्यूम और पिच पर बजाये जाते तो सुनने में अच्छे लगते, अब असहनीय शोर पैदा करने लगे। मुख्य अतिथि के साथ साथ कारों का एक काफिला भी आया जिसने सड़क पर संपूर्ण ट्रैफिक जाम की स्थिति पैदा कर दी। उनके आने के बाद स्वागत और भाषणों की श्रृंखला चली। सबसे पहले गुलदस्तों और फूलमालाओं से स्वागत किया गया जो देवाशीष को अनंत काल तक चलता प्रतीत हुआ। फिर कॉलेज समिति के सदस्यों के भाषण हुए। फिर कुछ स्थानीय नेताओं ने लंबे और उबाऊ भाषण दिये जिसमें इस कॉलेज को शहर के विकास का प्रतीक बताया गया। फिर एक राष्ट्रीय खिलाड़ी ने फीता काटकर, कैमरों और फ्लैश लाइट्स की भीड़ के बीच उसका उद्घाटन किया और अपनी टूटी-फूटी हरियाणवी हिन्दी में शुभकामनाएँ दी। फिर लड़के लड़कियों ने फिल्मी गीत गाये जो दोपहर तक चलते रहे। कॉलेज के सामने की सड़क नॉर्मल ट्रैफिक के लिए भी नाकाफी थी और ट्रैफिक रोज की तरह नॉर्मल था। सो बार-बार ट्रैफिक जाम होता रहा, दोनों ओर से गाड़ियों के हॉर्न चीखते रहे, चालकों में गाली गुफ्तार होता रहा। कुछ गाड़ियाँ रास्ता बदल कर देवाशीष के घर के सामने से भागने लगी जिससे शोर और अफरा-तफरी का माहौल बन गया। इस तरह कॉलेज उद्घाटित होता रहा।

कॉलेज संचालक को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। बल्कि वे प्रसन्न हुए कि उनके कॉलेज के उद्घाटन के समय इतना हंगामा हो रहा था। इससे तो उनकी प्रसिद्धि ही होने वाली थी। किसी ने पुलिस थाने को फोन कर दिया था। एक दो पुलिस वाले आये भी, पर घूम फिर कर चले गये। कोई खास बात नहीं थी। अभी तक मारपीट नहीं हुई थी। जाते जाते उन्होंने कॉलेज संचालक को नमस्ते किया और प्रेम से, उनके द्वारा दिया गया 'नाश्ता करके जाना' वाला ऑफर स्वीकार किया। ट्रैफिक यथावत रहा।

देवाशीष का दिमाग सुन्न हो गया, यह तो आज पहला दिन था। क्या ये कॉलेज रोज ऐसे ही चलेगा? क्या रोज इतना ही शोर होगा? फिर उसके अपने लिखने पढ़ने, उसके संगीत, उसके रोजमर्रा के मीठे जीवन का क्या होगा? क्या वह अपने इस प्यारे से घर में रह भी पायेगा?

क्यों नहीं, उसके दूसरे मन ने कहा। आखिर वह पच्चीस तीस सालों से यहाँ रहता आ रहा था। घर उसके पिता ने बनवाया था और उससे देवाशीष की सुखद स्मृतियाँ जुडी थीं। किसी को भी ये अधिकार नहीं था कि वह उसे इस घर से बेघर करता। नहीं, वह ऐसा नहीं होने देगा। वह कॉलेज संचालक से बात करेगा, उसने सोचा।

शाम को जब लाउडस्पीकर का शोर थम गया और मोटर साइकिलों ने अपने घर का रास्ता लिया तब कागज़ की जूठी उड़ती हुई प्लेटों, चाय के यहाँ वहाँ बिखरे प्लास्टिक के कपों, झंडियों और पन्नियों के अंबार के बीच से गुजरते हुए देवाशीष ने 'कॉलेज' में प्रवेश किया, जो वैसे तो एक बड़ा घर ही था और कॉलेज कहने मात्र से बदल नहीं गया था। अपने कार्यक्रम के सफल समापन के बाद कॉलेज के संचालक जीवन श्रीवास्तव अपने आठ दस चमचे जैसे सहयोगियों के साथ प्लास्टिक की कुर्सियों पर गोल बनाकर बैठे थे।

जीवन श्रीवास्तव की छवि एक उभरते हुए नेता की थी। वे प्रदेश के एक बड़े नेता के छर्रे के रूप में पहचाने जाते थे जो खुद बंदूक बनने की फिराक में था। अब उन्होंने सीधे-सीधे मारपीट में हिस्सा लेना बंद कर दिया था। ये काम उनके दूसरे तीसरे स्तर के सहयोगी ही कर दिया करते थे। वे अब 'रफी नाइट', 'कल्चरल प्रोग्राम', 'युवा महोत्सव', 'ब्लड डोनेशन कैंप', 'झंडा दिवस', 'ह्यूमन चेन' आदि का आयोजन किया करते थे और उनके माध्यम से समाँ बाँधे रहते थे। इन कार्यक्रमों में अनिवार्य रूप से शहर के वे बड़े नेता हिस्सा लेते थे, जिनके वे छर्रे थे। अब उन्होंने अपनी स्थायी आर्थिक सुरक्षा के लिए ये कॉलेज खोलना तय किया था

जिसके बाद वे खुलकर अपने बड़े नेता के जूतों में प्रवेश कर सकते थे जिनका फिलहाल इस कॉलेज को प्रश्रय प्राप्त था। तुलनात्मक रूप से जीवन श्रीवास्तव अन्य राजनीतिक कार्यकर्ताओं से ज्यादा समृद्ध और सुसंस्कृत माने जाते थे।

जब देवाशीष उनसे मिलने पहुंचे तो उन्होंने अपनी इसी सुसंस्कृति का परिचय दिया। अपने पास वाली कुर्सी खाली कराते हुए उसने कहा, 'आइये भाई साहब, आइये। आपके शुभ चरण हमारे कॉलेज में पड़े ये हमारा सौभाग्य है।'

देवाशीष ने अपने तेवर ढीले न करते हुए कहा, 'मुझे आपसे कुछ बात करनी थी।'

'हाँ, हाँ। कहिये न!'

'आपने ठीक रिहायशी कॉलोनी के बीच में अपना ये कॉलेज बना लिया है। आपने ये नहीं सोचा कि इससे कॉलोनी के लोगों को कितनी परेशानी होगी? सुबह से इतना शोर हो रहा है। मैं तो इसके कारण कुछ सोच समझ भी नहीं पा रहा, न ही आज अपने ऑफिस गया। बाकी लोगों को भी परेशानी तो हो ही रही होगी।'

'भाई साहब, अब कॉलेज-स्कूल जैसे संस्थान तो आबादी के बीच में ही खोले जायेंगे न!'

'पर उनके खोलने के कुछ तो नियम कायदे होंगे? जमीन लगेगी, मैदान लगेगा, कुछ खुला स्थान होगा, पार्किंग होगी। कॉलेज में पुस्तकालय और प्रयोगशालाएँ होंगी। आपने तो एक छोटे से घर में कॉलेज खोल लिया है। बच्चे

भी परेशान होंगे और सभी कॉलोनी वाले भी, रोज ट्रैफिक जाम होगा सो अलग।'

जीवन श्रीवास्तव अब थोड़े औपचारिक हुए, 'देखिये भाई साहब, विश्वविद्यालय ने अगर इस कॉलेज को संबद्धता दी है तो कुछ सोच समझ कर ही दी होगी। आपको अगर कुछ शिकायत हो तो विश्वविद्यालय से बात करें।'

जीवन नेतागिरी में आने से पहले विश्वविद्यालय में ही थे और वहाँ की सब तिकड़में जानते थे। वहाँ उनकी सेटिंग तगड़ी थी, देवाशीष ने कहा, 'विश्वविद्यालय से तो खैर मैं पूछूंगा ही। पर इस रोज रोज के भयानक शोर और ट्रैफिक जाम से तो आपको ही हमें बचाना होगा। आप पार्किंग का इंतजाम कीजिये, नहीं तो हम लोगों का तो यहाँ रहना ही मुहाल हो जाएगा।'

'देखिये भाई साहब, कॉलोनी की व्यवस्था देखने के लिए नगर निगम है और ट्रैफिक सम्हालने के लिए ट्रैफिक पुलिस। बाकी मैं भी कुछ प्रयास करूंगा।' फिर उसने आगे जोड़ा, 'पर भाई साहब, फिलहाल तो कॉलेज यहीं रहेगा।'

देवाशीष ने अंतिम कोशिश की, 'आप शहर के बाहर ज़मीन लेकर भी अच्छा कॉलेज बना सकते हैं।'

'उसके लिए भाई साहब पैसा चाहिए। बच्चों को शहर से बाहर बुलाने के लिए बड़ा इन्फ्रास्ट्रक्चर चाहिए। फिलहाल तो हम यहीं रहेंगे, आपके अच्छे पड़ोसी की तरह।'

देवाशीष ने कहा, 'ठीक है।'

उसके स्वर में एक चुनौती थी।

जीवन श्रीवास्तव ने एक अच्छे अंत की ओर बढ़ते हुए कहा, 'हम कोशिश करेंगे कि कॉलोनी वालों को बहुत परेशानी न हो। लीजिये, चाय लीजिये।'

देवाशीष का गुस्सा अभी ठंडा नहीं हुआ था। उसने उठते हुए कहा, 'जी नहीं, चाय फिर कभी। धन्यवाद।'

उसने पीठ फेरी ही थी कि एक ज़ोरदार ठहाका पड़ा। देवाशीष ने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

देवाशीष का रूटीन जो पहले बहुत सुंदर, मीठा और संगीतमय हुआ करता था अब सुबह सुबह करीब पांच बजे जीवन महाविद्यालय का चौकीदार अपनी पाँच हॉर्स पावर की मोटर चलाता जो सेकंड हैंड होने के कारण और बियरिंग घिस जाने के कारण, बहुत ही कर्कश शोर करती थी। भजनों या बिस्मिल्लाह खान की शहनाई के बदले देवाशीष मोटर की किर्र किर्र की भयानक आवाज से जागता। शुरू-शुरू में उसने एक दो बार चौकीदार से बात करने की कोशिश की, 'रामसिंह, तुम्हारी ये मोटर आवाज बहुत करती है।'

'भैया क्या करें, पुरानी है।'

'वो तो हम देख ही रहे हैं। सुबह के समय इसकी आवाज गूंजती भी बहुत है। इसे सुधरवाओ या बदलो।'

'भैया ये हमारे बस में नहीं। आप जीवन भैया से बात करो।'

जीवन का नाम आते ही देवाशीष को उसकी विद्रूप भरी हँसी याद आती थी। वे उससे नहीं मिले। मिलते तो भी कोई फायदा नहीं होता। मोटर सुबह एक घंटे, अपनी कर्कश आवाज में, वैसे ही चलती रही।

अभी ज़रा सा चैन मिलता ही था कि आठ बजे से लड़कों की मोटर साइकिलें आना शुरू हो जाती। कॉलेज के पास आकर, विशेष कर लड़कियों के सामने, वे और करतब दिखाते। बाईक को तेज गति से लाकर अचानक ची... की आवाज के साथ ब्रेक मारना, तेजी से एक्सीलरेटर देते हुए यूँ धूँ...धूँ की आवाज कर लड़कियों को आकर्षित करना, गोल गोल चक्कर मारकर बैलेंसिंग के खेल दिखाना इसमें शामिल था।

लगभग साढ़े दस बजे जब देवाशीष ऑफिस जाने के लिए घर से बाहर निकलते तो अजीब नज़ारा होता। सामने वाले पार्क में लड़के लड़कियाँ जोड़ियों में बिखरे रहते, आसपास के ठेले पर लड़के हा-हा, हू-हू करते दिखते। चाय के साथ सिगरेट और गुटखे वाले भी आ खड़े हुए थे। अब सिगरेट का धुआँ, सिगरेट के बड्स और गुटखे के पाउच बड़ी मात्रा में उनके घर के आसपास पाये जाते।

कक्षा छूटने पर ढेर सारी मोटर साइकिलें सड़क पर आ जाती। हर समय डर लगा रहता कि कोई बाईक सवार कट ना मार दे। मुहल्ले के घरों में काम करने वाली युवा बाईयों को, जो खुद भी अजीब तरह से झूलती हुई चलती थीं, कट मारना कॉलेज के लड़कों का फेवरिट पास्ट टाइम था, कभी कभी इससे गंभीर हादसे भी हो जाते।

शाम को वे लौटते तो ट्रैफिक अपने पूरे शबाब पर होता। बालकनी में बैठना तो वे पहले ही बंद कर चुके थे। स्मृति से कला और संगीत पर बातचीत भी अब लगभग बंद सी थी। वे कार्यक्रमों में अब भी कभी-कभी जाते थे पर संगीत को लेकर वह मिठास अब उनमें देखने न मिलती थी। रात में दस बजे के बाद ट्रैफिक का शोर कुछ कम हो जाता, तो वे पढ़ने बैठते और अकसर देर रात तक जागते रहते।

सुबह फिर, कॉलेज की पानी भरने वाली मोटर की आवाज, करीब पाँच बजे उनकी नींद तोड़ देती। इस तरह अकसर उनकी नींद पूरी नहीं हो पाती थी। अब वे एक सुंदर और मीठे व्यक्ति के बदले चिड़चिड़े और झुंझलाये व्यक्ति के रूप में बदलने लगे जिसका गुस्सा उसकी नाक पर रहता था।

उस इलाके में एक प्रमुख राजनीतिक पार्टी के नेता के कॉलेज का खुलना, उस कॉलेज में युवाओं का आना जाना और उसके प्रभाव क्षेत्र का विस्तार होना, एक और आदमी को नागवार गुजरा था। वे थे त्रिपाठी जी। दुर्गा प्रसाद त्रिपाठी। देवाशीष के सामने वाले पार्क में नियमित रूप से गणेशजी और दुर्गाजी की स्थापना करना, भजन कीर्तन तथा भागवत के नियमित आयोजन करना तथा बीच बीच में सत्तासीन पार्टी का चुनाव अभियान चलाना उनका प्रमुख कार्य था। दुबली पतली काया, चेहरे पर बहुत पुराने चेचक के दाग, मोटे चश्मे में से झाँकती आँखें और उनमें से झांकती चालाकी, जिसे अंग्रेजी में 'कनिंग नेस' कहा जाता है। आठ-दस लड़के उनके साथ भी रहा करते थे हालाँकि देवाशीष को कभी ये समझ नहीं आया कि वे लड़के करते. क्या थे? त्रिपाठी जी खुद सचिवालय के किसी विभाग में काम करते थे।

तो जीवन श्रीवास्तव के बढ़ते प्रभाव का आकलन करने एक दिन त्रिपाठी समूह उनके घर पर इकट्ठा हुआ। एक लड़के ने शुरुआत करते हुए कहा, 'भैया ये जीवन आजकल बहुत ऊँचा उड़ रहा है।'

त्रिपाठी ने कहा, 'चिंता मत करो, उसके पर तो कभी भी कतर देंगे। तुम तो ये बताओ कि हमें क्या करना है?'

'भैया जहाँ प्रतिमा बिठाते हैं वहाँ चबूतरा तो बना ही लिया है। पेड़ के

नीचे एक शेड भी डाल लिया है। वहीं मंदिर का पक्का निर्माण करते हैं। एक तो मुहल्ले वालों के आने जाने की जगह बनेगी। फिर वार-त्यौहार भी मना सकते हैं।'

त्रिपाठी ने सहमति में सर हिलाया। एक दूसरे लड़के ने कहा, 'भैया, आप अगर पार्क अलॉट करवा लें तो हम मंदिर के साथ साथ स्कूल खोलने के बारे में भी सोच सकते हैं।'

त्रिपाठी जी को ये आइडिया पसन्द आया। उन्होंने कहा, 'ठीक है, मैं पार्षद जी से बात करूँगा। वे अपने आदमी हैं। अपने पास युवा कल्याण समिति है। उसी के नाम से पार्क अलॉट करवाते हैं। एक बार पर्क अपने हाथ में आ गया तो फिर दोनों काम हो जायेंगे।'

निर्णय लेने के बाद वे काम पर लगे। 'युवा कल्याण समिति की ओर से आवेदन बनाया गया। पार्षद महोदय ने उनकी सिफारिश की और निगम की अगली बैठक में जनहित कार्यों के अंतर्गत सार्वजनिक कार्यों के लिए पार्क अलॉट कर दिया गया। वैसे तो जीवन श्रीवास्तव की निगाह भी पार्क पर थी, कि उसे भी खेल का मैदान बनाने के लिए पार्क चाहिए था। पर जीत त्रिपाठी जी की हुई। नगर निगम उनकी पार्टी के हाथ में था। उनकी सोसायटी को पार्क अलॉट कर दिया गया।

पार्क हाथ में आते ही जो पहला काम उन्होंने किया वह यह था कि पहले से बने कच्चे शेड को एक बड़े हॉल में बदला और पार्क को शादियों के लिए किराये पर देना शुरू किया। उन्हें उम्मीद थी कि इस तरह वे मंदिर निर्माण के लिए पैसा इकट्ठा कर पायेंगे। साथ ही मंदिर निर्माण के नाम पर चंदा इकट्ठा करना भी शुरू किया गया।

शहर का इतना विकास हो चुका था कि मध्य वर्ग या उच्च वर्ग के लोग भव्य होटलों या शादी गार्डन्स में शादी कर सकें। पर निम्न वर्ग या निम्न मध्य वर्ग अभी भी सार्वजनिक पार्कों पर निर्भर करता था। उन्होंने देवाशीष के सामने वाले पार्क को, जिसे प्रारम्भ में घर बनवाते समय देवाशीष के पिता ने अत्यंत शुभ माना था, बहुत पसन्द किया और उसे हाथों हाथ लिया। अब वहाँ आये दिन शादियाँ, जन्मदिन की पार्टियाँ और छोटे मोटे उत्सवों का आयोजन होने लगा। बाकी दिनों में त्रिपाठी जी विभिन्न धार्मिक आयोजनों में उसका उपयोग करते थे। इस बीच वहाँ एक छोटा सा मंदिर भी बन गया था।

कॉलेज के खुलने से देवाशीष का दिन का चैन तो पहले ही चला गया था। अब पार्क के सार्वजनिक प्रयोग, शादियों और मंदिर ने उनकी शाम-रात की बची खुची शांति भी छीन ली।

अकसर अगले दिन की शादी के लिए रात में एक दो बजे के आसपास टेंट गाड़ना शुरू होता। पहले एक ट्रॉली रात करीब बारह बजे माल गिराने आती और फोल्डिंग टेबलों को पटकने, टेंट के पाइप्स को जोर जोर से पटकने और मजदूरों के हँसी उडे की आवाजें रात की तुलनात्मक शांति में गहरे आघात करती। फिर पाइप गाड़ने की प्रक्रिया शुरू होती। रात को एक बजे के आसपास, जब देवाशीष और स्मृति थक हार कर सोना चाहते तो पाइप पर, नियमित अंतराल पर घन की चोट की आवाज, टन्न...टन्न...टन्न, जैसे उसके दिमाग़ पर हथौड़े की चोट की तरह लगती। देवाशीष कई बार झुंझला कर मजदूरों को टोकने भी जाता।

'आप लोग इतना शोर कर रहे हैं। आसपास के लोग सो कैसे पायेंगे?'

मजदूर वैसे ही बीड़ी फूंकते, मोबाइल पर बात करते, हँसी ठट्ठा करते अपना काम करते रहते।

देवाशीष फिर कहता, 'आपने सुना नहीं ये पाइप ठोंकना बंद करिये।'

'भाई साहब कल शादी है। अभी नहीं ठोकेंगे तो सुबह तक टेंट तैयार कैसे होगा?'

'मैं नहीं जानता। आप फिलहाल काम बंद करिये। आप लोग दिन में काम करियेगा।'

कहकर देवाशीष पलटता। मजदूर कुछ देर काम बंद रखते। फिर उनका सुपरवाइजर बाइक पर राउंड मारने आता।

'क्यों रे, काम क्यों बंद कर दिया?'

'भैया वो सामने वाले साहब मना कर रहे है।'

'अरे वो साहब की तो ऐसी तैसी... तुम काम जारी रखो। मैं उसे देख लूंगा।'

हथौड़े फिर चलने लगते। टन्न...टन्न...टन्न...

देवाशीष रात भर सो नहीं पाता।

सुबह उसके घर के दाहिनी ओर एक पानी का टैंकर खड़ा मिलता। जिसमें से पानी बहते बहते दोपहर तक घर के सामने किच किच मच जाती। पार्क के कोने में खाना बनाने की तैयारी शुरू होती और प्याज और मटर के छिलकों, आलू की कतरनों और पन्नियों, टिनों और बोरियों का ढेर लग जाता। जहाँ खाना बनता है वहाँ आवारा कुत्ते पहुँच ही जाते हैं। सो वे पहुंचते और धमाचौकड़ी मचाने लगते।

पर असली आफत यानी बारात आनी अभी बाकी रह जाती। नींद न होने के कारण दिन भर का चिड़चिड़ाया देवाशीष जब घर लौटता तो बारात आने का समय हो जाता। पार्क का मेनगेट उसके घर के सामने ही खुलता था। जैसे जैसे बारात गेट की तरफ बढ़ती, बारातियों का जोश बढ़ता जाता। पहले गैस लाइटें, बैंड और डी.जे. पहुँचते और भयानक अफरा-तफरी मचा देते। जैसे यह काफी न हो अंतिम समय में ढोल वाले भी टूट पड़ते जो आग में घी का काम करते।

अब बैंड वालों की बेसुरी धुनें, डी.जे. का हज़ारों किलोवॉट का भद्दा और कर्कश गायन तथा ढोल वालों की आड़ी टेढ़ी बीट्स भयानक और वीभत्स किस्म का शोर पैदा करते। बारात आकर ऐन देवाशीष के घर के सामने रुक जाती। बाराती, विशेषकर युवा, जिनमें से अधिकतर नशे में होते, अब विभिन्न किस्म के नृत्य करते और दरवाजे पर खड़ी लड़कियों को प्रभावित करने की कोशिश करते। डी.जे. अपने हाथ को की-बोर्ड पर घसीट कर अचानक ऐसे रोकता जैसे कोई तेज गति की कार अचानक स्क्रीचिंग साउंड के साथ ब्रेक लगाये। एक तीखी, असहनीय और कर्कश आवाज होती। फिर वह घोषणा करता 'बदन पे सितारे...' या 'बोलो तारा रा रा...' या 'नागिन डांस...' और पूरा बैंड अचानक नया गीत शुरू करता। उसी के साथसाथ डांसिंग टीम भी नयी हरकत में आ जाती। धीरे-धीरे शर्ट की बटनें खुल जाती और सीने से सीने टकराने लगते। बारात की लड़कियाँ भी थिरकती हुई, अपनी चिपकी हुई साड़ियों में से झाँकते, छुपे हुए सेक्सी अंदाज़ में डांस करने वाले लड़कों को घेर लेती। लड़कों का जोश थोड़ा और बढ़ जाता। तब फरमाइश पर नागिन डांस

शुरू होता । रूमाल बाहर निकल आते और लड़के एक दूसरे के ऊपर झुक झुक कर, सीने से सीने टकराते हुए और बाँहों को हवा में थिरकाते हुए जोशीला नृत्य करने लगते। नशे और जोश में एक दो लड़कों का गिर जाना, पसीना पसीना होने के बाद छाती के सारे बटनों का खुल जाना, बाँधे हुए साफों का जमीन पर गिरना और एक दो लोगों का कोने में जाकर उल्टी करना जैसे अशोभनीय दृश्य प्रस्तुत होते ही रहते थे। पर लड़कों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। फिर क्लाइमैक्स में 'ये देश है वीर जवानों का...' बजता। लड़के फिर सीने से सीने टकराते और अश्लील इशारे करते। लड़कियों के खेमे से भी जानदार टिप्पणियाँ होती जो फुसफुसाहटों में बदल जाती। लड़के नाचते ही रहते जब तक लड़की का बाप दूल्हे को अंदर नहीं ले जाता। और ये प्रक्रिया घंटों चल सकती थी। बहुत मान मनौव्वल के बाद दूल्हा घोड़े से उतरता और उसके उतरते ही ढोल वाले और ज़ोर से शुरू हो जाते। शादियों के सीजन में ये हंगामा लगभग रोज बरपा होता।

मेहमानों की गाड़ियाँ, स्कूटर और बाइक्स पार्क को चारों ओर से घेर लेते। सड़क का नॉर्मल ट्रैफिक रुक जाता या बेतरतीब हो जाता। चीं-चीं, पीं-पीं, लड़ाई-झगड़ा, गाली-गुफ्तार, हुज्जत-मलामत के बीच अब खाना शुरू होता। डी.जे. अब पंडाल के भीतर शुरू होता और रात बारह बजे तक खाने पीने के साथ फिल्मी गानों का सिलसिला,हज़ारों वॉट के म्यूजिक सिस्टम के साथ अबाध रूप से चलता रहता। उन गानों को सुन सुन कर देवाशीष के कान पक गये थे और दिमाग सुन्न हो गया था।

मजे की बात ये थी कि शादी की समाप्ति के बाद भी शोर समाप्त नहीं होता। रात बारह बजे के बाद जब देवाशीष और स्मृति सोना चाहते तो टेंट खुलना शुरू होता। फिर वही पाइपों और टेबलों का पटका जाना, हथौड़े की टन्न...टन्न...टन्न, ट्रॉली के भरने की आवाज, मजदूरों का सामान्य हँसी ठट्ठा, रात भर गाड़ियों की आवाजाही और अनिवार्य रूप से एक दो लड़ाइयाँ, ऐसे में नींद क्यों आती ?

सुबह उससे भी भयानक होती। सामने का पार्क जैसे युद्ध के बाद के मैदान में तब्दील हो जाता। चारों तरफ जूठे गिलासों, कागज़ की प्लेटों, प्लास्टिक के चम्मचों और जूठन का साम्राज्य बिखरा रहता, जो हवा के साथ उड़ उड़ कर देवाशीष के घर के सामने इकट्ठा हो जाता। जूठे और बासे खाने की गंध पूरे मोहल्ले में फैल जाती। स्वाभाविक रूप से वह आवारा कुत्तों और गायों तक पहुंच जाती जो टूटी हुई तार फेंसिंग के बीच से पार्क में घुस जाते। तब उनकी लड़ाई, भौं-भौं, कौं-कौं के बीच लगातार चलती। कुत्तों के जाने के बाद सुअरों का नंबर आता जो धमाचौकड़ी मचाने के बाद किसी पेड़ के नीचे टैंकर द्वारा पैदा की गई गीली किचकिच में, विश्राम करने लगते थे।

ऐसे ही एक शाम पास की बस्ती की एक बारात आकर देवाशीष के दरवाज़े पर रूकी और लगभग एक घंटे तक रुकी ही रही। डी.जे. ने तमाम फूहड़ गानों की इंतिहा कर दी। नागिन डांस और बहारो फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है से आगे बढ़कर बात, ये देश है वीर जवानों का... तक आई और सीने और बाँहें थरथराने लगे। उसी समय ढोल वाले बीच में कूदे और उन्होंने शोर तथा एकरसता को असहनीयता की हद तक बढ़ा दिया। देवाशीष अपनी बालकनी में बैठा था और बेचैनी से बारात के गुज़र जाने और शोर के कम होने का इंतज़ार कर रहा था। पर बारात आगे नहीं खिसकी बल्कि आतिशबाजों ने वहाँ धमाकेदार आतिशबाजी शुरू कर दी। वैसे देवाशीष शालीन आदमी था, पर जाने क्या हुआ कि उस दिन उसका दिमाग सनसना गया। वह सनसनाते हुए नीचे आया, बारात को चीरते हुए बीच में गया और गले की पूरी ताकत लगाकर बोला, 'बंद करो...'

पहले पहल किसी के समझ नहीं आया कि ये कौन आदमी है और क्या कर रहा है। लड़की वालों ने समझा कि शायद बारात की तरफ का ही कोई आदमी है जो गाना बदलने की आवाज लगा रहा है। लेकिन जब उसने ढोल वालों को धकियाते हुए डी.जे. के हाथ से माइक छीन लिया तो बारातियों को समझ में आया कि कोई बाहरी आदमी है। बारात के कुछ लड़के उसकी ओर लपके,'कौन है बे मादर...'

अभी उस पर दो चार हाथ पड़ते कि इसके पहले बारात में कुछ बुजुर्गों ने उसे पहचान लिया।'अरे जोशी जी आप ? क्या बात है...'

'बात ये है कि आप करीब एक घंटे से मेरे घर के सामने भयानक शोर किये जा रहे है। इसे बंद करवाइये...'

लड़के थप्पड़ लगाने के लिए आतुर थे। बुजुर्गों ने उन्हें बचाते हुए कहा, 'अरे अपने जोशी जी हैं। शोर से थोड़ा परेशान हो गये हैं। चलो बारात आगे बढ़ाओ...'

फिर वे देवाशीष को घेर कर उसे घर के भीतर कर आये। बैंड थोड़ी देर और बजा फिर बारात पार्क में प्रवेश कर गई।

देवाशीष रात भर ठीक से सो नहीं पाया। सुबह उठा तो हमेशा की तरह कचरे का ढेर सामने था जिसमें से उड़ उड़कर कचरा घर के भीतर आ रहा था। कुत्ते, गायें और सुअर सामने पार्क में प्रवेश कर चुके थे और उनकी भौं-भौं, खौं-खौं, मची हुई थी।

उसका पारा एक बार फिर सातवें आसमान पर चढ़ गया। उसने पैरों में चप्पल डाली और सीधे त्रिपाठी के घर पहुंचा। वे बरामदे में बैठे चाय पी रहे थे। उन्होंने चाय का कप रखा और हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ाया, 'आइये आइये जोशीजी आज सुबह सुबह कैसे...'

त्रिपाठी के चेहरे पर औपचारिक स्वागत के भाव थे। देवाशीष ने कुछ नहीं कहा, बस त्रिपाठी का हाथ पकड़ा और लगभग खींचते हुए कहा, 'आप मेरे साथ आइये।'

पहले तो त्रिपाठी थोड़ा सकपकाये। फिर धीरे से हाथ छुड़ाकर बोले, 'आप गुस्से में लग रहे हैं। कहाँ चलना है ?'

'यहीं अपनी कॉलोनी के पार्क तक'

देवाशीष उन्हें पार्क तक लाया और बोला, 'देखिये, ये क्या है ?'

त्रिपाठी ने कहा, 'अब भाई साहब शादी ब्याह में कचरा तो हो ही जाता है'

'कचरा हो ही जाता है का क्या मतलब ? अगर हो जाता है तो आप साफ करवाइये। पैसा भी आप ही लेते हैं।'

'नाराज़ क्यों हो रहे हैं भाई साहब। मैं स्वीपर को देखता हूँ।'

अब देवाशीष का गुस्सा फट पड़ा।

'मैं नाराज़ भी न होऊँ ? दो रातों से यहाँ टेंट को ठोकने और निकालने की टन्न...टन्न मची हुई है, कल शाम बारात और मोटरगाड़ियों ने भारी अफरा तफरी मचायी। रही सही कसर डी.जे., ढोल वालों और आतिशबाजों ने

पूरी कर दी। अब सुबह-सुबह गंदगी और कचरे के ढेर मेरे घर के सामने लगे हुए हैं। कचरा उड़ उड़ कर मेरे घर में घुसा जा रहा है। इस सबके लिए कौन जिम्मेदार है? आप मगर आप ज़िम्मेदारी लेने के बदले कह रहे हैं मैं गुस्सा न होऊँ। मुझे कम से कम नाराज तो होने दीजिये।'

त्रिपाठी मंजा हुआ खिलाड़ी था। उसने देवाशीष की नाराज़ी का बहुत बुरा नहीं माना कहा, 'अरे भाई साहब आप तो हमारे मोहल्ले के सिरमौर हैं। मगर आप है बहुत सेंसिटिव। मैं देखता हूँ सफाई वाले को। आप घर जाइये, चाय वाय पीजिये...।'

देवाशीष अभी घर जाने को मुड़ा ही था कि मोहल्ले के घरों में काम करने वाली दो तीन बाईयाँ, हाथ में कचरे से भरी प्लास्टिक की थैलियाँ लेकर गुजरी। उन्होंने इधर उधर देखा और फिर हाथ घुमाकर कचरे की थैलियों को वहीं पार्क के कोने में फेंक दिया। वे रोज सुबह ऐसा करती थी और देवाशीष रोज रात में, लोगों की आँख चुराकर कचरा इकट्ठा करता था और उसे आग लगाता था। कचरा इकट्ठा करने की कोई खास व्यवस्था मोहल्ले में नहीं थी।

देवाशीष ने उन बाईयों को गुस्से से देखा पर बोला कुछ नहीं। उनमें से एक ने कहा, 'देखो तो कैसे घूर रहा है जैसे खा ही जाएगा।'

दूसरी ने कहा, 'चलो, चलो इसकी तो रोज़ की टोका-टाकी की आदत है।'

उन्होंने देवाशीष को देखकर एक चिढ़ाने वाली हँसी, हँसी और अपने झूलते हुए अंदाज़ में आगे बढ़ गई।

देवाशीष ने पूरे परिदृश्य पर एक उचटती सी निगाह डाली और घर के भीतर आ गया। उसके जीवन से संगीत गायब हो गया था। कचरा और शोर, बस यही बाकी रह गया था।

देवाशीष कुछ सोचता सा आकर अपनी बालकनी में बैठ गया।

आज स्मृति भी उसके पास आ बैठी। कुछ देर चुप रहने के बाद उसने कहा, 'सुनो आशीष, मैं तुम्हारा कष्ट समझती हूँ।'

देवाशीष की आँखों में अनायास ही आँसू छलछला आये। उसने कहा, 'कितना शांत और सुंदर था हमारा घर। छोटा सा लेकिन संगीतमय था हमारा संसार। पर अब इस भयानक शोर ने हमें चारों ओर से घेर लिया है। न मैं कुछ पढ़ पाता है और न ही एकाग्र रह पाता है। संगीत तो जैसे बहुत दूर हो गया है। मैं विरोध करता हूँ पर जीतना मेरे बस में नहीं लगता। यह बेबसी मुझे और निराश तथा हताश करती है। हम ऐसे ही शहर बनाते चले जा रहे है। विकास के नाम पर बेतरतीब आबादी ट्रैफिक भयानक शोर मैं कुछ भी सोच समझ नहीं पाता। एक अनबूझ सा गुस्सा मन में लगातार बना रहता है, एक थकान सी तारी रहती है, हमारा समाज क्या ऐसे ही धके और चिड़चिड़े लोगों का समाज नहीं बन गया है...'

स्मृति ने उसे समझाते हुए कहा,'देखो आशीष, मैं देख पाती हूँ कि तुम कितने बदल गये हो और हमारा वातावरण भी बेहद तेज गति से बदल रहा है। मैं खुद भी इस शोर से परेशान हूँ। पर मैं तुम्हें इस तरह घुल घुल के खत्म होते देखना नहीं चाहती। तुम विरोध करों। पर अकेले नहीं। ऐसे तो तुम कभी जीत नहीं पाओगे। तुम मोहल्ले के और लोगों को भी साथ लो। आखिर वे भी तो परेशान होंगे। तुम उनसे और अपने दूसरे दोस्तों से बात क्यों नहीं करते?'

देवाशीष को ये बात कुछ समझ में आई। उसने ऑफिस पहुंचकर पहला काम ये किया कि एक महीने की छुट्टी ली। फिर वह दोस्तों से संपर्क में लगा।

सबसे पहले उसने अपने मित्र डी.आई.जी. । दाते से बात की। वे कला संस्कृति में रुचि रखते थे. ग़ज़लें लिखते थे और कभी कभी म्यूजियम भी आते थे। वे बहुत प्रेम से मिले। नमकीन काजू के साथ उसे चाय पिलाई फिर पूरी बात सुनकर कहा, 'देखिये जोशी जी। आप मेरी बात मानें, तो अपना घर बदल लें।'

'जी?'

'मेरी तो यही सलाह है। मैं त्रिपाठी पर थोड़ी सख्ती कर सकता हूँ-पर वह नगर निगम की परमिशन दिखा देगा। ज्यादा कहेंगे तो पार्टी के पास चला जाएगा और वहाँ से फोन आ जाएगा। जीवन श्रीवास्तव को हम थोड़ा हड़का सकते है, पर उसके ऊपर भी एक बड़े नेता का हाथ है। वे सत्ता में नहीं है पर प्रदेश में खब दखल रखते हैं। अगर उनका फोन आ गया तो सख्त एक्शन उस पर भी नहीं होगी।'

'मतलब मैं ही सबसे कमजोर आदमी है? मैं अपने पिता द्वारा बनवाये घर में शांति से नहीं रह सकता? इस घर से मेरे जीवन की स्मृति जुड़ी हुई है। मैंने कोई ग़लती भी नहीं की है। त्रिपाठी और जीवन दोनों ही मुहल्ले की शांति और व्यवस्था भंग कर रहे हैं, मुझे दबा धमका रहे है पर आप मुझे ही सलाह दे रहे हैं कि मैं घर बदल लूं? मैं घर क्यों छोड़ूँ?'

'देखिये जोशी जी, आप इमोशनल तरीके से सोच रहे हैं, मैंने तो वास्तविकता बताई है। मैं इन दोनों को जानता हूँ। दोनों हद दर्जे के कमीने हैं। आपके कहने से मैं उन्हें फोन जरूर करुंगा पर ज्यादा कुछ होगा इसकी उम्मीद मत रखियेगा। आप दो तीन काम और कर सकते हैं। क्योंकि कॉलेज का मामला है, उसकी शिकायत आप यूनिवर्सिटी में करिये। वे कुछ एक्शन ले सकते हैं। दूसरे, अगर किसी मीडिया वाले को जानते हैं तो उससे बात करिये। शायद मीडिया के प्रेशर से कुछ बात बने। अपने मुहल्ले वालों से बात कर एक शिकायत मुझे भी भेजिये। मैं देखता हूँ क्या कर सकते हैं।'

देवाशीष समझा। चोरी, मर्डर, बलात्कार, रोड साईड क्राइम, राजनीतिक दबाव और उपकारों से दबी पुलिस के लिए शोर कोई बड़ी समस्या नहीं थी। नागरिकों के जीवन में गिरावट और प्रसन्नता का लोप तो ऐसे दार्शनिक सवाल थे जो उन्हें छू तक नहीं गये थे। पर खुद उसने अपने प्रयास नहीं छोड़े।

देवाशीष मुहल्ले के एक पत्रकार बंधु को जानता था। वे भी गाहे बगाहे उससे मिलते रहते थे। कभी म्यूज़ियम की गतिविधियों को कवर करने, कभी विज्ञापन लेने, वे आते ही रहते थे। देवाशीष ने उन्हें फोन किया, उधर से आवाज आई, 'कैसे हैं भाई साहब? मैं खुद भी आपसे मिलना चाह रहा था।'

'आइये, एक कप कॉफी पियेंगे।'

पत्रकार तिवारी, देवाशीष से मिलने पहुंचे। देवाशीष ने उन्हें पूरी बात सुनाई जो उन्होंने पूरी गंभीरता से सुनी। बीच बीच में जीवन श्रीवास्तव और त्रिपाठी जी के बारे में भी कुछ किस्से सुनाये, चटखारे लिए। फिर देवाशीष से सहमत होते हुए कहा, 'सर, वाकई है तो बड़ी परेशानी। आजकल सामान्य नागरिकों की सुविधा का तो कोई ध्यान ही नहीं रखता। मैं इसके बारे में कुछ और जानकारी इकट्ठी करता हूँ। दोनों की फाइल बनाते हैं। एक बिल्कुल नई तरह की खबर बनेगी।'

पत्रकार मित्र ने नगर निगम से जीवन की बिल्डिंग का नक्शा निकलवाया और त्रिपाठी को दी गई अनुमति की कॉपी प्राप्त की। यूनिवर्सिटी से कॉलेज का रिकॉर्ड निकाला। भीड़ और अफरा-तफरी के फोटो खींचे। इस तरह एक भारी भरकम फाइल तैयार हो गई। वह बीच बीच में देवाशीष को बताता रहता।

'देखिये भाई साहब, जीवन ने नगर निगम से प्राप्त अनुमति से दोगुना कंस्ट्रक्शन कर लिया है।' या 'यूनिवर्सिटी ने इसे तीस सीटें ही दी थीं पर इसने एक सौ बीस बच्चे भर लिए है।' या 'ये फोटो देखिये, साफ साफ पब्लिक न्यूसेंस का केस बनता है।' या 'त्रिपाठी को जनहित के कार्य संपादित करने की अनुमति मिली है, पार्क में शादियाँ कराने की या उसका कमर्शियल उपयोग करने की नहीं।' या 'इन दोनों की तो मैं ऐसी खाट खड़ी करूँगा कि इन्हें मज़ा आ जाएगा।'

देवाशीष जीवन श्रीवास्तव की खाट खड़ी होने का इंतज़ार करता रहा, पर जब वह खड़ी होती नहीं दिखी तो उसने अखबार के सीनियर एडिटर से संपर्क किया। उसने हँसते हुए बताया, 'आप भी भाई साहब कहाँ लगे है? तिवारी ने तो वह फाइल जाकर जीवन को ही दिखा दी और कहा कि आप उसके खिलाफ वे रिपोर्ट छपवाना चाहते हैं। सुनने में आया है कि जीवन ने उसे रोकने के लिए पचास हजार रुपये दिए हैं और आगे मदद करने का वादा भी किया है। उस रिपोर्ट को तो आप भूल ही जाइये।'

देवाशीष ने गुस्से में तिवारी को फोन किया। उधर से 'आउट ऑफ कवरेज एरिया' वाला संदेश आता रहा। फिर वह नंबर ही अस्तित्व में नहीं रहा।

देवाशीष ने फोन करना बंद कर दिया।

अब अंतिम उम्मीद के रूप में उसने विश्वविद्यालय का रुख किया। रजिस्ट्रार से उसका हल्का सा परिचय था। उन्होंने उसे पर्याप्त सम्मान दिया। ये उसकी वरिष्ठता और अकादमिक समझ का सम्मान था। पूरी बात सुनकर उन्होंने कहा, 'नियम तो भाई साहब शासन बनाता है। हम तो सिर्फ संबद्धता देते हैं। संबद्धता समिति से कॉलेज की रिपोर्ट ठीक आई होगी-तो उसे संबद्धता दे दी गई होगी।'

'ये कैसे नियम है कि एक रिहायशी कॉलोनी के बीचोबीच, छोटे से मकान में कॉलेज खोल दिया जाये। छोटे छोटे कमरों में जहाँ क्लास रूम बनाये गये हैं शायद दस बच्चे भी न बैठ पायें। प्रैक्टिकल लैब्स कहाँ बनायेंगे, स्पोर्ट्स कहाँ करायेंगे, मैदान कहाँ है? यहाँ तक कि पार्किंग भी नहीं है।'

'ऐसा करिये कि आप लिख कर दे दीजिये। हम जाँच करवायेंगे। वैसे तो कॉलेज तीन साल तक किराये की बिल्डिंग में रह सकता है। फिर भी देखते हैं...'

देवाशीष नहीं जानते कि जांच क्या और कैसे हुई और उसके परिणाम क्या निकले। एक कमिटी आई तो थी। सुनने में आया कि उसकी भारी आव-भगत की गई थी और जाते समय प्रत्येक सदस्य को एक-एक लिफाफा भी पकड़ाया गया था। हाँ, वे इतना जानते हैं कि कॉलेज वहीं का वहीं रहा था और शोरगुल तथा आमद रफ्त बढ़ती ही गई थी। इतना कि अब सुबह के वक्त भी सड़क पर निकलना मुहाल हो गया था।

एक पूर्व प्रधानमंत्री के बारे में कहा जाता था कि वे देखना है, देखते हैं, हम देखेंगे जैसे जुमलों से सरकार चलाते थे। वे सब जुमले अब नीचे तक आ गये थे। हर आदमी देख रहा था, कर कुछ भी नहीं रहा था।

अब दाते साहब की आखिरी सलाह के रूप में देवाशीष ने एक इलेक्ट्रॉनिक चैनल को बुलाना तय किया।

वे सड़क पर खड़े बेतरतीब पार्किंग और कॉलेज की वीडियोग्राफी करवा रहे थे। उसी समय कॉलेज की तरफ से चार छः गुंडे टाइप के लड़के सड़क पर आये। जीवन पीछे दालान में खड़ा देख रहा था। लड़कों ने देवाशीष से कुछ नहीं कहा पर कैमरे वाले का कॉलर पकड़ कर कहा, 'क्या कर रहा है बे मादर...'

'मैं गुलबहार चैनल से हूँ। आपके कॉलेज की वीडियो रिपोर्ट बना रहा हूँ। आप ज़रा ज़बान सम्हाल कर बात करिये।'

उसका इतना कहना था कि दो लड़कों ने आगे बढ़कर कहा, 'हमें तमीज़ सिखाता है वे मादर...'

उन्होंने उसका कैमरा छीना और जमीन पर पटक दिया। उसके साथी ने बचाय की कोशिश की पर उसके गाल पर ऐसा झन्नाटेदार झापड पडा कि वह ज़मीन पर गिर पड़ा। कैमरे वाले को भी जमीन पर पटका गया और तबियत से लात धूंसों से पिटाई की गई। किसी ने कहा, 'भागो। फिर कभी यहाँ दिखे तो टाँगें तोड़ देंगे...'

फिर लड़कों ने देवाशीष की ओर आँखें तरेर कर देखा, बाइक पर किक मारी और कॉलेज से निकल लिए। देवाशीष सड़क पर अकेला खडा था। लड़कों का एक और समूह खुली जीप में निकला, उसने वीभत्स हँसी हँसते हुए उसके आसपास दो तीन बार जीप घुमाई, लगा कि उसे टक्कर न मार दें, पर बार बार सफाई से जीप या तो उसके पास आकर रुकती या बगल से छूती हुई निकल जाती।

उसे धमकी दे दी गई थी।

शाम को बाकायदा उसके लेटर बॉक्स में एक अनाम पत्र मिला, 'अब तक तो हमने समझाइश से काम लिया है। अब आप तय करें कि आपको कहाँ तक जाना है। बहुत पुलिस, मीडिया, यूनिवर्सिटी कर रहे हो। सोच लो, जितना आगे जाओगे अंजाम उतना ही बुरा होगा। आपके शुभचिंतक'

देवाशीष समझ गया। ये उसी सुसंस्कृत व्यक्ति की भाषा थी, जो कॉलेज चला रहा था। उसने इस पत्र और दिनभर के घटनाक्रम के आधार पर एफ.आई.आर. भी की। पर लड़कों को ढूँढ़ा नहीं जा सका और पत्र को पर्याप्त सबूत नहीं माना गया। इस तरह जाँच एक दो बार की पुलिस पूछताछ से आगे नहीं बढ़ सकी।

अब भय और ज़िद, दोनों ने ही देवाशीष के दिल में आकार लिया।

पर फिर ज़िद ने भय पर विजय पाई।

देवाशीष और वीडियो टीम की कॉलेज के साथ झड़पकी खबर मोहल्ले भर में फैल गई थी और अधिकतर लोगों की सहानुभूति देवाशीष के साथ थी। लगभग सभी लोग कॉलेज के लड़कों की धमा-चौकड़ी से परेशान थे और कुछ करना चाहते थे।

ऐसे माहौल में देवाशीष ने मुहल्ले के कुछ वरिष्ठ व्यक्तियों को चाय पर अपने घर बुलाया। उनमें से एक रिटायर्ड वरिष्ठ प्रशासक थे जिन्होंने रिटायरमेंट के बाद शांति से रहने के लिए इस मोहल्ले में घर बनवाया था, एक बिल्डर थे, एक बैंक के सीनियर अधिकारी थे और एक प्राचार्य थे। वे सभी

जीवन के उस मुकाम पर थे जहाँ आदमी शांति से रहना चाहता है और देश का संविधान उन्हें ऐसा करने की इजाजत देता था। देवाशीष का घर, कॉलेज और पार्क के सबसे निकट, कोने पर था और सबसे ज्यादा वही प्रभावित भी था। उसे आश्चर्य नहीं हुआ जब सबने कहा कि वे भी खासे परेशान हैं सबने देवाशीष की बात ध्यान से सुनी। विशेषकर उस घटना के बारे में जो अभी अभी घटी थी।

प्राचार्य जी ने कहा, 'ऐसा या इससे बुरा हमारे साथ भी हो सकता है। हमें विरोध करना चाहिए।'

बैंक के सीनियर अधिकारी ने कहा, 'देखिये किस कदर मुहल्ले में लड़के लड़कियाँ बिखरे रहते हैं। कुछ तो मेरे पास के मकान में किराये से रहने लगे हैं। वे किसी की नहीं सुनते। देर रात उनकी पार्टी शुरू होती है। जोर-जोर से म्यूजिक सिस्टम बजता है। जाने कहाँ कहाँ से लड़के लड़कियाँ इकट्ठे होते हैं। आप आपत्ति करें तो मारपीट पर उतारू हो जाते हैं, और देखिये भाई साहब, कुछ ग़लती तो हमारे मोहल्ले वालों की भी है। थोड़े से पैसों के लालच में चार-चार, छः-छः लड़कों को किराये पर रख लिया है। यह नहीं देखते कि पड़ोसियों को क्या परेशानी होगी।'

बिल्डर ने कहा, 'आप कहें तो मैं पार्षद से या विधायक जी से बात करता हूँ। मेरे उनसे अच्छे संबंध हैं। हम लोग मीडिया में भी जा सकते हैं।'

तब देवाशीष ने उन्हें पुलिस, मीडिया और यूनिवर्सिटी जाने वाले किस्से सुनाये। उसने कहा,'शायद हमें कुछ और करना पड़ेगा।'

अब वरिष्ठ प्रशासक ने कहा, 'मेरी मानें तो हमें मानवाधिकार आयोग चलना चाहिए। वह सब एजेंसी से निबट लेगा।'

सबको ये सलाह पसन्द आई। देवाशीष को ही ये ज़िम्मेदारी दी गई कि वह आवेदन बनाये और सपोर्टिंग डाक्यूमेंट्स इकट्ठा करे। पूरी फाइल के साथ आयोग को एप्लीकेशन दी जाये। कॉलेज को वहां से हटाने और पार्क में शादियाँ बंद करने की माँग की जाये।

देवाशीष ने ये काम एक हफ्ते में कर दिया।

करीब एक महीने बाद आयोग से तारीख मिली।

बिल्डर को उसी दिन किसी प्रोजेक्ट के लाँच पर जाना था। प्राचार्य जी की नातिन का जन्मदिन था। बैंकर की कोई ज़रूरी मीटिंग थी और वरिष्ठ प्रशासक का बेटा बाहर से आ रहा था। देवाशीष को उनसे ये सारे ज़रूरी काम छुड़वाने के लिए बड़ी मेहनत करनी पड़ी। उसने सभी से कहा-शोर भी उतना ही ज़रूरी मुद्दा है। अब हमें कुछ तो समय इसे देना ही पड़ेगा। सौभाग्य से पाँचों बुद्धिजीवी एकमत हो गये। वे तय समय पर आयोग कार्यालय पहुंच गये। आज स्मृति भी उनके साथ गई थी,यह सोचकर कि शायद महिला होने के नाते उसकी बात ज्यादा गंभीरता से सुनी जाये।

देवाशीष को आयोग बहुत ही अवसादपूर्ण जगह लगी। रजिस्ट्रार के ऑफिस में, किसी भी सरकारी ऑफिस की तरह, फाइलों का अंबार लगा था। कुछ थके हुए बाबू कुर्सियों पर ऊँघ रहे थे। कुछ सरकारी अफसर फाइलों के पुलिंदे के साथ अनावश्यक रूप से, इधर से उधर हो रहे थे। नाम से तो लगता था कि आयोग, सभी मानवों के अधिकारों की सशक्त लड़ाई लड़ता होगा। या कम से कम उन अधिकारों की रक्षा तो करता ही होगा। पर हकीकत में वह सरकार के बचाव के लिए खड़ा किया गया एक आवरण था जो कभी कभी सरकार की आलोचना कर दिया करता था कि न्याय का आभास होता रहे। आयोग के अध्यक्ष एक रिटायर्ड जज साहब थे जो सरकार से निकटता के चलते ये पोस्टिंग पा गये थे। उसकी एक सदस्य एक वरिष्ठ प्रशासक की पत्नी थी जो मुस्कराते रहने के अलावा और कोई काम नहीं करती थीं। अपनी मुस्कराहट के पीछे से वे कभी कभी अप्रत्याशित रूप से गुस्सा हो जाया करती थीं। ये उनका अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का तरीका था। तीसरे सदस्य इतने अनजाने थे कि उन्हें कोई नहीं जानता था, पर कहते हैं कि सारा काम वही संचालित करते थे।

आयोग ने जीवन श्रीवास्तव को भी नोटिस भेजा था। कार्रवाई शुरू हुई तो वे पाँच वरिष्ठ नागरिक एक तरफ और जीवन दूसरी ओर खड़े थे। वरिष्ठ नागरिक चिंता में थे और जीवन रिलैक्स्ड था, जबकि होना उल्टा चाहिए था।

देवाशीष ने अपनी बात पूरे धैर्य और बगैर उत्तेजना के, आयोग के सामने रखी। उसने कॉलेज और पार्क की शादियों से होने वाले शोर और कष्ट का ब्यौरा दिया। फोटोग्राफ प्रस्तुत किये। बताया कि वह मूलत: एक संगीतकार है और पिछले दो तीन वर्षों से शोर के कारण बहुत परेशान है। उसका सामान्य जीवन, लिखना-पढ़ना, संगीत-वादन, इससे गहरे प्रभावित हो रहा है यहाँ तक कि रुक सा गया है। उसके साथ आये सभी वरिष्ठ नागरिक और पूरा मोहल्ला इस भयानक शोर और अव्यवस्था से परेशान हैं और असल में तो यह उनके मानव अधिकारों का हनन है। आयोग से कुछ किये जाने की प्रार्थना है।

वरिष्ठ प्रशासक ने कहा कि पार्क में भी आये दिन शादियाँ होती हैं जिनसे शोर तो होता ही है, ट्रैफिक जाम की स्थितियाँ भी बनती हैं। कॉलोनी की सड़कें संकरी हैं, वे इतना ट्रैफिक नहीं झेल सकती, शादियों के समय तो घर से निकलना मुश्किल हो जाता है। ऊपर से मंदिर भी वक्त-बेवक्त भजन बजाता ही रहता है ।

अब आयोग अध्यक्ष ने वरिष्ठ प्रशासक की पत्नी की ओर देखकर कहा, 'ये कॉलेज है तो ग़लत जगह पर। एक बार मैं खुद उसके सामने ट्रैफिक जाम में फंस गया था।'

वरिष्ठ प्रशासक की पत्नी ने, जो आयोग की सदस्य थीं, मुस्कराते हुए कहा, 'सर, शोर की समस्या बढ़ती ही जा रही है। हमारे घर के पास भी एक मोटर मैकैनिक ने गैराज खोल लिया है। दिनभर टोकापीटी चलती रहती है। मैंने साहब से कहा था कि इसे हटवाइये पर अभी तक गैराज हटा नहीं है।'

अब अध्यक्षजी ने जीवन से कहा, 'आपने पूरे मोहल्ले को परेशान कर रखा है। आप इस बारे में कुछ कहना चाहते हैं?'

'जी सर, ये शिकायत झूठी है। कॉलेज व्यवस्थित रूप से चल रहा है। हम पार्किंग भी बना रहे हैं।'

'आपकी व्यवस्था मैंने खुद देखी है। वह पर्याप्त नहीं है, आप पार्किंग जल्दी से जल्दी बनवाइये, और छात्रों को नियंत्रण में रखिये। गार्ड्स की व्यवस्था करिये। कॉलोनीवासियों की सुविधा का ध्यान रखिये। हम आपको नोटिस भेज रहे है। पंद्रह दिन में जवाब दीजिये।'

'जी सर।'

अब अनजाने सदस्य ने कहा, 'सर यूनिवर्सिटी और नगर निगम को भी नोटिस भेज देते हैं।'

'हाँ, भेजिये।'

इसके बाद उन्होंने देवाशीष की ओर कुछ इस तरह से देखा कि हो गया भाई, अब जाइये। देवाशीष, जो न्यायिक प्रक्रिया को नहीं जानता था, ने

हिम्मत करके पूछा, 'सर, इस समस्या का निराकरण कब तक हो जाएगा ?'

अध्यक्षजी ने कुछ झुंझलाहट के साथ कहा, 'देखिये, नोटिस भेज तो रहे है। सबको बुलवाते हैं।'

फिर जैसे उन्हें याद आया हो, उन्होंने अनजाने सदस्य से कहा, 'शासन को भी नोटिस भेजिये। वे बतायें कि कॉलेज खोलने के नियम क्या है ?'

'यस सर।'

कार्यवाही समाप्त हो गई। जीवन तो पहले ही बाहर जा चुका था। वरिष्ठ नागरिकों को भी अपने अपने ऑफिस या घर लौटने की जल्दी थी। सबको अपने अपने काम थे। देवाशीष सबसे आखिर में निकला। निकलते निकलते उसने एक बार पलट कर देखा। न जाने क्यों उसे लगा कि आयोग के सदस्य पोपले हैं नख दंत विहीन। उनसे ज्यादा कुछ होने वाला नहीं है।

वैसा ही हुआ, तारीखों पर तारीखें पड़ती रहीं। नोटिस भेजे जाते रहे। शासन ने कहा कि उसके नियम स्पष्ट हैं, कॉलेज को उनका पालन करना चाहिए। वे देखेंगे कि ऐसा क्यों नहीं हो रहा है। यूनिवर्सिटी ने कहा कि उसका काम संबद्धता देना। और संबद्धता देने वाली निरीक्षण समिति की रिपोर्ट पॉजिटिव थी इसलिए संबद्धता दी गई। फिर भी मानव अधिकार आयोग ने कहा है तो वे एक बार फिर दिखवायेंगे। नगर निगम ने कोई जवाब नहीं दिया। कहते हैं कि जीवन एक दिन ब्रीफकेस लेकर निकला था और सब लोगों से मिल आया था। उसके बाद सभी जगह से उचित जवाब आ गये।

शोर का स्तर वैसा ही रहा। बल्कि बढ़ गया। आयोग की कार्यवाही या यों कहें कि निष्क्रियता के बाद,जीवन और त्रिपाठी के हौसले कुछ और बुलंद हो गये। मीडिया में कुछ छिटपुट खबरें आई, फिर वे भी बंद हो गई।

एक बार फिर देवाशीष वहीं आम के पेड़ के तले अपनी बालकनी में बैठे।

देवाशीष ने स्मृति से पूछा, 'अब ?'

स्मृति कुछ देर चुप रही फिर उसने जवाब दिया, 'एक बार सूरज भैया से पूछ लें ?'

'ठीक है। पर उनसे तुम्ही बात करो। वे तुम्हारी सितार के बड़े प्रशंसक हैं।'

सूरज एक विचित्र व्यक्ति थे। उनका पूरा नाम सूर्यप्रताप सिंह था। सबसे. पहले तो वे एक ऐसी पार्टी के कार्यकर्ता थे, जिसे सामान्यतया मनुष्यता के पक्ष में, संघर्षों के पक्ष में खड़ा माना जाता है। उन्हें अकसर धरनों और जुलूसों में लीड करते देखा जा सकता था। दूसरे वे साहित्य और संगीत के भी अनन्य प्रेमी थे। संगीत ही उनके, स्मृति और देवाशीष के बीच की कड़ी था, जो उन्हें आपस में जोड़ता था। वे अकसर उनके कन्सर्ट में पहुँचते, उन्हें ध्यान से सुनते और फिर संगीत पर बात करते।

स्मृति के फोन करने पर वे अगले दिन ही आ पहुँचे। पूरी बात सुनकर उन्होंने कहा, 'पार्टनर ये दोनों, त्रिपाठी और जीवन, हद दर्जे के कमीने इंसान हैं। ये समझाने से नहीं समझेंगे। इनका इलाज दूसरा है, पर वह आप कर नहीं सकते।'

देवाशीष ने कहा, 'तो सूरज भाई आप ही कुछ करिये या रास्ता बताइये।'

'अब इस समय तो हमारी पार्टी इराक पर अमेरिकी हमले के विरोध में लड़ रही है। फिर मैं कल बाजारवाद के विरोध में होने वाली नेशनल कॉन्फ्रेंस के लिए हैदराबाद निकल रहा हूँ। वहाँ से लेखकों के एक सम्मेलन में कलकत्ता जाना है..'

देवाशीष ने कुछ क्षोभ के साथ कहा, 'आप इराक-अमेरिका करेंगे।' तमाम सम्मेलन और कॉन्फ्रेंस करेंगे। पर आपको अपना मरता हुआ शहर नहीं दिखता उसका भयानक शोर और कचरा आपको विचलित नहीं करता ? आप उसके खिलाफ कब लड़ेंगे...'

सूरज ने देवाशीष की इस चुनौती को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने हँसते हुए कहा 'पार्टनर आप बहुत सेंसिटिव आदमी है। संगीत वालों को होना भी चाहिए। चलिए मैं एक काम करता हूँ। मैं कुछ लोगों को इकट्ठा करता हूँ। आप शोर की समस्या पर बोलने आइये। फिर देखते हैं आगे क्या होता है ? अगला रविवार ठीक रहेगा ?'

देवाशीष का गुस्सा अभी ठंडा नहीं हुआ था, 'आपका मतलब है आदमी को सेंसिटिव नहीं होना चाहिए। हमारे बड़े शहरों के आदमियों की तरह उसे सतत तनावग्रस्त, भागते-दौड़ते, शोर के भयानक दबाव में रहे आना चाहिए या छोटे शहरों की बहती खुली नालियों, गंदगी और कचरे के बीच रहना सीख लेना चाहिए। व्हाट डू यू मीन बाई वेरी सेंसिटिव ? आइ जस्ट वांट टू बी अ नॉर्मल ह्यूमन बींग।'

स्मृति ने कहा, 'आशीष अब सूरज भैया मदद कर तो रहे हैं। तुम अगले रविवार को जाओ। वहाँ अपनी पूरी बात कहना।'

'ठीक है, चला जाऊँगा।'

सूरज ने उठते हुए कहा, 'तो ठीक है। अगले रविवार को शाम पांच बजे। गाँधी भवन में...'

अपनी आदत के मुताबिक देवाशीष ने भाषण के लिए अच्छी तैयारी की। उसने अपने पूरे अनुभव को कागज पर समेटा और एक प्रेजेंटेशन बनाया, ध्वनि के प्रकारों और स्तर का अध्ययन किया, उसने मनुष्य के स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभावों को जाँचा और भारत में शोर के खिलाफ चल रहे कैपेन तथा कानूनों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

सूरज ने लोगों को आमंत्रित करने का काम अच्छी तरह किया था और देवाशीष का भाषण सुनने काफी लोग उपस्थित थे। उनमें कॉलेज के प्रोफेसर छात्र घरेलू महिलाएँ, अफसर, खुद सूरज के मोहल्ले के लोग, पार्टी कार्यकर्ता, कलाकार तथा रचनाकार शामिल थे। सूरज ने देवाशीष का परिचय दिया और फिर देवाशीष ने अपना भाषण शुरू किया, 'दोस्तों, आज में जिस विषय पर आपसे बात करना चाहता हूँ उसे आप सब जानते हैं, महसूस भी करते हैं, परेशान भी हैं पर उसके बारे में कुछ करते-धरते नहीं। जैसा कि सूरज भाई ने आपको बताया मैं आपसे शहर में बढ़ते शोर के बारे में बात करना चाहता हूँ। वैसे तो ध्वनि सब जगह है और उससे बचा नहीं जा सकता पर एक सीमा के बाद वह शोर में बदल जाती है। कुछ ध्वनियाँ प्रकृति में बसी हुई है जैसे तेज हवा के चलने की आवाज या समुद्र की लहरों का शोर, आँधी और पानी के गिरने की आवाज, जानवरों और मनुष्यों द्वारा की गई आवाजें वगैरह। इनमें अब मनुष्य द्वारा बनाई गई मशीनों की आवाजें भी जुड़ गई है। लाखों की संख्या में कारें हैं, घरों के आसपास से गुजरती रेलगाड़ियाँ हैं, आसमान में उड़ते हवाई जहाज हैं, ध्वनि विस्तारकों और धार्मिक स्थलों से आता शोर है, एयर कंडीशनरों,

टेलीविजन और घरेलू यंत्रों द्वारा पैदा किया गया शोर है, फैक्टरियों और कार्यस्थल पर किया जाने वाला शोर है,गरज कि हर जगह शोर है और वह बढ़ता ही जा रहा है...'

इसके बाद देवाशीष ने अपने पूरे अनुभव और संघर्ष को सामने रखा। उसने धीरे-धीरे बदलती अपने मुहल्ले की तस्वीर को लोगों के सामने रखा, महाविद्यालय, मंदिर और ट्रैफिक से पैदा होते शोर ने किस तरह लोगों का जीना मुहाल कर रखा है इसके बारे में बताया, मानवाधिकार आयोग से लेकर विश्वविद्यालय और सरकार तक की गई अपनी गुहार के नतीजों के बारे में बताया और यह सब बताते हुए वह काफी उत्तेजित हो गया। उसने इन संस्थाओं की कार्यपद्धति पर सवाल खड़े किये और कहा कि लोगों का वास्तविक जीवन इन सबके बावजूद खराब ही होता जा रहा है। उसने कहा, 'हमें जानना चाहिए कि हम कितना शोर सहन कर सकते हैं। मित्रों अगर हम शोर के पैमाने डेसीबेल में बात करें तो हम 50 से 60 डेसीबेल तक की आवाज सामान्य रूप से सहन कर पाते हैं। लेकिन सड़कों पर ट्रैफिक 80 डेसीबेल से ऊपर हो चुका है, बसें और रेलगाड़ियाँ 90 से 110 डी.बी. का शोर पैदा कर रही हैं और फैक्टरियों में यह 130 डी.बी. तक पहुँच जाता है ये हमारी सहन क्षमता से दुगना है। ये लगातार हमें अस्थिर बना रहा है, दिमागी रूप से बीमार कर रहा है। हृदय रोग पैदा कर रहा है, हमारी कार्यक्षमता पर गहरा प्रभाव डाल रहा है, हमें बहरा बना रहा है, हमें सोने नहीं देता, चिड़चिड़ा बना रहा है और हमें पागल भी कर सकता है...'

लोगों में सन्नाटा छाया हुआ था। सबके दिलो-दिमाग में अपने अपने अनुभव थे। वे कहना चाहते थे कि यही तो उनका भी अनुभव है। अब देवाशीष ने शोर के खिलाफ उठती आवाजों और कैपेन के बारे में बताया, 'हमारे देश में आवाज फाउंडेशन जैसे समूह हैं जो शोर के खिलाफ लड़ाई लड़ रहे हैं। वे स्कूलों और अस्पतालों के आसपास शोर रोकना चाहते हैं, वे त्यौहारों के अवसर पर होने वाले अबाध शोर को प्रतिबंधित करना चाहते हैं, वे सड़कों पर मच रही धमाचौकड़ी को व्यवस्थित कर हमारे जीवन को व्यवस्थित करना चाहते हैं। क्या आप जानते है कि हाल ही में हमारे शहर में एक तेरह साल की लड़की का बलात्कार हुआ और उसकी चीखों को कोई नहीं सुन पाया क्योंकि पास ही मुहल्ले में लाउड स्पीकर का भारी शोर जारी था। शोर के खिलाफ कानून हैं। ध्वनि प्रदूषण एक्ट है, मोटर व्हीकल एक्ट है, फैक्टरी एक्ट है यहाँ तक कि रेलवे और एयरक्राफ्ट एक्ट भी हैं पर उनकी अवमानना भी जारी है। अकसर व्यक्तिगत स्वतंत्रता और धार्मिक स्वतंत्रता का बहाना लिया जाता है, पर यह नहीं सोचा जाता कि ध्वनि प्रदूषण फैलाते हुए हम अनगिनत व्यक्तियों और समाज की स्वतंत्रता का हनन कर रहे हैं, उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से बीमार बना रहे है...'

सूरज के प्रवेश के लिए यह उचित जगह थी। उन्होंने गर्मागर्म बहस छेड दी। वहाँ उपस्थित सभी लोगों के पास कुछ न कुछ कहने के लिए था। पर्याप्त उत्तेजना पैदा होने के बाद सूरज ने ध्वनि प्रदूषण के खिलाफ प्रस्ताव पास करवाया। प्रशासन के पास डेलीगेशन भेजने का निर्णय लिया गया।

मीडिया के लोगों को अगले दिन के लिए एक नई और उत्तेजक खबर मिली।

देवाशीष अपने कल के भाषण से संतुष्ट थे। जिस तरह भाषण के बाद लोग उनसे मिलने आये थे और जिस तरह की प्रतिक्रिया और सवाल आये थे, उससे लगता था कि हर आदमी परेशान था और भाषण ने उसे आंदोलित किया था।

देवाशीष सुबह के अखबार लेकर अपनी बालकनी में बैठे। वे देखना चाह रहे थे कि अखबारों ने उनके भाषण को किस तरह से लिया है। सुबह के छः बजे थे, हवा में हल्की सी ठंडक थी और देवाशीष का मन भी प्रसन्न था। उन्हें बहुत हल्कापन महसूस हुआ।

अचानक सामने के पूजा स्थल में, एक कर्कश से लाउडस्पीकर पर, स्थानीय गायक की तीखी आवाज में बिंधा कैसेट लगा दिया गया। गणेश उत्सव समाप्त हो चुका था। नवरात्रि अभी चल रही थी और सामने के पूजा स्थल पर माँ दुर्गा की प्रतिमा स्थापित की गई थी। प्रतिमा के स्थापित होते ही मोहल्ला समिति को यह स्वतंत्रता मिल गई थी कि वह कर्कश और बेसुरे-भजनों को उतने ही कर्कश और खर-खर लाउडस्पीकरों के माध्यम से, मोहल्ले भर पर उंडेले। समिति धरती पर उपस्थित सभी न्यायालयों के आदेशों को धता बताते हुए अपनी इस स्वतंत्रता का उपयोग कर रही थी।

देवाशीष की सुबह की तुलनात्मक शांति भंग हो गई और उसका मानसिक हल्कापन जाता रहा। वह अखबार पढ़ना चाहता था पर अब ये संभव नहीं था। उसने अखबार सहेजकर मेज पर रखा और बालकनी से बाहर एक नज़र डाली।

पंडित दुर्गा प्रसाद त्रिपाठी प्रतिमा स्थल पर पहुंच चुके थे, और उत्साही नवयुवकों को कुछ निर्देश दे रहे थे। लाउडस्पीकर का वाल्यूम कुछ बढ़ा दिया गया। देवाशीष को ऐसा भ्रम हुआ कि भोंगले का मुँह उनके घर की ओर कर दिया गया है। फूहड़ फिल्मी गानों की पैरोडियाँ, बेतुके शिल्प में गुंथी कविताएँ, ईश्वर की भी संवेदना पर आघात कर सकने वाली अपेक्षाएँ, कस्बों और गांवों से उठे स्थानीय गायकों की उत्साह भरी आवाजें उसके घर की ओर आने लगीं। वह घबरा कर भीतर चला गया और उसने दरवाजे बंद कर लिए।

अब करीब घंटे-दो घंटे वे भजन चलेंगे। फिर भरभराये गले से लाउडस्पीकर पर ही बेसुरी आरतियाँ गायी जायेंगी। फिर कैसेट लगाकर मोहल्ले को उसके हाल पर छोड़ दिया जाएगा।

देवाशीष ने जल्दी-जल्दी नाश्ता किया और ऑफिस चला गया। उसने भगवान से प्रार्थना की- भगवान मुझे अपने भजनों से बचा।

अपने ऑफिस में बैठा देवाशीष सोचता रहा कि हमेशा से तो ऐसा नहीं था। अभी अभी तो लता ने वह मीठा भजन गुनगुनाया था, 'प्रभु तेरो नाम, जो ध्याये फल पाये' या ऊषा खन्ना ने बनाया था, 'अल्लाह तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम', अभी अभी तो उसने 'संत ज्ञानेश्वर' फिल्म देखी थी और बैजू बावरा और 'नानक नाम जहाज है' जिसमें मोहम्मद रफी के गाये भजन किसी को भी पिघला सकते थे और हरिओम शरण को वह कैसे भूल सकता था जिनके गाये भजन वह दोपहर ऑफिस में भी 'आकाशवाणी' पर सुन लिया करता था 'दाता एक राम, भिखारी सारी दुनिया।' और किशोरी अमोनकर का 'म्हारो प्रणाम' और भीमसेन जोशी के 'अभंग' और हृदय नाथ मंगेशकर का 'चला वाही देस' और पंडित जसराज का 'माता कालिका भवानी' और अमीर खान की वह गुरु गंभीर खरज की आवाज और कुमार गंधर्व के 'कबीर'...

फिर देवाशीष के पास भजनों का एक बहुत व्यक्तिगत संसार भी था। माँ के द्वारा गाये गये भजन 'नटवर नागर नंदा', 'धंधौ करत दिन जाय', 'कोई

कहियो रे, 'मेरे तो गिरिधर गोपाल', 'मोहे कृष्णा से प्रीत लागी', 'सरजू के तीर', 'तू ही परमेश्वर मेरा', 'हरिनाम सुमिर सुख धाम', 'गुरुजी ज़िंदगानी का मेला होयेगा', 'मोहे जेहि अचरज', 'हरि भये द्वारकानाथ', 'ऐसी विपत में सुमरौं मैं तुमको।' उनके दिमाग में अभी भी अपनी मीठी, अछूती धुनों के साथ जीवित थे और उनके व्यक्तिगत संसार को समृद्ध करते थे। पर लाउडस्पीकर पर आ रहे सतत प्रवाह की एक लाइन भी उन्हें न याद रहती थी न पसन्द आती थी।

अचानक ये सत्य उनके दिमाग में चमका । जब तक भजन एक सुखद संगीत की तरह व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभव का हिस्सा रहते थे मन में बने रहते थे पर जैसे ही वे एक सामाजिक शोर का हिस्सा बनते थे वे ध्वनि प्रदूषण में तब्दील हो जाते थे और उनसे वितृष्णा सी होने लगती थी। उन्होंने अचानक तय किया, वह इस सामाजिक शोर का विरोध करेंगे। इस विरोध के लिए उन्हें बहुत इंतज़ार नहीं करना पड़ा।

शाम को वे घर पहुंचे तो उनके घर के सामने वाली सड़क, एक ओर से कनातें और स्टेज लगाकर बंद कर दी गई थी। उन्हें खुद घूम कर अपने घर जाना पड़ा। उन्होंने देखा मंच पर एक लड़का और एक लड़की सिर पर चुनरी बाँधे, माता के गीत गाने की तैयारी कर रहे थे। उनके साथ ढोलक, नाल और तबले पर संगतकार अठारह हज़ार वॉट के एम्लीफायर पर अपने अपने वाद्य यंत्रों की टेस्टिंग कर रहे थे। बीच-बीच में एक दो लाइनें अपनी तीखी आवाज में गाकर गायक कलाकार भी उनकी मदद कर रहे थे। जब टेस्टिंग ही इतनी शोर भरी लग रही हो तो वास्तविक गायन के समय क्या होगा? दूसरी ओर हज़ारों लोगों का समूह आतुरता से गायन शुरू होने का इंतजार कर रहा था। माताराती की फोटो की पूजा और उन्हें प्रणाम करने के बाद गाना प्रारम्भ हुआ।

वही फूहड़ पैरोडियाँ अब अठारह हजार वॉट पर नाल की चाटी के साथ देवाशीष के सिर पर हथौड़े की तरह पड़ने लगी। सुबह से भरे बैठे देवाशीष के सब्र का बाँध टूट गया।

वह घर के बाहर आया और सीधे मंच पर चढ़ गया। स्मृति चाय का प्याला लिए खड़ी थी। उसे बाहर जाता देख वह भी पीछे पीछे दौड़ी। देवाशीष का दिमाग आजकल शोर से भन्नाया हुआ रहता है। पता नहीं क्या कर डाले? वह भी उसके पीछे पीछे मंच पर चढ़ी। देवाशीष ने पहले माता को प्रणाम किया लोगों को लगा कोई भक्त है, श्रद्धा व्यक्त करने आया है। फिर वह सीधे तबले और नाल वाले माइक के सामने गया और एक झटके से खींच कर उनका तार बाहर निकाल दिया। फिर उसने गायक के हाथ से हैंड माइक छीना और बोला, 'भाइयो और बहनो, मैं माताराती को प्रणाम करता हूँ। पर आपने कभी सोचा है कि हम लोग इस मोहल्ले में रहते हैं और जैसा शोर ये गायक कर रहे हैं उसके कारण हमारा क्या होगा? हमारे जीवन में इस कदर असहनीय शोर पैदा करने का किसी को भी क्या अधिकार है? क्या आप शांति से ईश्वर की पूजा नहीं कर सकते?'

त्रिपाठी जी अपने गुर्गों के साथ मंच के सामने की सीटों पर ही बैठे थे। उन्होंने देवाशीष और स्मृति को मंच पर चढ़ते देख लिया था। जब तक उन्होंने माताराती को प्रणाम किया, त्रिपाठी जी ने उनसे कुछ नहीं कहा, पर उनके माइक छीनने के बाद वे और उनके गुर्गे भी मंच पर चढ़ गये। लड़कों ने देवाशीष को धकियाते हुए कहा, 'देखिये आप सीधे सीधे मंच से नीचे उतर जाइये, नहीं तो अच्छा नहीं होगा।'

'क्या अच्छा नहीं होगा?'

त्रिपाठी ने कहा, 'भाभीजी इन्हें समझाइये। ये पागलों जैसी हरकतें कर रहे हैं। माताराती का मामला है। अगर जनता भड़क गई तो कुछ अनहोनी भी हो सकती है।'

स्मृति ने फिर कहा, 'आशीष नीचे चलो।'

लेकिन अब तक देवाशीष बहुत गुस्सा हो चुके थे, उन्होंने लपक कर त्रिपाठी का कॉलर पकड़ा और कहा, 'मुझे पागल कहता है? तू जितना शोर करता है उससे तो पूरा मोहल्ला पागल हो जाएगा...'

स्मृति ने ज़ोर से कहा, 'क्या कर रहे हो आशीष?'

लड़कों में से कुछ ने लपक कर त्रिपाठी को छुड़ाया। अब वे धकियाते हुए देवाशीष को मंच के नीचे ले चले। पास में खड़े दो पुलिस वाले भी अब आगे आये और बोले, 'भाई साहब आप घर जाइये, नहीं तो दंगा हो जाएगा।'

देवाशीष ने आँखें तरेर कर उसकी ओर देखा। स्मृति ने उसे अपनी बाँहों में घेरा और घर ले गई।

माता का जगराता रात दो बजे तक चलता रहा।

भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'जलतरंग' उपन्यास से साभार एक अंश,
लेखक डॉ.सी.वी. रमन, विश्व विद्यालय तथा
रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्व विद्यालय के चांसलर है।
मो. 9826256733

■

शोध दिशा

विश्वस्तरीय शोध पत्रिका

संपादक : डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल

संपादकीय कार्यालय
हिन्दी साहित्य निकेतन, 16, साहित्य विहार
बिजनौर-246701 (उ.प्र.)
फोन : 01342-263232

पूर्वग्रह

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी पर केन्द्रीत विशेषांक

संपादक : प्रेमशंकर शुक्ल

संपादकीय कार्यालय
भारत भवन न्यास,ज. स्वामीनाथन मार्ग,
श्यामला हिल्स, भोपाल-462002 (म.प्र.)
फोन : 0755-2660239, 2661398

समाधान

ध्रुवपद-गायकी

डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग

इस युग में स्व. भातखण्डे जी ने संगीत के क्षेत्र में जिस शोध-परम्परा का सूत्रपात किया, उसके महत्त्व को विचारपूर्वक समझना संगीत के प्रत्येक विद्यार्थी का कर्तव्य है। भातखण्डे जी का प्रधान लक्ष्य अपने युग में गाई जाने वाली बन्दिशों को स्वरलिपिबद्ध करना, प्रयोग में आने वाले रागों को वर्गीकृत करके उनसे सम्बद्ध नियमों का बोध कराना तथा एक ऐसी शिक्षण-पद्धति का निर्माण करना था, जिससे गाने की शिक्षा सामूहिक रूप में हो सके।

अपने इस लक्ष्य में वे जहाँ तक सफल हुए, यह सर्वविदित है।

परीक्षा के लिए 'क्रमिक पुस्तक-मालिका' में दिए हुए कुछ गीतों को याद करके भातखण्डे जी के भक्त बन जाने वाले व्यक्तियों की संख्या देश में बहुत है, परन्तु भातखण्डे जी के सम्पूर्ण साहित्य पर गम्भीरतापूर्वक मनन करके विचार प्रकट करने वाले व्यक्ति सर्वथा खोज के विषय हैं।

प्रत्येक व्यक्ति अपने युग से प्रभावित होता है। सम्भव है, भातखण्डे जी का पाला ऐसे ध्रुवपद-गायकों से पड़ा हो, जो आड़ी-तिरछी लय के प्रयोग, दुगुन-चौगुन या पखावजी के साथ भिड़न्त को ही ध्रुवपद-गायकी समझते हों; इसीलिए भातखण्डे जी ने घोषित कर दिया कि ध्रुवपद मर्दानी और ज़ोरदार गायकी है। भातखण्डे जी का यह वाक्य ध्रुवपद के सम्बन्ध में वेद-वाक्य बन गया है। जिन ध्रुवपदों का विषय प्रताप-वर्णन, वीरता, युद्ध इत्यादि है, उनके विषय में तो यह बात कहीं तक ठीक है, क्योंकि ऐसे ध्रुवपदों की पदावली 'ओज' गुण से युक्त होती है; परन्तु स्वामी हरिदास के 'मधुर' भाव-प्रधान ध्रुवपदों की गायकी में यह 'धमाचौकड़ी' कैसे चलेगी? सुकुमार नायिका की छवि और कोमल भावों को मूर्त करने वाले ध्रुवपदों में पहलवानी' कैसे की जाएगी? इष्ट देवता के सम्मुख दीनतापूर्वक गिड़गिड़ाने का रूप सम्मुख रखने वाले ध्रुवपदों के प्राणों की रक्षा 'ज़ोरदार ढंग' में कैसे होगी?

कुछ रागों की प्रकृति भातखण्डे जी ने शान्त और गम्भीर बताई है। ऐसे रागों के ध्रुवपदों को प्रस्तुत करते समय यदि 'डकरा-डकराकर' पखावजी से युद्ध किया जाएगा, तो राग की प्रकृति का क्या होगा? कुछ रागों की प्रकृति मधुर बताई गई है। ध्रुवपद-गायक को क्या यह अधिकार है कि वह अखाड़ेबाज़ी करके राग की मधुरता को चिरायते की कड़वाहट में परिवर्तित कर दे?

किसी भी बन्दिश के चार अंग होते हैं-राग, भाषा, ताल और लय। किसी भी सार्थक बन्दिश में इन चारों में सन्तुलन बनाए रखकर ही गायकी को चित्ताकर्षक बनाया जा सकता है। ये चारों ही परस्पर उपकारक हैं। गायक के हठ से जब इनमें से किसी को आवश्यकता से अधिक महत्त्व दिया जाएगा, तो गायकी निष्प्रभाव हो जाएगी। वह लय जो राग, अर्थ और काल की कपाल-क्रिया कर दे, ध्रुवपद-गायकी नहीं है। लय का वैचित्र्य अर्थ को मूर्त करने के लिए है, अर्थ की हत्या करने के लिए नहीं। जिन्हें अर्थ की चिन्ता नहीं, उन्हें तिरवट और तरान: गाने चाहिए, परन्तु मर्यादाओं का पालन तो वहाँ भी करना होगा, मनमानी कहीं न चलेगी।

चौदहवीं शती ई. के अन्त और पन्द्रहवीं शती ई. के आरम्भ में मानसिंह तोमर ने ब्रजभाषा के माध्यम से ध्रुवपद-गायकी का जो रूप रखा, अबुलफज़्ल के अनुसार वह जनता के प्रत्येक वर्ग को रिझाने वाला था; तो वह गायकी क्या मरदान: और ज़ोरदार गायकी थी? अबुल्फ़ज़्ल के कथनानुसार ही बहादुरशाह गुजराती के मन को मानसिंह तोमर के गायक बख़्शू ने मोह लिया; तो क्या बख़्शू इसी प्रकार चिल्लाते थे, जिस प्रकार की चिल्लाहट कभी-कभी ऐसे गायकों के मुख से रेडियो द्वारा सुनाई देती है, जिन्हें ध्रुवपद-गान की शिक्षा खयालियों के अपूर्व शिष्यों से मिली है? बैजू ने हुमायूँ के सम्मुख गाकर उसका क्रोध इतना शान्त कर दिया था कि उसने कत्ले-आम बन्द करा दिया था; क्या बैजू की गायकी ऐसी ही होगी, जैसी गायकी बैजू के नामलेवा कलाकार पखावजियों से निकल-बैठ करते समय प्रस्तुत करते हैं? मुल्ला अब्दुलकादिर बदायूँनी ने लिखा है कि बाबा रामदास के गाने से बैराम खाँ के नेत्रों से अश्रुपात होने लगता था। आज जब अत्यन्त सुन्दर आलाप करने वाले आनुवंशिक गायक भी ध्रुवपद गाते समय स्वर और राग से रूठकर लय के पीछे पड़कर, प्रलय का दृश्य उपस्थित करते हैं, तब ध्रुवपद की दुर्दशा पर रोने के लिए जी चाहता है। खुशहाल खाँ और विरासत खाँ का आलाप सुनकर शाहजहाँ तन्मय हो जाता था और आज ध्रुवपद का प्राणलेवा रूप विरक्ति उत्पन्न करता है।

अकबर के युग में ठुमरी का तो जन्म ही न हुआ था। यदि ध्रुवपद मरदान: और ज़ोरदार गायकी है, तो उस युग की प्रवीणराय और रूपमती-जैसी प्रसिद्ध गायिकाएँ भला क्या गाती होंगी। न जाने 'ध्रुवपद' के साथ यह मर्दान:पन और ज़ोरदारी कहाँ से और कैसे आ गई?

अबुलफज़्ल ने लिखा है कि जो गायिकाएँ दफ़ (ढप) हाथ में लेकर ध्रुवपद गाती थीं, वे 'दफज़्न' कहलाती थीं। 'जन' फ़ारसी-भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ 'नारी' होता है। 'ध्रुवपद' में प्रस्तुत अर्थ का अभिनय करते हुए जब उसकी 'गति' या 'लय' के अनुसार नृत्य किया जाता था, तब उसे ध्रुवपद-नृत्य कहा जाता था। शिवाजी के पिता शाहजी के दरबारी विद्वान वेद ने अपने ग्रन्थ में इसका लक्षण किया है।

अब, विभिन्न कालों में की हुई ध्रुवपद की परिभाषाओं पर विचार किया जाए -

'मानकुतूहल' (पन्द्रहवीं शती ई. का अन्त और सोलहवीं शती ई. का आरम्भ)

'मानकुतूहल' के अनुवाद 'रागदर्पण' में कहा गया है - ध्रुवपद में

चार पंक्तियाँ होती हैं। इसकी भाषा देशी होती है, समस्त रसों में इसे बाँधा जाता है। सुदेश से हमारा तात्पर्य ग्वालियर है, जो आगरा के राज्य का केन्द्र है, जिसके उत्तर में मथुरा तक, पूर्व में उन्नाव तक, दक्षिण में ऊँज तक तथा पश्चिम में बारी तक का क्षेत्र है। हिन्दुस्तान में इतने बीच की भाषा सबसे अच्छी भाषा है।'

फ़क़ीरुल्लाह का कथन है–'यह खण्ड भारत में उसी प्रकार का है, ईरान में जिस प्रकार शीराज़।

तानसेन की परिभाषा

तानसेन के एक अप्रकाशित ध्रुवपद के अनुसार ध्रुवपद में चार तुकें होनी चाहिए; उसे शुद्ध अक्षरों से युक्त, अच्छे गुरुओं के शिष्यों द्वारा निर्मित तथा यथावसर किसी भी रस से युक्त होना चाहिए; राग और रस में सामंजस्य रहना चाहिए।

अबुलज़्ल की परिभाषा

अबुलफज़्ल का कथन है कि ध्रुवपद में लयबद्ध पंक्तियाँ तीन या चार होती हैं, जिनकी लम्बाई यथेच्छ हो सकती है। इन ध्रुवपदों में वर्ण्य विषय उन व्यक्तियों की प्रशंसा है, जो अपने पौरुष अथवा अन्य गुणों के कारण प्रसिद्ध होते हैं। आगरा, ग्वालियर और बैरी तथा आसपास के प्रदेशों में ध्रुवपदों का प्रचलन है।

वेद की परिभाषा

शिवाजी के पिता शाहजी का दूसरा नाम मकरन्द था। वेद ने अपने ग्रन्थ 'संगीतमकरन्द' की रचना इन्हीं के आश्रय में रहकर की थी। वेद का कथन है कि ध्रुवपद में उद्ग्राह, ध्रुवक, आभोग–तीन धातु होते हैं, जो मध्यदेशीय भाषा में निबद्ध होते हैं। उद्ग्राह–रहित या आभोग–रहित ध्रुवपद भी प्रयोग में हैं। कुछ लोग इसके ध्रुव नामक भाग को ही ध्रुवपद ('ध्रुव' नामक धातु में निबद्ध पद) कहते हैं।

भावभट्ट की परिभाषा

भावभट्ट ने 18वीं शती ई. में कहा है–ध्रुवपद की भाषा संस्कृत या मध्यदेशीय हो सकती है। इसमें दो या चार वाक्य हो सकते हैं, जिनमें नर–नारी की कथा होती है, शृंगार रस, भाव इत्यादि होते हैं। यह रागालाप और 'पद' से युक्त होता है। इसका प्रत्येक चरण 'पादान्त अनुप्रास' (चरण के अन्त में मिलने वाली तुक) से अथवा 'पादान्त–यमक' (चरण के अन्त में प्रयुक्त यमक अलंकार) से युक्त होता है। इस प्रकार के चार पादों का अस्तित्व जहाँ हो और जिसमें उद्ग्राह, ध्रुवक और आभोग–तीन धातु हों, वह 'ध्रुवपद' कहलाता है।

नृत्तसंग्रह की परिभाषा

इसमें भावभट्ट का लक्षण जैसा–का–तैसा उद्धृत है।

मुहम्मद करमइमाम की परिभाषा

19 वीं शती के उत्तरार्द्ध में इसने कहा है कि ध्रुवपद में चार–पाँच चरण होते हैं और दो चरण भी होते हैं। चरण का अर्थ 'तुक' है। प्रथम तुक को 'स्थल' (स्थाय ?), जो जनसाधारण में 'आस्ताई' कहलाता है, दूसरी तुक को 'अन्तरा', तीसरी तुक को 'भोग' और चौथी तुक को 'आभोग' कहते हैं। 'तुक' को 'खण्ड' भी कहा जाता है।

साहबजादा मुहम्मद अशफ़ाकअली खाँ ये नवाब हैदरअली खाँ के छोटे पुत्र, अर्थात् छम्मन साहब के छोटे भाई थे। इनका कथन है कि 'ध्रुवपद' कवित्त का सत्त्व है। यह प्राय: भाषा में होता है। इसी से प्राय: ईश्वर की प्रशंसा होती है। इसके हर 'मिसरे' (खण्ड) का नाम पृथक–पृथक है। आजकल चार मिसरे–आस्ताई, अन्तरा, संचारी, आभोग है।

भातखण्डे की परिभाषा

ध्रुवपद के चार भाग स्थायी, अन्तरा, संचारी, आभोग होते हैं। कुछ ध्रुवपदों के स्थायी और अन्तरा, दो ही भाग होते हैं। ध्रुवपद–गान को मरदाना और ज़ोरदार गान कहते हैं। इसमें वीर, शृंगार और शान्त रस प्रधान होते हैं।

भातखण्डे जी की परिभाषा में रेखांकित दोनों वाक्य परस्पर विरोधी हैं। श्रृंगार और शान्त रसों के साथ 'मर्दान:पन और–ज़ोरदारी' कैसे चलेगी।

भातखण्डे जी का कथन है कि रामपुर की तानसेन परम्परा के ध्रुवपद–गायक तो ऐसा भी कहते हैं कि पहले समय में दुगुन, चौगुन, बोल–तान इत्यादि ध्रुवपद में निषिद्ध माने जाते थे; परन्तु आजकल प्रचार में दुगुन, चौगुन, बोलतान भी ध्रुवपद–गान में प्रयुक्त होते हैं।

आज भी संगीत–परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में ध्रुवपद की जान चौगुन–चौगुन, आड़ी, कुआड़ी के शिकंजे में जकड़ी हुई है, इसीलिए विद्यार्थी और अध्यापक–दोनों ही इस मुसीबत से घबराते हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि उपर्युक्त विषय में विचार करके ध्रुवपद–गायकी को इस गोरख–धन्धे और पहलवानी से छुड़ाया जाए।

स्तंभकार लेखक – संगीत मासिक पत्रिका, हाथरस के प्रधान संपादक है
मो.: 09837061272

बादल फेंटें ताश
(दोहा संग्रह)

लेखक : रमेश गौतम

मूल्य : 175/–
संपादकीय कार्यालय
अनुकृति प्रकाशन, 165–ब, बुखारपुरा
पुराना शहर, बरेली–243005 (उ.प्र.)

अपरिभाषित
(लघुकथा, गद्य संग्रह)

लेखक : राधेलाल बिजघावने

मूल्य : 550/–
प्रकाशक :
जनवाणी प्रकाशन प्रा.लिमिटेड, 30/35–36,
गली नं. 9, विश्वास नगर, दिल्ली–110032

आलेख

आकस्मिक रूपाकारों में जीवन की तलाश-कलाकार अखिलेश निगम

डॉ. मंजुला चतुर्वेदी

सृष्टि के प्रारंभ से ही मानव मन ने जीवन को जिज्ञासा से देखा और इसे समझने का यत्न किया । उसकी आंखों ने प्रकृति से विविध रंगो को सहेजा, कानों ने ब्रह्मांड में व्याप्त ध्वनियों को सुना, घ्राण शक्ति से उसने सुगंधित श्वासें लीं, जिह्वा से उसने अच्छा और बुरा परखा, तन मन को स्वस्थ, स्पर्श से भावों के ताप को समझते हुए अन्य पदार्थों को समझा और उन्हें मनोनुकूल आकार दिए। जानने और परखने की इस प्रक्रिया में संवेदनशीलता बहुत कारगर सिद्ध हुई और कवि तथा कलाकारों के जन्म हुए। कवियों ने शब्दों और अर्थों के माध्यम से जीवन का सार समझने और उसे देखने की दृष्टि दी वहीं कलाकारों ने सृजन के माध्यम से नव प्रयोग किए। कभी जल रंग, कभी तैल रंग और कभी रेखांकन में विविध रूपों की सृष्टि की और जीवन को पर्त दर पर्त बुनने का प्रयास किया जिससे सभी जीवन की बनावट ,बुनावट, उदात्तता और उसके विस्तार को कुछ समझ सकें।

ऐसे ही जीवन को विभिन्न माध्यमों में तलाशने वाले हमारे समय के प्रमुख कलाकार हैं श्री अखिलेश निगम जिन्होंने कला के विभिन्न माध्यमों में जीवन के विविध परिप्रेक्ष्यों को देखा। रूपों से आती हुई ध्वनियों को सुना, कला की भाषा को गुनगुनाया और उसे विस्तार दिया। अखिलेश जी ने एक साथ चित्र और कुछ मूर्ति शिल्प उकेरे। प्रिंटाज़ शैली में विविध प्रयोग किए और लेखन के माध्यम से कला जगत को समृद्ध किया। यदि यह कहा जाए कि अखिलेश निगम ने अपना जीवन कला के विविध मानकों को जानने और पहचानने में व्यतीत किया तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। कलाकार का यह प्रयास नव सृष्टि के सृजन का तो है ही उससे भी अधिक जीवन की जल तरंग बजाने का है, जहां आत्मा के सुर बजते हैं और जीवन लयात्मक होकर स्पंदित रहता है।

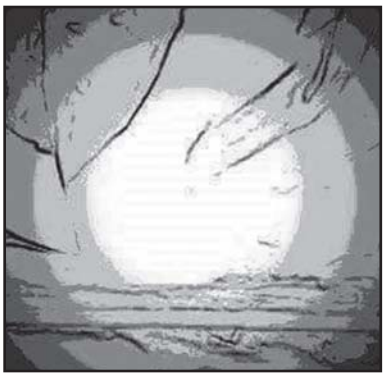

अखिलेश जी की कला में जीवन के 75 बसंतों की रंगीन बयारों के भीगने की महक देखी जा सकती है, निष्काम भाव से कला जीवन की यह रागिनी बज रही है। जीवन और जीवन में मनुष्य के अस्तित्व की तलाश जारी है विविध स्वरों में। इस यात्रा में वे सभी को अपना बनाते चलते हैं शायद यही जीवन की सार्थकता है। विश्व की संपूर्णता आत्मीयता के विस्तार में ही निहित है।

अखिलेश निगम ने मुख्यत: प्रिंटाज़ विधा (प्रिंट मेकिंग की तकनीक, साइक्लोस्टाइल के द्वारा) में कार्य एक मुकाम हासिल किया। इस विधा में इन्होंने शांत रंगों में 'ट्रांसफॉरमेशन सीरीज' तैयार की।'बियांड' शीर्षक से भी चित्र निर्मित किए। श्वेत और श्याम में मुख्यत: अमूर्त चित्रण किये। यह अमूर्तन श्वेत और श्याम की प्रतीकात्मकता के माध्यम से जीवन के हर्ष और विषाद को रूपायित करते हैं और उनके मध्य जिजीविषा अभिव्यक्त होती है लय, तरंग और प्रभावी गति मयता के माध्यम से। जैसे वृक्ष की बढ़ती हुई शाखाएं जीवन को विस्तार देती हैं, यही आभास इनके चित्र देते हैं, कहीं-कहीं सुख-दुख की बुनावट बहुत सहजता से की गई है जहां आशा का उजाला प्रभावी है। अर्ध अमूर्तन में अंकित मानव आकृतियों के देह देश में सौंदर्य सृष्टि के साथ लयात्मकता दृष्टव्य है। यह गतिमय आकृतियां अंतराल में ध्वनियां उत्पन्न करने के साथ-साथ अत्यधिक ऊर्जा का संचार करती हैं और दर्शक मन को स्पंदित करती हैं। रेखांकनों में रूपाकारों की विविधता है जो अर्ध-अमूर्तन की ओर इंगित करते हैं। यहां रूपाकार मात्र सज्जात्मक या दृश्यात्मक नहीं हैं अपितु चिंतन की दिशा को उद्वेलित करते हैं।

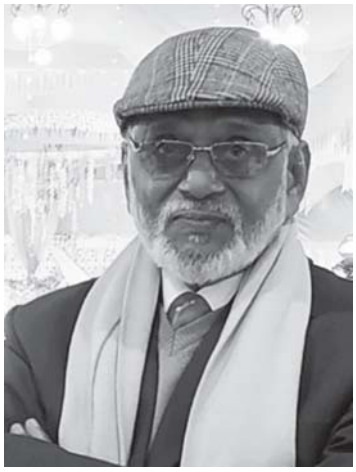

अखिलेश निगम ने मूर्ति शिल्प में भी मुखाकृति को अंकित किया है जो जीवन चिंतन को दर्शाती है, नासिका और अधरों को आभासात्मक बनाया है लेकिन आंख जीवन की विराटता में कुछ तलाशती सी है। अभिव्यक्ति के लिए इन्होंने अंतराल और गहराई का विशेष प्रयोग किया है। यह सच भी है कि जीवन की सच्चाईयों को आंख ही सहेजती चलती है और सघन विषाद की स्थिति में स्थितप्रज्ञ हो सत्य का आकलन करती है। जीवन के खुरदरे एहसास टैक्सचर्स के माध्यम से सुस्पष्ट हैं। मूर्ति शिल्प हो या अन्य आकृतियां आंख का प्रयोग विशिष्ट है जो चित्र को विशालता देता हुआ समसामयिक बनाता है। अन्य रंगीन चित्रों में प्रकृति के विराट तत्व को प्रधानता से दर्शाया है जो कलाकार मन की आध्यात्मिक संचेतना की अभिव्यक्ति है। ब्रह्म और जीव का रूपांकन है। ब्रह्म ही सर्वोपरि है जो कला के अनंत अंतरिक्ष में व्याप्त है। रंगों का

अखिलेश निगम
चित्रकार एवं कला समीक्षक
ई-मेल – akhileshingam44@gmail.com, **वाट्सएप** – 9580239360

इतिवृत

जन्म – बलरामपुर, 1945

योग्यता – लखनऊ कला महाविद्यालय से कला अध्यापक प्रशिक्षण, 1966

– चित्रकला तथा प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में परास्नातक

अध्येतावृत्ति – कनिष्ठ अध्येतावृत्ति, भारत सरकार, मानव संसाधन एवं शिक्षा मंत्रालय (1987-89) एवं उत्तर प्रदेश शासन, सांस्कृतिक कार्य विभाग (1989-91) तथा वरिष्ठ अध्येतावृत्ति, भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय (1992-95)

शोध कार्य – आधुनिक भारतीय कला में 'प्रिंटाज़' शैली की खोज

सम्मान – कलावृत्त, जयपुर द्वारा पुरस्कृत, 1978

– महामहिम राज्यपाल द्वारा राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश की महासभा एवं कार्यकारिणी-सदस्य हेतु तीन वर्ष के लिए नामित, 1979

– महामहिम राष्ट्रपति, भारत द्वारा ललित कला अकादेमी, नई दिल्ली की महासभा का सदस्य, 5 वर्ष हेतु नामित 1984

– संयुक्त आयुक्त, भारतीय खण्ड, दूसरा अंतर्राष्ट्रीय एशियन-योरोपियन आर्ट बिनाले, अंकारा (तुर्की), 1988

– इंडियन अकादमी ऑफ फाइन आर्ट्स, अमृतसर द्वारा पुरस्कृत, 1988

– ललित कला अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा '**प्रतिष्ठित कला समीक्षक एवं इतिहासकार**' के रूप में उसकी महासभा-सदस्य के रूप में 5 वर्ष हेतु चयनित, 1989

– भारत कला परिषद, हैदराबाद द्वारा पुरस्कृत, 1990

– आयुक्त, समकालीन भारतीय कला प्रदर्शनी, री-यूनियन (फ्रांस), 1990

दायित्व – प्रोजेक्ट डायरेक्टर, **सर्वे ऑफ कंटम्प्रेरी इण्डियन आर्ट एण्ड डॉक्यूमेंटेशन**, उत्तर प्रदेश, ललित कला अकादेमी, नई दिल्ली, 1987-90

– क्षेत्रीय सचिव, राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र, लखनऊ, 1989-94

– संयोजक, राष्ट्रीय सेमीनार/वर्कशाप, कला की परख एवं समीक्षा, राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र, लखनऊ, 1990

– संस्थापक-अध्यक्ष ए.एन. अकादमी ऑफ विजुअल आर्ट्स्, उ.प्र., लखनऊ वर्ष 2010 से

प्रकाशन/प्रसार – कला समीक्षा, शिक्षा एवं कला इतिहास आदि विषयों पर प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में लेखन, 1971 से

– **कलावृत्त** (जयपुर), **कला त्रैमासिक** (लखनऊ) के संपादक-मंडल सहित **समकालीन कला** (नई दिल्ली) का अतिथि संपादन

– कला विषयक लेखों, चर्चाओं और लघु फिल्मों आदि का आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारण, वर्ष 1972 से

– सोशल मीडिया पर वरिष्ठ कलाकारों पर लेखों और वार्ताओं आदि का संयोजन 2019 से

मनोग्राफ – कलावृत्त द्वारा कलाकार (अखिलेश निगम) पर मोनोग्राफ का प्रकाशन, 1991

एकल प्रदर्शनी एवं अन्य प्रदर्शनियों में हिस्सेदारी

– राज्य, अखिल भारतीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में वर्ष 1965 से हिस्सेदारी सहित देश-विदेश में चित्रों का प्रदर्शन। राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, ललित कला अकादेमी, भारत भवन आदि सहित देश-विदेश में अनेक महत्वपूर्ण निजी एवं शासकीय संग्रहालयों में चित्र संग्रहित।

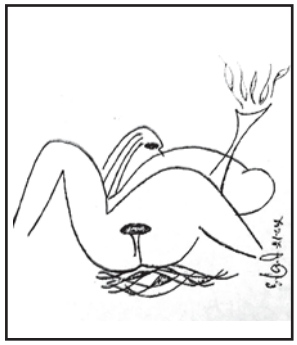

चयन और उनकी प्रस्तुति कलाकार के मन की सुसंगति को स्पष्ट करती है। आलेखों के माध्यम से अखिलेश निगम ने समकालीन कला पर विशेष प्रकाश डाला और कला भाषा को समुन्नत किया। लेखन के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय रहते हुए प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में आपके आलेख निरंतर प्रकाशित हुए और पाठकों के बीच उन्हें सराहना मिली।

एक सहज व्यक्तित्व के धनी अखिलेश निगम ने अपनी शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय से 1966 में ग्रहण की। स्नातक और स्नातकोत्तर प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विषय में कानपुर विश्व विद्यालय से किया। कला के विषय में निरंतर चिंतन, मनन एवं लेखन करते हुए यह आज भी कला जगत में सक्रिय हैं अपनी लेखनी, व्याख्यान, कला चर्चा एवं संपर्कों के माध्यम से कला की अलख जगाए हुए हैं। एक प्रसिद्ध कला समीक्षक के रूप में आपकी सर्वत्र स्वीकार्यता है। अपने संवेदनशील मन से यह रिश्तों की धरोहर को सहेजते और सींचते हैं। कविताओं के माध्यम से भी अंतर्मन के संवेदनात्मक भावों को संप्रेषित करते हैं,'

1.
जिंदगी
बियाबान सी
भीड़ में
निःशब्द
अकेला है
आदमी!

2.
दर्पण में
छवि
मिथ्या है
कितनी...
वस्त्रों में
तन
निर्वस्त्र हैं
कितने!!!

3.
लाल
अमलतास तले-
युग्म था चिंतित

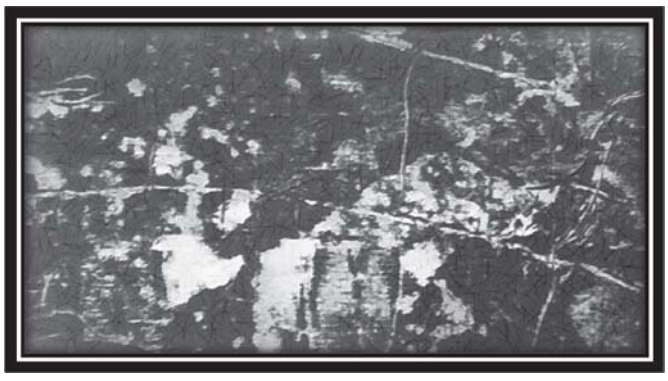

...आह!!!
फूल झरने लगे
पत्ते सूखने लगे!!!

वर्तमान समय में संबंधो के टूटने की चिंता है इन्हें, यह लिखते हैं

4.
संबंधों के दायरे
सिमटने लगे हैं
अब वट वक्ष
नहीं बोता कोई...,
अंधेरे बंद कमरो में
सर उठाए
कैक्टस...
उगते हैं
अपने आप!!!

वट वृक्ष के प्रतीक के माध्यम से जहां शाख का शाख से अनुबंधन होता है, उसका अभाव कलाकार के कवि मन को सालता है और वह बेचैन हो उठता है।

इनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम अधूरे रह जाएंगे यदि इनके प्रशासनिक दायित्वों की चर्चा न की जाए। अखिलेश निगम राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली की साधारण सभा के सदस्य रहे तथा समकालीन कला पत्रिका के अंक 9-10 के अतिथि संपादक के रूप में अपना विशिष्ट योगदान दिया। ललित कला अकादमी के क्षेत्रीय केन्द्र लखनऊ में आपने मानद सचिव के रूप में कार्य किया। कलाकार के मन में एक अनुशासन होता है जो जीवन में उसके विभिन्न क्रियाकलापों को सु-संगठित कर प्रस्तुत करता है, ऐसा ही अनुशासन अखिलेश निगम की विशिष्ट धरोहर है जो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर उन्हें विशिष्ट बनाती है।

युवा कलाकारों को संदेश देते हुए अखिलेश निगम कहते हैं, 'आज का युवा कलाकार अधिकांशतः प्रयोगवादी दृष्टिकोण रखता है, अच्छा है, सृजनशीलता बढ़ती है। ऐसे कलाकार भावाभिव्यक्ति हेतु मिश्रित माध्यम को चुनते हैं। एक नयापन आता है जो तात्कालिक भी हो सकता है परंतु यहां यह भी ध्यान रखना होगा कि कोई कृति 'चरमोत्कर्ष' पर तभी पहुंचती है जब उसमें स्थायित्व भी हो। इंस्टॉलेशन कला और चित्रकला के भेद को समझना होगा।'

जीवन के इस प्रमुख पड़ाव पर अखिलेश निगम को कोटिशः बधाइयां एवं शुभकामनाऐं, वे निरंतर सक्रिय और प्रभावी बने रहें और कला समीक्षक के रूप में कला के सारांश को सृष्टि के साथ साझा करते रहें जिससे सृष्टि की दृष्टि में सौंदर्य व्याप्त रहे। हम जानते हैं कि यह सौंदर्य ही जीवन का सच है, रस है, इस रस के ताप में ही आंख आंख को देखती है, यह देखना ही जीवन रीति का देखना है जहां से पुनः पुनः सात रंग और सात स्वर उद्भूत होते हैं, जीवन प्रारंभ होता है और प्रेममय सृष्टि सृजित होती है।

प्रख्यात कलाविद तथा पूर्व अध्यक्ष ललित कला विभाग,
काशी विद्यापीठ वाराणसी (उ.प्र.)

■

आलेख

डॉ. श्यामसुन्दर दुबे के 76वें जन्मदिन पर विशेष

आपको पढ़कर एक हूक सी उठती है !

डॉ. सत्येन्द्र शर्मा

काव्य-रचना से शुरुआत कर ललित निबन्धकार के रूप में प्रतिष्ठा एवं ख्याति पाने वाले डॉ. श्यामसुंदर दुबे को मैं गत तीन दशकों से मैं बराबर पढ़ता, सुनता और गुनता चला आ रहा हूँ । वे जितना सुनाते जाते हैं, कहते जाते हैं, सुनने की प्यास और बलवती होती जाती है; जिज्ञासा अधिक प्रबल होती जाती है; कौतूहल बढ़ता जाता है; जो कहा जा रहा है, हम उसमें उत्तरोत्तर रमते जाते हैं। इसीलिए तकनीकी संचार माध्यम से जैसे ही पता चला कि डॉ. दुबे की आत्मकथा अटकते-भटकते प्रकाशित हो गयी है, बगैर देर किए मैंने पुस्तक हस्तगत कर ली। दरअसल, इसके पीछे उत्कंठा थी डॉ. दुबे को अंतरंग तौर पर जानने की, जिन्हें मैं गत तीन दशक से जान रहा हूँ – '**जानत तुमहिं , तुम्हहिं होइ जाई ।**' विरोधभास जैसा मामला है, जानते हुये भी उसी को और जाने की उत्कंठा । यह उत्कंठा भी दो-तीन कारणों से थी। एक, जो व्यक्ति अपनी सरलता, सादगी, सौम्यता, शिष्टता और समावेशी स्वभाव का समुच्चय बनकर पहली ही भेंट में अपना पूरा परिचय दे देता हो, उसे अब और बताना क्या रह गया था, जो इस आत्मकथा में आया होगा। दूसरा, उनके जीवन प्रसंगों, हलचलों, घटनाओं को उन्होंने कैसे व्यवहृत किया है। अर्थात् अमुक घटना या प्रसंग में उनका दृष्टिकोण क्या था। तीसरा, लेखक की जी हुई ज़िन्दगी का परिवेश, परिस्थितियाँ, चुनौतियाँ और सन्दर्भ आज हमारी और नवागत पीढ़ी में कैसे पुनर्नवा होकर प्रेरणा-सूत्र बन सकते हैं ।

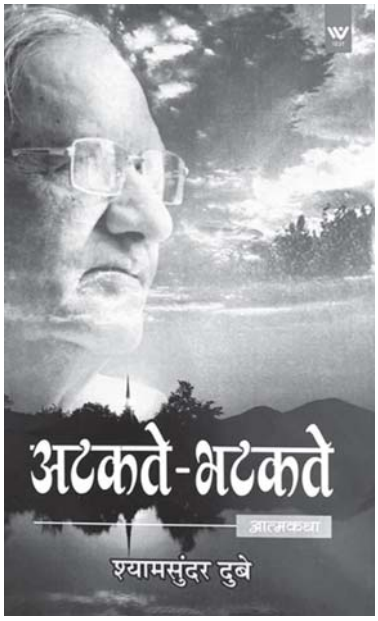

नवें दशक का लगभग समापन वर्ष था। डॉ. दुबे का उपन्यास दाखिल-ख़रिज मेरे हाथ लग गया था किन्तु उसे पढ़ने की मेरी व्यग्रता की कठिन परीक्षा पढ़ने के अभ्यस्त मेरे तब सत्तर वर्षीय पिता ने ली थी। हुआ यह कि मैं उस कृति को पढ़ना शुरू करता कि उसके पहले ही वह उनके हाथ लग गयी और ऐसी लगी कि उसे उन्होंने कथात्मक या सूचनात्मक ढंग से न पढ़कर बिलम-बिलम कर पढ़ा। पढ़ते हुये, एक-एक घटना को अपनी आँखों में साक्षात करते हुए , घटनाओं में रमते-बिलमते, मोटे-मोटे शीशों के भीतर से झाँकती उनकी आँखों से झरते आँसू और अचानक कभी हँसकर कहते हुये 'बिलकुल, हू-ब-हू ऐसा लगता है कि यह अपने गाँव-घर की गाथा है।' रचना का कथ्य जब पाठक को अनजाने ही अपनी कथा-भूमि का अंग बना ले और पाठक भी तद्नुरूप अपने 'मैं' को बिसूर कर उसका पात्र बनकर उस एहसास में डूबने-उतराने लगे तो यह साधारणीकरण का व्यावहारिक स्वरूप ही तो है।

इस आत्मकथा की सशक्त बुनियाद इसकी स्वाभाविकता है। घटनाओं में कारण-कार्य और कथ्य की स्वाभाविकता। 'जिस तरह हम बोलते हैं, उस तरह तू लिख और उसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख' भवानीप्रसाद मिश्र की 'जिस तरह हम बोलते हैं' में – सुधी जन जानते हैं – की इस उक्ति में सिर्फ बोलने में नहीं, लेखक के समग्र आचरण में, विशेषकर सहजता की स्वभावगत अभिव्यक्ति की अपेक्षा की गयी है । बाबा नागार्जुन की एक काव्य पंक्ति में 'साधारण जनों से अलहदा होकर रहो मत' जैसा सन्देश सभी लोगों विशेषकर लेखकों के लिए तो खास तौर पर है। डॉ. दुबे की जीवनगाथा पृष्ठ-दर-पृष्ठ उपर्युक्त दोनों शीर्ष कवियों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की प्रतीति कराती है। इसे मात्र संयोग भी नहीं माना जाना चाहिए कि उक्त दोनों रचनाकार 'सादा जीवन – उच्च विचार' जैसी सामान्य सी लगने वाली किन्तु व्यवहार में प्राय: असम्भव इस कठिन चुनौती को स्वभावत: अंगीकार कर चुके थे। अगर वही आचरण महानगरीय – नगरीय सभ्यता से दूर ग्राम्य और कस्बाई परिवेश में साहित्य के रास्ते मनुष्यता के उद्घोष की धूनी रमाये बैठे डॉ. श्यामसुंदर दुबे में चरितार्थ होता है तो इसमें आश्चर्य का कोई कारण नहीं है। क्योंकि उनकी प्रथम और अंतिम पूँजी 'लोक जीवन' और उससे गहरी संप्रक्तता है।

गरीबी एक महाव्याधि है; भयानक और संत्रास देने वाली महामारी। जिसे अपनी गिरफ्त में लेती है उसे न जीने देती है और न मरने। मुक्तिबोध का 'एक आत्म-वक्तव्य' देखिये – 'तड़के ही रोज़/ कोई मौत का पठान / माँगता है ज़िन्दगी जीने का ब्याज / अनजाना कर्ज़ / माँगता है, चुकारे में प्राणों का मांस (मुक्तिबोध रचनावली – 2, सं – नेमिचन्द्र जैन , राजकमल प्रकाशन , पृष्ठ 392। वे, जो रचनाकर के लिखे हुये को उसकी ज़िन्दगी में नहीं देख पाते, अर्धसत्य ही पा पाते हैं । मुक्तिबोध के शुरुआती काल में उनके नागपुर प्रवास के दैनंदिन संघर्ष का कच्चा चिट्ठा जिन्होने डॉ. कांतिकुमार जैन के 'नागपुर में महागुरु' (जो कहूँगा सच कहूँगा – डॉ. कांतिकुमार जैन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली , पृष्ठ 82) नामक संस्मरणात्मक लेख में पढ़ा है या जिन्हे ऐसे संत्रास से गुजरना पड़ा है, वे ही ऐसी रचनाओं के मर्म तक पहुँच पाते हैं। डॉ. दुबे ने अपने नाभिनाल की पृष्ठभूमि में अपने दादा-दादी के आर्थिक हालत का ज़िक्र करते हुये बताया है कि कैसे उनके दादा अपने घर-गाँव, अपनी पत्नी और नौ वर्ष के बेटे से चालीस किलोमीटर दूर किसी निर्जन प्रदेश में सड़क बनाते हुये एक कामगार की मौत मरे थे। जिनकी चिता की राख भी बेटे को नहीं मिल पायी थी। डॉ. दुबे लिखते

हैं – 'इस राख़ ने मेरे पिता का संग उनके जीवन भर नहीं छोड़ा '। मेरे लेखे तो पिता का ही नहीं, पौत्र का भी संग नहीं छोड़ा। अन्यथा यह प्रसंग उनकी आत्मकथा का प्रथम उत्ताप बनकर यहाँ प्रतिष्ठित न हुआ होता। दादा के संघर्ष और बलिदान को जिस बेटे ने अपनी स्थूल आँखों से देखा न था। मात्र पिता के उसी तरह के आर्थिक पराभवों और उनकी धड़कनों से उस संघर्ष को महसूस कर किशोर श्यामसुंदर ने उसे अपनी श्वसन प्रक्रिया का हिस्सा और अपनी कुंडलिनी की कस्तूरी बना लिया। यही कस्तूरी उनकी निजता को लाँघ कर सार्वभौमिक जीवन में घुल मिलकर उनके काव्य, कभी उनकी कहानियों, कभी कथा-रूपों, रेडियो नाट्यरूपों और ललित निबंध आदि रूपों में सुवासित हो रही है ।

डॉ. दुबे का जिया हुआ जीवन उनके पुरुषार्थ की गाथा है।'अटकते-भटकते' शीर्षक से यह भ्रम होता है कि जैसे उनकी जीवन-नौका कागज की नाव बनाकर लहरों में छोड़ दी गयी हो और फिर लहरें ही उसकी नियति तय करती रही हैं। जबकि तथ्य यह है कि बाल्यावस्था में पिता और होश सँभालते ही

कोंपल-किशोरावस्था से स्वयं श्यामसुंदर दुबे ही प्रत्येक घटनाचक्र के नियामक रहे हैं। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा और फिर रोजगार के अवसर तलाशने और तत्सम्बन्धी प्रयास करने में उनकी अपनी ही प्रमुख भूमिका रही है। बुन्देलखण्ड के एक एकान्त, अजनबी, आधुनिकता की रोशनी से दूर, टोने-टोटके, तंत्र-मंत्र, रूढ़ियों से ग्रस्त उनकी जन्मभूमि और इन्ही सब विसंगतियों से भरी उनकी कर्मभूमि अम्बिकापुर – जहां वे तेरह वर्ष रहे – पश्चात् हटा, दमोह आदि की कार्य अवधि में डॉ. दुबे की रचनात्मकता जीवन्त दस्तावेज़ के रूप में देखी जा सकती है। विद्यार्थी जीवन से ही वे अपने परिवेश में अपने 'होने' का एहसास जगाने लगे थे। उनकी कार्यभूमि के कस्बों – शहरों में उनकी उपस्थिति एक कोरे शब्दकार की प्रभावपूर्ण उपस्थिति मात्र न थी; वरन वे अपने साहित्यिक संगी-साथियों, मित्रों, सहकर्मियों, छात्र-छात्राओं, महाविद्यालयों और नागरिक समुदाय के बीच एक चलती-फिरती व्यक्ति-संस्था बनकर साहित्य और समाज की रचना में अविराम लगे रहे। बावजूद इसके कि वह भी उसी समाज में और उन्हीं लोगों के बीच रह रहे थे, जिनके लिए तुलसी बाबा ने लिखा है – 'जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ '।

अपने पुरुषार्थ और विवेक से लिए गए निर्णय, उनके परिणाम और उन परिणामों से प्राप्त तोष का भाव दुबे जी के व्यक्तित्व की एक बड़ी खासियत है और उनके तईं संतुष्टि का यह भाव परिणाम की सफलता पर ही निर्भर नहीं है, परिणाम निराशा देने वाला भी होता रहा है; किन्तु उससे न तो उनके मन में कोई खिन्नता उपजती है और न ही वे कभी उद्विग्न होते हैं। अधिकांश अच्छी बातों के साथ यह गुण भी उन्हें उनके पिता से संस्कार में मिला था किन्तु उन्होंने उसे अपने विवेक और भाव जगत से पल्लवित किया है। अनेक संगोष्ठियों – समारोहों में मुझे उनके सान्निध्य का अवसर प्राप्त हुआ है। अपनी फ़ितरत के मुताबिक मैंने जानबूझकर कभी किसी विसंगति पर चर्चा करना चाही तो उन्होंने उसके नकारात्मक पक्ष को अनदेखा करते हुये कोई संक्षिप्त सी टिप्पणी कर दी, जिसका आशय अक्सर यह होता था कि 'आपका कहना ठीक है किन्तु इसे दूसरे नज़रिये से भी देखा जाना चाहिए।' यानि आपकी आलोचना- प्रवृत्ति का उठाया गया मुद्दा खारिज हो गया। उनकी संतोष वृत्ति और जीवन से कोई शिकायत न होने का प्रमाण उनके माता-पिता के बिछोह प्रसंग पर लिखे हुये इन वाक्यों से मिलता है :

(क) 'पिता तेरासी वर्ष जीवित रहे। अपने उद्यम और अपने श्रम से उन्होंने परिवार को ऊँचाई प्रत्येक स्तर पर दी। ..... वे मेरे जन्म पर रोये ज़रूर थे किन्तु वे मुझे आत्मनिर्भर बनाकर गए। एक तरह से वे सन्तुष्टि के साथ गए। '

(ख) 'जीवन में अनेक संघर्ष झेलने वाली मेरी माँ ने शायद वह सब कुछ पा लिया था जो उनकी आकांक्षाओं से भी अधिक होगा।'

देखने की बात यह है कि माता-पिता की सन्तुष्टि पाने का दावा बेटा कैसे कर सकता है । बस , इसी बात को रेखांकित करने के लिए यह प्रसंग उठाया गया है कि माँ-बाप और संतति के बीच जब एक मन, एक लय, एक विश्वास, एक भाव-प्रवाह, एक प्राणवत्ता, एक सा एहसास और परस्पर दायित्व बोध की एक सी अनुभूति होती है तो उभय पक्ष परस्पर चेतना का निर्माण करते हैं और स्पंदित होते हैं । इससे भी अधिक दूसरी बात यह है कि स्वयं डॉ. दुबे की चेतना जिन संस्कारों में पल्लवित हुई है उसमें सन्तोष का भाव उनकी भाषा और भंगिमा दोनों रूपों में खुलकर पढ़ा जा सकता है :-

'चाह गयी , चिन्ता मिटी , मनुआ बेपरवाह ।
जिनको कछू ना चाहिए , वे शाहन के शाह ।। '

महत्वाकांक्षाओं के अराजक अरण्य में ऐसी मिसालें कम, बहुत कम मिलती हैं।

करियर निर्माण के दौर में अपने प्रति स्पष्ट तौर पर हो रहे अन्याय को देख-सुन कर, उन क्षणों को चालीस-पचास वर्षों बाद स्मरण करते हुये भी अन्याय के प्रति तब और अब नाराजगी , क्षोभ या कुंठा होना तो दूर उल्टे अन्यायी के प्रति आदर और श्रद्धा का भाव व्यक्त देखकर मेरी तरह कोई भी व्यक्ति आश्चर्य ही मानेगा। सागर विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर अध्ययन के दौरान और बाद में शोधवृत्ति के लिए उनके तत्कालीन विभागाध्यक्ष का प्रवीणता को पीछे धकेल कर अपनी पुत्री को लाभ पहुँचाना किसी के भी मन को कसैला बना सकता था। डॉ. दुबे संकेतों में इस तथ्य को रेखांकित कर रहे हैं और उन विभागाध्यक्ष के 'गुरुत्व' को स्मरण करते हुये मोहित भी हो रहे हैं, इसे क्या कहा जाये ? थोड़ी देर के लिए मान भी किया जाये कि तब उस अन्याय को जल में

रहकर मगर से बैर करना संभव न मानकर स्वीकार भी कर लिया गया होगा किन्तु आज, उस घटना का पुनर्स्मरण करते हुये भी उनके प्रति कोई मलाल नहीं, कोई शिकवा नहीं। वास्तव में डॉ. दुबे इस घटना का जिक्र करते हुये एक ओर लेखिकीय ईमानदारी, मनुष्य की स्वाभाविक कमजोरी के उद्घाटन का ज़रूरी दायित्व निभा रहे हैं और दूसरी ओर अपने गुरु के प्रति श्रद्धा और समर्पण भाव भी व्यक्त कर रहे हैं। मुझे लगता है, एक बड़ा लेखक मानव समाज के शुभ-अशुभ प्रवृत्तियों का सूक्ष्म दृष्टा तो होता ही है, वह उस द्वन्द को रचनात्मकता के स्तर पर तटस्थ होकर समान भाव से सिरजता भी है। किसी शोध छात्र की छह माह से टल रही मौखिकी परीक्षा के लिए परीक्षा का समय न दे पाना और फिर औपचारिकताओं को परे धकेल कर उनके द्वारा कार्य सम्पन्न करा देने पर डॉ. दुबे की कृतज्ञता अभिव्यक्ति लेखिकीय औदार्य से अधिक उनके व्यक्ति-संस्कारों की देन है जो उन्हे उनके माता-पिता से विरासत में मिले हैं ।

दिसंबर 20 में अपनी वय का छिहत्तरवाँ वर्ष पूरा कर रहे डॉ. दुबे का आत्मलेखा 'अटकते-भटकते' इसी वर्ष प्रकाशित होना मात्र संयोग है। इसे उस रूप में योजनाबद्ध नहीं कहा जा सकता जिसमें लोग अपनी अवस्था के पड़ावों को रजत या स्वर्ण जयंती जैसी संज्ञाओं से अभिहित करते-कराते हैं। और ऐसे मौकों पर जीवनगत कोई कृति अपने प्रशंसकों के सामने लाना चाहते हैं। वास्तव में यह आत्मकथा व्यक्ति केन्द्रित होते हुये भी उस समूचे परिवेश और परिस्थियों का प्रत्यंकन है जिसमें लोकजीवन की पहचान, उसके अवयव, उसकी अपरिहार्यता, उसका टूटना-छीजना और एक अस्वाभाविक कृत्रिम सभ्यता में उसके बरबस रूपान्तरण का चित्रण आदि है जिसके दुष्परिणाम चौतरफा दिखाई पड़ने लगे हैं। गाँव और कृषि संस्कृति के लगातार क्षरण, प्रकृति के तेजी से हो रहे विनाश, आर्थिक विषमताओं और विवशताओं तथा अज्ञानताओं के चलते विशेष वर्ग समूह के धर्मान्तरण, वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य की विकृतियाँ, लोक व उच्च शिक्षा के परिसरों का राजनीतिकरण व प्रदूषण का फैलाव, शिक्षकीय कर्तव्य चेतना का अधोपतन, कथित डिग्रीधारियों के बौने रंग-रूप, सार्वजनिक जीवन में सेक्स की विकृतियाँ और महिला शक्ति के वास्तविक स्वरूप आदि बातें यहाँ भोक्ता के रूप में दृष्टांत बतौर जीवनकथा के अंग के रूप में सामने आई हैं।

भारतीय विचार-जगत में नारी विमर्श, विद्वत समाज और पढ़े-लिखे, विशेषकर रचनाकारों और रचना-विमर्श के नेतृत्वकर्ताओं का प्रिय शगल रहा है। बीते आठवें - नवें दशक में तो महिला शक्तिकरण राजनीतिज्ञों के भी विचार-आखेट का पसन्दीदा विषय हो गया था। दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य तो यह है कि इस वर्ग को शक्ति-सम्पन्न बनाने का स्वर ज्यों-ज्यों ऊंचा होता गया त्यों-त्यों उन पर घरेलू और बाहरी जीवन में अत्याचार बढ़ते गए हैं। हद तो तब हो गयी जब 'मानव मूल्य और साहित्य' जैसी सैद्धान्तिकी रचने वाले बड़े लेखक भी इसी ज़मात में खड़े दिखाई दिये। डॉ. दुबे की सैद्धान्तिकी और व्यवहार के ऐकात्म्य को जीवन के सभी संदर्भों और सभी कसौटियों में कसा जा सकता है किन्तु महिला वर्ग का सम्मान और उसे शक्ति-सम्पन्न देखने की उनकी आकांक्षा को उनके संपर्क में आने वाली छात्राओं, उनकी अपनी माँ और पत्नी के प्रति उनके व्यवहार के सातत्य से ही समझा जा सकता है। हाथ कंगन को आरसी क्या - एक सर्वथा पिछड़े गाँव-गंवई से आने वाली औपचारिक शिक्षा से वंचित पत्नी के लिए उसके पति का यह उदगार स्तुत्य है - 'मैं अपनी पत्नी से संतुष्ट था। उसे वह देना चाहता था जो सर्वोत्तम हो, आखिर उसने मेरे लिए अपरिमित त्याग किया ही था।'

अब सब जानते हैं कि साक्षर और डिग्रीधारी होना अच्छा मनुष्य होने की गारंटी नहीं है । गान्धी जी ने हिन्द स्वराज्य (1909) में ही चेताया था कि जो शिक्षा व्यक्ति को चतुर चालक और स्वार्थी बनाए वह व्यर्थ की ही है। वास्तव में शिक्षा संस्कारित करती है, मनोविकारों का परिष्कार और विवेचन करती है वह व्यक्ति के विरासत में मिले संस्कारों को परवान चढ़ाती है; वह किसी भी क्षेत्र या व्यवसाय में कार्य करने वाले व्यक्ति को कर्तव्यनिष्ठ बनती है; फिर चाहे वह साहित्य का ही क्षेत्र क्यूँ न हो। डॉ. श्यामसुंदर दुबे का साहित्यकार जिन गूढ, सूक्ष्म और गहरे संस्कारों के खाद-पानी से उगा है उसकी भूमि 'लोक' है। वे लिखते हैं, ' .... इतने पर भी यदि कोई पूछता है, पार्टनर ! आपकी पॉलिटिक्स क्या है ? तो मैं कहता हूँ, लोक का वह आदमी जो अपनी सामान्यता में असाधारण भारतीय है। उसको जानना ही मेरी पॉलिटिक्स है। 'जिस' लोक में डॉ. दुबे जन्मे, पले-बढ़े और उसकी एक जिज्ञासु इकाई बनकर जीवन की कर्मभूमि में उतरे हैं, उन्हीं मूल्यों से उन्होंने स्वयं को व्यक्ति और साहित्य जीवन में सृजित किया है; जिसे पढ़कर एक हूक सी उठती है । उनका आस्थावादी मन यदि लोक कवि तुलसी के इस मर्म को ही अपना पाथेय मान रहा है : -

' तुलसी साथी विपति के , विद्या-विनय-विवेक ।
साहस , सुकृति , सुसत्य व्रत , रामभरोसे एक ॥ '

और इन्हीं सूत्रों से अपने जीवन की सार्थकता पा रहा है तो आश्चर्य कैसा ?

संपर्क : 'श्यामायन', सहकार मार्ग, सतना (म. प्र.), मो.: 094251 67567

सृजन का समकालीन परिदृश्य

(बातचीत)

लेखक : अरुण तिवारी

मूल्य : 190/-

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा पब्लिकेशन

26 बी,देशबंधु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, जोन 1, भोपाल- 462011 (म.प्र.)

संपर्क : 0755-4940788

अपनी बात

(आलेख)

लेखक : अरुण तिवारी

मूल्य : 260/-

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा पब्लिकेशन

26 बी,देशबंधु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, जोन 1, भोपाल- 462011 (म.प्र.)

संपर्क : 0755-4940788

आलेख

चित्रकला और देहगठन का ज्ञान

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

चित्रकला में सौंदर्यपूर्ण आकार का जो प्रभाव आंखों के तारों पर पड़ता है, वह अपेक्षाकृत अधिक प्रभावोत्पादक कहा जाता है। इसकी एक-एक अनुभूति का वर्णन हजार-हजार शब्दों में भी कम पड़ता है। वह कला इसी अर्थ में है कि उसमें सौंदर्य का वह अकूत भण्डार होता है जिसमें बीज की तरह बारम्बार सौंदर्य को साकार करने की क्षमताएँ होती हैं। वह सौंदर्य के चारों ही पायदान-रस, अर्थ, छन्द और रूप के साथ-साथ अलंकरण-मंडन, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन से आबद्ध रहती है, तुलसीदास ने कहा है- **वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।** (रामचरितमानस, बालकांड मंगलाचरण) इस कला में सौंदर्यानुभूति यदि शोभन के लिए है तो भाव की सुरक्षा के लिए भी है। नाटयशास्त्र में काव्य, नाटय और कलाकृति के साथ भाव तादात्म्य से भावक या सहृदय द्वारा अनुभूत आत्म-आनन्द को रस स्वरूप कहा गया है और एक सूत्र में उसकी निष्पत्ति की प्रक्रिया को परिभाषित किया गया है : **विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रस निष्पत्तिः।**

चित्रकला जिसे वात्स्यायन ने चौंसठकलाओं में महत्त्वपूर्ण माना है और जो चाक्षुक् कला के अन्तर्गत स्वीकार्य है, का अपना विशिष्ट शास्त्रीय विधान रहा है। हालांकि इसकी जड़ें गुहा निवासी जनों और आदिम संसार से लेकर लोकांचल में फलीफूली और आगे चलकर विधानों से संयोजित होकर सम्भ्रान्त समुदाय में समाद्रत हुईं। इसके जो नियम और विधान तय होते गए, उन पर देश और काल का पर्याप्त प्रभाव तो रहा ही, मानवमन की कल्पनाओं और प्रयोगों ने संस्कारों की सुरभि से भी सींचा और इसी कारण शैलियों का विकास होता गया।

चित्रण विषय क्रियायोग से सम्बद्ध है, जैसा कि मत्स्यपुराणकार इस अनुशासन के अन्तर्निहित विषयों को क्रमशः वर्णित करता है। क्रियायोग रूपेण साधना से ही यह साध्य है। रूप से ध्यान को शीघ्र साधा जा सकता है- रूपध्यानं समासाद्य। (जयाख्य संहिता 33, 68) कुमारसम्भव (1,7) में आया 'लेखक्रिया' शब्द भी प्रकारान्तर से यही भाव लिए है- **विद्याधर सुन्दरीणामनङ्ग लेखक्रिययोपयोगम्।** इसकी सिद्धि चित्रणकौशल है और यह चित्रानुराग बिल्कुल उस अनुरक्ता स्त्री की तरह होता है जिसकी दृष्टि अनुराग लिए रहती है और अन्यत्र देखते हुए मन में प्रिय का चिन्तन होता है। काश्यप का मत है - **दृष्टिर्निक्षिपते तत्र मनसाऽपि विचिन्तयेत्। मूलैर्न रक्षते सा तु चित्रं चित्रपटे यथा॥** (बृहत्. भट्टोत्पलीयविवृत्ति. 77,4-6) चित्र मानवीय दृष्टि को लुभाते हैं,अतः भास ने दृष्टिविलोभन अर्थात् नयनाकर्षण के लिए शोभा (दृष्टिविलोभनं जनयितुं शोभा। स्वप्न. 5, 4) को महत्व दिया है।

भारतीय रूपकला में रचना विधान ही नहीं, उसके निरीक्षण और परीक्षण और अध्ययन आदेश में सामुद्रिक निर्देशों को दृष्टिगत रखा जाता रहा है। हमें भारतीय चित्रकला के प्रसंग में इन निर्देशों की अनदेखी नहीं करनी चाहिए क्योंकि उसका निर्माण, नियोजन और संयोजन इन शास्त्रीय निर्देशों से भिन्न नहीं है। वराहमिहिर ने इस सामुद्रिक शास्त्र की परम्परा को हृदयगम्य कर उद्धृत किया है। इससे लगता है कि किसी भी शारीरिक रचना प्रक्रिया और उसके परिणाम कथन के लिए इन तेरह बातों को सदैव दृष्टिगत रखा जाना चाहिए -

उन्मानमानगतिसंहतिसारवर्ण स्नेहस्वर प्रकृति सत्वमनूकमादौ।
क्षेत्रं मृजां च विधिवत् कुशलोऽवलोक्यसामुद्रविद्वदति यातमनागतं वा॥

(बृहत्संहिता 68,1)

उपर्युक्त श्लोक में आए समस्त पारिभाषिक शब्दों को मानवादि चित्र और प्रतिमा के निर्माण करने और बने हुए रूपों को देखने के प्रसंग में निम्नानुसार ध्यान में रखा जाना चाहिए -

1. उन्मान : शारीरिक रचना में अँगुलात्मक ऊँचाई का ज्ञान, प्रायः अपनी अँगुलियों के आधार पर 108 अंगुल ऊँचाई को उत्तम माना जाता है, 96 अंगुल होने पर मध्यम और 84 अंगुल होने पर अधम माना जाता है।

2. मान : रचनागत भारीपन का बोध, शरीर में भारीपन से अर्थ वजन होता है और किसी रचना में भारीपन के लिए स्थायित्व और गहराई को दिखाया जाता है। प्रायः बीस वर्ष की स्त्री व पच्चीस वर्ष तक के पुरुष के लिए उन्मान व मान को ध्यान में रखा जाता था। कभी-कभी गणना से निर्णीत आयु का चौथा भाग बीत जाने पर भी उन्मान व मान पर विचार किया जाता था।

3. गति : गमनशीलता या संचरण जैसी गतिविधि की जानकारी। इसके तहत राजा को सिंह, हंस, मतवाले हाथी, बैल और मयूर के समान गतिशील दिखाया जाता है। मन्दगति वाले धनी कहे हैं। शीघ्र व मेढ़क जैसी गति वाले दरिद्र माने जाते हैं।

4. संहति : घनता या रचनात्मक सुगड़ता का ज्ञान। इसमें सब अंग सन्धियों की सुश्लिष्टता को सन्धात माना जाता है और ऐसा होने सुख का परिचायक होता है।

5. सार : कायागत सात सार होते हैं। इनमें मेद यानी अस्थियों के अन्तर्गत स्नेह भाग, मज्जा या खोपड़ी के मध्य का स्नेह भाग, चमड़ी, हड्डी, रेत, रुधिर और मांस की गणना होती है और इन्हीं आधार पर रक्तसार, त्वचासार, मज्जासार, मेदसार, अस्थिसार, वीर्यसार, स्नेहसार जैसे लक्षणों से सौंदर्य, विद्वता, समृद्धि, पुरुषार्थी, भाग्यशाली आदि व्यक्तित्व का विचार किया जाता है।

6. वर्ण : यह शारीरिक कान्ति का परिचायक है। कान्तियुक्त व स्निग्ध वर्ण होने पर राजा का लक्षण होता है। मध्यम वर्ण होने पर पुत्रवान धनिक और रूखा वर्ण होने पर निर्धन का बोध होता है। इसमें शुद्ध स्निग्ध वर्ण बहुत शुभ होता है और मिश्रित का फल वर्ण सामान्य होता है। यथा : -

नेत्रान्तपादकरताल्वधरोष्ठजिह्वा रक्ता नखाश्च खलु सप्त सुखावहानि।

7. स्नेह : इसका आशय है स्निग्धता और इसका बोध वाणी, जीभ, दाँत, आँख, नख इन पाँच अंगों से होता है। इनकी स्निग्धता होने पर पुत्र, धन और सौभाग्य को दिखाया जाता है और रुक्षता होने पर निर्धनता का बोध होता है।

8. स्वर : यह शब्द का द्योतक है। सजीव होने पर गज, बैल, रथ समूह, भेरी, मृदंग, सिंह या मेघ के समान स्वर से राजत्व का बोध किया जाता है जबकि गर्दभ, जर्जर या विकृत व रूखे स्वर होने पर धन व सुखविहीनता को जाना जाता है। चित्रादि में स्वर का बोध उसके साथ सजीव संवाद की स्थापना से समझा जाता है।

9. प्रकृति : व्यक्ति में भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश जैसे तत्व तथा देवता, मनुष्य, राक्षस, पिशाच और तिरछा चलने वाले स्वभाव होते हैं। इन स्वभावों को

दिखाया जाना प्रकृति का प्रदर्शन होता है । प्राय: मनुष्य प्रकृति वाला गान व भूषणप्रिय होता है, राक्षस क्रोधी, दुष्ट व पापी तथा पिशाच प्रकृति वाला चंचल, मलिन व मोटे शरीर वाला होता है। तिर्यक् प्रकृति वाला व्यक्ति डरपोक व पेटू होता है।

10. सत्त्व : यह विशिष्ट गुणवाचक है– सत्त्वशब्दो विशिष्ट गुण वाचक:। यह एक प्रकार से चित्त का गुण है, जैसा कि कहा गया है– अविकार सत्तवं व्यसनाभ्युदयागमे। कदाचित प्रकृति मनुष्यों के सत्त्व के रूप में भी ज्ञेय है– एवं नराणां प्रकृति: प्रदिष्टा, यल्लक्षणज्ञा: प्रवदन्ति सत्त्वम्।

11. अनूक : इसका सामान्य आशय है – जन्मान्तरागमन या पूर्वजन्म। प्राय: गाय, वृष, शार्दूल, सिंह, गरुड़ जैसे मुँह को देखकर पूर्वजन्म और उसके प्रताप, शत्रुजंय आदि गुणों पर विचार किया जाता है । यह कल्पित प्रसंग में ज्ञेय है– अनूकं प्रकृतितो विशेषेणैव गम्यते, प्रकृतिश्चानन्तरम्।

12. क्षेत्र : शरीरस्थ दस प्रकार के क्षेत्र होते हैं। यथा 1. गुल्फ सहित पाँव, 2. जानुचक्र सहित जंघा, 3. लिंग, ऊरु व अण्डकोश, 4. नाभि व कमर, 5. उदर, 6. स्तन सहित हृदय, 7. कन्धा और कन्धे की सन्धियाँ, 8. ओठ व कण्ठ, 9. भ्रू सहित नेत्र और 10. ललाट सहित सिर । इनकी शुभाशुभता के आधार पर किसी शरीरधारी की दशा की शुभाशुभ जानकारी की जाती है।

13. मृजा : पंच महाभूतमयी शरीरच्छाया। इससे तत्वों के आधार पर मानवीय प्रकृति आदि को दिखाया जाता है। स्फटिक रत्न के बने हुए कलश में स्थित दीप की फूटने वाली प्रभा के समान शरीर से तेज विषयक गुणों को बाहर प्रकाशित करने वाली छाया होती है। दाँत त्वचा, नख, रोम व सिर के केश स्निग्ध हो, उस पर पृथ्वी की छाया होती है और वह पुष्टि, धनलाभ, अभ्युदय की सूचक होती है। जल की छाया स्निग्ध, श्वेत, स्वच्छ, नीली व नेत्रों को प्रिय लगने वाली और सौभाग्य, अक्रूरता, सुख व अभ्युदय सहित हितकारिणी होती है। अग्नि की छाया क्रोध की परिचायक होती है। यह कमलं, अग्नि व सुवर्ण के समान कान्ति वाली, तेज व पराक्रम एवं प्रताप से युक्त होती । यह छाया जय व अभीष्टसिद्धिकारी होती है। वायु की छाया मलिन, रूखी व काली होती है जबकि आकाश की छाया स्फटिक जैसी कान्तिमय होती है। ये दोनों क्रमश: बन्धन, रोग एवं भाग्योदय की सूचक होती हैं। इस प्रकार चित्रों में छायादर्शन दैहिक गठन के साथ गुणधर्मिता को प्रदर्शित करता है।

उपर्युक्त जानकारियाँ व्यावहारिक रूप से चित्रविशारदों में ज्ञेय–संज्ञेय रही हैं। ये भारतीय कला संरचना में परम्परित है और संस्कारों के रूप में यही विशिष्ट दृष्टिकोण सतत विकसित होता है अथवा किया जाता है। न केवल देवता और मनुष्य के रूप में बल्कि गज, हाथी आदि समस्त प्राणियों के विषय में इस प्रकार के रूप निर्देशों का मिलना यह सिद्ध करता है कि चित्रकर्म के सम्बन्ध में भी ये सब विषय व्यावहारिक रहे हैं। यूँ भी विष्णुधर्मोत्तरकार को वैयक्तिक चित्र का वर्णन विशेष रूप से अभीष्ट रहा है– यथा नृत्ये तथा चित्रे त्रैलोक्यानुकृति: स्मृता॥ दृष्टयश्च तथा भावा अङ्गोपाङ्गानि सर्वश:। कराश्च ये मता नृत्ते पूर्वोक्ता नृपसत्तम॥ त एव चित्रे विज्ञेया नृत्तं चित्रं परं मतम् । नृत्ते प्रमाणं यन्नोक्तं तत्प्रवक्ष्याम्यत: शृणु ॥ (चित्रसूत्रम् 1, 5–7)

लेखक प्रख्यात संस्कृतिविद व कला इतिहासकार हैं।
– फैलो इण्डोलॉजी, 40 राजश्री कॉलोनी, विनायकनगर, उदयपुर–313001

पत्रिका ही नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान

पत्रिका मुफ्त मांग कर, कृपया हमारे अनुष्ठान को आघात न पहुँचाएं

'कला समय' के सदस्य बनें– ❍ पत्रिका की वार्षिक/द्वैवार्षिक /आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, ड्राफ्ट, ऑनलाइन अथवा व्यक्तिगत रूप से भुगतान किया जा सकता है।

'कला समय' की एजेंसी के नियम– ❍ आपके गांव, कस्बे, शहर में सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' की एजेन्सी के लिए सम्पर्क करें। ❍ कम से कम दस प्रतियों से एजेन्सी शुरू की जायेगी। ❍ पत्रिका कुरियर अथवा रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी जायेगी। डाक खर्च एजेन्सी को वहन करना होगा। ❍ कमीशन, प्रतियों की संख्या के आधार पर।

स्थायी तथा सम्पादकीय पता और दूरभाष क्रमांक के साथ सम्पर्क करें– जे–191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई–6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल– 462016 Email : bhanwarlalshrivas@gmail.com मो. 9425678058, 0755–2562294

लेखकों/कलाकारों से ❍ कला, संस्कृति और विचार के अछूते पहलुओं पर सृजनात्मक, शोधात्मक और सूचनात्मक आलेख, टिप्पणियां, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, ललित निबंध, कविताएँ, छायाचित्र, रेखांकन तथा शोध आमंत्रित हैं। ❍ रचनाएँ कागज के एक ओर टाइप की हुई तथा मौलिकता का प्रमाण पत्र संलग्न हो। कृपया रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा भी संलग्न करें। रचनाएँ और चित्र ई–मेल से भी भेजे जा सकते है।

प्राथमिकता के साथ : Chanakya फोंट / वर्ड फाइल / PDF फॉर्मेट में ही भेजें।

अनुरोध : वे सदस्य जिनका वार्षिक / द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त हो रहा है, कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करायें। सदस्यों को पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। नहीं मिलने की स्थिति में सदस्यता शुल्क के साथ ` 120/– का प्रतिवर्षानुसार रजिस्टर्ड डाक शुल्क अतिरिक्त भेजा जाना होगा।

–संपादक

संस्मरण

स्वामी पागलदास जी की रामकहानी उन्हीं की जुबानी

जगदीश कौशल

मृदंग (पखावज) जैसे लोकवाद्य यंत्र के जादूगर स्वामी पागलदास जी से मेरी पहली मुलाकात आज से करीब 53 वर्ष पूर्व हुई थी सन् 1967 के दिसम्बर माह में वह विन्ध्य संगीत समाज द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संगीत समारोह में पखावज वादन के लिए रीवा आए थे। इस संस्था का मैं प्रचार सचिव था। तब उनका साक्षातकार लिया था, जिसके कुछ संशोधित अंश मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

उत्तरप्रदेश के देवरिया जिले में स्थित मझोली गाँव के एक गरीब परिवार में बालक रामशंकर दास का जन्म दिनांक 20 अगस्त 1920 में हुआ था। बालक 'रामशंकर दास' से 'स्वामी पागलदास' होने तक की उनकी जीवन यात्रा बहुत संघर्षपूर्ण और रोचक है। उन्होंने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वर्षों कठिन साधना और तपस्या की है। बालक रामशंकर को घर पर भजन कीर्तन का वातावरण बहुत भाता था। मौका मिलते ही ढोलक पर थाप देने लगते थे। लेकिन घर के वातावरण में उनका मन ज्यादा दिन तक रमा नहीं मात्र 13 वर्ष की उम्र में यह बालक घर से भागकर सन् 1933 में राम जी की जन्मभूमि अयोध्या जा पहुँचा। यहाँ वह हनुमानगढ़ी के एक रामानंदी महन्त रामकिशन दास उर्फ बंगाली बाबा का शिष्य बन गया। अयोध्या के मंदिरों में गायन वादन के अवसरों पर ढोलक बजाने से आपकी संगीत यात्रा का श्री गणेश हुआ। किन्तु उनका फक्कड़ स्वभाव उन्हें बिहार खींच ले गया। वहाँ वह मोहद्दीपुर गाँव की एक नाटक मंडली में शामिल हो गये। इसी दौरान पटना के सुप्रसिद्ध तबलावादक बाबू नेपालसिंह से उनकी भेंट हुई। इनसे लगभग दो साल तक तबला नेपाल सिंह से उनकी भेंट हुई। इनसे लगभग दो साल तक

तबला सीखने के बाद युवा रामशंकर वापस अयोध्या आ गया औरी यहाँ तबला वादक के रूप में नाम कमाने लगा। एक बार जब वह तबला बजा रहे थे तब प्रसिद्ध मृदंगवादक स्वामी भगवानदास की नजर इन पर पड़ी। उन्होंने शिष्य बनाने का प्रस्ताव रखा और युवा रामशंकर ने प्रसन्न मन से स्वामी भगवानदास जी का शिष्य बनना स्वीकार कर लिया। इनके कुशल मार्गदर्शन में युवा रामशंकर ने पखावज वादन की

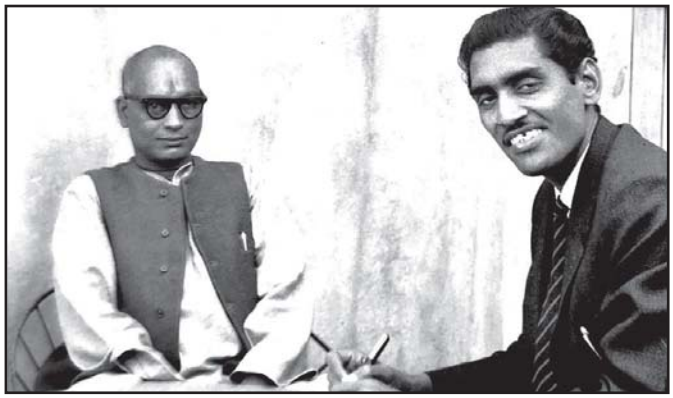

कला की कठिन साधना और अभ्यास किया लगभग 6 साल तक रात 8 से 10 घंटे तक पखावज बजाने की कठिन साधना करने के बाद उन्होंने इस कला में महारथ हासिल की।

उनका रामशंकर से पागलदास बनने की भी एक रोचक कहानी है। पखावज वादन में सिद्धहस्त होने के बावजूद उन्हें लगा कि अभी तबलावादन में उनको और दक्षता की ज़रूरत है वह पंडित संतशरण 'मस्त' के पास जाकर उनके शिष्य बन गये और अगले दस वर्ष तबलावादन के नाम पर दिए इन्हीं संतक्षरण 'मस्त' उनके तबला शिक्षा गुरू ने उन्हें रामशंकर से पागलदास बनाया। रामशंकर अभिनय और संगीत का दीवाना तो था ही पदों की रचना के साथ कवि कर्म में भी हाथ आजमाने लगा था। एक दिन बातों ही बातों में 'मस्त' ने कहा कि तुम्हें अपने पद 'पागल' उपनाम से रचने चाहिए गुरू की आज्ञा मानकर रामशंकर दास 'पागल' बन गया और अन्तरराष्ट्रीय ख्याति अर्जित करते-करते पागलदास बन गया।

सन् 1960 में स्वामी पागलदास जी जब तानसेन संगीत समारोह ग्वालियर में पखावज बजाने गए तो आयोजकों ने सोचा यह क्या मृदंग बजा पायेगा, उन्हें मंच पर बजाने की अनुमति नहीं दी तब उनके मन को बड़ी ठेस लगी उन्होंने उस्ताद तानसेन की मजार पर पखावज का वादन किया और लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया सन् 1960 में ही मैहर के संगीत सम्मेलन में उनके पखावज वादन से मुग्ध होकर बाबा अलाउद्दीन खाँ ने उन्हें अपना मानसपुत्र बना लिया था। सन् 1964 में पहली बार आकाशवाणी से उनका पखावज वादन प्रसारित हुआ। सन् 1965 में हाथरस में हुए एक बड़े संगीत सम्मेलन में कार्यक्रम देने के बाद देश विदेश के संगीत सम्मेलनों में उनका लगातार नाम होने लगा सन् 1965-66 में संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ में संगीत व्याख्याता के पद पर नियुक्त किया गया पर वहाँ उनका मन नहीं लगा स्वामी पागलदास जी फिर से राम की नगरी अयोध्या में लौट आए और अपना तन मन धन लगाकर अयोध्या में एक संगीत आश्रम की स्थापना की। अयोध्या के प्रमोदवन मोहल्ले में स्थित इस संगीत आश्रम से देश विदेश के सैकड़ों पखावज वादक प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वामी पागलदास जी का नाम रोशन कर रहे हैं। ■

इराकी अमेरिकी कवयित्री दून्या मिखाइल की कविताएँ

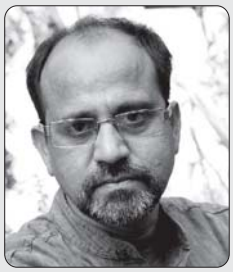

अनुवाद : मणि मोहन

प्रो. मणि मोहन अनुवाद के क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय हैं। अनुवाद के अलावा वे समकालीन हिंदी कविता के समर्थ कवि भी है। अनुवाद के माध्यम से वे हमें विश्व साहित्य की विरासत और हलचल से अवगत कराते रहते हैं।
सम्प्रति: शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय गंज बासौदा में अंग्रेजी के प्राध्यापक। मो.- 09425150346

1965 इराक में जन्मी दून्या मिखाइल ने 'द बगदाद आब्जर्वर' के लिए बतौर साहित्य-संपादक काम किया। इराकी सरकार की धमकियों के फलस्वरूप 90 के दशक के आखिरी वर्षों में मातृभूमि छोड़ने को बाध्य हुई। 2001 में उन्हें संयुक्त राष्ट्र का ह्यूमन राइट्स अवार्ड मिला। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए सम्मानित दून्या के चार कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

अपना हाथ दो मुझे

अपना हाथ बढ़ाओ मेरी तरफ
और अपना प्रेम भी,
अपना हाथ दो मुझे और मेरे साथ नृत्य करो।
एक अकेला फूल, और इससे ज्यादा कुछ नहीं
बस एक अकेला फूल हो जायेंगे हम।

एक लय में नृत्य करते हुए
तुम मेरे साथ गुनगुनाओगी।
हवा में जैसे घाँस, और इससे ज्यादा कुछ नहीं
बस हवा में घाँस हो जायेंगे हम।

मुझे कहा जायेगा आशा और तुम्हे गुलाब :
पर अपने नाम खोकर
हम दोनों आजाद हो जायेंगे,
एक नृत्य पहाड़ पर, और इससे ज्यादा कुछ नहीं,
बस एक नृत्य हो जायेंगे हम पहाड़ पर ।

रेखांकन : रमेश गौतम

कैदी

वह नहीं समझती।
'अपराधी' होने का क्या मतलब होता है
वह जेल के दरवाज़े पर
तब तक इंतज़ार करती है
जब तक कि उसे देख न ले
यह कहने के लिए कि 'अपना ध्यान रखना'
जैसे कि वह उसे ध्यान दिलाती थी
जब वो स्कूल जाता था
जब वो अपने काम पर जाता था
जब वो छुट्टियों में घर आता था

उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा
कि वे क्या बड़बड़ा रहे हैं अभी
सींखचों के पीछे
यूनिफार्म में खड़े हुए
जब उन्होंने निर्णय लिया
कि उदास दिनों के अजनबियों के साथ
उसे यहाँ बन्द कर देना चाहिए
उसके जेहन में यह बात कभी नहीं आयी थी
जब वह लोरियाँ सुनाती थी
बिस्तर पर
उन दुर्गम रातों में
कि डाल दिया जायेगा उसे
इस ठण्डी जगह में
बिना चाँद या खिड़कियों के

वह नहीं समझती
एक कैदी की माँ नहीं समझती
कि उसे अब चलना क्यों चाहिए
सिर्फ इसलिए
'कि मुलाकात का वक्त ख़त्म हुआ'!

चार छोटी कविताएँ

(एक)

उसने अपने कान सटा दिए
सीप के एकदम करीब
वह सुनना चाहती थी सबकुछ
जो उसने कभी नहीं कहा उससे।

(दो)

जब भी फेंकते हो तुम पत्थर
समंदर में
वह भेजता है लहरें मेरे भीतर ।

(तीन)

मेरा हृदय काफी छोटा है:
इसीलिए यह इतने जल्दी भर जाता है।

(चार)

नए साल की
पहली भोर
हम सब देखेंगे
उसी सूर्य की तरफ।

■

गीत

रमेश गौतम के नवगीत

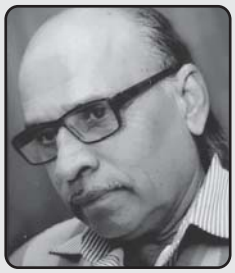

रमेश गौतम

जन्म : 28 सितम्बर 1948, जनपत, पीलीभीत (उ.प्र.)
नवगीत संग्रह- इस हवा को क्या हुआ, बादल फेंटे ताश, दोहा संग्रह, राष्ट्रीय पत्रिकाओं में अनवरत प्रकाशन, दूरदर्शन, आकाश वाणी से कविताओं का प्रसारण। प्रमुख हिन्दुस्तानी भाषा काव्य प्रतिभा सम्मान।
संपर्क : रंगभूमि 78-बी, संजय नगर, बाईपास रोड बरेली-243005।
मोबा. 9411470604

रेखांकन : रमेश गौतम

(एक)

मनमुटावों
की लकीरें
खींचना अब छोड़ दे मन।
जोड़ ले टूटे हुए सम्बन्ध
सारे बाँसुरी से
कब बने
अन्तर्मुखी रिश्ते
किसी जादूगरी से
स्वर सुरीले
ही हृदय में
रोपते फिर से हरापन ।

देह की
जिद्दी नदी ऐंठी
अहम् के ज्वार में है
नाव ढाई
अक्षरों की
डूबती मँझधार में है
पार जाए
चीरकर
कैसे भँवर, अद्वैत दर्शन ।
क्यों भटकता
पीठ पर
बाँध हुए अलगाव के क्षण
क्या पता
फिर से मिले,
या न मिले यह रेशमी तन
ढूँढ तो
अन्तर्जगत में
तू लगावों के निकेतन।

(दो)

तुम
अँधेरो से घिरी हो
पर उजाले बाँटती हो ।

सीपियों में बंद
मोती सी
तुम्हारी व्यंजना है
तुम कहो न, पर तुम्ही से
रोशनी का पुल बना है
भैरवी गाकर
सुबह की
बेड़ियों को काटती हो ।
शब्द की
हर भंगिमा को
मौन से पहचानती हो
एक चुप्पी में
सिमटकर
बोलना भी जानती हो
फूल झरते
हैं अधर से
जब किसी को डाँटती हो ।

नाप पाया
कब समय
सम्भावनाओं का ललाट
शून्य को
तुमने किया सामर्थ्य से
इतना विराट
तुम शिखर
से भी उतर कर
खाईयों को पाटती हो ।

स्त्रियों ने
कब अकेले
सुख घरौंदों का जिया है
बाँट कर
अमरित हलाहल
स्वयं मीरा सा पिया है
आँसुओं के
बीच भी तुम
मुस्कुराहट छाँटती हो ।

(तीन)

एक नूपुर
ध्वनि सहेजे
मौन सम्मोहित तपस्वी।
व्यक्त हो
आक्रोश कैसे
लुप्त सारी भँगिमाएँ
अग्निपथ
की गोद में
अँगड़ाई लेती अप्सराएँ
रंगशाला
की शरण में
शब्द बैठे हैं यशस्वी।

देख कर
क्वाँरी नदी का रूप
मन विचलित हुआ
तप्त शिखरों ने
झुका सिर
देह को उसकी छुआ
काल चिंतन
छोड़ उतरे
धार में पर्वत मनस्वी।

उर्ध्वगामी
स्वर थके से
हाथ बैठे हैं समेटे
सूर्य के
उदघोष देखें
छाँव में चन्दन लपेटे
गोद में
काली घटाओं
के छिपा
पौरूष जयस्वी।

■

कविता

बलराम गुमास्ता की कविताएँ

बलराम गुमास्ता

जन्म :16 अप्रैल 1954, ग्राम-मझौली जिला जबलपुर (म.प्र.)
कविता संग्रह प्रकाशित : 1. नीम के पुते मलयागार, 2. विष्णू नाट्य कंपनी और अन्य कविताएं , 3. नामवर, 4. कवि-कपूत।
बाल साहित्य : 1. पंखों की पालकी 2. चिड़ियाघर की सैर एवं तरकीब, 3. सौर मंगल की बात, 4. परियां होती कटी पतंगें, 5. सूरत को बुलवाना है तो एवं अन्य।
पता : म.नं. 104 न्यू चौकसे नगर, लामाखेड़ा, भोपाल-462038
मोबा. 9669269151

कोरोना

बिन पग चलहिं
सुनहिं बिन काना
कर बिन कर्म
करहिं विधि –नाना
कोरोना

यूं तो मृत है यह परजीवी
पर, इंसानी जीवन में खोजे
अपना ठौर- ठिकाना

कहर ढा दिया, इंसानों पर
सहमा है भगवान
मरे हुए को कैसे मारें
हतप्रभ है विज्ञान !

रेखांकन : रमेश गौतम

लाशों के अंबार , पट गया
दुनियां का ,खूंटा- कोना
ईश्वर कंण से, अणु –परमाणु
फिर विषाणु से कीटाणु
जीवन विकास की यात्रा में
कहीं पीछे छूटा ,कोरोना

इस तरह अविकसित जीवन का
संभव है अन्य ग्रहों पर होना
यह भी संभव है
कि यही एलियन हों
जो क्षुद्र ग्रहों, उल्का पिंडों
पर हो सवार,
जब –तब धरती पर आते हों
लेकर पूरा जीवन पाने का सपना

मानव भक्षी इस विषाणु से
अगर हमें है बचना
तो एकमात्र उपाय यही है
कि घर के भीतर ही रहना ।

महिला विमर्श

मछलियों की लालसा में
घात लगाए बगुला
ध्यान मग्न है
इस तन्मयता में
मछलियों के मछलों से
ब्रेकअप होने,
तलाक, यहां तक कि
उनके विधवा होने की प्रार्थनाएं हैं
ताकि उसे सहजता से
उपलब्ध हो सकें मछलियां

गौर से देखने पर बगुला
सफेद धोती –कुर्ते में सजा-धजा
किसी हिंदी के प्रोफेसर,
और प्रगतिशील
आलोचक की तरह दिखाई देता है जहां
लालसाओं का लिज-लिजा खेल
महिला –विमर्श को प्रमाणिक
बनाने की आड़ में
शामिल की जाती रही हैं
लुटी –पिटी आवाजें
इस चालाकी के साथ कि
अद्भुत –अद्भुत के शोर में
गुम होती रहीं हैं उनकी
मार्मिक कराहें ।

महिला विमर्श

जितनी दूर तक देख पाती हैं
हमारी आंखें
अंतर्दृष्टि में समा पाती है
यह सृष्टि
पहाड़-जंगल ,नदियां –नाले
नाना पशु –पक्षी ,कीड़े –मकोड़े
आदमी और उसके देवता –दानव विद्रूप
क्षितिज उसके पार
जीवन के सारे कार्य – व्यापार
भवसागर में हिचकोले खाता समय
उसके सुख-दु:ख की रहस्यमयी
आर्त-पुकार
इन सब से ही तो बना है
हमारी आत्मा का आयतन
उसका आकार

जब कहीं काटा जाता है एक पेड़
या बारूदी धमाकों से
तोड़े जा रहे होते हैं ,पहाड़
तब पेड़ के आयतन भर खोखला
और पहाड़ की तरह दरक जाता है हमारी
आत्मा का आयतन भी

असमय सूख रही नदियों में
सूखने लगता है
पृथ्वी का जीवन जल
फिर वैज्ञानिक खोजें
और- और दूर तक देख पाना
सुन पाना
एक के बाद एक
और-और अनसुना
इस तरह जैसे-जैसे
बढ़ती जाती है जानकारी
वैसे –वैसे बढ़ता जाता है
हमारी आत्मा का आयतन

जाहिर है
घटता जाता है उसका घनत्व
घटती जाती हैं
मानवीय संवेदनाएं
यह जो मानवीय संवेदना है ना
घनत्व है, हमारी आत्मा का –

(कविता संग्रह ,'कवि कपूत'से) ■

ग़ज़ल

डॉ. अली अब्बास 'उम्मीद' की ग़ज़लें

डॉ. अली अब्बास 'उम्मीद'

जन्म : 1-7-1945 जौनपुर, उ.प्र.
लेखन - उर्द, हिन्दी, अंग्रेजी में आलोचना, काव्य संग्रह, आध्यात्म, खण्डकाव्य, बाल कहानियां, नाटक, नज़में तथा कई पत्र, पत्रिकाओं में सम्पादन।
म.प्र. हज कमेटी के सदस्य म.प्र. उर्दू अकादमी के सदस्य संरक्षक।
संपर्क : डॉक्ट्र्स कॉलोनी, ईदगाह हिल्स, भोपाल-462001 (म.प्र.)
मो. 9200846045

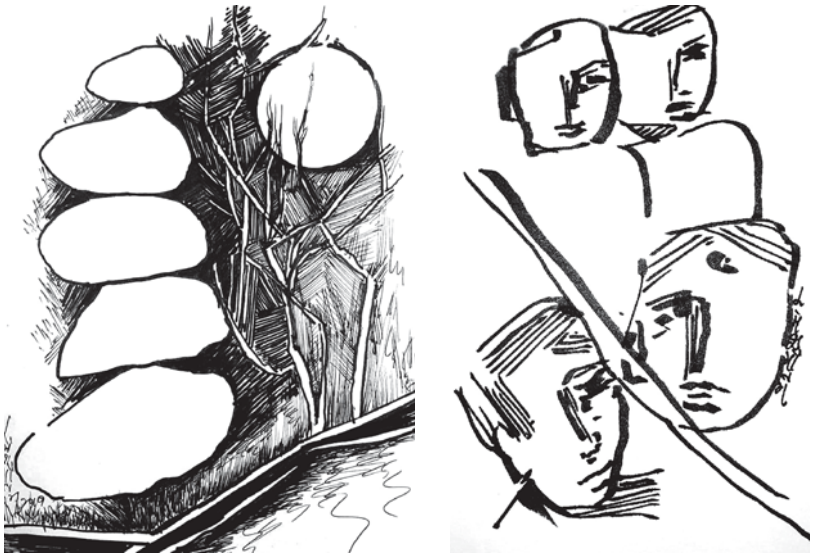

रेखांकन : रमेश गौतम

ग़ज़ल -1

रात करवट बदल रही होगी
ओस की बूंद जल रही होगी !

उस के कमरे की भीगी पलकों से
अब मेरी याद ढल रही होगी !

फूल खिलते थे जिस के अधरों पर
आँख उस की सजल रही होगी !

तुम ने अभिलेख रच लिये लेकिन
किस क़दर वह विकल रही होगी !

सुब्ह के बदले शाम ली हम ने
दोपहर हाथ मल रही होगी !

आदमीयत की बात है शायद
मर चुकी आज, कल रही होगी !

सारे शब्दों को रख चुके गिरवी
खूब दूकान चल रही होगी !

रंग, राग और पराग की आशा
बर्फ़ बन कर पिघल रही होगी !

क्रुध नारां की शक्ति से 'उम्मीद'
शांति की बात फल रही होगी !

ग़ज़ल -2

होंट पे अगर उस के बिजलियाँ नहीं होती
नफ़रतों के शोलों में बस्तियाँ नहीं होती !

काश ! बैठने वाले भूल के भी ये सोचें
आदमी से ऊंची तो कुर्सियाँ नहीं होती !

अब ख़िज़ाँ' का साया है मौसम-ए-बहाराँ पर
फूल खिलते हैं लेकिन शोखियाँ नहीं होतीं !

भूल के न रूख करना ख्वाहिशात के घर का
दर ता उसमें होता है खिड़कियाँ नहीं होतीं !

आरजू है ये 'उम्मीद' जागने लगें वो भी
जिन की सोई किस्मत में रोटियाँ नहीं होतीं !

■

आलेख

दर्द भरी दास्तां : चित्रकार वोनगोग

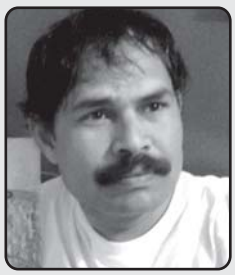

चेतन औदिच्य

वह हॉलैंड के ज्युंडर्ट गांव में जन्मा था। मगर पूरी दुनिया, उसकी अपनी थी । दुनिया ही क्यों? सारा आकाश और तारामंडल भी उसका अपना था । रेंब्रांट, कोरो और मिले के चित्र उसके अपने थे। ब्रबंट के खान मजदूरों की घास के पुआल वाली कोठारिया उसकी अपनी थी। सड़कें, गलियां, नदियां, खेत और जलपान-ग्रह, सभी कुछ उसका अपना था। उसके दिलो-दिमाग की ज़द में बाहर की दुनिया तो थी ही। भीतर का अंतरिक्ष भी उसका अपना था । सारी समष्टि ही उसकी थी। मगर अफसोस... कि समष्टि का वह नहीं था । इस सर्वथा अस्वीकृत मनुष्य का जन्म लेना धरती पर एक दुर्घटना थी महज़।

विंसेंट वोनगोग को आज पूरा विश्व एक महान चित्रकार के रूप में जानता है । ना केवल जानता है , अपितु उसकी कृतियों के साथ, उसके कष्टमय जीवन से अनन्य प्रेम करता है। उसी वोनगोग से, जिसके चित्रों को उसके जीवित रहते कभी महत्व नहीं मिला। ना ही उसे वह प्रेम प्राप्त हुआ जिसके लिए वह मृत्यु पर्यंत बेचैन रहा। वोनगोग के सृजन की बेचैनी आत्यंतिक-उत्कट थी। वह मानवता के उस कारुण्य का सागर थी, जिसे उसके 'समय' ने नहीं समझा। पग-पग पर मिली निराशा और तिरस्कार ने उसके मन मस्तिष्क को छिन्न-भिन्न और अवसाद ग्रस्त कर छोड़ा।... और अतंत: एक महान कलाकार खुद को ही गोली मार देता है।

इस महान कलाकार का जीवन युद्धमय जीवन था। एक ऐसा युद्ध, जो स्वयं से होता है। स्वयं के विचारों और निर्णय से होता है। अपनी ही अबूज कल्पनाओं से होता है। आंतरिक यथार्थ से होता है। इस युद्ध में वोनगोग इतना तल्लीन रहा कि उसके संवेगों से उसका साथ छूट पड़ा। तथापि इस बेचैन घर्षण ने ऐसी कृतियों को जन्म दिया, जिसका विश्व सदा ऋणी रहेगा। उसका व्यक्तित्व विरोधाभासी था। विरोधाभास भी ऐसा, जो चकित कर दे। जैसे वह अपने भीतर के अंधेरे से दुर्धर्ष-संघर्ष कर रहा था। लेकिन उसने अपने चित्रों में रोशनी की कतारें बांध दीं। उसके लिखे पत्रों से पता चलता है कि, उसकी मन:स्थिति, मलीन और धूसर पड़ चुकी थी। तथापि उसने चटक, धवल और पिताभ से सराबोर कृतियां हमारे समक्ष रख दी। कला-क्रेता समाज और संबंधियों में भाई को छोड़कर सभी ने उसे दूर किया। फिर भी उसने दुनिया के प्रति उदारता ही प्रदर्शित की। दुनिया को प्रकृति का वैराट्य अर्पित किया। अंतर्विरोधों की भाव-भूमि पर खड़ा होकर, वह एक तरफ आलू खाकर भूख मिटाने वाले खान मजदूरों का अत्यंत संवेदनशील चित्र 'पोटैटो ईटर्स' बनाता है, तो दूसरी तरफ फूलों फसलों से लक-दक खेतों में मैदानों के संग सूरजमुखी सजाता है।

यह एक आश्चर्य की बात है कि वोनगोग को अपने जीवन में न ख्याति मिली, न ही प्रेम; किंतु उसकी मृत्यु के बाद उसे अपार ख्याति मिली और अनन्य प्रेम। वह एकमात्र ऐसा कलाकार है जिसके जीवन में सर्वाधिक रूचि ली गई। उस पर अनेक फिल्में बनाई गई। जीवनियां लिखी गई। देश दुनिया के रंग-कर्मियों ने उसके चरित्र को मंच पर जीवंत किया। ना जाने कितने कवियों ने उसे कविता में उतारा। प्रसिद्ध कवयित्री अनीता वर्मा । लिखती हैं ---

आंखें बेधक/तनी हुई नाक/ छिपने की कोशिश करता था कटा हुआ कान/दूसरा कान सुनता था दुनिया की बेरहमी को/व्यापार की दुनिया में वह आदमी / प्यार का इंतजार करता था।

वोनगोग ने अपने पत्रों में, खुद अपनी दीवानगी के बारे में, अनेकों बार लिखा है । देखिए --- 'तारपीन के तेल में घोली हुई धूप की डलिया मैंने कैनवस में बिखेरी थी मगर! क्या करूं? लोगों को उस धूप में रंग दिखते ही नहीं। मुझसे कहता था थियो...चर्च की सर्विस कर लूं और उस गिरजे की खिदमत में गुजारूं मैं अपने दिन और रात। जहां रात को साया समझते हैं सभी। (और) दिन को मृगतृष्णा का सफर! उनको असल की हकीकत तो नज़र आती नहीं। मेरी तस्वीरों को कहते हैं वहम है। मेरे कैनवास पर बने पेड़ की विशालता तो देखो! मेरी सर्जना ईश्वर के उस पेड़ से कुछ कम तो नहीं हैं।' टुगेंडहोल्ड ने वोनगोग के बारे में बहुत ठीक लिखा है कि, 'उसके अनुभवों के नोट्स चीजों का ग्राफ और दिली धड़कन की प्रतिक्रिया है।' असल में चित्रकार के रूप में वोनगोग में अदभुत रचनात्मक क्षमता थी। इस क्षमता को उसने आत्मिक सौंदर्य, प्राकृत सुषमा तथा मनुष्य जीवन के संवेदनात्मक पक्षों को उद्घाटित करने में लगाया। साथ ही अपने आप की तलाश में भी। उसके बनाए अनेक आत्मचित्र इस बात की पुष्टि करते हैं। इस तलाश, में वह बराबर महसूस करता रहा कि, उसका समय और समाज संवेदना शून्य है। इसे ही उसने स्वयं के विविध आत्म चित्र में अभिव्यक्त किया है। रचनात्मक तल पर वोनगोग में स्फोटकता थी। इसकी बदौलत अपने जीवन के अंतिम दस वर्षीय कला-काल में वह नो सौ से अधिक पेंटिंग बना गया। अनेक असफलताओं के बावजूद अपने चित्रों में प्राण-तत्व पिरोने को जूझता रहा। उसका हृदय उदारतम विचारों में गुंथा, विद्युत आवेगों का संकुल था। उसने सबसे प्रेम करना चाहा। पेड़ों से, नदियों से, आंखों से, अंधेरों से, तारों से, रोशनी से। उसके प्रेम का केंद्र मनुष्य और मनुष्य की करुणा थी। तभी तो ब्रंबट के खान मजदूरों की जिजीविषा और संघर्ष उसके अपने संघर्ष हो गए। करुणा का ऐसा सोता फूटा उसमें, कि उन दरिद्रों के समान वह अपने आप को झोपड़ी में घास के पुआल पर ले आया।

वोनगोग बेरीनाज के खान श्रमिकों को धार्मिक उपदेश देने की नौकरी पर गया था। वह उन मजदूरों के दु:ख-दर्द में इस तरह शामिल हुआ, कि ब्रेड का एक टुकड़ा भी उसने अपने लिए नहीं बचाया। भूखे और नियति के क्रूर पाश में बंधे मजदूरों को उसने अपने हिस्से का सर्वस्व लुटा दिया। इसीलिए तो वह लाचार खान मजदूर उसे 'कोयला खदानों का मसीहा' कहा करते थे। मगर सयानी दुनिया ने उसके इस व्यवहार को अनुचित माना। चर्च के उद्देश्य हेतु नाकाबिल मानते हुए उसे इस काम से मुक्त कर दिया गया। दूसरे शब्दों में नोकरी से निकाल दिया गया। उसके लिखे इन शब्दों से समझा जा सकता है कि उसके सवाल कितने गंभीर और मानवता से कितने सराबोर थे । वह कहता है , 'जब मैं कमजोर को रौंदता हुआ देखता हूं तो मुझे संदेह होने लगता है कि प्रगति और सभ्यता क्या कहती है!'

वोनगोग को जीवित रहते एक ही व्यक्ति ने अटूट प्रेम किया। वह था उसका छोटा भाई थियो (थियोडोर)। इन दोनों भाइयों का प्रेम विश्व इतिहास में बहत दुर्लभ है। थियो के कारण ही वोनगोग पेंटिंग बना पाया। आर्थिक रूप से जीवन भर वह अपने भाई की भेजी हुई राशि पर निर्भर रहा । दोनों के मध्य अपार प्रेम था। हमें वोनगोग के जीवन के बारे में सर्वाधिक जानकारी दोनों भाइयों के बीच हुए पत्र-व्यवहार से मिलती है। वोनगोग ने जो पत्र लिखे वह साहित्य की महानतम उपलब्धियों में गिने जाते हैं। श्रीकांत वर्मा ने दिनमान में लिखा था कि, 'उनके (वोनगोग के) पत्रों की तुलना बड़ी आसानी के साथ टोल्स्टॉय और दोस्तोवस्की की कृतियों से की जा सकती है। टोल्स्टोय की कृतियों में मनुष्य का स्वर्ग है, दोस्तोवस्की की रचनाओं में मनुष्य का नरक विंसेंट वोनगोग के पत्रों में दोनों ही है।' वोनगोग के लिखे को पढ़ने पर हमें यह बात एकदम सही मालम पड़ती है। वह कहता है ... **मैंने हर शाख पर / पत्तों के रंग और रूप पर परिश्रम किया है। उनके सच को व्यक्त करने में / उन दरख्तों की संभली हुई देह तो देखो। कैसे खुद्दार हैं ये पेड़। मगर कोई भी मगरूर नहीं है।**

वोनगोग अप्रतिम मेधावान था। उसको किताबें पढ़ने का जुनून था। कविता से लगाव था। फ्रांस के इतिहास में उसकी दिलचस्पी थी। अल्प समय में ही उसने कला के चरम को साध लिया था। परंतु उसे मनोरोग से जूझना पड़ा। कई बार मनोचिकित्सा लेनी पड़ी। उसको समय-समय पर उन्माद के दौरे आते थे। इसी दौरान एक बार उसने अपना कान काट लिया था। यह अलग बात है कि कोई कहता है कि अपनी वैश्या प्रेमिका के प्रसंग में उसने ऐसा किया, तो कोई अपने चित्रकार दोस्त गोंगई से हुए झगड़े की प्रतिक्रिया में ऐसा किया मानते हैं। अलबत्ता एक महान चित्रकार ने ऐसा किया जरूर था।

मनोचिकित्सालय में इलाज के दौरान ही वोनगोग ने 'स्टारी नाइट' नाम की विख्यात पेंटिंग बनाई थी। इस बात पर आश्चर्य होता है कि मानसिक उद्वेग के क्षणों में उसने ऐसी पेंटिंग कैसे बना दी, जो टेलिस्कोप से देखे गए एक विशेष तारा संकल की आभा जैसी लगती है। पेंटिंग में कैसे, तारों के प्रकाश की, वह गति दे दी, जो

प्राकृतिक रूप में पाई जाती है। स्थिर नहीं, अपितु गतिशील आकाश जो काला नहीं बल्कि नीले रंग के विस्मय का स्फोट है। वस्तुत: नीले रंग और ब्रश की सहायता से अपनी ही शैली में आघात देकर, उसने यह चित्र बनाया था। जो निज की क्षत-विक्षत चेतना और आध्यात्मिक शांति का, अभिभूत करने वाला द्विविध संयोजन है। उसके चित्रों को देखने से ज्ञात होता है कि वह कला में दृष्टता पर जोर देता है। दृष्टता, जिसमें मानवता की पक्षधरता है, उसी के शब्द हैं .... 'गरीबी के गंभीर परीक्षणों में आप चीजों को पूरी तरह से अलग आंखों से देखना सीखते हो ।' उसकी यह गरीबी अपने में हजार अर्थों की गरीबी है। उन्हीं अर्थों की यात्रा किसी कलाकार की दृष्टता है। वोनगोग की दृष्टता पर किसी की कही यह ठीक पंक्ति है कि, '(वोनगोग के चित्र) बेलगाम अंतर्दृष्टि से प्रेरित बेकाबू भावनात्मक तत्व है।' असल में वोनगोग का पागलपन, एक अलग तरह का पागलपन था। कुछ हद तक परा-मानवीय। कहा जाए देवत्व के तुल्य । उसके सामान्य जीवन का दुखद पहलू यह है कि उसके चित्रों को पूरे जीवन-काल में मान्यता नहीं मिल सकी। यह अलग बात है कि उसकी मृत्यु के अनेक दशकों बाद 1984 के वर्ष की एक सुबह, उसका बनाया सूरजमुखी का चित्र ज्ञात इतिहास का सबसे अधिक मूल्य, दो करोड़ सैंतालीस लाख पचास हजार-पाउंड, वाला चित्र बन जाता है। जीवन में अभागे रहे चित्रकार को वर्ष 2004 में नीदरलैंड सरकार सर्वकालिक दस महान डच व्यक्तियों में शामिल करती है।

वोनगोग के जीवन में सुख का कोई क्षण नहीं था। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में अपनी बहन को लिखे गए पत्र में वह कहता है ... 'इंसान को सुख, प्रसन्नता, आशा और प्रेम की जरूरत होती है। जैसे-जैसे मैं, बूढ़ा, कुरूप, जाहिल, बीमार और साधन हीन होता जा रहा हूं, वैसे-वैसे मुझसे, . आक्रामक, सुव्यवस्थित, प्रसन्न रंगों का इस्तेमाल कर, अपने आप से प्रतिहिंसा लेने की इच्छा बढ़ती जा रही है।' इससे पता चल रहा है कि वोनगोग अवसाद में गहरा धसता जा रहा था।...और आखिरकार पेंटिंग के दौरान पक्षियों को डराने के लिए रखी गई रिवाल्वर से वह, खुद को गोली मार देता है। 29 जुलाई 1890 को 37 वर्ष की छोटी आयु में विंसेंट, जिसका शाब्दिक अर्थ 'विजेता' होता है.. मृत्यु से हार जाता है। इस महान कलाकार का अवसान कला जगत में सर्वाधिक कारणिक घटना के रूप में देखी जाती है। कितना दुखद है कि वोनगोग को उसके आसपास के लोग 'असंतुलित मनुष्य' कहते रहे मंगलेश डबराल कहते हैं, 'पागल होने का कोई नियम नहीं है' इसी चुनाचे पहेली गूंजती है ... वोनगोग के लिए दुनिया पागल थी या दुनिया के लिए वानगोग!

49-सी , जनता मार्ग, सूरजपोल अंदर, उदयपुर -313001 (राजस्थान)
मोबाइल : 9602015389

■

पुस्तक समीक्षा

संस्मरण संग्रह 'मोहि ब्रज बिसरत नाही' निमाड़ी लोक जीवन और लोक संस्कृति का अद्‌भुत प्रामाणिक दस्तावेज

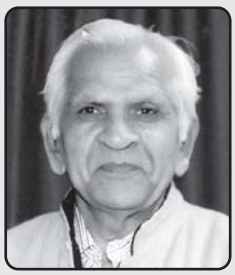

युगेश शर्मा

हिन्दी में गद्य और पद्य की हर वर्ष लाखों पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, लेकिन कुछ ही पुस्तकें ऐसी होती हैं, जो अपनी सामग्री और लेखन शैली की बुनियाद पर विशेष ध्यान आकर्षित करती हैं और वे अद्‌भुत एवं अविस्मरणीय कृति बन जाती हैं। वस्तुत: ऐसी कृतियां अपवादिक रूप में ही प्रकाशित होती हैं जो पाठकों के अंतर्मन को स्पर्श करती हैं। लोक जीवन और लोक संस्कृति पर भी नि:संदेह इन दिनों काफी लिखा जा रहा है और वर्तमान के सामने समृद्ध अतीत को प्रस्तुत करने के सुविचारित प्रयास भी हिन्दी के लेखक कर रहे हैं। इन प्रयासों से ऐसा आभास होता है जैसे ऐसे लेखक हमारा साक्षात्कार हमारे उस अतीत से करवा रहे हैं, जो हर दृष्टि से सुसंपन्न और अनुकरणीय था। ऐसा साहित्यिक लेखन इस कारण अधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान हो जाता है कि वह इतिहास की वस्तु बनते जा रहे हमारे भूतकाल से हमें पुन: जोड़ता है और कहता है कि आधुनिकता और अर्थ की प्रधानता के इस दौर में हम उसको, बिसरा न बैठे। अतीत को जानना और उसकी अच्छाइयों को स्वीकार कर जीवन में उनको स्थान देना इसलिए जरूरी है कि अतीत ही है, जो हमें पश्चिम की आंधी में बहने और आधुनिकता की चकाचौंध से जन्मे भटकाव से बचाकर रख सकता है कि हमारे अतीत में वर्तमान के उन सारे प्रश्नों के उत्तर छिपे हुए हैं, जिनको पाने के लिए इन दिनों हम भ्रम के अजीबोगरीब दौर से गुजर रहे हैं।

यह स्वीकार्य तथ्य है कि साहित्य चाहे वह पद्य साहित्य हो अथवा गद्य साहित्य, वह प्रमुख रूप से दो धरातलों पर रचा जाता है। पहला धरातल है भोगा हुआ अनुभव संसार और दूसरा कल्पना की मदद से खड़ा किया गया संसार। जब एक लेखक अपने भोगे हुए अनुभवों के संसार को शब्दाकार देता है, तो ऐसे साहित्य में यथार्थ, आधिकारिता और विपुल प्रभावोत्पादकता का समावेश रहता है। जब पाठक ऐसे लेखन को पढ़ता है तो विषयवस्तु से वह सीधे जुड़ कर कृति के क्रमिक विकास के साथ गमन करने लगता है। ये सारी बातें वर्ष 2017 में अयन प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित अनूठे संस्मरण संग्रह 'मोहि ब्रज बिसरत नाहीं' में विद्यमान हैं। इस अद्‌भुत कृति की लेखिका हैं – डॉ. सुमन चौरे।

डॉ. सुमन चौरे का जन्म म.प्र. के निमाड़ अंचल के ग्राम कालमुखी में हुआ है। आप निमाड़ के गौरव पुरूष पद्मश्री से सम्मानित पं. रामनारायण उपाध्याय की सुपुत्री हैं। आपने निमाड़ के लोक जीवन और वहां की लोक संस्कृति से ज्ञान- चेतना तथा संस्कारों की पूंजी प्राप्त की है। उनके मन मस्तिष्क में निमाड़ का संपूर्ण वजूद सांगोपांग जीवंत हो उठा है। जब वे निमाड़ के किसी भी पक्ष पर कलम चलाती हैं और संवाद करती हैं, तो ऐसा अहसास होता है जैसे निमाड़ अपनी सारी खूबियों के साथ साक्षात उपस्थित हो गया है। उनकी शैली की मिठास और उनके शब्द चयन में निमाड़ी लोक भाषा की खूबियों के दर्शन हो जाते हैं। वे निमाड़ी लोक गीतों की सिद्धहस्त लोक गायिका भी हैं। इस कारण उनके लेखन में सरलता, मधुरता और आत्मीयता का पर्याप्त समावेश रहता है। सात दशक से अधिक की जीवन-यात्रा के बाद भी संस्मरण लेखन में उनकी स्मरण-सामर्थ्य ने जो कमाल दिखाया है वह सचमुच अचंभित करता है। मैं उनकी इस सामर्थ्य को नमन करते हुए उन्हें धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने अपनी इस कृति के माध्यम से निमाड़ की महान धरती और उसकी वैविध्यपूर्ण विशेषताओं से परिचय कराया है।

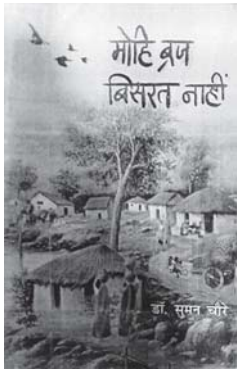

ग्राम्य सौन्दर्य के दर्शन कराते सुन्दर आवरण पृष्ठ वाली पुस्तक 'मोहि ब्रज बिसरत नाहीं' 350 से कुछ अधिक पृष्ठों की है। इसमें 60 संस्मरण और प्रेरक आलेख शामिल हैं। जिन ग्रामीण चरित्रों को आधुनिकता और भौतिकता की अंधी दौड़ के कारण हम विस्मृत कर चुके हैं, लेखिका ने उन भूले बिसरे चरित्रों को अपनी सशक्त लेखनी से पुनर्जीवित कर दिया है। इन चरित्रों के माध्यम से निमाड़ के जीवनोपयोगी संस्कार बार बार अपनी प्रेरक उपस्थिति दर्ज कराते हैं और कहते हैं कि वे 21 वीं सदी में भी पूरी तरह प्रासंगिक और मंगलकारी हैं। आपने इन चरित्रों को प्रस्तुत करते समय जात-पांत, अमीर-गरीब और पढ़े-लिखे या अनपढ आदि की सारी पुरानी दीवारों को जैसे जमींदोज कर डाला है। अपने आत्मकथ्य 'मेरे मनोभाव' में डॉ. सुमन चौरे कहती हैं – 'अपनी स्मृतियों की धरोहर को सहेज कर मैं आपके सामने रख रही हूँ। इन लोक संस्मरणों का यह संकलन 'मोहि ब्रज बिसरत नाहीं' निमाड़ के सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का एक दस्तावेज है।... मैं निमाड़ के इस सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य की प्रत्यक्षदर्शी हूँ, एक चश्मदीद गवाह हूँ।' इस संस्मरण संग्रह का प्रस्तावना प्रख्यात आलोचक डॉ. विजय बहादुर सिंह ने लिखा है। उनकी टिप्पणी भी दृष्टव्य है – 'लेखिका ने जिन चरित्रों को रचा है, वे इतिहास के चरित्रों जैसे नीरस नहीं हैं। वे जीवन की विविधताओं और विलक्षणताओं की गंध में सराबोर चरित्र हैं।'

मैं आत्मविश्वास और बिना लाग लपेट के कह सकता हूँ कि अपने नाम से पाठक को आत्मिक आनंद से सराबोर करने वाले अल्हदा किस्म की शैली के संस्मरण संग्रह 'मोहि ब्रज बिसरत नाहीं' को आद्योपांत पढ़ना एक दुर्लभ सुख की अनुभूति से गुजरने जैसा है। पुस्तकें तो मैंने भी बहुत सारी पढ़ी हैं और भविष्य में भी पढ़ना हैं, लेकिन डॉ. सुमन चौरे की इस पुस्तक के हर पृष्ठ पर कुछ ऐसा है कि उसने मुझे भी निमाड़ के उस अंचल से परिचित करा दिया है, जिसमें संबंधों की सुगंध सर्वत्र फैली हुई है। इस सुगंध का ही अनूठा प्रभाव है

कि मेरा भी मन करता है एक बार निमाड़ की लोक गीतों से गूंजती और पारंपरिक चित्रांकन संज्ञा से सजी धरती पर जन्म लेने का अवसर ईश्वर से प्राप्त कर लिया जाए। संस्मरण संग्रह में विदुषी सुमन जी ने जिन चरित्रों को हमारे सामने रखा है, उनको उन्होंने कल्पना से नहीं, अपितु मन की गहरी अनुभूतियों से गढ़ा है। साहित्यिक कृति में जो चरित्र प्रस्तुत किये जाते हैं, वे प्राय: आदर्शवादिता लिये हुए होते हैं और उनके क्रियाकलापों में वास्तविकता की बजाय काल्पनिकता का आधिक्य रहता है। रचनाकारों द्वारा ऐसे चरित्र चूंकि सायास गढ़े जाते हैं इस कारण पाठकों और उन चरित्रों के बीच एक भावनात्मक दूरी बनी रहती है। फलस्वरूप पाठक उन चरित्रों से साथ स्थायी रूप से नहीं जुड़ पाते हैं और दोनों के बीच नैसर्गिक विभेदक रेखा हमेशा विद्यमान रहती है।

डॉ. सुमन चौरे ने मुग्गी चाचा, अकरम मामा, फातमा मावसी, दगडू भाई, टेलर मामा, बाबू काका और साधु काका आदि जिन आंचलिक चरित्रों का अपने संस्मरणों के माध्यम से हमसे परिचय कराया है वे अद्‌भुत, दुर्लभ और प्रेरक हैं। प्रेमचंद के बाद ऐसे विशुद्ध आंचलिक चरित्रों का साहित्य में आना जैसे बंद सा हो गया है। शायद यह इस कारण हुआ है कि ये चरित्र दिखावटीपन, धूर्तता और आधुनिक लटके-झटकों से सर्वथा मुक्त हैं, उन्होंने अपना असलीपन अब भी खोया नहीं है और उनको आज के अनुरूप लेखिका ने सजाया-संवारा भी नहीं है। वे जैसे हैं वैसे ही कृति में प्रस्तुत कर दिये गये हैं। कृति के पात्रों का ऐसा चरित्र चित्रण आजकल देखने को नहीं मिलता। निमाड़ के जीवन और वहां की सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर को उसके विशुद्ध रूप में कुशलता के साथ प्रस्तुत करने पर डॉ. सुमन चौरे को बधाई और सादर नमन।

'मोहि ब्रज बिसरत नाहीं' कृति केवल निमाड़ अंचल के अनुकरणीय और अपनाने योग्य असल चरित्रों को ही प्रस्तुत नहीं करती, अपितु हमारी पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक व्यवस्था को लेकर जो चिंताएँ हर रोज हमें आहत करती हैं, बुरी तरह कचोटती और उद्वेलित करती हैं, उनकी तरफ भी सुमन जी ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है। पाश्चात्य सभ्यता, भौतिकवाद और बाजारवाद की आंधी के कारण भारत में परिवार और समाज के स्तर पर जो व्यापक विचलन और गिरावट आई है, उसको भी वे सशक्त शैली में सामने रखती हैं और चेतावनी भी देती हैं कि यदि इस मामले में हम अपने गौरवशाली अतीत की तरह अपनी समृद्ध जड़ों से भी दूर होते गए तो एक दिन जहां पहुंच जाएँगे वहां सर्वनाश के अलावा कुछ नहीं होगा। संयुक्त परिवार की हितकारी सामाजिक व्यवस्था को ठुकराकर एकल परिवार की तरफ दौड़ने को लेकर संवेदनशील लेखिका काफी व्यथित हैं। उसकी दिली तमन्ना है कि हमारे रिश्तों की मिठास और जात-पांत विहीन आत्मीय सामाजिक जीवनशैली फिर लौट आये। लोग जिये, प्रगति करें किन्तु सबको साथ लेकर। स्वार्थ की बुनियाद पर लोगों के आचरण का निर्धारण न हो। जो अभावग्रस्त हैं, पीड़ित और पिछड़े हैं, उनको मान-सम्मान के साथ सखी जिंदगी देने का आग्रह भी संग्रह के संस्मरणों और लेखों में प्रबलता के साथ विद्यमान है।

संग्रह को पढ़ते-पढ़ते मुझे कई बार ऐसा अहसास हुआ है जैसे लेखिका निमाड़ और भारतीय समाज के अतीत की चर्चा के बहाने 21 वीं सदी की बहुआयामी चिंताओं और चुनौतियों के संबंध में भी अपने मन की पीड़ा को अभिव्यक्त कर रही हैं। मेरा अनुमान है कि संग्रह की लगभग आधी रचनाओं में डॉ. सुमन चौरे ने इसी पृष्ठभूमि में अपना मन खोलकर रख दिया है। वे चूँकि एक आदर्श शिक्षिका भी रही हैं इस कारण उनकी चिंताओं में यथार्थता और सकारात्मक संभावनाओं की एक अदृश्य धारा को प्रवाहित होते हुए आसानी से महसूस किया जा सकता है। कहाँ खो गया मेरा पनघट, कहाँ खो गई मेरी कावेरी, दिल्ली की हवा गाँव तक, सूखते लोकगीतों के स्रोत, गुम होते बाजे वाले, बारह बजे के बैंड और विदा हो गए विदाई गीत आदि लेख डॉ. चौरे के भीतर आज के नकारात्मक और अहितकारी बदलावों को लेकर जो तीव्र छटापटाहट है उसको खरी खरी अभिव्यक्ति दे रहे हैं। वे जब भी अपने पैतृक गाँव कालमुखी और जिले खंडवा जाती हैं, तो अपने बचपन की यादों में खो जाती हैं। वे जब अतीत से वर्तमान की तुलना करती हैं, तो चिंताओं के काले बादल उनको घेर लेते हैं। उनको लगता है कि जो अच्छा था, मंगलकारी और सर्वहितकारी था वह तेजी से हाथों और स्मृतियों से फिसलता जा रहा है और हम नि:सहाय होकर मूक दर्शक बने चुपचाप सब देख रहे हैं।

नि:संदेह डॉ. सुमन चौरे ने इस संग्रह के लेखन में पवित्र अनुष्ठान की सीमा तक एकनिष्ठ भाव से जबर्दस्त मेहनत की है और अपनी स्मरण शक्ति से सबको चमत्कृत भी किया है। संग्रह की भाषा भावपूर्ण, सरल और भाषाई लालित्य से समृद्ध है। पढ़ते समय एक अनूठी सी रस धारा मन-मस्तिष्क में प्रवाहित होने लगती है। यह कृति हमें पीछे मुड़कर देखने और जो शेष है, उसको जतनपूर्वक सहेज लेने का संदेश भी देती है। मेरा निष्कर्ष है कि कृति के केन्द्र में लेखिका की जो मूल पीड़ा है, यदि वह समाज तक संप्रेषित हो सके, तो उनका श्रम सार्थक हो जाएगा। कालजयी कृति 'मोहि ब्रज बिसरत नाहीं' के लिए डॉ. सुमन चौरे को अनेकनिक बधाइयां।

पुस्तक : 'मोहि ब्रज बिसरत नाहीं (संस्मरण संग्रह), लेखक : डॉ.सुमन चौरे, भोपाल, प्रकाशक : अयन प्रकाशन, नई दिल्ली प्रकाशन, वर्ष : 2017 मूल्य : 700 रुपये

'व्यंकटेश-कीर्ति' 11, सौम्या एन्क्लेव एक्सटेंशन चूना भट्टी,
कोलार रोड भोपाल - 462016 मो. 9407278965

■

जब हम अच्छा खाने, अच्छा पहनने और अच्छा दिखने में खर्च करते हैं
तो अच्छा पढ़ने-लिखने और सोचने-समझने की खुराक में खर्च क्यों न करें !

कलासमय

प्रबंध संपादक

सम्पर्क- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com / bhanwarlalshrivas@gmail.com

कला समय संस्था का प्रतिष्ठापूर्ण आयोजन

संस्कृति पर्व-4

कला समय संस्कृति, शिक्षा और समाज सेवा समिति भोपाल द्वारा मध्यप्रदेश शासन संस्कृति संचालनालय के सहयोग से रवीन्द्र भवन में 21 जनवरी 2021 की शाम शास्त्रीय गायन नागेश अडगांवकर पुणे महाराष्ट्र संगत कलाकार ज्ञान प्रसाद फुलारी, हरमोनियम, पुणे, सागर पटोकार तबला पुणे तथा भारत नाट्यम नीरजा सक्सेना, भोपाल ने अपने सहयोगी कलाकारों के साथ समूह प्रस्तुति दी। इसी के साथ रवीन्द्र भवन प्रांगण में शहर के वरिष्ठ छायाकार जगदीश कौशल के दुर्लभ छायाचित्रों की प्रदर्शनी भी 'समय की धरोहर' के अंतर्गत लगाई गई। समारोह के मुख्य अतिथि विजय मनोहर तिवारी सूचना आयुक्त, डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा निदेशक दन्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान, वरिष्ठ आलोचक डॉ. विजयबहादुर सिंह, वरिष्ठ साहित्यकार, पत्रकार घनश्याम सक्सेना ने छायाकार जगदीश कौशल के चित्रों पर अपने विचार रखे संस्था कला समय अध्यक्ष पं. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग' ने प्रारंभिक उद्बोधन दिया तथा भंवरलाल श्रीवास संस्था सचिव ने सभी का स्वागत किया और शॉल स्मृति चिन्ह से कलाकारों का तथा स्मृति चिन्ह से अतिथियों का स्वागत किया तथा भारतनाट्यम समूह नृत्य के कलाकारों को प्रमाण पत्र, पत्रिका कला समय तथा फूल देकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर कला समय पत्रिका का 'लघुचित्रों और साहित्य के अंर्तसंबंध' विशेषांक का लोकार्पण भी अतिथियों द्वारा किया गया अंत में संस्था सचिव भंवरलाल श्रीवास ने सभी का आभार व्यक्त किया। समारोह में शहर के अनेक गणमान्य साहित्यकार, कलाकार उपस्थित रहे। श्री नागेश अडगांवकर सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायक राशिद खां के शिष्य है जो भोपाल में पहली प्रस्तुति देने अपने सहयोगी कलाकारों के साथ पुणे महाराष्ट्र से विशेष रूप से आये कार्यक्रम का संचालन शहर के वरिष्ठ शायर, रंगकर्मी, समीक्षक बद्र वास्ती ने किया। संस्था द्वारा उनको भी स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

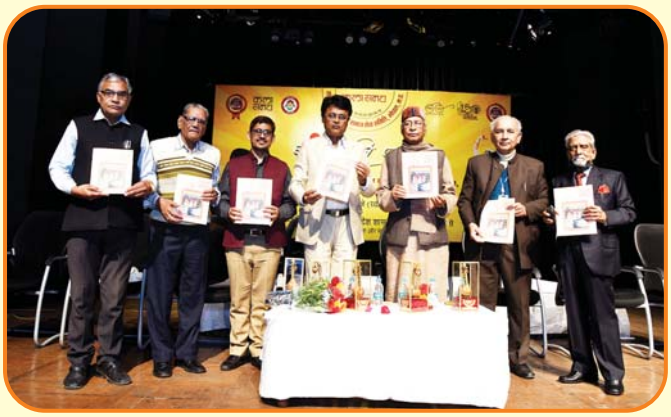

संस्कृति पर्व-५
मध्यप्रदेश का प्रतिष्ठा पूर्ण उत्सव

संस्कृति पर्व-५
21 जनवरी 2021

डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग को कला समय संगीत शिखर सम्मान एवं डॉ. महेंद्र भानावत कला समय लोक शिखर सम्मान से सम्मानित

डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग को 'कला समय संगीत शिखर सम्मान'

डॉ. महेंद्र भानावत को 'कला समय लोक शिखर सम्मान'

उदयपुर। राजस्थान के सुविख्यात लोक साहित्यकार को उनके उद्भट संस्कृति, लोक साहित्य, संरक्षाणात्मक अवदान के लिये कला समय संस्कृति, शिक्षा और समाज सेवा समिति भोपाल म.प्र. द्वारा 'कला समय लोक शिखर सम्मान 2020' से सम्मानित किया गया। संस्था कला समय के अध्यक्ष पं. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग' तथा सचिव भँवरलाल श्रीवास कोरोना महामारी के कारण सम्मान समारोह में सम्मिलित नहीं हो पाये। संस्था कला समय की ओर से स्थानीय प्रतिनिधि डॉ. देव कोठारी तथा डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' वरिष्ठ इतिहासकारों ने संयुक्त रूप से डॉ. भानावत जी को शॉल, श्रीफल, स्मृति चिन्ह तथा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया।

कला समय संस्था द्वारा प्रतिवर्ष अपने प्रतिष्ठा पूर्ण आयोजन संस्कृति पर्व समारोह में यह सम्मान राष्ट्रीय स्तर पर कला, संस्कृति, साहित्य, रंगकर्म जैसी अनेक विधाओं के सृजनरत चयनित शख्सियतों को प्रदान किया जाता है। वर्ष 2019 का सम्मान प्रख्यात साहित्यकार लक्ष्मीनारायण पयोधि को 'कला समय शब्द शिखर सम्मान' तथा वरिष्ठ रंगकर्मी म.प्र. नाट्य विद्यालय के निर्देशक आलोक चटर्जी को 'कला समय रंग शिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया। इसी श्रृंखला में वर्ष 2020 का 'कला समय लोक शिखर सम्मान' डॉ. महेन्द्र भानावत उदयपुर राजस्थान को तथा हाथरस के प्रख्यात संगीतकार/लेखक संगीत पत्रिका के प्रधान सम्पादक तथा पद्मश्री से सम्मानित काका हाथरसी के सुपुत्र डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग को 'कला समय संगीत शिखर सम्मान' हाथरस जाकर संस्था पदाधिकारियों द्वारा दिया गया। दोनों अपनी-अपनी विधा के महान शख्सियतों को यह सम्मान देते हुए और सम्मान ग्रहण करने पर पं. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग' अध्यक्ष तथा सचिव/संपादक कला समय भँवरलाल श्रीवास से संस्था कला समय की ओर से बधाई देते हुए दोनों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा डॉ. देव एवं डॉ. जुगनू के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

कला और साहित्य में डॉ. कपिल तिवारी एवं भूरी बाई को पद्मश्री सम्मान

डॉ. कपिल तिवारी एवं भूरी बाई को पद्मश्री सम्मान मिलने पर कला समय के संपादक भँवरलाल श्रीवास द्वारा बधाई दी गई।

मध्यप्रदेश शासन

'वनवासी समुदाय की आर्थिक उन्नति एवं शोषण से मुक्ति हेतु कृत संकल्पित मध्यप्रदेश सरकार'

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

32 वनोपजों के घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी जिला यूनियनों द्वारा निर्धारित अपनी दुकानों पर

लघु वनोपज के नाम	न्यूनतम समर्थन मूल्य (रु. प्रति कि.ग्रा.)
अचार गुठली	130
बहेड़ा	25
हर्रा	20
बेलगूदा	30
चकोड़ा बीज	20
शहद	225
करंज बीज	40
लाख कुसमी	275
लाख रंगीनी	200
महुआ फूल	35
महुआ गुल्ली	35
नीम बीज	30
नागरमोथा	35
साल बीज	20
जामुन बीज	42
आंवला गूदा	52

लघु वनोपज के नाम	न्यूनतम समर्थन मूल्य (रु. प्रति कि.ग्रा.)
मार्किंग नट (भिलावा)	09
अनन्त मूल	35
अमलतास बीज	13
अर्जुन छाल	21
गिलोय	40
कोंच बीज	21
कालमेघ	35
बायबडंग बीज	94
धवई फूल	37
वन तुलसी पत्तियां	22
कुटज (सूखी छाल)	31
मकोय (सूखे फल)	24
अपंग पौधा	28
इमली बीज सहित	36
सतावरी	107
गुड़मार	41

“न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषणा से हमारे वनवासी समुदाय को उनके अथक परिश्रम से संग्रहित वनोपजों का उचित मूल्य मिलेगा। मध्यप्रदेश सरकार के इस कदम से उनकी आर्थिक उन्नति की राह खुलेगी और वे सबके साथ कदम मिला कर आगे बढ़ सकेंगे।

– शिवराज सिंह चौहान

मध्यप्रदेश वन विभाग एवं मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ मर्यादित, भोपाल

D-19049

शोध पत्र

शब्द के आरपार लक्ष्मीनारायण पयोधि का काव्य

जयाप्रभा भट्टाचार्य

श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि एक सिद्ध कवि हैं। इनकी अब तक प्रकाशित 40 पुस्तकों में 17 काव्य-संकलन हैं। श्री पयोधि भाव, भाषा और विषयवस्तु के स्तर पर अपनी शैलीगत विशेषता के कारण जितने प्रभावी छंदमुक्त कविता की अभिव्यक्ति में दिखाई देते हैं, उसी के समरूप उनकी छंद-साधना भी है। आदिवासी परिवेश, सांस्कृतिक छटाओं और जीवन-संघर्ष के प्रामाणिक बिम्बों की उपस्थिति ने उनके सृजन-संसार को समकालीन हिन्दी कविता में एक अलग और विशिष्ट पहचान के साथ स्थापित किया है। पयोधि की बहुचर्चित काव्यकृति 'सोमारू' और 'लमझना' इस तथ्य के अप्रतिम उदाहरण हैं। गीत, ग़ज़ल और काव्यनाटकों में भी इस बहुमुखी प्रतिभा संपन्न सर्जक ने जनजातीय भावलोक का प्रामाणिक प्रतिसंसार रचा है। यहाँ तक कि बाल कविताओं में भी आदिवासी संवेदना की मौलिक अनुभूतियाँ दमकती हुई-सी प्रतीत होती हैं। प्रख्यात आलोचक डॉ. धनंजय वर्मा के शब्दों में कहें तो 'पयोधि के काव्य में चेतना का विस्फोट है।' वे इनके काव्य को 'यक़सानियत के इस दौर में अलग फिंगरप्रिंट वाला' मानते हैं। प्रो. अक्षय कुमार जैन ने भी यह स्वीकार किया है कि 'पयोधि मौलिक कल्पनाशक्ति के स्वामी हैं। इनकी रचना-प्रक्रिया में हर चीज़ समग्रता में आती है।' चर्चित ग्रंथ 'पयोधि हो जाने का अर्थ' में लेखिका डॉ. लता अग्रवाल ने अन्य आलोचकों की तरह पयोधिजी को जनजातीय संवेदना का कवि तो माना ही, इस स्थापना से आगे जाकर उन्होंने इस कवि को 'जनक्रांति का प्रेरक कवि' भी निरूपित किया। उनके अनुसार 'श्री पयोधि के चिन्तन में समाज के हर वर्ग का संघर्ष शामिल है।'

श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि अपने समय के यशस्वी कवि होने के साथ-साथ अप्रतिम गद्य-लेखक भी हैं। वे कथाकार हैं, बाल उपन्यासकार हैं, निबंधकार और व्यंग्यकार तो हैं ही, इन सबसे परे आदिवासी भाषाओं के शब्दकोशकार एवं संस्कृति के अध्येता लेखक के रूप में भी उनकी अपार ख्याति है।

वरिष्ठ कवि-कथाकार और आलोचक श्री राधेलाल बिजघावने ने श्री पयोधि की सृजन-प्रवृत्ति का विश्लेषण करते हुए सटीक टिप्पणी की है। वे लिखते हैं कि 'लक्ष्मीनारायण पयोधि एक साथ कई संसारों में उपस्थित रहते हैं। वे सामाजिक और पारिवारिक संसार से निकलकर कर्मक्षेत्र में रोटी के संघर्ष की अंतर्पीड़ा का अहसास करते हैं, या कथा-संसार की सीमाओं में अपने को बाँध लेते हैं। इस संसार से मुक्ति पाते ही अपने में अलग स्फूर्ति का अनुभव करते हुए बच्चों की दुनिया का रंगीन स्वप्न देखते हैं। उनके मन के उल्लास, निश्छल प्रेम और उनकी अंतश्चेतना में शामिल हो जाते हैं, या फिर नाटकों की दुनिया में जाकर एक अलग वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों की रचना करते हैं। इसलिये पयोधि के रचना-संसार को छोटे और सीमित दायरे में देखने की बजाय संपूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए।'

कविवर पयोधि की सबसे बड़ी विशेषता या कहें, मौलिक गुण यह है कि वे अपने सृजन में आदिवासी जीवन के संघर्ष और सांस्कृतिक छटाओं के उद्रेखन से उसे सबसे अलग और विशिष्ट बना देते हैं। श्री बिजघावने बहुत

लक्ष्मीनारायण पयोधि

- 23 मार्च 1957 को महाराष्ट्र में जन्में लक्ष्मीनारायण पयोधिक आदिवासी अंचल बस्तर (छत्तीसगढ़) में पले-बढ़े।
- 18 काव्य संकलनों सहित कुल 41 पुस्तकें प्रकाशित।
- जनजातीय जीवन, संस्कृति और भाषाओं में विशेष रूचि।
- गोण्डी, भीली, कोरकू आदिवासी भाषाओं के शब्दकोशों के अलावा जनजातीय संस्कृति और कलाओं पर पाँच शोधग्रंथ और अनेक शोध-आलेख प्रकाशित।
- आदिवासी संस्कृति और संघर्ष पर केन्द्रित दो काव्य नाटक ('गुण्डाधूर' और 'जमोला का लमझना') तथा दो काव्यकृतियाँ ('सोमारू' और 'लमझना') प्रकाशित-चर्चित।
- काव्यनाटक 'गुण्डाधूर' और 'जमोला का लमझना' के अनेक मंचन।
- जनातीय जीवन-संस्कृति पर केन्द्रि विभिन्न डॉक्यूमेंट्री फिल्मों के लिये शोध-आलेख।
- भील जनजाति समूह के सांस्कृतिक आयाम शीर्षक शोधग्रंथ पर आधारित डॉक्यूमेंट्री फिल्म के 12 भाग निर्मित तथा दूरदर्शन एवं प्रतिष्ठित चैनम 'एपिक' पर प्रसारित। टेलीफिल्म 'महूफूल' और डॉक्यूड्रामा 'भूमकाल' चर्चित।
- केन्द्रीय एवं मध्यप्रदेश के स्कूली पाठ्यक्रम में कविता, कहानी एवं जनजातीय संस्कृति पर केन्द्रित आलेख सम्मिलित।
- अनेक राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पुरस्कार एवं सम्मानों से अंलकृत।
- पिछले 31 वर्षों से मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में निवास। मध्यप्रदेश शासन के आदिम जाति कल्याण विभाग की विभिन्न संस्थाओं में अकादमिक (संपादन-अनुसंधान) दायित्वों का निर्वाह।
- सेवा निवृत्ति के बाद विशेषज्ञ सलाहकार की जिम्मेदारी।

संपर्क : मो.नं. 8319163206, ई-मेल : payodhiln@gmail.com

आश्वस्त भाव के साथ यह रेखांकित करते हैं कि 'जब वर्तमान काव्य-परिदृश्य पर निगाह जाती है तो लक्ष्मीनारायण पयोधि के एकनिष्ठ काव्य-संसार की खूबियों पर स्वत: ही दृष्टि केन्द्रित हो जाती है। वे एकनिष्ठ ही नहीं आत्मविश्वासी, सरल और सार्थक कविता-विश्व की रचना करते हैं। बर्बरता के विरुद्ध खड़ी इनकी कविताएँ आदिवासी संवेदना को न सिर्फ जगाती हैं, बल्कि चेतना में सुगबुगाहट भी पैदा करती हैं। ये आदिवासी जनपद को गहरे से खंगालतीं और उसके आंतरिक आतंक की बुनियाद को चौकस होकर पूरी ताक़त से तोड़ती हैं।'

डॉ. लता अग्रवाल के अनुसार 'पयोधिजी ने जनजातीय परिवेश के बिंब रचने में अत्यंत सावधानी के साथ कल्पनाशीलता को रंग दिये हैं।

श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि की कथाभूमि और भाषा भी समकालीन कहानियों से जुदा दिखाई देती हैं। उदाहरण के लिये इस कथाकार की 'महुए के फूल', 'साहूकार', 'कटे पाँव', 'खीर' और 'मुखौटे' जैसी कहानियों का उल्लेख किया जा सकता है। अपने आधा दर्जन बाल कथा संग्रहों में पयोधि जी ने आदिवासी मौखिक परंपरा से सूत्र लेकर उस परिवेश के अनुरूप चरित्र गढ़कर जनजातीय चिंतन और दर्शन को रोचक ढंग से बाखूबी पिरोया है। श्री पयोधि की कहानियों में उपस्थित आँचलिकता को रेखांकित करते हुए सुप्रसिद्ध कथाकार मार्कण्डेय ने कथा संग्रह 'सम्बन्धों के एवज में' की भूमिका में लिखा है कि 'इन कहानियों में जो ताज़गी और अछूते जीवन संदर्भों का सम्मिश्रण है, वह हमारे इस विश्वास को और भी दृढ़ कर देता है कि महानगरों से दूर भारतीय जीवन के जो सहज स्रोत मधुर संगीत की एक हृदयग्राही सम्वेदना में डूबे हुए प्रवहमान हैं-वस्तुत: वही हमारी चेतना के प्रतिनिधि और उन्नायक हैं। उन्हीं से हमारी संस्कृति समृद्ध है। इन कहानियों में आदिवासियों के जीवन-संदर्भों को उनके पूरे परिवेश के साथ बड़ी खूबी से लेखक ने उभारा है।'

श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि एक ऐसे प्रतिभा सम्पन्न बहुविध लेखक हैं, जिनके हर प्रकार के सृजन के रचनाशास्त्र की कसौटियों के आधार पर भी आलोचकों द्वारा सराहा गया है। उनके नाटकों के अनेक मंचन हुए हैं और वरिष्ठ रंगकर्मी श्री आलोक चटर्जी और सुश्री ज्योति दुबे सहित अनेक मूर्धन्य रंग-साधकों ने श्री पयोधि के जनजातीय पृष्ठभूमि पर रचित नाटकों को एक अभिनव प्रयोग के रूप में व्याख्यायित किया है। इन नाटकों में आदिवासियों की सांस्कृतिक, सामाजिक और स्वायंत्र्य-चेतना एक भिन्न स्तर पर दिखायी देती है।

श्री पयोधि की हिन्दी ग़ज़लों की सांगीतिक प्रस्तुतियों के भी अनेक स्वतंत्र कार्यक्रम बड़े मंचों पर हो चुके हैं। बाल साहित्य के कुशल चितेरे के रूप में विख्यात श्री पयोधि के जनजातीय संस्कृति और भाषाओं से संबंधित कार्य को प्रामाणिक संदर्भ के रूप में रेखांकित किया जाता है।

श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि के विपुल रचना-संसार ने मुझे उनके साहित्य के अध्ययन के लिये प्रेरित किया। उनकी पहली ही काव्यकृति 'सोमारू' (1992) ने अपनी अनूठी भावभूमि,विषयवस्तु संरचना और शैलीगत विशेषता के कारण आलोचकों और पाठकों के बीच चर्चित हो गयी थी। उसके तीन और संस्करण क्रमश: 1997, 2005 और हाल ही में 2020 में प्रकाशित हुए। उसका डॉ. लता अग्रवाल ने विवेचनात्मक अध्ययन किया और 'उत्तर सोमारू' शीर्षक से पुस्तक भी लिखी। इसके पूर्व 1997 में वरिष्ठ कवि-कथाकार और आलोचक श्री राधेलाल बिजघावने द्वारा 'बस्तर का काव्यपुरुष सोमारू' शीर्षक से संपादित आलेखों का संकलन प्रकाशित हो चुका है। इस पुस्तक का अंग्रेज़ी में श्री लक्ष्मीनारायण त्यागी और मराठी में कवि सुधाकर मारगोनवार द्वारा अनुवाद भी किया गया है। सोमारू के बारे में ख्यात आलोचक डॉ. धनंजय वर्मा ने बहुत स्पष्ट कहा है कि 'सोमारू की कविताओं में किसी पत्रकार की कलम से लिखी गयी कोई ख़ास ख़बर नहीं है और न ही किसी समाजशास्त्री, भाषाशास्त्री या नृतत्वशास्त्री की अध्ययन-यात्रा के दौरान समेटा गया इतिवृत्त है। इसमें है चित्रकार गोगां और हलक्स हाले की-सी आत्मा की पुकार,जो आदिवासी संस्कृति की जिजीविषा और अस्मिता की गूंज और अनुगूंज पैदा करती है। इसमें है, ब्लेक कॉन्शसनेस, नेग्रीट्यूड और दलित कवियों का-सा वह त्रासद-बोध,जिसमें से एक प्रमाणिक अनुभूति का जन्म होता है।' इस कथन को विस्तार देते हुए कवि-आलोचक श्री विजय कुमार देव ने कहा है कि 'पयोधि के कवि का 'रेंज' बहुत व्यापक है और वह अपनी मूलभूत अनुभूतियों के आसपास अपने छोटे-छोटे वैविध्य में दुनिया की विराटता को नाप रहा है। 'सोमारू' से लेकर अंत में बची कविता' तक एक अंतर्ग्रवाह ,जिसमें शोषण के विरुद्ध प्रतिवाद का स्वर मुखर होता है। पयोधि उसे मंत्र में रूपांतरित कर शक्तिरूप बनाने का मक़सद रखते हुए प्रतिवाद का सर्जनात्मक रूपांतरण करने की कोशिश में है।'

श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि की सर्जना के रूपांतरण के भी अनेक स्तर दिखायी देते हैं वर्ष 2019 में प्रकाशित एक और अनूठी काव्यकृति 'लमझना' इस तथ्य का सशक्त उदाहरण है। यह कृति श्री पयोधि के आदिवासी क्षेत्रों के सान्निध्य में गुज़ारे पचास वर्षों के अनुभव और सांस्कृतिक अध्ययन का निचोड़ है। पयोधिजी ने आदिवासी मौखिक परंपरा के सूत्रों और अपने अनुभव-अध्ययन का ऐसा घोल तैयार किया है, जिसका आस्वाद हिन्दी कविता की परंपरा में दुर्लभ है। यह कृति जनजातीय संस्कृतिमूलक संवेदना की अभिव्यक्ति के विस्तृत फलक का एक अभिनव प्रयोग है,जो हिन्दी कविता और भाषा की समृद्धि की दृष्टि से भी सुखद आहट है। 'लमझना' में प्रेम के उद्दाम बिम्बों के साथ ही उस जीवन के संघर्ष और जिजीविषा के विविध रूपों को भी कलात्मक भाव-संवेदना के साथ चित्रित किया गया है। प्रकाशित होते ही पयोधिजी की यह कृति भी विमर्श के केन्द्र में आ गयी और इस काव्य की लोकप्रियता ने रंगसाधकों को इसके मंचन के लिये प्रेरित किया। श्री पयोधि द्वारा 'जमोला का लमझना' शीर्षक से इसका नाट्य रूपांतरण किया गया,जिसके चार भव्यतम मंचन भोपाल और मुंबई में प्रख्यात रंगकर्मी श्री आलोक चटर्जी और युवा निर्देशिका सुश्री ज्योति दुबे द्वारा किये गये। यह काव्यनाटक भी आदिवासी पृष्ठभूमि पर अलहदा और अनूठा माना गया।

श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि के रचना-संसार से गुज़रते हुए लगा कि मुझे इस विलक्षण कवि की आदिवासी जीवन,संस्कृति और संघर्ष पर केन्द्रित कृतियों पर शोध करना चाहिए। इसी विचार ने **'लक्ष्मीनारायण पयोधि की काव्यकृतियों 'सोमारू' और 'लमझना' में निहित आदिवासी संस्कृति का वैभव और जीवन-संघर्ष'** विषय पर पी.एच.डी. करने के लिए प्रेरित किया है।

प्रस्तावित विषय पर शोध के माध्यम से आदिवासी संस्कृति के वैभव और संघर्ष-गाथा की गहन पड़ताल की जा सकेगी। 'सोमारू' और 'लमझना'

के सृजन को निश्चित रूप से हिन्दी काव्य के इतिहास में सुखद घटनाओं के रूप में देखा और याद रखा जाना चाहिए। यह शोध इस दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास होगा। इस शोध में प्रस्तुत तथ्य और विमर्श विवेच्य कृतियों के प्रति जिज्ञासा और उनके अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न कर सके, यही ध्येय रहेगा।

मानव सभ्यता के विकास में आदिवासी समुदायों की केन्द्रीय भूमिका रही है। गुफ़ा-जीवन से लेकर सिन्धु सभ्यता के वैभव तक आदिम जन का अवदान निर्विवाद रहा है। परंतु समय के साथ वही जनजातियाँ उपेक्षित, पीड़ित और शोषित होती रहीं। श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि ने इस तथ्य और सत्य को तर्कसम्मत ढंग से प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति दी है। वे 'लमझना' में कहते हैं:

'कितनी सभ्यताओं की रखी हमने बुनियादें/गुफ़ा-जीवन से सिन्धु सभ्यता के वैभव तक/संस्कृतियों का हमने ही तो किया विस्तार/आग से लेकर लोहे तक की खोज/पेड़-पौधों से लेकर जड़ी-बूटियों तक की पहचान/हमने ही की/पशुओं को पालतू बनाया/खेती की, फ़सलें उगायीं/कितनी ही विद्याओं के जनक/कितनी ही कलाओं के प्रवर्तक/करोड़ों वर्षों के जीवन से अर्जित/हमारे अनुभवों को हथियाकर। तुम बन गये ज्ञानी ?(पृष्ठ 40-41).

मध्यप्रदेश आदिवासी जनसंख्या की दृष्टि से वर्ष 2011की जनगणना के अनुसार उनकी आबादी 1 करोड़ 53 लाख 16 हज़ार 7 सौ 84 है, जो राज्य की कुल जनसंख्या का 21.1% है। इतनी बड़ी आदिवासी आबादी वाले राज्य में उनके संपर्क में रहते हुए श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि ने अपने कविधर्म के लिये आदिम संवेदना को चुना। आदिवासी जीवन के उल्लास-उत्सव, सुख-दुख और शोषण-संघर्ष के साक्षी बनकर समानुभूति के स्तर पर उन्हें अभिव्यक्त किया। यही कारण है कि श्री पयोधि की प्रमख काव्यकति 'सोमारू' और 'लमझना' आदिवासी जीवन संस्कृति और संघर्ष के प्रामाणिक दस्तावेज़ बन गये हैं। सोमारू के केन्द्रीय चरित्र को परिभाषित करते हुए कवि ने आदिवासी संघर्ष की महागाथा का मानो, भाष्य ही लिख डाला। जैसे : 'सोमारू जंगल साल-सागौन का/ उगा अपनी मर्जी से/काटा जाता मगर हर रोज़/जंगलखोर इरादों के कुल्हाड़ों से/ एक उद्दाम पहाड़ी नदी सोमारू/ जिसके अंतस्तल में/ हलचल/ बरहमेश/उथल-पुथल/ काला-कठोर पहाड़ सोमारू/ऊर्जा उत्खनित जिसकी/तस्करी के वास्ते/ सोमरू वह आग/जो फूटे तो ज्वालामुखी/और धधके तो बन जाये दावानल/प्यार में पगा कोमल लोकगीत सोमरू/अपनी ही दुनिया में मस्त/रश्क करती दुनिया/बेफ़िक्री से जिसकी/ वह बेजबान बस्तर है सोमरू/जिसके मस्तिष्क में/घुमड़ने लगे/विचारों के बादल (पृष्ठ 23-24)

दुनिया में जहाँ कहीं भी आदिवासी समुदाय आबाद हैं, सबके जीवन और संघर्ष की गाथा लगभग एक जैसी है। भौगोलिक स्थितियों के कारण जीवनशैली, संस्कृति और भाषा के स्तर पर भिन्नताएँ ज़रूर हैं, जो स्वाभाविक हैं। इसलिये हर आदिवासी समुदाय 'सोमारू' का अपना है। उसकी दिनचर्या, स्वप्न और उम्मीदें 'लमझना' से अलग नहीं हैं। इन्हीं विशेषताओं ने मुझे भीतर तक प्रभावित किया और मैंने इन कृतियों को केन्द्र में रखकर आदिवासी जीवन-संघर्ष के विविध आयामों पर शोध करने का निश्चय किया।

दुनिया में जहाँ कहीं भी आदिवासी समुदाय हैं, निर्विवाद रूप से वे वहाँ के मूल निवासी हैं। परन्तु दुखद अथवा शर्मनाक स्थिति है विकास के नाम पर उन्हें अपनी ही धरती से बेदख़ल कर दिया जाता है। विस्थापन का अभिशाप भोगने के लिये क्या वे ही लोग हैं, जिन्होंने अपनी धरती की देखभाल और सुरक्षा माँ की तरह की। पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों को गोत्र-देवता बनाकर जिनकी पूजा की। जिन्होंने मनोरंजन और तस्करी के लिये पशु-पक्षियों का आखेट किया, जंगल काटे-उन्हें तो कभी विस्थापन का दुख नहीं भोगना पड़ा। मुझे लगा कि आदिवासी जीवन के त्याग, शोषण और संघर्ष के तमाम रूपों को समाज के सामने लाया जाना चाहिए, ताकि आदिवासी संस्कृति और सभ्यता की महान विरासत के मूल्य को समझकर समाज उसे नष्ट होने से बचा सके।

यह एक स्वीकृत सत्य है कि मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की अलग और विशिष्ट पहचान उनकी समृद्ध आदिवासी संस्कृति के कारण है। परंतु यह कितना दुर्भाग्य जनक है कि इन प्रदेशों की जनजातीय सांस्कृतिक परंपराएँ और भाषाएँ अपना मूल स्वरूप खोती जा रही है। ये परंपराएँ और भाषाएं लुप्त हो जायेंगी तो तय मानिए कि सारा का सारा पारंपरिक ज्ञान-कौशल भी लुप्त हो जायेगा। इस तथ्य और सत्य की गंभीरता को समझना और इस दिशा में सकारात्मक पहल करने की ज़रूरत है।

हिन्दी विभाग, ANCOL चक्करगाँव-744112
(अंडमान & निकोबार) भारत मो.नं. 9531812255
(लेखिका श्री पयोधि की जनजातीय भावलोक पर केन्द्रित काव्यकृतियों 'सोमारू' और 'लमझना' पर पी.एच.डी. के लिये शोध कर रही हैं)

कला समय

आगामी अंक
फरवरी-मार्च 2021

धरोहर के संग्राहक और शिल्पकार

केन्द्रित विशेषांक

हमारी प्राचीन धरोहरों को सहेजने वाले लगभग 15 संग्राहकों और काष्ठशिल्प तथा तारकशी के शिल्पकारों पर केन्द्रित दुर्लभ अंक अवश्य पढ़ें...

-संपादक

विश्वरंग साहित्य एवं कला को लेकर डिजिटल वर्चुअल प्लेटफार्म

बलराम गुमास्ता

विश्वरंग2019 का उद्घाटन करते हुए जब मध्य प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल ने विश्वरंग को एशिया का सबसे बड़ा साहित्य – कला का महोत्सव कहा था, उस समय लगभग 30 देशों के 500 और इतने ही भारत से लगभग 1000 कलाकार, साहित्यकार और सांस्कृति कर्मी शामिल हुए थे तब 7 दिनों तक चले महोत्सव में लगभग 50000 लोगों ने भागीदारी की थी।

विश्वरंग के निदेशक, रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल के कुलाधिपति, कवि, कथाकार, उपन्यासकार, शिक्षाविद श्री संतोष चौबे जी ने विश्व रंग का जो सपना देखा उसमें हिंदी और भारतीय भाषाओं को जहां केंद्रीयता प्रदान की गई वही उर्दू को भी सम्मानजनक स्थान में रखा, इसके साथ ही बोलियों को भी समुचित सम्मान दिया गया, श्री चौबे का मानना था कि हिंदी अपना जीवन रस इन्हीं बोलियों से प्राप्त करती है अत: उसे भी महोत्सव में उचित स्थान दिया गया।

कोविड–19 की महामारी से जूझ रही दुनिया और विश्व में जब एक तरह का अवसाद और निराशा का वातावरण था तब श्री चौबे ने 'विश्वरंग–2020' ko online virtual platform पर आयोजित करने का कठिन संकल्प लिया उनका भरोसा था कि दुनिया में महामारी के प्रभाव से जूझ रही मानवता के लिए सांस्कृतिक हस्तक्षेप एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। विश्वरंग2020 ने अपनी संकल्पना और नाम के अनुरूप अपना विस्तार विश्व के 16 से अधिक देशों तक किया, और विश्व में एक सकारात्मक कला और साहित्य के रचनात्मक और पर्यावरण के निर्माण में, बड़े उत्साह से वह शामिल हुए, इस भागीदारी में भारतीय मूल के तथा प्रवासी भारतीयों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया साथ ही संबंधित देशों के राजनायिकों ने भी इसमें बढ़–चढ़कर भागीदारी की, विश्वरंग 2020 महोत्सव के पहले आयोजित पूर्व रंग 1 अक्टूबर से 8 नवंबर 2020 के बीच में आयोजित किया गया जिसमें युवा कलाकारों हेतु महोत्सव में लघु फिल्म एवं विभिन्न रचनात्मक विधाओं में प्रतियोगिताओं का आयोजन

किया गया वहीं नुक्कड़ नाटक इन उत्सवों का बहुत ही महत्वपूर्ण आकर्षण रहा। कथादेश जिसमें लगभग 200 वर्षों की भारतीय कथा का 18 खंडों में प्रकाशन किया गया है प्रत्येक खंड को लेकर विस्तृत चर्चा और कहानी पाठ के सार्थक आयोजन किए गए जिसे बड़ी संख्या में दर्शकों ने सराहा, विश्व रंग की संकल्पना के पीछे निदेशक श्री चौबे का यह दृढ़ विश्वास है कि दुनिया के जटिल पर्यावर्णीय समस्याओं, नैतिक, सामाजिक और धार्मिक मतभेदों, हिंसा और लालच से परेशान विश्व के लिए रविंद्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी की रचनात्मक दृष्टि एक उम्मीद और आशा की किरण जगाती है और इसीलिए यह वक्त की जरूरत है की गांधी और टैगोर की भारतीय अवधारणा वसुधैव कुटुंबकम वाली मानवीय समावेशी दृष्टि, प्रकृति संगत जीवन शैली, विश्व शांति और सौहार्द्र, शोषण मुक्त समाज, के लिए सांस्कृतिक हस्तक्षेप एक कारगर पहल है, कला ,साहित्य संगीत अर्जित मानवीय मूल्यों के संवाहक हैं तो भाषा उसका सार्थी, विश्वरंग जैसे महोत्सव की ओर दुनिया बड़ी आशा और विश्वास के साथ देख रही है।

नतीजा स्पष्ट है विश्व रंग को विश्व के अन्य16 देशों ने भी अपने – अपने 6, 7 एवं 8 नवंबर 2020 के दौरान आयोजित किया, 6 नवंबर से 29 नवंबर 2020 के बीच आयोजित विश्व रंग को दुनिया के 3000000 से ज्यादा लोगों ने देखा, देश और दुनिया के दो हजार से ज्यादा रचनाकारों, कलाकारों,संगीतकारों ने भागीदारी की, अपना विस्तार करते हुए विश्वरंग इस बार जहां 1.5 करोड़ से अधिक लोगों तक पहुंचा, वही यूट्यूब पर 10,000 से ज्यादा नए दर्शक जुड़े, महोत्सव का भारत में मुख्य आयोजन 20 से 29 नवंबर के बीच रखा गया, जिसमें लगभग 300 प्रस्तुतियां हुई कार्यक्रम की रूपरेखा इस तरह रखी गई कि सत्रों में पहले सम–सामयिक विषयों पर विचार–विमर्श, साहित्यिक और रचनात्मक सत्र एवं अंत में युवाओं के लिए मनोरंजन हेतु बैंड और संगीत के सत्र आयोजित हुए, आयोजन के दौरान जो प्रमुख सत्र आयोजित हुए उनमें,

- टैगोर और उनके साहित्य पर केंद्रित परिचर्चा,
- युवा चित्रकारों की चित्र प्रदर्शनी, एवं प्रतियोगिता,
- पुस्तक विमोचन संवाद और प्रदर्शनी,

- साहित्य और सिनेमा को लेकर महत्वपूर्ण परिचर्चा एवं कलाकारों से संवाद,
- अंतर्राष्ट्रीय मुशायरा,
- विश्व के ,50 से अधिक देशों में 1000 से अधिक लेखक एवं रचनाकारों की रचनात्मक भागीदार,
- विश्व कविता सम्मेलन,
- विज्ञान कथा कोश जो छह खंडों में प्रकाशित किया गया,
- विज्ञान कविता कोश का विमोचन,
- टैगोर- गांधी और उनकी समकालीनता को लेकर विचार-विमर्श ,
- भारत के शीर्ष लेखकों से मुलाकात के सत्र रखे गए जिन्हें बहुत सराहा गया और लाखों दर्शकों ने उन्हें देखा
- हिंदी का विश्व और विश्व में हिंदी विषय को लेकर परिचर्चा ,
- बाल साहित्य और संगीत को लेकर अलग से एक समानांतर उत्सव विश्वरंग में रखा गया,
- लघु फिल्म फेस्टिवल आयोजित हुआ ,जिसकी प्रतियोगिता रखी गई और विश्व भर से प्रतिभागी शामिल हुए ,

दास्तान गोई के बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रचलित कार्यक्रम को सराहा गया।

प्रवासी भारतीय साहित्य को लेकर रचना पाठ के सत्र आयोजित किए गए, हर दिन, के कार्यक्रम के बाद, संगीत के लोकप्रिय बैंड आदि के लोकप्रिय कार्यक्रम आयोजित किए गए, इन कार्यक्रमों में विश्व के लगभग 100000 लोगों ने सीधी भागीदारी की, विश्व के जिन 15 देशों ने विश्व रंग उत्सव अपने यहां इस वर्ष आयोजित किया उनमें: यू.एस.ए.,कनाडा, यू.के.,नीदरलेंड, रशिया,उज़्बेकिस्तान, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, श्रीलंका, फिजी, यूक्रेन, कज़ाकिस्तान, स्वीडन, त्रिनिदाद और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) मुख्य रूप से शामिल हुए।

विश्व में विश्व बंधुत्व , शांति, खुशहाली और करोना,19 मुक्त विश्व की कामना और प्रार्थना के साथ, विश्वरंग 2020 का अगले विश्वरंग 2021 के आयोजन के संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर देश के माननीय उपराष्ट्रपति, मध्य प्रदेश और अन्य प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों, गवर्नर, प्रदेशों के विभिन्न मंत्रियों मध्य प्रदेश तथा देश के उच्च शिक्षामंत्री, विदेशों के राजनायिकों और प्रतिष्ठित लेखकों ने अपने शुभकामना संदेश विश्वरंग 2020 की सफलता हेतु भेजें,आयोजन समिति ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया, विश्वरंग 2020 की वेबसाइट www.vishwarang.com को रजिस्टर करा और विश्वरंग के विभिन्न सत्रों का आनंद लिया। विश्वरंग जैसे महान रचनात्मक आंदोलन से जुड़ी विभिन्न कमेटियों की जानकारी इस प्रकार है :-

विश्वरंग में सहयोगी भारतीय साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाएँ

वनमाली सृजन पीठ, रंग संवाद, इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए, आइसेक्ट स्टुडियो, आईसेक्ट पब्लिकेशन, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र-नई दिल्ली, साहित्य अकादेमी, नेशनल बुक ट्रस्ट, भारतीय ज्ञान पीठ, संस्कृति विभाग, म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, ध्रुपद गुरुकुल संस्थान, वीरेश्वर पुण्याश्रम, पहले-पहल, सुबह सबेरे, म.प्र. जन संदेश, म.प्र. लेखक संघ, अ.भा. साहित्य परिषद, अभिनव कला परिषद, मधुवन, दुष्यंत कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय, प्रभात साहित्य परिषद, तुलसी साहित्य अकादेमी, म.प्र. लेखिका संघ, म.प्र. लघु कथा अकादेमी, बाल साहित्य एवं शोध केन्द्र, इफ्तेखार क्रिकेट अकादेमी, नया थिएटर, म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, स्पंदन, नट निमाड़, यमन नृत्य एवं संगीत कला अकादेमी, उस्ताद अब्दुल लतीफ खाँ संगीत न्यास, रंगायन, सागर गुंचा कल्चरल सोसायटी, नट बुंदेले, एक रंग नाट्य समूह, कोशिश नाट्य संस्था, यंग्स थिएटर, भोपाल थियेटर, शेडो-ग्रुप, विहान ड्रामा वर्क्स, हम थिएटर, रंग श्री लिटिल बेले ट्रप, चिल्ड्रन थिएटर अकादेमी, रेनी वृन्द, हारमनी म्यूज़िक ग्रुप, पद्मरंग नृत्य अकादेमी, पुरू कथक नृत्य अकादमी, कला समय, प्रतिभालय आर्ट्स अकादेमी, भोपाल बंगाली एसोसिएशन, आरूषि, रौनक सोसल एण्ड कल्चरल सोसायटी, कला मंदिर, समावर्तन, राग भोपाली, गीत गागर, अंतरा, पब्लिक रिलेशन सोसायटी ऑफि इंडिया, रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.), डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़), आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झारखण्ड), डॉ. सी.वी रामन विश्वविद्यालय, पटना (बिहार), डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा (म.प्र.), आईसेक्ट, प्रेरणा समाकालीन लेखन के लिए इत्यादि।

■

विश्वरंग 2020

महफिलों के महकते मंज़र ...
अनुराग-राग के ललित बंध, यह विश्वरंग

विनय उपाध्याय

अदब और तहज़ीब की रंग-ओ-महक के बेमिसाल सिलसिलों को थामता एक उत्सव एक आन्दोलन। एक अभियान एक मिशन। हमारे वक्ती दौर के ज़रूरी और ज्वलंत मुद्दों और विषयों पर बहस-मुबाहिसों का एक ऐसा समावेशी मंच, जहाँ तमाम खानाबंदियों से निकलकर विचार की खुली सांस भरी जा सकती है। यह मुमकिन हुआ है- 'विश्वरंग' में।

रोशनी के छंद गाती कार्तिक की सुरमई शामें...। संस्कृति की तन्मय तान, विरासत का विजय गान और संवादों की लय पर विचारों का आदान-प्रदान। एक खुला आसमान जहाँ शब्द, दृश्य, रंग, ध्वनि और छवियों का संसार मनुष्यता की इबारत रचता रहा है। लालित्य की लालिमा से ओर-छोर दमकता रहा। यूँ वक्त की किताब में एक सुनहरा पन्ना जिसके माथे पर उभर आया- 'विश्वरंग' साहित्य और संस्कृति का ऐसा अनुष्ठान, जहाँ सृजन का अभिषेक सारी कायनात के अमन, सुकून, प्रेम और भाईचारे के लिए है।

कुछ ऐसे ही चंपई अहसास जब यादों के दरीचे खटखटाते हैं तो विश्वरंग के खुलते आंगन में चहक-महक से तारी महफिलों के मंजर उजले होने लगते हैं ये महफिलें हिन्दुस्तानी तहजीब के छलकते समंदर और उसमें सदियों से लहराती रवायतों के दरिया के किनारे बैठकर चौन के लम्हें गुजारने का बेशकीमती जरिया है।

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में गए बरस शुरू हुए इस विराट महोत्सव की मेज़बानी इस साल दुनिया के पन्द्रह से भी ज्यादा मुल्कों ने की। यूएसए, कनाडा, यूके, नीदरलैंड, रशिया, उजबेकिस्तान, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका, फीजी, यूक्रेन, कज़ाकिस्तान, स्वीडन, त्रिनिदाद, संयुक्त अरब अमीरात (यू.ए.ई) सहित ये वे कुछ मुल्क रहे जिन्होंने हिन्दी और भारतीय भाषाओं के साथ ही हिन्दुस्तानी संस्कृति और कलाओं को अपने-अपने मंचों पर सुंदर रूपकों में ढाला। दिलचस्प यह कि इस सांस्कृतिक अनुष्ठान का सपना रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय जैसे निजी शैक्षणिक संस्थान ने देखा और उसे बड़ी ही सूझबूझ भरी रचनात्मक आपसदारी के साथ पूरा किया। यहाँ शब्द, दृश्य, रंग-लय और ध्वनियों का खूबसूरत ताना-बाना रचने साहित्य, संस्कृति, कला, शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, पर्यावरण, मीडिया और उद्यमिता की गुणी और नामचीन शख्सियतें साथ-साथ हैं। 20 से 29 नवंबर के दरमियान 'विश्वरंग 2020 अपने वर्चुअल मंच के ज़रिये दुनिया भर में दस्तक देता रहा।

इस विराट महोत्सव का मकसद तब और गहरा हो जाता है जब कोविड-19 की महामारी से जूझती दुनिया अवसाद से घिरी है। बुझी, बेचैन और हताश जिंदगी में नाउम्मीदी जब सिर चढ़ कर बोल रही हो तो उत्सव ही वो आँगन है जहां से उठती मटियारी महक जिंदगी के प्रति फिर यकीन को लौटाती है। 'विश्वरंग' के स्वप्न दृष्टा, कथाकार-कवि और टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे इस अभियान को अपने समय की एक ज़रूरी सांस्कृतिक हस्तक्षेप की पहल बताते हैं।

पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न प्रणब मुखर्जी ने पिछले वर्ष 'विश्वरंग' को परंपरा और आधुनिकता का संयोग कहकर इसकी अहमियत को रेखांकित किया था। विश्वरंग की अवधारणा के मूल में हिन्दी और तमाम भारतीय भाषाओं तथा संस्कृतियों के बीच परस्पर सम्मान का रिश्ता है। यहाँ बोलियों की मटियारी महक है। साहित्य और कला की विभिन्न विधाओं के बीच वो संवाद है जहाँ जीवन का छलकता रस-रंग है। प्रयोग और नवाचारों की श्रृंखला में इस बार अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और बच्चों के लिए चहक-महक भरी गतिविधियाँ जुड़ी तो युवा और नौनिहाल पीढ़ी की उमंग-तरंग भी यहाँ तैरने लगी इन गतिविधियों के सूत्र थामे-पल्लवी राव चतुर्वेदी तथा सुदीप सोहनी ने

रस्किन बॉन्ड जैसे नामी और मशहूर लेखक बच्चों से संवाद के लिए नमूदार हुए तो मोहन आगाशे, आबिद सुरती, शिवेन्द्र सिंह डुंगरपुर, आशुतोष राणा, रजत कपूर, रघुवीर यादव, पीयूष मिश्रा, अनिल चौबे, ज्योति कपूर, जयंत देशमुख जैसे फिल्मकार और सिने-समीक्षक छवियों की दुनिया से जुड़े मुद्दों पर अपनी राय जताने आगे आए बातों-मुलाकातों के सिलसिले में चित्रा मुदगल, ममता कालिया, नंदकिशोर आचार्य, रमेश चन्द्र शाह, धनंजय वर्मा, प्रियंवद, मनोज श्रीवास्तव, प्रभु जोशी, ज्ञान चतुर्वेदी, शीन कॉफ निज़ाम जैसी अदब की अनेक मकबूल शख्सियतें साहित्य प्रेमियों के रूबरू हुई भारत के उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू तथा केन्द्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर, रमेश पोखरियाल निशंक, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (विदेश मंत्रालय) के अध्यक्ष विनय सहस्त्रबुद्धे, छत्तीसगढ़ की राज्यपाल अनसुईया उइके, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान तथा प्रदेश के ही अन्य मंत्रियों और विभिन्न उपक्रमों के निदेशक-संचालकों से प्राप्त शुभकामना संदेशों ने भी निश्चय ही विश्वरंग के प्रति अपना गहरा विश्वास प्रकट किया है।

विश्वरंग की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ इस सच के पास ले जाती हैं कि साहित्य और कलाओं के अन्तर्संबंधों की बुनियाद में सदा से एक सृजनात्मक बेचैनी रही है। वो अकुलाहट जो नया, अनूठा और बहुरंगी रचना चाहती है। हमारा समूचा सांस्कृतिक परिवेश इसी कलात्मक विविधता, सौन्दर्य बोध और अपार आनंद से सराबोर है। कहीं कोई कविता, कोई छंद, सुर-ताल से हमजोली कर रहा है, कहीं देह की भाषा उसके मर्म को नृत्य में अभिव्यक्त कर रही है, कहीं कोई कथा-उपन्यास और नाटक रंगमंच पर अभिनय की छवियों में साकार हो रहे हैं तो रंग-रेखाओं और मूर्ति-शिल्पों में कोई भावमय लगन जीवन के देखे-अनदेखे दृश्यों को उकेर रही है। खेत-खलिहानों से लेकर गाँव की चौपाल और छोटे कस्बों और शहरों से लेकर राजधानियों और महानगरों तक कलात्मक कौतुहल की ये बानगियाँ देखी जा सकती हैं। आपाधापी भरी बोझिल और बेस्वाद होती जा रही दुनिया आखिर थक-हार कर संस्कृति की छाँव में ही सुस्तानी चाहती है।

इस जखीरे में क्या कुछ नहीं है। इबादत के पाक सुरों में घुली ध्रुपद की तानों से लेकर शहनाई का मंगल गान, गुदुम बाजा का खिलखिलाता नाद, संतूर और बाँसुरी की जुगलबंदी पर भक्ति और प्रेम की मोहर लगाती बंदिशें, कबीर, टैगोर और परंपरा के लोक गीतों का संगीत बिखेरता कोरस, उत्तरपूर्वी राज्य शिलाँग की धरती से उठी स्वर लहरियाँ और इन तमाम रंगों-महक को चरम पर ले जाती सूफियाना मौसिकी की महफिलें 'विश्वरंग' की इसी सुंदर थाल में थिरकती जनजातीय और लोक नृत्यों की लय-ताल और मुद्राओं की नृत्यमय छवियों को निहारना भी सुखद है।

रंगमंच पर संवाद और अदाकारी की बेमिसाल प्रस्तुतियों का सिलसिला भी और दरो-दीवार पर चस्पा चुनिंदा कलाकृतियाँ जो रंग-रेखाओं के जरिए कलागुरु टैगोर के प्रति कृतज्ञता से भरा श्रद्धा सुमन हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र के संयोजन में तैयार हुआ यह सांस्कृतिक ताना-बाना इस बात की ताईद करता है कि जीवन को सुन्दर खुशहाल और यकीन से हरा-भरा बनाती संगीत, नृत्य, नाटक और चित्रकला जैसी सृजन की विधाएँ प्रार्थना के पलों सी सात्विक हैं। यहाँ मन का रंजन है तो बहुलता में एकता का संदेश भी सघन है।

दुनिया के इस पहले और अकेले महोत्सव के मुख्य सूत्रधार संतोष चौबे इस प्रकल्प की सफलता को लेकर कहते हैं- लगभग दो वर्षों से 'विश्वरंग' की परियोजना तैयार की जा रही थी और मैं कहूँ कि आधा काम तो हमने करके दिखा दिया है। यानी इस उत्सव की पृष्ठभूमि या कहें पूर्वरंग में पुस्तक यात्राएँ निकलीं। युवा उत्सव हुए। इससे जो व्यापक हलचल पैदा हुई है, इससे जो ऊर्जा पैदा हुई है, उसको अब समन्वित कर रहे हैं एक बहुत जरूरी बात यह कि जितने उत्सवी समारोहों होते हैं वो कभी स्थानीय संस्थाओं को शामिल नहीं करते। हमारी कोशिश रही है कि हमारे शहर के, हमारे प्रदेश की जो संस्थाएँ हैं वो उसका हिस्सा बनें और बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि भोपाल की सभी संस्थाओं ने पूरे दिल से इसमें शामिल होने का निर्णय लिया। धीरे-धीरे तिनका-तिनका जोड़कर हम बड़ी टीम बनाते गए और जैसे कि कृष्ण भगवान ने पूरा पर्वत उठा लिया था और बहुत सारी उँगलियाँ उसमें लगी थीं, इस तरह से बहुत सारे लोगों का हाथ इसमें लगा। हमारे कार्यकारी समूह के सभी विश्वविद्यालय, हमारी पूरी टीम 'विश्वरंग' की जिम्मेदारियां सम्हालती रहीं। मुझे लगता है एक आपसी समझदारी, पारिवारिकता, समावेषी प्रवृत्ति बहुत बड़ी चीज है, जो कि इसको आगे ले जाती है और यह भी इस उत्सव का बड़ा हासिल है।

इस विश्वव्यापी रचनात्मक अभियान से गुजरते यह धारणा गहरी होती है कि मनुष्य को विज्ञान की जितनी जरूरत है और कलाओं की भी उतनी ही अगर हमें सन्तुलित, विचारशील, संवेदनशील मनुष्य बनाना है तो वह विज्ञान की तकनीकों को हासिल करेगा लेकिन कलाओं की तकनीकों को भी प्राप्त करेगा और कलात्मक रूप से सोचने के लिए वह समृद्ध होगा। विश्वरंग के इस परिवार में अपनी चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारियों के साथ शामिल हुए लीलाधर मंडलोई, सिद्धार्थ चतुर्वेदी, विजय सिंह, अरविंद चतुर्वेदी, मुकेश वर्मा, पुष्पा असिवाल, नितिन वत्स, अदिती वत्स, मुकेश सेन, संजय सिंह राठौर, प्रशांत सोनी, रोहित श्रीवास्तव, सुचिंत मंडलोई, सौरभ अग्रवाल, मनीष त्रिपाठी, रामदीन, रमेश विश्वकर्मा, वंदना श्रीवास्तव, अमित सोनी, अमीन उद्दीन शेख, अशोक, विभोर उपाध्याय, उपेन्द्र पटने, नीरज रिछारिया आदि।

'विश्वरंग' का बीज मंत्र मनुष्य की महिमा का उद्घोष है जो शताब्दियों से चली आ रही महान सांस्कृतिक परंपरा के गौरव को गाना, अपने समय की नई धड़कनों को सुनना चाहता है। परिकल्पना, संयोजन और पूरे सांस्कृतिक विन्यास में 'विश्वरंग' की यह मंशा मूर्त होती दिखाई देती है। गीतकार रामवल्लभ आचार्य का 'छंद' कहता है - जिसमें सम्वेदन की सुगंध, अनुराग-राग के ललित बंध, यह विश्वरंग यह विश्वरंग।

लेखक, टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र के निदेशक तथा वरिष्ठ मीडियाकर्मी है
मो. - 9826392428

■

विश्व रंग : टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव

संजय सिंह राठौर

वर्चुअल प्लेटफार्म पर दुनिया के सबसे बड़े ऑनलाइन सांस्कृतिक महोत्सव 'विश्व रंग 2020' का दुनिया के 16 देशों में अद्भुत आयोजन

भारत, अमेरिका, नीदरलैंड्स, यू.के., सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, कनाडा, यूक्रेन, रशिया, कजाकिस्तान, स्वीडन, त्रिनिदाद, यू.ए.ई., उज्बेकिस्तान, श्रीलंका और बुल्गारिया में हुए विश्व रंग महोत्सव के अनूठे भव्य आयोजन

भारत की सांस्कृतिक राजधानी भोपाल में आयोजित विश्व रंग टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव 2019 के प्रथम अद्भुत-भव्य आयोजन का जिस तरह से पूरे विश्व ने अभिनंदन किया था वह साहित्य, कला, संगीत, संस्कृति, शिक्षा एवं सामाजिक सरोकारों के वैश्विक फलक पर रोशन सितारों की मानिंद सदैव के लिए अविस्मरणीय है।

उल्लेखनीय है कि कोरोना विभीषिका के रूप में सदी की सबसे भीषण त्रासदी के दौरान वर्चुअल प्लेटफार्म पर ऑनलाइन आयोजित विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक महोत्सव 'विश्व रंग 2020' की न सिर्फ विश्व के 16 मुल्कों ने मेजबानी की बल्कि 50 से अधिक देशों के हजारों रचनाकारों एवं लाखों-करोड़ों लोगों ने रचनात्मक उपस्थिति दर्ज कराकर विश्व रंग 2020 को कई गुना अधिक भव्यता के साथ अद्भुत, अकल्पनीय और अविस्मरणीय बना दिया।

यह देश के इतिहास में पहली बार हुआ कि किसी शैक्षिक संस्थान-रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय ने डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, आइसेक्ट विश्वविद्यालय, टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र, वनमाली सृजन पीठ, वनमाली सृजन केंद्रों एवं देश-विदेश की 100 से अधिक सांस्कृतिक संस्थाओं को साथ लेकर साहित्य एवं कला महोत्सव का अद्भुत संसार रचा।

देश में आयोजित होने वाले कई अन्य साहित्य उत्सव में अंग्रेजी का प्रभुत्व होता है। वेस्टर्न कल्चर की प्रधानता रहती है। वे महानगरों में एलीट क्लास तक सीमित रहते है। इन उत्सवों के बदले 'विश्व रंग' ने हिंदी और भारतीय भाषाओं को केंद्रीयता प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य करते हुए हिंदी और भारतीय भाषाओं के बीच अपनत्व और परस्पर सम्मान का रिश्ता कायम करने का ऐतिहासिक कार्य किया। साथ ही इस बात को भी विशेष रूप से ध्यान में रखा की हमारी भाषा को समृद्ध करने के लिए हमारी बोलियों का समृद्ध होना बहुत जरूरी है। अपनी भाषा से अपनी बोलियों को जोड़ना भी बहुत आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखते हुए विश्व रंग में हिंदी के साथ उसकी बोलियों-मालवी, बुंदेली, बघेली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी,अवधि आदि के जमीनी रस भरे संवाद को वैश्विक फलक प्रदान किया।

हमारे देश में राजनीति ने सभी भारतीय भाषाओं को एक दूसरे के विरुद्ध खड़ा करने का काम किया है जबकि सभी भारतीय भाषाएं परस्पर एक दूसरे से गहरे तक जुड़ी हुई है। वे सहोदर है और एक दूसरे से शक्ति अर्जित करती है। हमारे यहां बोलियों को भी हिंदी के विरुद्ध खड़ा करने के प्रयास किए गए जबकि स्वयं हिंदी भाषा अपना रस इन जीवन सिक्त बोलियों से ही प्राप्त करती है। भाषाओं और बोलियों पर बहुत ही महत्वपूर्ण सत्र और विमर्श विश्व रंग में आयोजित हुए। उल्लेखनीय है कि इन सत्रों में दूरदराज के ग्रामीण आदिवासी अंचलों के रचनाकारों ने अपनी स्थानिकता की सौंधी महक के साथ विश्व रंग में प्रतिनिधित्व करते हुए विभिन्न रसभरी बोलियों में रची रचनाओं की यादगार प्रस्तुतियों से बोलियों के महत्व को प्रतिपादित किया।

टैगोर की वैश्विकता और गांधी का दर्शन विश्व रंग का मूल आधार

विश्व रंग की सबसे महत्वपूर्ण बात-टैगोर की वैश्विकता विश्व रंग का मूल आधार रहा है। यह महोत्सव टैगोर की रचनात्मकता से शुरू होकर पूरे विश्व तक फैलता है। हिंदी भाषी क्षेत्र में टैगोर की विराट रचनात्मकता विशेषकर उनकी पेंटिंग स्टाइल एवं नाटकों को लेकर कोई बहुत चेतना नहीं है और इसका पुनरावलोकन बहुत आवश्यक है। विशेषकर टैगोर और महात्मा गांधी का स्वतंत्रता आंदोलन के समय का रिश्ता और टैगोर की अंतर्राष्ट्रीयता तथा शैक्षिक दृष्टि को एक बार पुन: देखा जाना जरूरी है। भारतीय संस्कृति की वसुधैव कुटुंबकम की परंपरा भी इसी में अंतर्निहित है। अत: वसुधैव कुटुंबकम के आधार पर रबीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी के दर्शन को भी विश्व रंग का मूल आधार बनाया गया।

भारतीयता का वैश्विक संदर्भ

विश्व रंग में भारतीय कला, साहित्य, संस्कृति, दर्शन एवं भारतीय अस्मिता को आत्मसात किया गया। विश्व रंग में भारतीयता को प्राथमिकता देना कोई जड़ राष्ट्रीयता नहीं है। यहां भारतीयता वैश्विक संदर्भ से जुड़ी और अपने अनोखेपन में प्रकाशित भारतीयता है। विश्व कविता, कथा, उपन्यास सहित साहित्य की सभी विधाओं का उतना ही स्थान है जितना भारतीय साहित्य का।

प्रवासी भारतीय रचनाकारों के रचनाकर्म का रचनात्मक मूल्यांकन

उल्लेखनीय है की सात समंदर पार प्रवासी भारतीय रचनाकार भी

अपनी मातृशक्ति, मातृभाषा, मातृभूमि अपनी जड़ों से जुड़े रहना चाहते हैं लेकिन उनके लेखन के बेहतर प्रकाशन और रचनात्मक मूल्यांकन को लेकर कोई ठोस प्रयास देश में नहीं हुए। विश्व रंग में विश्व के प्रमुख भारतीय रचनाकारों-युवा रचनाकारों को साझा मंच प्रदान कर उनके साहित्य और रचनाकर्म के रचनात्मक मूल्यांकन और बेहतर प्रकाशन की सार्थक पहल कदमी की गई है। विश्व रंग में प्रवासी भारतीय रचनाकारों की उत्कृष्ट पुस्तकों के आकर्षण कलेवर के साथ प्रकाशन, भव्य लोकार्पण एवं सार्थक विमर्श को पूरी दुनिया ने सराहा।

विश्व रंग की अवधारणा का उदय

विश्व रंग के स्वप्नदृष्टा वरिष्ठ कवि कथाकार एवं रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे ने विश्व रंग के प्रथम संस्करण के उद्घाटन समारोह को 2019 में संबोधित करते हुए विश्व रंग की अवधारणा स्पष्ट करते हुए कहा था कि विश्व रंग कि हमारी अवधारणा, विश्व के बारे में हमारी समझ से ही निकली है। यदि आप सचेत रूप से अपने आसपास देखें तो पाएंगे कि विकास की जो प्रक्रिया हमने अपनाई हैं और प्रकृति का जिस तरह अंधाधुन दोहन किया है, किया जा रहा है वह स्वयं हमारे अस्तित्व के लिए ही घातक होता जा रहा है। दूसरी ओर बायोटेक्नोलॉजी एवं बायो इनफॉर्मेटिक्स के कन्वर्जेंस से जिस तरह के मनुष्य के निर्माण की बात की जा रही है उससे इस बात में भी संदेह पैदा हो रहा है कि क्या मनुष्य स्वयं वैसा बचा रह पाएगा जैसा कि हम उसे जानते हैं। तीसरे टेक्नोलॉजी ने जीवन की गति इतनी तेज कर दी है कि उसे जानना- पहचानना ही मुश्किल होता जा रहा है। जैसा कि फ्रेडरिक जेम्सन ने कहा है, हमें नये नक्शे और नये को-आर्डिनेंट्स की तलाश करनी होगी। मुझे लगता है कि जीवन के नए उपकरणों को तलाशने के साधन विज्ञान के पास उतने नहीं है जितने कला, साहित्य, संस्कृति और संगीत के पास है। विश्व के तमाम रचनाकारों, कलाकारों और संगीतज्ञों को इस संबंध में बातचीत शुरू करना चाहिए और एक प्रभावी हस्तक्षेप करना चाहिए। विश्व रंग साहित्य, शिक्षा, संस्कृति और भाषा में काम करने वाले समूचे विश्व के रचनाकारों के बीच इसी दिशा में वैश्विक विमर्श की एक सार्थक रचनात्मक शुरुआत है।

आयोजन कई मायनों में अलहदा रहा

विश्व रंग के पहले संस्करण के बाद साल 2020 आया। इस साल के शुरुआती दिनों में ही कोरोना बीमारी से दुनिया का सामना हुआ। देखते ही देखते यह वैश्विक महामारी के रूप में तब्दील हो गई। विश्व के कई देशों में लॉकडाउन लगा जो काफी लंबा चला। इस दौरान जीवन मानो थम सा गया था। ऐसा लग रहा था मानो कुदरत ने अपना चक्का उलटा घुमा दिया हो। लोग अपने-अपने घरों में ही बंद होकर रहने को मजबूर हो गए थे। जो बाहर निकल रहे थे वह भी एक भय के साथ निकल रहे थे। पूरे विश्व में अफरा-तफरी सी मची हुई थी। विदेशों में रहने वाले प्रवासी लोग, देश के विभिन्न प्रांतों से प्रवासी मजदूर अपने-अपने घर-गांव की ओर लौटने को मजबूर थे। कुछ साधन के साथ अधिकांश साधन विहीन पैदल ही थकेहारे लहूलुहान कदमों से लौटने को मजबूर थे।

कोरोना काल की विभीषिका ने संपूर्ण विश्व को झकझोर दिया था। धीरे धीरे अनलॉक का चलन बढ़ा तो ऐसे समय में ज्यादा सावधानी बरतने के बजाय महामारी के दुष्परिणामों के प्रति लोगों की गंभीरता में कमी आती गई, लापरवाही बढ़ती गई। ऐसा मजबूरीवश भी हो रहा था। इसके घातक परिणाम भी सामने आने लगे। गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी, बदहाली के मंजर में आर्थिक मार ने सभी को बेहाल कर दिया। सामाजिक दूरियां जो पहले से ही बढ़ रही थी इस कोरोना काल में और अधिक गहराती चली गई।

इन सबके बावजूद समाज के हर तबके से परोपकार करने वालों ने निस्वार्थ भाव से मानव सेवा के माध्यम से समूचे विश्व में मनुष्यता और मानवता का बड़ा पैगाम पहुंचाया।

कोरोना विभीषिका से उपजे भय निराशा एवं अवसाद से भरे इस कठिन समय के विरुद्ध आशा, विश्वास, प्रेम, करुणा और टैगोर के विश्व मानवता के सिद्धांत को आत्मसात करते हुए वैश्विक स्तर पर एक बड़े सांस्कृतिक रचनात्मक हस्तक्षेप के रूप में की संकल्पना की गई।

विश्व रंग 2020 की शुरुआती अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों के दौरान विश्व रंग के स्वप्नदृष्टा श्री संतोष चौबे ने बहुत ही स्पष्ट रूप में कहा की कोरोना काल से उपजे हालातों ने साफ संकेत दिए हैं कि हमें विकास का रास्ता बदलने की जरूरत है। इस दिशा में साहित्य, कला, संस्कृति के रचनात्मक हस्तक्षेप के द्वारा हम उच्चतर शक्ति को जागृत कर सकते हैं। हम प्रेम और घृणा में से किसे चुने इसे साहित्य, कला और संस्कृति ही हमें सिखाती है। कला ही उस शब्द युग्म का निर्माण करती है। शब्द युग्म चयन करने में जीवन निकल जाता है। इसके लिए हमें अनवरत रचनात्मक और सृजनात्मक प्रयत्न करते रहना होंगे। हम अपने इन सार्थक प्रयासों से संभावनाओं की नई जमीन और फलक तैयार कर सकते हैं।

इस समय हिंदी और भारतीय भाषाओं के पास बहुत बड़ा अवसर है टेक्नोलॉजी ने यह संभव किया है कि पूरे विश्व में हम इनको फैला सके। हमने विश्व रंग टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव के माध्यम से वैश्विक स्तर पर यह कर दिखाया है। इसी संकल्पना के साथ विश्व के 16 देशों में वर्चुअल प्लेटफार्म पर विश्व के सबसे बड़े ऑनलाइन फेस्टिवल के रूप में किया गया। भारत सहित सभी देश जहां आयोजन हुए उन सभी देशों ने कहा कि इस कठिन समय में विश्व रंग की हमें सबसे ज्यादा जरूरत थी। आपने वैश्विक स्तर पर विश्व रंग का अद्भुत आयोजन कर सभी पर बड़ा उपकार किया है।

कोरोना काल में सांस्कृतिक प्रतिरोध के रूप में वर्चुअल प्लेटफार्म पर 16 देशों में विश्व के सबसे बड़े ऑनलाइन आयोजन के दिवास्वप्न को अद्भुत, अकल्पनीय, अविस्मरणीय बनाने का पूरा श्रेय श्री संतोष चौबे की गहरी, स्पष्ट, मजबूत संगठन निर्माण की दृष्टि, दृष्टिकोण और जीवटता को जाता है। वे संगठन निर्माण के साथ-साथ उसे पल्लवित कर एक विराट स्वरूप प्रदान करने का अद्भुत धैर्य एवं दृढ़ इच्छाशक्ति रखते हैं। कला, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, साक्षरता, विज्ञान और सामाजिक उद्यमिता के क्षेत्र में विगत 37 वर्षों में संतोष चौबे ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक कीर्तिमान रचे हैं।

उनके पास वनमाली सृजन पीठ और रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय का 37 वर्षों का साहित्य एवं कलाओं में काम करने का विराट अनुभव है। उनका अनुभव बताता है कि अंतत: सभी कलाओं और अनुशासनों में एक तरह की आपसदारी बनती है और उन्हें पहचानना ही अपने कलात्मक क्षितिज का विस्तार करना है।

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश), डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़), खंडवा (मध्य प्रदेश), वैशाली (बिहार), आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झारखंड), टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र, वनमाली सृजन पीठ, भोपाल, बिलासपुर, खंडवा, दिल्ली, वैशाली, हजारीबाग, सैकड़ों वनमाली सृजन केंद्रों एवं आईसेक्ट समूह के हजारों केंद्रों के जनक श्री संतोष चौबे ने विश्व रंग के भव्य आयोजन के लिए भी महत्वपूर्ण प्रतिमान और अनुशासन स्थापित किए हैं। बिना किसी बाहरी या सरकारी आर्थिक सहायता के विश्व रंग का विराट वैश्विक आयोजन वंदनीय है,अनुकरणीय है।

पूर्व रंग

कथायात्रा का ऐतिहासिक आयोजन

विश्व रंग के प्रथम आयोजन में देश के दूरदराज के ग्रामीण – आदिवासी अंचलों, कस्बों, छोटे शहरों में पुस्तक यात्राओं का भव्य आयोजन किया गया था। पन्द्रह-पन्द्रह दिनों की इन पुस्तक यात्राओं ने पचपन शहरों और रास्ते में पड़ने वाले गांवों के करीब 100 स्कूलों की यात्रा की, लगभग एक लाख विद्यार्थियों से संवाद स्थापित किया और जगह-जगह होने वाली संगोष्ठियों में करीब एक हजार साहित्यकारों, कलाकारों, लोककलाकारों ने रचनात्मक भागीदारी की थी। पुस्तक यात्रा के दौरान लेखकों और वैज्ञानिकों पर आधारित प्रदर्शनियों का आयोजन हुआ। विद्यार्थियों के लिये साहित्य और विज्ञान केंद्रित प्रतियोगिताएं तथा क्विज आयोजित की गई और हिंदी में विज्ञान पुस्तकों पर प्रदर्शनी लगाई गई थी। लगभग दस हजार किताबें स्थानीय स्तर पर लोगों द्वारा क्रय की गई।

पुस्तक यात्राओं ने इस भ्रम को तोड़ा कि युवाओं और बच्चों में किताबें पढ़ने या जानने की भूख कम हुई है। असल में तो हमीं ने उनके पास जाना छोड़ दिया है। पुस्तक यात्रियों के दौरान सभी जगहों पर स्थानीय संगठनों ने रचनात्मक भागीदारी की और नए लोग भी भारी संख्या में जुड़े।

इस बार कोरोना संकटकाल को ध्यान में रखते हुए विश्व रंग की पूर्व रंग गतिविधियों के अंतर्गत हिंदी साहित्य की 200 वर्षों की कथा परंपरा को समेटे कथादेश के 18 खंडों पर केंद्रित कथा यात्रा का आयोजन 2 अक्टूबर से 8 नवंबर 2020 तक वर्चुअल प्लेटफार्म पर ऑनलाइन किया गया। वर्चुअल प्लेटफार्म पर आयोजित इस कथा यात्रा में प्रेमचंद, वनमाली, यशपाल, रेणु, मोहन राकेश, ज्ञानरंजन, रवींद्र कालिया, ओमप्रकाश वाल्मीकि, नवीन सागर, ज्ञान चतुर्वेदी, ध्रुव शुक्ल, मुकेश वर्मा, रमेश चंद्र शाह, संतोष चौबे, स्वयं प्रकाश, आशुतोष, चंदन पांडे, राकेश मिश्र, श्रद्धा थवाईत की कहानियों के पाठ के साथ-साथ कथादेश के प्रत्येक खंड एवं उस कालखंड की रचना प्रक्रिया व कथा प्रवृत्तियों पर रचनात्मक विमर्श किया गया। कथा यात्रा के ऑनलाइन आयोजनों में देश-विदेश से सैकड़ों साहित्यकारों, साहित्य प्रेमियों ने रचनात्मक भागीदारी की। कथा यात्रा की परिकल्पना से लेकर इसे साकार रूप प्रदान करने में वरिष्ठ कथाकार एवं वनमाली सृजन पीठ के अध्यक्ष श्री मुकेश वर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

कोरोना के लॉकडाउन काल में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों का अनुकरणीय आयोजन

इसके पूर्व कोरोना काल में लॉकडाउन के दौरान विश्व रंग 2020 की पूर्व पीठिका के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश-विदेश में ऑनलाइन गोष्ठियों के आयोजन अप्रैल से अक्टूबर 2020 के मध्य किए गए। विश्व रंग, साझा संसार, होलैंड, भारतीय ज्ञानपीठ, वनमाली सृजन पीठ द्वारा संयुक्त रूप से वर्चुअल प्लेटफार्म पर आयोजित इन अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियों में विश्व के कई देशों के सैकड़ों प्रवासी भारतीय रचनाकारों ने रचनात्मक भागीदारी की।

उल्लेखनीय है कि इन अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में हिंदी साहित्य की सभी विधाओं को शामिल किया गया। प्रवासी भारतीय रचनाकारों ने कविताएं, कहानियां, गीत, ग़ज़ल, संस्मरण, पत्र-लेखन, लघुकथा, व्यंग, यात्रा संस्मरण आदि पर केंद्रित महत्वपूर्ण रचनाओं को प्रस्तुत किया। इन गोष्ठियों ने कोरोना संकटकाल में भी रचनात्मक साझा संसार रचते हुए लोगों को अवसाद से उबारने में अनुकरणीय भूमिका निभाई।

पूर्व रंग में नुक्कड़ नाटक-रंग संगीत की यादगार प्रस्तुतियां

पूर्वरंग की गतिविधियों में 4,5 तथा 6 नवंबर को रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय परिसर में नुक्कड़ नाटक और रंग संगीत समारोह का आयोजन टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र, आइसेक्ट स्टूडियो तथा इफ्तिखार क्रिकेट अकादमी के संयोजन में किया गया।

इस तीन दिनी रंगोत्सव के शुभारंभ में नाट्य संस्था त्रिकर्षि के कलाकारों द्वारा के.जी. त्रिवेदी के निर्देशन में 'आओ खेलें खेल' नाटक की प्रस्तुति दी गई। दूसरे दिन आलोक चटर्जी के निर्देशन में मध्यप्रदेश राज्य नाट्य विद्यालय के कलाकारों ने 'कल का रंगमंच' की प्रस्तुति दी। तीसरे दिन गोदान, तानाजी के निर्देशन में द राइजिंग सोसाइटी के कलाकारों ने नाटक 'अभ्यास' की प्रस्तुति दी। समारोह के तीनों दिन सुप्रसिद्ध रंगकर्मी मनोज नायर, मोहम्मद साजिद और सुरेन्द्र वानखेडे ने अपने रंग समूहों के साथ रंग संगीत की शानदार प्रस्तुतियां दी। इस कार्यक्रम का सफल संयोजन टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र के निदेशक श्री विनय उपाध्याय ने किया।

विश्व के 16 देशों में सतरंगी आयोजन

भव्य सतरंगी आयोजन 6, 7 एवं 8 नवंबर को विश्व के 16 देशों- अमेरिका, नीदरलैंड, ब्रिटेन, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, यूक्रेन, रशिया, कजाकिस्तान, स्वीडन,त्रिनिदाद एवं टोबैगो, यूएई, उज़्बेकिस्तान, श्रीलंका एवं बुल्गारिया में किए गए। इन आयोजनों में प्रवासी भारतीय रचनाकारों के साथ उन देशों के स्थानीय रचनाकारों ने भी अपने देश की कला, साहित्य एवं संस्कृति के सतरंगी इंद्रधनुषी रंगों से संपूर्ण विश्व को सराबोर किया।

विश्व रंग के आयोजनों का नेतृत्व आयोजक देशों के कंट्री डायरेक्टर–सर्वश्री मुकेश वर्मा (भारत), अनूप भार्गव (अमेरिका), रामातक्षक (नीदरलैंड),डॉ प्रमेश गुप्ता (यू.के.), शार्दुला नौगजा, संध्या सिंह, (सिंगापुर), रेखा राजवंशी (ऑस्ट्रेलिया), डॉ. शैलजा सक्सेना (कनाडा), यूरी बॉटविंकि (यूक्रेन), इन्द्रा गाजिएवा (रशिया), दारिगा कोकेएवा, (कजाकिस्तान), डॉ. हाइंस वेसलर (स्वीडन), आशा मोर (त्रिनिदाद एंड टोबैगो), आरती गोयल (यूएई), सिराजुद्दीन नूरमातोव (उज्बेकिस्तान), उपल रंजीथ, हेवावी तनगामजे (श्रीलंका), आनंद शर्मा (बुल्गारिया) द्वारा अपार सफलता पूर्वक किया गया।

दस दिवसीय रंगारंग मुख्य आयोजन भारत में 20 से 29 नवंबर

विश्व रंग के 10 दिवसीय मुख्य आयोजन भारत में 20 से 29 नवंबर 2020 तक किए गए। सत्यम, शिवम, सुंदरम, के रूप में भारतीय गीत, संगीत, नृत्य से ओतप्रोत मंगलाचरण से विश्व रंग महोत्सव के प्रतिदिन की सुमधुर शुरुआत की गई। विश्व रंग 2019 की यादें तरोताजा हो गई।

गीतांजलि और रविंद्र संगीत की बहुत सुंदर प्रस्तुतियां दी गई। विश्व कविता में विश्व प्रसिद्ध कवियों की श्रेष्ठ रचनाओं के हिंदी अनुवाद का वरिष्ठ रचनाकारों एवं युवा रचनाकारों द्वारा बेहतरीन पाठ किया गया। विदेशों में रहकर हिंदी भाषा की सेवा करने वाले महत्वपूर्ण प्रवासी भारतीय रचनाकारों द्वारा अपनी श्रेष्ठ कविताओं का पाठ किया गया। प्रवासी भारतीय रचनाकारों की ताजा प्रकाशित पुस्तकों का लोकार्पण एवं उन पर रचनात्मक विमर्श आयोजित किए गए। प्रवासी भारतीय साहित्य मूल्यांकन की चुनौतियों पर गंभीर चर्चा की गई। विदेश में हिंदी पत्रिकाओं पर सार्थक संवाद किया गया।

'कविता यात्रा' में कविताओं की नयनाभिराम दृश्य–श्रव्य प्रस्तुतियों ने नए आयाम रचें। कविता की शाम मनोज मुंतशिर के नाम लंबे समय तक दर्शकों के दिलों पर राज करेगी। चर्चित फिल्म अभिनेता अपारशक्ति खुराना से संवाद काफी महत्वपूर्ण रहा।

लेखक से मिलिए में भारतीय साहित्य जगत के महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों से उनके रचनाकर्म एवं रचना प्रवृत्तियों पर रचनात्मक संवाद आयोजित किए गए। अपनी चौपाल–कुछ अनकही कहानियों की बानगी देखने सुनने का रोमांचक अवसर मिला। थर्ड जेंडर साहित्य को केंद्रीयता प्रदान की गई।

उल्लेखनीय है कि टैगोर और गांधी हमारी विश्व संवेदना, टैगोर, इकबाल, फैज़, विश्व दृष्टि, विश्व साहित्य के वर्तमान सरोकार जैसे विचारोत्तेजक सत्रों में गंभीर विचार मंथन किया गया। टैगोर की चित्रकला पर केंद्रित मानवतावादी चित्रकला और टैगोर पर विमर्श के साथ भारतीय चित्रकला में नारी परिप्रेक्ष्य पर द्वितीय टैगोर राष्ट्रीय कला संगोष्ठी आयोजित की गई। इस अवसर पर राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। 1000 से ज्यादा प्रतिभागियों ने इसमें भागीदारी की गई।

उल्लेखनीय है कि विश्व रंग के पहले संस्करण में हिंदी साहित्य की 200 वर्षों की हिंदी कथा परंपरा को समेटे कथा देश के 18 खंडों का कथाकोश प्रकाशित और लोकार्पित किया गया था। इस बार 100 से अधिक विज्ञान कथाओं को संग्रहित कर विज्ञान कथाकोश एवं 400 से अधिक विज्ञान कविताओं को सहेज कर विज्ञान कविताकोश का प्रकाशन एवं लोकार्पण मुख्य आकर्षण रहा।

कोविड बाद की दुनिया पर गंभीर विचार मंथन

कोरोना विभीषिका ने जीवन के मायने बदल दिए हैं। हमारे जीवन और देश दुनिया से जुड़े हर पहलू को कोरोना ने गहरे तक प्रभावित किया है। इसी को ध्यान में रखते हुए विश्व रंग में कोविड बाद की दुनिया–भविष्य की शिक्षा, कला और संस्कृति, उद्यमिता और उद्योग का भविष्य, हमारा स्वास्थ्य और भारतीय परंपरा जैसे विषयों पर गंभीर विचार मंथन किया गया।

विश्व रंग में पॉपुलर सब्जेक्ट और अकादमिक का अद्भुत समन्वय

लोकप्रिय अर्थात पॉपुलर सब्जेक्ट और अकादमिक सत्र के बीच एक अद्भुत समन्वय देखने को मिला। लोक और शास्त्र, शिक्षा और विज्ञान तथा भाषाओं पर केंद्रित कार्यक्रमों के साथ अंतर्राष्ट्रीय मुशायरा, उर्दू की रवायत–दास्तान गोई–मिस्टिकल जर्नी ऑफ अमीर खुसरो, दिल्ली घराना की शानदार यादगार महफिल सजी।

लोकप्रिय बैंड–शिलांग चेंबर कॉयर, कबीर कैफे बैंड, और अंकुर तिवारी– एन इवनिंग ऑफ सोलफुल म्यूजिक की शानदार प्रस्तुतियों एवं सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेताओं से मुलाकातों ने बड़े पैमाने पर युवाओं को प्रभावित किया।

भारत के विभिन्न अंचलों की होली की प्रस्तुतियों ने ठेठ आंचलिकता के चटक रंगों से सभी के अंर्तमन को भिगो दिया।

इस अवसर पर यूएसए, सिंगापुर, यूके, ऑस्ट्रेलिया, हॉलैंड, कनाडा, त्रिनिदाद, श्रीलंका, स्वीडन, यूक्रेन, बुल्गारिया, कजाकिस्तान, यूएई, रशिया, उज़्बेकिस्तान में आयोजित विश्व रंग महोत्सव पर केंद्रित शानदार फिल्मों का प्रदर्शन प्रतिदिन किया गया।

वर्चुअल प्लेटफार्म पर विश्व के सबसे बड़े ऑनलाइन आयोजन कई मायनों में चुनौती पूर्ण रहा। विश्व रंग के निदेशक श्री संतोष चौबे के विराट नेतृत्व, समयबद्ध कार्ययोजना एवं दृढसंकल्प इच्छाशक्ति के सामने कोरोना काल की चुनौतियाँ भी नतमस्तक हो गई। विश्व रंग के सह–निदेशक श्री सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने तकनीकी पहलुओं और नेटवर्किंग को बड़ी कुशलता के साथ पूर्ण किया।

वरिष्ठ कवि एवं विश्व रंग के सह–निदेशक श्री लीलाधर मंडलोई, वरिष्ठ कथाकार श्री मुकेश वर्मा, वरिष्ठ कवि बलराम गुमास्ता,वरिष्ठ कवि महेंद्र

गगन, ख्यात चित्रकार श्री अशोक भौमिक, डॉ. पल्लवी राव चतुर्वेदी, श्री नितिन वत्स, सुश्री अदिति वत्स चतुर्वेदी, अरविन्द चतुर्वेदी, श्री अनिल जोशी, डॉ. विजय सिंह, सुश्री पुष्पा असिवाल,श्री अभिषेक पंडित, श्री आत्माराम शर्मा, सुश्री राकी गर्ग, श्री विनय उपाध्याय, श्री कुणाल सिंह, श्री मोहन सगोरिया, श्री प्रशांत सोनी, श्री सुदीप सोहनी, श्री सुंचीत मंडलोई, श्री मनोज त्रिपाठी, श्री राजेश पांडा, श्री संजय सिंह राठौर, श्री मुकेश सेन,श्रीमती वंदना श्रीवास्तव, श्री अमित सोनी, श्री वेंकटरमन अय्यर, श्री रामदीन, डॉ. रमेश विश्वकर्मा, श्री रवि जैन, श्री समीर चौधरी, श्री रूपेंद्र सिंह चौहान, श्री सौरभ अग्रवाल, श्री रोहित श्रीवास्तव, शिरिल,श्री विभोर उपाध्याय, श्री नीरज रिछारिया, श्री उपेंद्र पाटने, श्री अमीन उद्दीन शेख आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चिल्ड्रन फेस्टिवल

इस बार 'चिल्ड्रन फेस्टिवल' का आयोजन बच्चों, माता पिता, पालकों, शिक्षकों एवं बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले विशेषज्ञों एवं संस्थाओं के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हुआ।

'चिल्ड्रन फेस्टिवल' में रस्किन बॉन्ड, गीता रामानुजम, अशोक राजगोपालन, आनंद नीलकांतन, रोहिणी नीलकनी, आकांक्षा गोयंका, जानकी

सबेश, प्रिया नारायणन, प्रतीक ध्रुव, प्रीति व्यास, नंदिनी नायर, आदि प्रमुख विशेषज्ञों की रचनात्मक भागीदारी ने चिल्ड्रन फेस्टिवल को नई ऊंचाइयां प्रदान की। चिल्ड्रन फेस्टिवल का संयोजन डॉ पल्लवी राव चतुर्वेदी निदेशक आइसेक्ट भोपाल द्वारा किया गया। चिल्ड्रन फेस्टिवल बाल महोत्सव में बच्चों की शिक्षा से जुड़े विषयों, पुस्तकों, सामग्री निर्माण, कठपुतली निर्माण आदि पर महत्वपूर्ण चर्चाएं एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। कहानी कहने की कला को भी रचनात्मक के साथ प्रदर्शित किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का भव्य आयोजन 23 से 26 नवंबर तक किया गया। इस फिल्म फेस्टिवल में युवाओं के लिए प्रतियोगिता खंड में विशेष तौर पर तय की गई तीन श्रेणियों-कला-संस्कृति, विज्ञान और तकनीक तथा वाइल्ड लाइफ और नेचर विषयों पर अधिकतम 15 मिनट की बनाई हुई फिल्में आमंत्रित की गई। उल्लेखनीय है कि विश्व रंग के लिए देश-विदेश से 500 से अधिक फिल्में प्राप्त हुई।

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में प्रख्यात अभिनेता श्री मोहन आगाशे, फिल्म निर्माता श्री शिवेंद्र सिंह डूंगरपुर, अंतर्राष्ट्रीय फिल्म 'जेर' के निर्देशक काजाम ओज, ख्यात निर्देशक डॉ बीजू, सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता आशुतोष राणा, रजत कपूर, फिल्म कला निर्देशक जयंत देशमुख, विश्व सिनेमा पर उर्दू में लिखी पुस्तक 'जश्ने फिल्म' के लेखक रसीद अंजुम, आबिद सुरती, ज्योति कपूर, पुबाली चौधरी, अंकित चौहान आदि से फिल्म लेखन एवं फिल्म निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर सार्थक बातचीत की गई। विभिन्न श्रेणियों में प्राप्त चयनित बेहतरीन लघु फिल्मों का प्रदर्शन प्रतिदिन किया गया। विश्व रंग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के निदेशक श्री सुदीप सोहनी ने बहुत ही रचनात्मक रूप से इस फेस्टिवल को भव्यता प्रदान करने में अग्रणी भूमिका निभाई।

विश्व रंग की उपलब्धियाँ

अक्टूबर-नवंबर 2020 में आयोजित विश्व रंग टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव अद्भुत सफलता के साथ संपन्न हुआ। 16 देशों में आयोजित इस महोत्सव को लगभग 30 लाख से अधिक लोगों ने देखा। गूगल फेसबुक तथा यूट्यूब के आंकड़ों पर आधारित लगभग 15 मिलियन (डेढ़ करोड़) लोगों तक विश्व रंग पहुंचा। कई अवसरों पर विश्व रंग ट्विटर के प्रथम 10 में ट्रेंड भी करता रहा। पूरे उत्सव के दौरान देश- विदेश की 100 से अधिक संस्थाओं का सहयोग इसे प्राप्त हुआ। पूरे उत्सव के दौरान 300 से अधिक प्रदर्शन हुए जो सफलता के किसी भी पैमाने पर खरे उतरते है। विश्व भर के 2,000 से अधिक कलाकारों, रचनाकारों ने इसमें रचनात्मक भागीदारी की। इस बार बाल साहित्य तथा कला महोत्सव के साथ-साथ इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल और चिल्ड्रन लिटरेचर एंड म्यूजिक फेस्टिवल भी आयोजित हुए जिन्हें अपार सफलता मिली।

भारत के उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू, केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर, केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री रमेशचन्द्र पोखरियाल 'निशंक', इंडियन काउंसिल फॉर कल्चरल रिलेशंस, भारत सरकार के अध्यक्ष डॉ विनय सहस्त्रबुद्धे, छत्तीसगढ़ की राज्यपाल श्रीमती आनुसुइया उईके, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष श्री चरणदास महंत, मध्यप्रदेश के गृह, जेल, संसदीय कार्य, कानून मंत्री श्री नरोत्तम मिश्रा, उच्चशिक्षा मंत्री श्री मोहन यादव, लोकस्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री प्रभुराम चौधरी, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री श्री ओम प्रकाश सखलेचा, मध्यप्रदेश निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग के अध्यक्ष डॉ. भारत शरण सिंह सहित कई जनप्रतिनिधियों ने विश्व रंग के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित अपना अमुल्य सहयोग प्रदान किया।

इसी तरह विदेशों में भी भारतीय दूतावासों के साथ-साथ वहां के जनप्रतिनिधियों भारतीय तथा स्थानीय कलाकारों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं का इसे भरपूर सहयोग मिला। सामूहिक वैश्विक आकांक्षा के प्रतिफलन के रूप में उभरा जो कोरोना महामारी के इस संकटकाल में साहित्य,कला, संस्कृति और संगीत के माध्यम से टैगोर के मानवतावादी दृष्टिकोण को आत्मसात करते हुए प्रेम, करुणा, आस्था, एवं विश्वास के पैगाम को वैश्विक जमीन और फलक प्रदान करती है। भव्य रंगारंग समापन समारोह इन्द्रधनुषी रंगों से जगमग आतिशबाजी और आकाशगंगा-दीपोत्सव के साथ 'फिर मिलेंगे...' की अनुगूंज के संग किया गया।

- मोबाइल-9425675811

■

विश्वरंग 2020

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया विश्व रंग का उद्घाटन

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विश्व रंग टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव का दूसरा संस्करण डिजीटल वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर किया गया यह आयोजन 20 से 29 नवम्बर के बीच किया गया। मंगलवार को विश्वविद्यालय के शारदा सभागार में आयोजित गरिमामय समारोह में मध्य प्रदेश के माननीय उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव ने विश्व रंग 2020 का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विश्व रंग पोस्टर, विश्व रंग कॉफी टेबल बुक और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के पोस्टर का लोकार्पण किया गया। साथ ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर विशेष अंक गांधी विशेषांक और टैगोर अंतर्राष्ट्रीय कला एवं संस्कृति केंद्र की साहित्यिक पत्रिका रंगसंवाद का विमोचन भी किया गया। इस मौके पर मध्य प्रदेश के माननीय उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव, विश्वविद्यालय के कुलाधिपति व निदेशक विश्वरंग श्री संतोष चौबे, श्री लीलाधर मण्डलोई, भूतपूर्व महानिदेशक, दूरदर्शन एवं सह-निदेशक विश्व रंग, श्री सिद्धार्थ चतुर्वेदी, एग्जिक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट, आईसेक्ट एवं सह-निदेशक विश्व रंग, श्री मुकेश वर्मा, संपादक कथादेश एवं सदस्य आयोजन समिति विश्व रंग, डॉ. ब्रम्हप्रकाश, कुलपति रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय श्री श्रीराम तिवारी सदस्य उच्च शिक्षा टास्क फोर्स मध्य प्रदेश प्रो. अमित अमिताभ सक्सेना, कुलपति, डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय खण्डवा, डॉ. विजय सिंह, कुलसचिव रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, श्री विनय उपाध्याय, निदेशक टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला केन्द्र, सुश्री पुष्पा असिवाल, निदेशक आईसेक्ट खासतौर पर उपस्थित थे।

कार्यक्रम में माननीय श्री प्रकाश जावड़ेकर, केन्द्रीय मंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन और सूचना एवं प्रसारण, भारत सरकार तथा माननीय मुख्य मंत्री मध्य प्रदेश श्री शिवराज सिंह चौहान का शुभकामना संदेश अतिथियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर माननीय उच्च शिक्षा मंत्री ने

शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हमारे देश की संस्कृति उत्सव प्रधान है। वास्तव में ये विश्व रंग का अदभुत रंग है। चुनौतियों के बीच रस लेना ही हमें पूरे विश्व में अलग बनाता है। उन्होंने टैगोर को याद करते हुए कहा कि टैगोर ने भारतीयता की महक महसूस की थी। नाटक, रंगकर्म, चित्रकारी के माध्यम से आनंद भी पाया था रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भी टैगोर की विरासत को निरंतर आगे बढ़ा रहा है। विश्वविद्यालय ने नई शिक्षा नीति के अनुरुप ही शिक्षा के साथ स्टार्टअप, नवाचार, कौशल, कला, संस्कृति और साहित्य को केन्द्र में रखा है इस अवसर पर माननीय मंत्री जी को कथादेश के 18 खण्ड भेंट स्वरुप दिये गए। इस मौके पर श्री संतोष चौबे ने कहा कि विश्व कला, साहित्य और संस्कृति के लिये वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर 16 से अधिक देशों में विश्व का सबसे बड़ा आयोजन है। हिन्दी और भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देना, हिन्दी व उसकी बोलियों के साथ समन्वय, भारत तथा भारतीयता को केन्द्रियता प्रदान करना तथा एक वैश्विक सांस्कृतिक नेटवर्क का निर्माण करना इस महोत्सव का मुख्य उद्देश्य है। विश्व रंग के सह-निदेशक श्री लीलाधर मण्डलोई ने अपने वक्तव्य में कहा कि विश्व रंग आज वैश्विक हो गया है। निश्चित ही विश्व मानवता को स्थापित करेगा।

श्री सिद्धार्थ चतुर्वेदी, सह-निदेशक ने सभी अतिथियों का आभार प्रदर्शन करते हुए कहा कि इस वर्ष विश्व रंग का आयोजन वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर किया जा रहा है।

बच्चों द्वारा एकला चलो रे फिल्म और विश्वविद्यालय एक परिचय फिल्म भी प्रस्तुत की गई। द्वितीय टैगोर नेशनल पेंटिंग एग्जिबिशन के विजेताओं की भी घोषणा की गई। माननीय उच्च शिक्षा मंत्री द्वारा विश्वविद्यालय के अटल इन्क्यूबेशन सेंटर और एनर्जी सेंटर का भ्रमण किया गया। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। कार्यक्रम का संचालन विनय उपाध्याय ने किया इस दौरान आईसेक्ट ग्रुप ऑफ यूनिवर्सिटीज के सभी विश्वविद्यालय, सहयोगी संस्थान ऑनलाइन माध्यम से बड़ी संख्या में जुड़े। ■

विश्वरंग 2020

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल
फिल्मकार जांगले ने VIFF का लोगो, पोस्टर जारी किया

संस्कृति और साहित्य के विराट महोत्सव में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कथा सभागार में आयोजित एक गरिमामय समारोह में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त प्रख्यात फिल्मकार राजेन्द्र जांगले ने फिल्म फेस्टिवल का लोगो और पोस्टर जारी कर प्रचार अभियान का शुभारंभ किया इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति व विश्वरंग के निदेशक संतोष चौबे, कुलपति डॉ. ब्रहमप्रकाश, टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र के निदेशक विनय उपाध्याय, आईक्यएसी के निदेशक नितीन वत्स, VIFF 2020 के निदेशक सुदीप सोहनी भी विशेष रूप से उपस्थित थे।

राजेन्द्र जांगले ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मध्यप्रदेश में यह फिल्म समारोह एक नई और अनूठी शुरूआत है। इस अवसर पर संतोष चौबे ने विश्वरंग की योजना बताते हुए कहा कि विश्व विद्यालय में सांस्कृतिक गतिविधियाँ कोविड के दौर में भी लगातार जारी है। निश्चित ही विश्वरंग के अंतर्गत आयोजित यह फेस्टिवल पूरे विश्व में ग्लोबल इंफेक्ट पैदा करेगा। प्रारंभ में सुदीप सोहनी ने फिल्म फेस्टिवल की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। विनय उपाध्याय ने फिल्म समारोह को नई रचनात्मक संभावना की तलाश का मंच बताया। आभार प्रदर्शन प्रशांत सोनी ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की विभिन्न फैकल्टी तथा स्टाफ उपस्थित था।

विश्वरंग अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह (VIFF-2020) का यह पहला आयोजन 23 से 26 नवंबर तक विश्वरंग के विभिन्न ऑन-लाइन प्लेटफॉर्म पर हुआ। इस फिल्म फेस्टिवल में युवाओं के लिए प्रतियोगिता खंड में विशेष तौर पर तय की गई तीन श्रेणियों-कला-संस्कृति, विज्ञान और तकनीक तथा वाइल्ड लाइफ और नेचर विषयों पर अधिकतम 15 मिनट की बनाई हुई फिल्में आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता खंड में जूरी के द्वारा चुनी हुई फिल्मों को प्रथम द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के तौर पर 1 लाख रुपये तक की राशि के साथ पुरस्कृत किया गया।

■

रंगमंच पर समता और एकता का पैग़ाम
गूंजी बच्चन की 'मधुशाला', याद आई पारंपरिक खेलों की धमा-चौकड़ी

इंसानी उसूलों का पैगाम लिए अपनी पुरअसर आवाज़ों और बेमिसाल अदाकारी के साथ जब शहर के रंगकर्मियों ने रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय की वादियों में दस्तक दी तो 'विश्वरंग' अपनी रौनक में खिल उठा। एक सिरे पर पारंपरिक खेलों की याद दिलाता त्रिकर्षि रंग समूह का नुक्कड़ नाटक तो दूसरे सिरे पर 'मधुशाला' की रूबाइयों और अपने लोकप्रिय नाटकों के गीत-संगीत का कोरस गाते शेडो ग्रुप के फनकार।

साहित्य और संस्कृति के अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव के पूर्वरंग की गतिविधियाँ इसी चहक-महक के बीच चार नवंबर को शुरू हुई। तीन दिनी नुक्कड़ नाट्य समारोह का शुभारंभ टैगोर वि.वि. के कुलाधिपति संतोष चौबे ने किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. ब्रह्मप्रकाश पेठिया, आईसेक्ट के निदेशक सिद्धार्थ चतुर्वेदी, कुलसचिव विजय सिंह, साहित्यकार मुकेश वर्मा, बलराम गुमास्ता, महेन्द्र गगन तथा टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र के निदेशक विनय उपाध्याय, आईक्यूएसी के निदेशक नितीन वत्स ने मिलकर महोत्सव की अंतर्राष्ट्रीय सहभागी संस्थाओं को चिन्हित करता बहुरंगी पोस्टर जारी किया। इस अवसर पर विश्वरंग के निदेशक संतोष चौबे ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए बताया कि यह विराट महोत्सव इस बार भारत ही नहीं दुनिया के 15 से भी ज्यादा

देशों में विविध गतिविधियों के साथ आयोजित किया गया। इन देशों में यूएसए, कनाडा, यूके, नीदरलैंड, अमरिका, ऑस्ट्रेलिया, रशिया, उजबेकिस्तान, सिंगापुर, श्रीलंका, फीजी आदि प्रमुख रूप से शामिल हैं। साहित्य, संस्कृति और कला से जुड़े विषयों के सैकड़ों विशेषज्ञ और रचनाधर्मी इस जलसे में शिरकत की। सभी प्रस्तुतियों का प्रसारण विश्वरंग के वर्चुअल प्लेटफार्म पर

ऑनलाइन किया गया। मुख्य समारोह 20 से 29 नवंबर तक सम्पन्न हुआ।

शेडो ग्रुप ने गुनगुनाया रंग संगीत

समारोह की शुरूआत रंगकर्मी मनोज नायर द्वारा संयोजित रंग संगीत की प्रस्तुति से हुई। शेडो ग्रुप के कलाकारों ने कवि हरिवंशराय बच्चन की बहुचर्चित रचना 'मधुशाला' की रूबाइयों को लय-ताल के अनूठे आरोह-अवरोह के साथ गुनगुनाया तो श्रोता भी ताल पर ताल देते रहे। इस श्रृंखला में नाटकों सुकरात, लास्ट एंगल और नेपथ्य में शकुंतला के गीत भी सराहे गये। मनोज नायर के लिखे गीतों को स्वर दिया अमर सिंग, आदर्श ठस्सू, सोनू चतुर्वेदी, अभि श्रीवास्तव, अनुश्री जैन, मिलिन्द और आयुष ने दिये।

त्रिकर्षि के किरदारों ने खेले पारंपरिक खेल

वरिष्ठ रंगकर्मी के.जी. त्रिवेदी के निर्देशन में त्रिकर्षि रंगसमूह के कलाकारों ने नुक्कड़ शैली में 'आओ खेलें खेल' का मंचन किया। न तो भारी-भरकम सेट, न लाइट-साउंड की तकनीकी ज़रूरत, लेकिन अपने संवादों और अदाकारी के अनूठे अंदाज़ लिए जब युवा कलाकारों ने हिन्दुस्तानी परंपरा के खेलों की चहल-कदमी की तो दर्शक पुरानी यादों में खो गये सेहत, मनोरंजन और बुद्धि तथा समता और एकता के मानवीय मूल्यों का सबक सिखाते इन खेलों में पोसम्पा, सितौलिया, पिटू और गदामार से लेकर धप्पा-धप्पी की वो धमा-चौकड़ी थी जिसे सजीव होते देख अनूठा आनंद मिला। यह प्रस्तुति एक बार फिर याद दिलाती है कि भारत का कोई भी खेल ऐसा नहीं है जो अकेले खेला जा सके। ये खेल न केवल हमारा मनोरंजन करते हैं, बल्कि हमारे शारीरिक सौष्ठव, स्फूर्ति को बनाये रखते हैं। भारतीय पारंपरिक खेल हमें सिखाते हैं, कैसे एकता में शक्ति होती है, कैसे हम अपने मनोबल से अपनी टीम को जीत दिला सकते हैं, कैसे हम मन, बुद्धि और शरीर का सामंजस्य बैठा सकते हैं।

बेहद कल्पनाशील ढंग से बुनी गयी इस नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति के निर्देशक के.जी. त्रिवेदी के अनुसार आज हम पश्चिमी सभ्यता के प्रशंसक बनकर बहुत गर्वित होते हैं।

हमें विश्व के अन्य देश या अन्य सभ्यतायें आकर्षित करती हैं, लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि हमारी देश की संपदा, संस्कृति और पुरातन ज्ञान अपने आप में विज्ञान को समाहित किये हुए हैं, जिन्हें हम दकियानूसी की संज्ञा देते हैं या फिर उन क्रिया-कलापों को सामान्य दिनचर्या का व्यवहार मानकर बहुत तवज्जो नहीं देते हैं, उन्हीं क्रिया कलापों का महत्व आज बढ़ गया है। कोविड-19 के विश्वव्यापी भयावह और निराशा के वातावरण में भारत का पुरातन ज्ञान और आयुर्वेद को दुनिया ने माना और स्वीकार किया। तो फिर क्यों न हम अपने पुरातन खेलों को भी अपनायें। ■

नुक्कड़ नाटक तथा रंग संगीत से हुआ सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आगाज़

अपनी खुली और बेलौस आवाज़ों तथा अदाकारी के अलहदा तेवरों के बीच शहर के रंगकर्मी रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय की चार दीवारी में अपनी नुक्कड़ नाट्य प्रस्तुतियाँ दी। इसी के साथ टैगोर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित साहित्य और कलाओं के अंतर्राट्रीय समारोह विश्वरंग-2020 की सांस्कृतिक गतिविधियों का शुभारंभ हुआ।

पूर्वरंग की गतिविधियों के अंतर्गत इस बार विशेष रूप से नुक्कड़ नाटकों को शामिल किया गया है। 4, 5 और 6 नवंबर को प्रतिदिन दोपहर 3.30 बजे से मंचन आरंभ हुआ। इसके साथ ही रंग संगीत, सूफी संगीत और वतन परस्ती के तरानों से भी विश्वरंग का परिवेश गूंजेगा। कोविड-19 के तहत निर्देशों का पालन जारी रहा।

टैगोर विश्वकला एवं संस्कृति केन्द्र के संयोजन और इफ्तेखार क्रिकेट अकादेमी के सहयोग से आयोजित इस समारोह के पहले दिन 4 नवंबर को के.जी. त्रिवेदी के निर्देशन में रंग समूह 'त्रिकर्षि' के कलाकार नुक्कड़ नाटक 'आओ खेलें खेल' की प्रस्तुति देंगे। रंग संगीत के साथ 'शेडो ग्रुप' के कलाकार मनोज नायर के निर्देशन में पेश आएंगे। 5 नवंबर की प्रस्तुति होगी 'कल का रंगमंच', जिसे आलोक चटर्जी के निर्देशन में म.प्र. नाट्य विद्यालय के कलाकारों ने प्रस्तुतियाँ दी। इससे पूर्व मो. साज़िद अपने 'रंग बैंड' के फनकारों के साथ सूफी कलाम की महफिल सजी। 6 नवंबर की सभा का आरंभ सुरेन्द्र वानखेड़े अपने दल के साथ वतन परस्ती के तरानों का वृन्द गान किया। नुक्कड़ नाटक हुआ - 'अभ्यास', जिसे 'द राइजिंग सोसाईटी ऑफ आर्ट्स एण्ड कल्चर' के रंगकर्मी गोदान और तानाजी के निर्देशन में पेश किया।

उल्लेखनीय है कि विश्वरंग भारत सहित दुनिया के 15 से भी ज्यादा देशों में एक साथ मनाया जा रहा है जिनमें यूएसए, कनाडा, यूके, नीदरलैंड, अमरिका, ऑस्ट्रेलिया, रशिया, उजबेकिस्तान, सिंगापुर, श्रीलंका, फीजी आदि प्रमुख रूप से शामिल हैं। साहित्य, संस्कृति और कला से जुड़े विषयों के सैकड़ों विशेषज्ञ और रचनाधर्मी इस जलसे में शिरकत कर रहे हैं। सभी प्रस्तुतियों का प्रसारण विश्वरंग के वचुअल प्लेटफार्म पर ऑनलाइन किया गया। ■

विश्वरंग 2020

नैनिशा डेढिया निर्देशित पिराना बनी विश्वरंग अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल के अंतर्गत शॉर्ट फिल्म कॉम्पीटिशन की विजेता

- विश्वरंग अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का हुआ समापन
- गुलजार और सोनम वांगचुके पर आधारित फिल्मों से छात्रों का ज्ञानवर्धन
- द इममोर्टल्स फिल्म ने ताजा की दादा साहेब फाल्के और के.एल. सिंघल से जुड़ी यादें
- रामचंद पुलावर और उनके परिवार की मनमोहक शैडो पपेट शो की प्रस्तुति।
- गीता रामानुजन की कहानियां सुन रोमांचित हुए बच्चे।

विश्वरंग फिल्म फेस्टिवल 2020 में श्रुति अधिकारी के संतूर वादन के साथ शुरू हुआ। दिन के पहले सत्र का संचालन सुदीप सोहनी ने किया। सबसे पहले मंगलाचरण कार्यक्रम में श्रुति अधिकारी ने शानदार संतूर वादन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके बाद फिल्म महोत्सव में फिल्मों के प्रदर्शन का सिलसिला शुरू हुआ। सबसे पहले साहित्यिक फिल्म गुलजार की प्रस्तुति हुई। इस फिल्म का निर्माण मेघना गुलजार ने साहित्य अकादमी के साथ मिलकर किया है। फिल्म में प्रख्यात गीतकार गुलजार के जीवन के बारे में बताया गया है। फिल्म दिखाती है कि कैसे गुलजार ने अकेले बॉलीवुड, भारतीय कविता और गीत लेखन की पूरी दुनिया को बदलकर रख दिया

। गुलजार फिल्म की प्रस्तुति के बाद फिल्म महोत्सव में साइंस फिल्म 'सेमकॉल, द स्कूल ऑफ नॉरफेल' की प्रस्तुति हुई। इस फिल्म में भारत के लद्दाख में शैक्षिक क्रांति लाने वाले सोनम वांगचुके के जीवन और उनकी यात्रा के बारे में बताया गया है। फिल्म का निर्देशन डॉ, शाहिद रसूल और शफकत हबीब ने किया। इसके बाद विश्वरंग फिल्म फेस्टिवल 2020 का समापन समारोह रखा गया, जिसमें पुरस्कार जीतने वाली फिल्मों के निर्देशकों का सम्मान हुआ और उनसे बातचीत की गई। विश्वरंग के निदेशक श्री संतोष चौबे और सहनिदेशक श्री सिद्धार्थ चतुर्वेदी के अलावा नितिन वत्स ने विजेता फिल्मों के निर्देशकों का सम्मान किया और फिल्म के बारे में उनसे बातचीत की। नैनिशा डेढिया दवारा निर्देशित भारतीय फिल्म 'पिराना' ने सम्मान समारोह में पहला परस्कार जीता, जबकि पंडेली चेचो की 'द व्हाइट शीट्स' को दूसरा और सेराल मर्म की 'सोंधायनी' फिल्म को तीसरा पुरस्कार मिला। जाने माने सिनेमैटोग्राफर, डायरेक्टर और पांच बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीतने वाले फिल्ममेकर राजेन्द्र जांगले ज्यूरी के चेयरमैन थे। उनके अलावा फिल्म फेस्टिवल के क्यूरेटर, फिल्म प्रोग्रामर और इंडी सिनेमा के प्रमोटर मौली सिंह, धर्मा प्रोडक्शन की क्रिएटिव एग्जक्यूटिव श्रेया भट्टाचार्य, वरिष्ठ पत्रकार और टैगोर फिल्म फेस्टिवल के डायरेक्टर विनय उपाध्याय, फिल्ममेकर सुदीप सोहनी, नेशनल अवॉर्ड जीतने वाले डायरेक्टर दिनेश यादव और फिल्ममेकर अशोक कुमार मीणा भी जूरी का हिस्सा थे।

समापन समारोह के बाद फिल्म महोत्सव में शॉर्ट फिल्मों की प्रस्तुति हुई। पहली शॉर्ट फिल्म 'प्रश्न' एक प्रवासी मजदूर परिवार की कहानी है,

जिसका निर्देशन संतोष राम ने किया है। फिल्म में गणेश नाम के एक लड़के और उसकी मां के सामने शिक्षा और ज्ञान के अभाव की समस्या को दिखाया गया है। अलगी शॉर्ट फिल्म 'द व्हाइस शीट्स' पेंटर आर्किटेक्ट और लेखक मास्क वेलो के उपन्यास पर आधारित है। यह फिल्म वेलो के समय में सामाजिक और राजनीतिक बदलावों के बीच उनके जीवन की परेशानियों को दर्शाती है। फिल्म का निर्देशन पंडेली चेचो ने किया है। तीसरी और आखिरी शॉर्ट फिल्म 'बाय द विंडो' का निर्देशन मधुरा डालिंबकर ने किया है। यह फिल्म समाज में महिलाओं के सुरक्षित और सोहार्दपूर्ण माहौल बनाने पर जोर देती है। साथ ही उनकी व्यक्तिगत समस्याओं को भी उजागर करती है।

फिल्म फेस्टिवल में आगे मास्टर क्लास कार्यक्रम में फिल्ममेकर और संग्रहकर्ता शिवेन्द्र सिंह डूंगरपुर शामिल हुए। फिल्म निर्माता, लेखक और डायरोक्टर सुदीप सोहनी ने 'सिनेमा की विरासत के संरक्षण की आवश्यकता' विषय पर उनके साथ बातचीत की। इस दौरान उन्होंने समझाया कि सिनेमाई विरासत को बचाए रखना क्यों जरूरी है और डिजिटल माध्यम की बजाय पारंपारिक सिनेमा को महत्व दिया जाना क्यों जरूरी है। इसके साथ ही उन्होंने फिल्मों के संग्रह के महत्व को भी बताया। इस सत्र का संचालन शर्बानी बैनर्जी ने किया।

विश्वरंग फिल्म महोत्सव के आखिरी सत्र में विशेष रूप से आमंत्रित फिल्म 'द इम्मोर्टल्स' का प्रदर्शन हुआ। यह फिल्म कई गुमनाम कहानियों को उजागर करती है और उन चीजों पर बात करती है जो कभी भारतीय सिनेमा के कलाकारों के जीवन का अभिन्न भाग हुआ करती थी। फिल्म में दादा साहेब फाल्के से लेकर के.एल. सिंघल और बाबूराव पेंटर की कहानियां दिखाती है, जिससे हमें यह एहसास होता है कि इतने सालों में भारतीय सिनेमा क्या कुछ हासिल करके खो चुका है। फिल्म उन सभी चीजों और घटनाओं की यादें फिर से ताजा कर देती है।

गीता रामानुजन ने सुनाई जापानी अंदाज में कहानी
शेडो पपेट शो और सीईओ प्रीति व्यास के साथ सत्र रहे खास

देश के प्रसिद्ध पेरेंटिंग यू ट्यूब चैनल गेट सेट पेरेंट विद पल्लवी द्वारा आयोजित पहले बाल साहित्य, कला और संगीत महोत्सव का पांचवा दिन जापानी लोककथाओं के साथ शुरू हुआ। चौथे दिन की तरह पांचवे दिन भी

सत्र की पहली मेहमान गीता रामानुजन ने मजेदार कहानियों से बच्चों का मनोरंजन किया। दिन के पहले सत्र में पल्लवीराव चतुर्वेदी ने गीता के साथ बातचीत की। स्टोरीटेलिंग की अगुआ गीता रामानुजन ने जापान का 2002 का एक किस्सा सुनाया। जहां वो बच्चों से जुड़ी कहानियों का संग्रह लेने के लिए गई थी। इसके बाद दिन के दूसरे सत्र में पल्लवीराव चतुर्वेदी ने अमर चित्रकथा पत्रिका की सीईओ प्रीति व्यास से बातचीत की, जिसमें मौजूदा समय में भारतीय पौराणिक कथाओं की प्रासंगिकता पर चर्चा हुई।

शैडो पपेट शो की प्रस्तुति

बाल साहित्य, कला और संगीत महोत्सव का पांचवा दिन शेडो पपेट शो के साथ खत्म हुआ। दिन के आखिरी सत्र का संचालन पल्लवीराव चतुर्वेदी ने किया। रामचंद पुलावर ने इस सत्र में अपने पपेट थिएटर शो से बच्चों का मनोरंजन किया। रामचंद पुलावर के परिवार के अन्य सदस्यों ने भी इस काम में उनका साथ दिया। शैडो पपेट थिएटर शो कहानी कहने की एक कला है, जिसमें पपेट शो के जरिए कहानी को सुनाया जाता है। आखिरी सत्र में रामचंद पुलवार

और उनके परिवारजनों ने रामायण की कहानी सुनाई। इस कहानी में भगवान राम के धनुष तोड़ने से लेकर सीता वरण और उनके वनवास की कहानी भी दिखाई गई।

■

नाट्य विद्यालय की टीम ने खेला 'कल का रंगमंच'
चैताली और श्रुति ने विखेरा साजों का संगीत

एक ओर अमन, एकता और आपसदारी का रोमांच जगाता संगीत तो दूसरी ओर नई चुनौतियों के बीच उम्मीद और हौसले को थामकर रंगमंच पर लौटने के सबक।

नुक्कड़ नाट्य समारोह एवं रंग संगीत की महफिलें इन दिनों अभिनय, संवाद और गायन-वादन के मुख्तलिफ रंगों से रौशन हुई। दूसरे दिन की सभा का आकर्षण आलोक चटर्जी के निर्देशन में म.प्र. नाट्य विद्यालय की प्रस्तुति 'कल का रंगमंच', मो. साजिद के रंग बैंड का सूफी संगीत, श्रुति अधिकारी का संतूर वादन और चैताली शेवलीकर का वायोलीन वादन रहा। कार्यक्रम का प्रसारण विश्वरंग के वर्चुअल प्लेटफार्म यू ट्यूब और फेसबुक पर किया गया। कलाकारों का स्वागत कुलाधिपति संतोष चौबे, टैगोर कला केन्द्र के निदेशक विनय उपाध्याय तथा कोर रिचर्स ग्रुप टैगोर विश्वविद्यालय के संयोजक प्रो. वी.के. वर्मा ने किया।

महफिल का आगाज़ प्रतिभाशाली युवा संगीतकार चैताली ने बायोलीन पर सद्भाव की प्रेरणादायी धुनें बजाकर किया। सुरों के इस गुलदस्ते में टैगोर का कालजयी गीत 'एकला चलो रे' से लेकर बनारसी धुन, तराना और मीरा का भजन 'राम रतन पायो' अपनी रंग-ओ-महक लिए शामिल थे। वायोलीन के तारों पर बहते इस सुरीले अहसास में नया पहलू जोड़ा श्रुति अधिकारी ने। संतूर जैसे मीठे-कोमल साज़ पर जैसे ही उन्होंने राजस्थानी मांड 'पधारो म्हारे देस' की बंदिश बजायी माहौल प्रेम और आत्मीयता के

राग-रंग में डूब गया यह सिलसिला बापू के प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' से गुजरता पहाड़ी धुन पर जाकर थमा। इन दोनों कलाकारों के साथ रामेन्द्रसिंह सोलंकी की सधी हुई संगत ने लय-ताल का करिश्माई अंदाज़ दिखाया। साज़ों की सुरीली दस्तक के बाद मौसिकी की इस महफिल में चार चांद लगाने युवा फनकार मो. साज़िद और आमिर हाफिज़ अपने साथी-संगतकारों के साथ मंच पर नमूदार हुए। अपनी गायिकी में सूफियाना असर लिए इस जोड़ी ने हज़रत अमीर खुसरो के मशहूर कलाम चुने। 'दमादम मस्त कलंदर' और 'आज रंग है' जैसी मशहूर बंदिशों का सुरीला परचम फ़िज़ाओं में लहराया तो संगीत के कद्रदान भी थिरक उठे।

नुक्कड़ शैली में 'कल का रंगमंच' प्रस्तुत करने म.प्र. नाट्य विद्यालय के विद्यार्थी शरीक हुए। वरिष्ठ रंगकर्मी आलोक चटर्जी द्वारा निर्देशित इस लघु नाटक में कोविड-19 के दौरान उभरी नई चुनौती के बीच रंगमंच की लौटती उम्मीदों की आहट थी। सशक्त संवाद, अदाकारी और सामूहिक रंग उर्जा से तैयार इस नए प्रयोग में तनवीर अहमद, सुशीलकांत मिश्र, रविराव, सुरेन्द्र वानखेड़े और रहिमुद्दीन का रचनात्मक सहयोग रहा।

■

देबस्मिता दासगुप्ता की डूडल वर्कशॉप के नाम रहा बाल साहित्य, कला और संगीत महोत्सव

- बहारा की कहानी से दूर हुई लॉकडाउन की मायूसी
- देबस्मिता से अजीन बनाने का तरीका सीख लाभान्वित हुए बच्चे

देश के प्रसिद्ध पेरेंटिंग यू ट्यूब चैनल गेट सेट पेरेंट विद पल्लवी द्वारा आयोजित पहले बाल साहित्य, कला और संगीत महोत्सव के चौथे देबस्मिता दास ने स्टोरीटेलिंग के नए अंदाज से सभी को अवगत कराया। उन्होंने सबसे पहले बहारा की कहानी के साथ स्टोरीटेलिंग की शुरुआत की।

बहारा एक लड़की है, जो अपने जन्मदिन पर बहुत खुश है और गिटार की मांग करती है। इसी बीच कोरोना के चलते लॉकडाउन लग जाता है और बहारा अपना जन्मदिन नहीं मना पाती। उसके पापा घर से ही काम कर रहे हैं और उसके पास कोई दोस्त नहीं है। उसके घर के लोग उसे मनाने की कोशिश करते हैं। इसके बाद बहारा ऑनलाइन बर्थडे पार्टी की प्लानिंग करती है और उसके सभी दोस्तों को निमंत्रण भेज दिया जाता है। सभी मिलकर बहुत ही शानदार तरीके से बहारा का जन्मदिन मनाते हैं। सभी बहारा की बहुत तारीफ करते हैं।

बहारा की कहानी के बाद देबस्मिता ने मीना और मानसून की कहानी सुनाई। इसके बाद उन्होंने बच्चों को अजीन बनाना भी सिखाया। अजीन एक तरह की बुकलेट होती है। कोई भी किताब बनाने से पहले एक सैंपल किताब बनाई जाती है, जिसे अजीन कहते हैं। अपनी खुद की किताब बनाने की दिशा में यह पहला कदम है। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने एक बहुत ही खूबसूरत अजीन बनाकर दिखाया, जिसमें कई तरह की सीख भी छिपी हुई थी।

गीता रामानुजन की मजेदार कहानियों के साथ शुरू हुआ बाल महोत्सव

- शिक्षाप्रद कहानियों से लाभान्वित हुए बच्चे
- दैत्य और पेंटर की कहानियों से मिली जीवन की सीख

देश के प्रसिद्ध पेरेंटिंग यू ट्यूब चैनल गेट सेट पेरेंट विद पल्लवी द्वारा गीता रामानुजन की मजेदार कहानियों के साथ शुरु हुआ। दिन के पहले सत्र में पल्लवीराव चतुर्वेदी ने गीता के साथ बातचीत की। गीता रामानुजन ने एक दुष्ट राक्षस की कहानी के साथ अपनी स्टोरीटेलिंग शुरू की। रंग बिरंगे कपड़ों में गीता रामानुजन ने बहुत ही मजेदार ढंग से राक्षस की कहानी सुनाई। इस कहानी में एक आदमी लोगों को कहानी सुनाते हुए घूमता रहता है। इसी कड़ी में वह युवक एक गांव में पहुंचता है जहां बच्चे रहते हैं लेकिन यहां दैत्य का राज है। जो इस गांव में राज करता है और किसी को हंसने गाने नहीं देता। वह हर शाम गांव में आता है और हंसने गाने वाले लोगों को अपने साथ ले जाता है।

गांव की हालत देखकर उस युवक ने राक्षस से मिलने का फैसला किया। राक्षस से मिलने के लिए वह युवक पहाड़ी के पार गया। यहां बहुत ही खूबसूरत घाटी थी जहां बहुत ही हरियाली थी और सभी बहुत खुश थे। युवक यहां पेड़ के नीचे बैठ गया। उसे नींद आने ही वाली थी तभी उसने किसी विशालकाय जानवर को अपनी तरफ आते देखा।

उसे बहुत डर लग रहा था। उसने अपने बैग से शीशा निकाला और खुद को देखते हुए ढांढ़स बंधाने लगा। तभी राक्षस ने उसका गला दबाने की कोशिश की युवक चिल्लाया और अचानक वह दैत्य पीछे गिर पड़ा। दैत्य मर चुका था। युवक वहां से वापस लौटा और उसने देखा कि सभी बच्चे उसका इंतजार कर रहे थे। युवक को देखते ही बच्चों ने फिर से गाना शुरू कर दिया। इसके बाद बच्चों ने उससे पूछा कि दैत्य मरा कैसे। इस पर युवक ने बताया कि दैत्य शीशे में खुद को देखकर इतना डर गया कि दिल का दौरा पड़ने से उसकी मौत हो गई।

उन्होंने आगे बताया कि यह कहानी उनके निजी जीवन के अनुभवों से जुड़ी हुई है। इसके बाद उन्होंने इंगा नाम की एक आलसी लड़की कहानी भी सुनाई, जो अपना काम कभी नहीं करती थी। बाद में यह लड़की दूसरे घर जाती जहां सभी बच्चे अपने अपने कमरों में रहते थे और सभी अपना काम खुद करते थे। इंगा इसमें भी आलस करती थी और उसका रूम बहुत गंदा हो चुका था। इसके बाद उसके दादाजी ने जादूगर उसके हाथ में दिए जिसने उसका पूरा घर साफ कर दिया। इसके बाद इंगा भी सफाई के साथ रहने लगी। उन्होंने एक पेंटर की कहानी भी सुनाई, जिसने अपने नजरिए से सभी के जीवन में रंग भर दिए थे।

राजीव पुलावर के कठपुरली शो के साथ खत्म हुआ बाल महोत्सव

- हिरण और लड़के के पपेट देखकर रोमांचित हुए बच्चे
- राजीव ने सिखाया घर में ही बनाएं बेहतरीन पपेट बनाने का तरीका
- केरल के जाने माने कठपुतली कलाकार राजीव पलावर ने इस कार्यक्रम में कठपुतली शो बनाने का आसान तरीका बच्चों को समझाया।

राजीव ने सबसे पहले एक हिरण के जरिए पपेट शो दिखाया। उन्होंने बताया कि हथौड़ा और छेनी की मदद से पारंपारिक क्राफ्ट बनाया जाता है, पर आज के दौर में हम पेंसिल और चार्ट पेपर की मदद से यह काम करते हैं। कार्यक्रम की शुरुआत में ही उन्होंने हिरण का खूबसूरत पपेट बनाकर दिखाया। इस दौरान उन्होंने सिखाया कि कैसे टुकड़ों में हिरण का पपेट बनाया जाता है। हिरण को खूबसूरत बनाने के लिए उन्होंने वाटर कलर का इस्तेमाल भी किया।

हिरण के बाद राजीव ने एक लड़के का भी पपेट बनाया। लड़के का पपेट बनाने के बाद उन्होंने उसके सभी हाथ और पैर अलग करके उनको एक धागे के जरिए जोड़ा। धागे की बजाय यहां पर पिन का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। धागे से जुड़ने के बाद लड़के के पपेट के हाथ और पैर हिलने लगे थे,

जिसके बाद उन्होंने इसकी मदद से बेहतरीन पपेट शैडो शो किया और बच्चों को भी सिखाया कि कैसे आसानी से हम घर पर ही पपेट शो बना सकते हैं।

लिटिल बैलेट ग्रुप की नृत्य प्रस्तुति

- लिटिल बैलेट ग्रुप के मनमोहक नृत्य से मंत्रमुग्ध हुए दर्शक
- चतुरंग बैंड की गुढी पाड़वा पर शानदार गीत की प्रस्तुति

अमित मलिक के वायोलिन वादन के साथ शुरू हुआ। सबसे पहले मंगलाचरण में लिटिल बैलेट ग्रुप ने शानदार नृत्य की प्रस्तुति की। यह नृत्य रामायण पर आधिरत था, जिसमें भगवान राम और माता सीता की अराधना की गई। मंगलाचरण कार्यक्रम में नृत्य के साथ-साथ रामायण के एक अंश की कहानी भी सुनाई गई।

भागवान राम के राजतिलक के समय का दृश्य का मंचन किया अयोध्या में श्री राम के राजतिलक की तैयारियां चल रही हैं और सभी तरफ जश्न का माहौल है। गांव के लोग उत्साह में नाच गान कर रहे हैं।

नृत्य के बाद चतुरंग ने गुढ़ी पाड़वा के ऊपर शानदार गीत की प्रस्तुति की। इस कार्यक्रम के गीतकार और संगीतकार सुनील एस.साहनी थे। इस मराठी गाने के बोल थे 'पवित्र मंगल समृद्धीचा गुढ़ी पाड़वा मानाचा' आरती कुमार, चैतन्य सोहानी ने भी इस कार्यक्रम में सुनील साहनी का साथ निभाया। इस गीत में भारत और महाराष्ट्र के सुखद भविष्य की कामना की गई।

अंग्रेजी, उर्दू और मैथिली फिल्मों की प्रस्तुति

- जीवन का खूबसूरत संदेश देती है मैथिली फिल्म गमक घर
- जनजातीय कला की खूबसूरत संस्कृति को दिखाती है शॉर्ट फिल्म गोंड आर्ट

साहित्यिक अंग्रेजी फिल्म 'रस्किन बॉन्ड' की प्रस्तुति हुई। रस्किन बॉन्ड डॉक्यूमेंट्री प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक रस्किन बॉन्ड के ऊपर आधारित है। रस्किन बॉन्ड बच्चों को लेकर अपनी कहानियों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने महज 13 साल की उम्र में लेखन शुरू कर दिया था करियर की शुरुआत में उन्होंने वयस्कों के लिए लेखन किया था, लेकिन 40 साल की उम्र में उन्होंने बच्चों के लिए लिखना शुरू किया, जिससे उन्हें खास पहचान मिली। इस फिल्म का निर्देशन ऑबिद सिद्दिकी ने किया है।

फिल्म महोत्सव में अगली फिल्म शीन काफ निजाम रही, जिसका निर्देशन लीलाधर मंडलोई ने किया है। यह फिल्म उर्दू शायर शीन काफ निजाम और उनके जीवन पर आधारित है। फिल्म फेस्टिवल में इसके बाद साइंस फिल्म का प्रदर्शन किया गया। भारत की पहली डॉक्यू ड्रामा फिल्म 'द इंगिमा ऑफ श्रीरामानुजन' इस कार्यक्रम का हिस्सा बनी। फिल्म का निर्देशन राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता डायरेक्टर नंदन कुदयादी ने किया है। प्रख्यात हॉलीवुड अभिनेता टॉम अल्टर और अभिनेता रघुवीर यादव भी इस फिल्म का हिस्सा बने। इसके बाद विश्व सिनेमा में उर्दू पुस्तक जहाने फिल्म के लेखक रशीद अंजुम से बद्र वास्ती ने बातचीत की तथा शॉर्ट फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। पहली शॉर्ट फिल्म 'विनसेट बिफोर नून' का निर्देशन फ्रेंच फिल्ममेकर गुलाम मैंगट ने किया। इस फिल्म में एक पिता और उसके पुत्र के बीच के उलझे हुए रिश्ते को समझाया गया है। दूसरी शॉर्ट फिल्म गोंड आर्ट ने भारत की जनजातीय संस्कृति को बहुत ही खूबसूरत तरीके से समझाया। फिल्म में बताया गया कि गोंड आर्ट क्या है और भारतीय संस्कृति में इसका कितना प्रभाव है। इस फिल्म का निर्देशन प्रांजल जोशी और अनुस्था अग्रवाल ने किया है।

तीसरी शॉर्ट फिल्म पिराना संसाधनों के दोहन की संस्कृति के बारे में हमें चेताती है। फिल्म में दिखाया गया है कि कैसे हम जरूरत से ज्यादा सामान लेते हैं और उनका दुरुपयोग करते हैं। फिल्म में 'कन्वीनियंस ऐट ऑल कॉस्ट' की धारणा को भी बखूबी समझाया गया है। अंत में यह फिल्म हमें वेस्ट फ्री होने के सही मायने भी समझाती है। इसके बाद मास्टर क्लास कार्यक्रम में पूबाली चौधरी और अतिका चौहान के साथ गौरव पतकी ने बातचीत की। इस सत्र का संचालन भी शर्बानी बैनर्जी ने किया। इस दौरान रॉक ऑन और काय पो चे जैसी फिल्मों में काम करने वाली पूबाली चौधरी और वेटिंग तथा छपाक जैसी फिल्मों में काम करने वाली अतिका चौहान ने युवा स्क्रिप्ट लेखक गौरव पतकी को समझाया कि बॉलीवुड में समय बदल रहा है। कंटेंट और कहानियां अभी भी बॉलीवुड में राज कर रही हैं। सही स्क्रिप्ट और बेहतरीन डायलॉग वाली फिल्मों को तारीफ मिल रही है। ड्रामा और ग्लैमर फिल्मों की बजाय वास्विक सिनेमा के प्रति लोग जागरुक हो रहे हैं। ऑनलाइन प्लेफॉर्म ने इसमें अहम भूमिका निभाई है।

अचल मिश्रा दवारा निर्देशित मैथिली फिल्म 'गमक घर' दिन की आखिरी फिल्म रही। इस फिल्म में जिंदगी के अलग-अलग पड़ावों को दिखाया गया है और इसके जरिए बहुत ही खूबसूरत संदेश देने की कोशिश की गई है। दिन के अंत में प्रतिबंब कार्यक्रम में साहित्य व सिनेमा पर बातचीत हुई। आबिद सूरती, ज्योति कपूर, अनिल चौबे और जयंत देशमुख इस कार्यक्रम का हिस्सा बने। जयंत देशमुख ने साहित्य सिनेमा और कला के संबंध को समझाया।

उन्होंने कहा कि साहित्य नहीं होगा तो हम कुछ नहीं कर सकते हैं। साहित्य के बाद कला के जरिए हम सिनेमा का निर्माण करते हैं। इसके बाद ज्योति कपूर ने भी जयंत का समर्थन करते हुए कहा कि कला का सबसे मूल रूप साहित्य ही होता है। साहित्य और सिनेमा का रिश्ता भी कुछ ऐसा ही है। इसके बाद आबिद सूरती ने कहा कि कहानी के रूप में कुछ भी लिखा जा सकता है, पर उसे पर्दे में उतारना अलग कला होता है। अनिल चौबे ने श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास राग दरबारी के उदाहरण के जरिए इसी बात को समझाया। ■

'विश्वरंग' में गूँजा देशराज, 'अभ्यास' की प्रस्तुति में संवाद और अदाकारी के तेवर

अपनी सरज़मीं के मान और गौरव का गान करती कालजयी कविताओं का गुलदस्ता शुक्रवार को 'विश्वरंग' के आँगन में महकता रहा। यहाँ वतनपरस्ती के तरानों का संगीत था तो दूसरी ओर रंगमंच के दायरों में समाज और दुनिया के उभरते अक्स को देखने का मौका भी। संगीतकार सुरेन्द्र वानखेड़े और रंगकर्मी गोदान तथा तानाजी ने अपने समूहों के साथ इसी कलात्मक उर्जा को समेटे रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के सभागार में दस्तक दी। इस मौके पर टैगोर चित्रकला प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता के बहुरंगीय पोस्टर का लोकार्पण भी किया गया।

टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र द्वारा इफ्तेखार क्रिकेट अकादेमी के सहयोग से आयोजित 'विश्वरंग' की सांस्कृतिक गतिविधियों का तीन दिवसीय उत्सव शुक्रवार को चरम पर पहुँचा। सभा की शुरूआत सुरेन्द्र वानखेड़े के संयोजन में तैयार वृन्दगान से हुई। धर्मवीर भारती के लोकप्रिय नाटक 'अंधायुग' के सामूहिक नंदी पाठ ने सभा का मांगलिक उद्घोष किया। परंपरा की इस सुरीली दस्तक के बाद वतन परस्ती के नग्मों ने माहौल को शौर्य, पराक्रम और वीरता के ओजस्वी रंगों से सराबोर कर दिया। सुभद्रा कुमारी चौहान की यादगार कविता 'वीरों का कैसा हो वसंत' और शिवमंगल सिंह सुमन की रचना 'तूफानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार' का कोरस जैसे ही ताल वाद्यों के साथ बढ़त लेता गूंजा, सभागार में मौजूद दर्शक-श्रोताओं के जेहन में हिन्दुस्तान की आज़ादी का जंग और देशभक्ति के जज़्बात कौंध उठे। वृन्दगान की समापन प्रस्तुति थी- ध्वज गान- 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा झंडा ऊँचा रहे हमारा'।

द राइजिंग सोसाईटी ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर ने 'विश्वरंग' के निमित्त रूपक 'अभ्यास' का प्रयोग परिकल्पित किया। प्रतिभाशाली रंगकर्मियों गोदान और तानाजी ने इस बेहद अनूठी प्रस्तुति को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित अभिनेत्री प्रीति झा तिवारी के मार्गदर्शन में तैयार किया है 'अभ्यास' दरअसल, नाटक के किरदारों के रचनात्मक अंतर्द्वन्द्व और बेचैनी को अभिव्यक्त करती

कहानी है। किसी चरित्र और कहानी तथा संवाद में ढलने के पहले अपने समाज और आसपास की दुनिया को देखने की अलहदा कोशिश हैं 'अभ्यास' विषयवस्तु, संवाद, अभिनय और आपसी सूझ-बूझ के बीच यह नाटक एक बेहतर अनुभव की बानगी पेश करता है।

कलाकारों का स्वागत रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे, कुलपति डॉ. ब्रम्हप्रकाश पेठिया, सीआरजी के संयोजक प्रो. वी. के. वर्मा, आईसेक्ट की रजिस्ट्रार सुश्री पुष्पा असिवाल और कला संकाय की डीन डॉ. ऊषा वैद्य ने किया। टैगोर विश्व कला केन्द्र के निदेशक विनय उपाध्याय ने सभा का संचालन करते हुए के सांस्कृतिक नवाचारों का जिक्र किया।

चिल्ड्रन फेस्टिवल और फिल्म फेस्टिवल की जानकारी भी दी। गौरतलब है कि भारत सहित दुनिया के 16 मुल्क 'विश्वरंग' की मेजबानी कर रहे हैं। प्रस्तुति के समापन पर इफ्तेखार क्रिकेट अकादमी के सचिव तथा रंगकर्मी हमीदुल्लाह खां 'मामू' ने भोपाल के रंगकर्मियों की ओर से विश्वरंग के निदेशक संतोष चौबे का सारस्वत अभिनंदन किया।

■

मंगलाचरण में श्वेता देवेन्द्र का भरत नाट्यम

- मंगलाचरण कार्यक्रम में श्वेता देवेन्द्र के शानदार भरत नाट्यम नृत्य की प्रस्तुति
- कोविड के बाद की दुनिया कार्यक्रम में उद्यमिता के भविष्य पर हुई चर्चा
- इकबाल के साथ जोड़कर टैगौर को पढ़ें तो उन्हें बेहतर समझा जा सकता है: इंद्रनाथ चौधरी

हिंदी और भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में रचित साहित्य और कला को नई पहचान दिलाने के लिए आयोजित किया जाने वाले 'टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव' (विश्वरंग) के आठवें दिन की शुरुआत श्वेता देवेन्द्र के भरत नाट्यम के साथ हुई।

कोविड के बाद की दुनिया कार्यक्रम में उद्यमिता के भविष्य पर चर्चा

हुई कोरोना के कारण उद्यमिता से जुड़े क्षेत्र में क्या बदलाव आए हैं और उनसे निपटकर कैसे एक सफल उद्यी बना जा सकता है। इस विषय पर दिन के दूसरे

सत्र में चर्चा हुई। प्रो. सत्यजीत मजूमदार, अनिल जोशी और अंकित माछर जिन्होंने उद्यमिता पर कोविड के प्रभावों को लेकर चर्चा की और इससे निपटने के तरीके भी बताए।

कोविड के बाद की दुनिया में उद्यमिता के भविष्य पर चर्चा के बाद डॉ. सीमा रायजादा ने चित्रा बैनर्जी दिवाकरुणी से संवाद किया। विश्वरंग के सहनिदेशक सिद्धार्थ चतुर्वेदी इस सत्र का हिस्सा बने और लेखक चित्रा बनर्जी का विश्वरंग में स्वागत किया। अपनी यात्रा के बारे में बताते हुए चित्रा ने बताया कि उन्होंने 25 साल की उम तक सोचा भी नहीं था कि वो एक लेखक बनेंगी, लेकिन अमेरिका जाने के बाद लेखन उनके जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया। उन्होंने अपनी यादें संजोने के लिए लेखन शुरू किया था। उन्होंने कविता के साथ शुरुआत की फिर कहानियां लिखी और अंत में उपन्यास लिखना शुरू किया, जिसके लिए उन्हें जाना जाता है। इस बीच लेखक से मिलिए कार्यक्रम में महेश दर्पण ने जानकी प्रसाद शर्मा से बातचीत की। जीतेन्द्र श्रीवास्तव, अरुण होता, प्रेम जन्मेजय, मनोज श्रीवास्तव और महेन्द्र गगन भी इस कार्यक्रम का हिस्सा बने। इसके बाद विश्वरंग हॉलैंड फिल्म का प्रदर्शन भी हुआ।

अगले सत्र में टैगौर, इकबाल और फैज पर गहन चर्चा हुई। यह सत्र पिछले संस्करण की यादों के तौर पर इस साल के संस्करण में शामिल हुआ। इस सत्र का संचालन लीलाधर मंडलोई ने किया था, जिसमें डॉ. धनंजय वर्मा, मृदुला गर्ग और इंद्रनाथ चौधरी शामिल हुए थे। कार्यक्रम के दौरान टैगोर के ऊपर बोलते हुए इंद्रनाथ चौधरी ने कहा कि टैगोर के साहित्य, विचार और उनके कार्यों पर लगातार बात होती है, पर यदि इकबाल के साथ जोड़कर इन सभी विषयों पर बात की जाए तो हम बेहतर तरीके से टैगोर और उनके विचारों को समझ सकेंगे।

टैगोर, इकबाल और फैज पर चर्चा के बाद प्रवासी भारतीयों के लिए कविता सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें कई बड़े कवियों ने शिरकत की। रेखा राजवंशी, रेखा मैत्र, पुष्पिता अवस्थी, रामा तक्षक, अशोक सिंह, भावना कुंवर, संजय अग्निहोत्री और उमेश ताम्बी ने अपनी कविताओं से सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम में आगे अपनी चौपाल– कुछ अनकही कहानियां कार्यक्रम में सत्य व्यास, दिव्य प्रकाश दुबे, इला जोशी, नितिन वत्स और सुदीप सोहनी शामिल हुए। जिसमें कई अलग–अलग विषयों पर बातचीत हुई। सभी मेहमान वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए आपस में जुड़े थे और संवाद किया। कार्यक्रम के दौरान सभी मेहमानों ने कई पुरानी यादें ताजा की। अपनी चौपाल कार्यक्रम के बाद विश्वरंग कैनेडा फिल्म का प्रदर्शन हुआ। सितार वादक सुजात खान मनमोहक सितार वादन के साथ शुजात खान ने अपने सितार वादन से सभी का दिल जीत लिया।

बाल साहित्य, कला और संगीत महोत्सव की झलकियां

देश के प्रसिद्ध पेरेंटिंग यू ट्यूब चैनल गेट सेट पेरेंट विद पल्लवी द्वारा आयोजित पहले बाल साहित्य, कला और संगीत महोत्सव का सलोमी पारेख की आर्ट वर्कशॉप के साथ शुरू हुआ। दिन के पहले सत्र में पल्लवीराव चतुर्वेदी ने सलोमी पारेख के साथ बाचतीच की। आर्ट वर्कशॉप पर आधारित इस कार्यक्रम का नाम मधुबनी आर्ट था, जो 4 साल से ज्यादा उम्र के बच्चों के लिए था। सलोमी पारेख ने कार्यक्रम की शुरुआत में उन्होंने मधुबनी आर्ट के बारे में बताया। मधुबनी आर्ट भारत की सबसे पुरानी कलाओं में से एक है, जिसकी उत्पत्ति बिहार के मधुबनी और नेपाल के कुछ हिस्सों में हुई थी। इसी वजह से इस कला को मिथिला आर्ट भी कहते हैं। कार्यक्रम में टिंकल कॉमिक वर्कशॉप का आयोजन किया गया। अमर चित्रकथा पत्रिका के आर्ट डारेक्टर सैवियो मस्करेनहस ने इस कार्यक्रम में बच्चों को टिंकल टून सुपांडी बनाने का तरीका सिखाया। नंदिनी नायर की मजेदार कहानियों के साथ खत्म हुआ। दिन के आखिरी सत्र में पल्लवी चतुर्वेदी ने नंदिनी नायर के साथ बातचीत की। बच्चों के लिए 50 से ज्यादा किताबें लिखने वाली नंदिनी ने बताया कि बच्चों के लिए किताबें बहुत ही जरूरी होती हैं, पर कुछ ही लेखकों ने इस विधा में काम किया है। इसी बात ने उन्हें बच्चों के लिए लिखने की प्रेरणा दी। उन्हें बचपन से ही लिखने का शौक था और कॉलेज के दिनों में उन्होंने अपनी कहानियों के लिए कुछ पुरस्कार भी जीते थे, लेकिन मां बनने के बाद उन्होंने पूरी तरह से बच्चों के लिए लिखने का काम शुरू किया। ■

लता मुंशी के भरत नाट्यम की प्रस्तुति

डॉ. लता सिंह मुंशी ने अपने शानदार नृत्य से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनकी एकल प्रस्तुति के बाद उन्होंने अपनी दो सहयोगी नृत्यांगनाओं के साथ भी बेहतरीन भरतनाट्यम नृत्य की प्रस्तुति दी। कोविड के बाद की दुनिया कार्यक्रम रखा गया, जिसमें आज हमारे स्वास्थ्य और भारतीय परंपरा के ऊपर चर्चा हुई।

कोविड के बाद की दुनिया पर चर्चा

दिन के दूसरे सत्र का संचालन विश्वरंग के निदेशक संतोष चौबे ने किया। भारत में कोविड को कैसे समझा जा रहा है और शिक्षा और स्वास्थ्य में क्या नए प्रयोग हो रहे हैं इस विषय पर चर्चा हुई। सीवी रमन विश्विद्यालय के कुलपति अमिताभ सक्सेना, एशोसिएशन ऑफ इंडियन युनिर्सिटीज की सचिव पंकज मित्तल, ऊर्वशी प्रसाद पब्लिक पॉलिसी की जानकार और मुकुल कानिडकर शिक्षा संगठन के अखिल भारतीय संगठन मंत्री इस सत्र में मेहमान के

तौर पर शामिल हुए। लोकल के लिए वोकल पर पर चर्चा करते हुए अमिताभ सक्सेना ने कहा कि आज हमें हमारी जड़ों से जुड़ने की आवश्यकता है। विश्वरंग

हमें आज फिर से अपनी मूल संस्कृति से जुड़ने का अवसर दे रहा है। रोज हमारे सामने कोई न कोई नवाचार सामने आ रहा है। ऐसे समय में हमें विद्यार्थियों के अंदर यह विश्वास जगाने की जरूरत है कि आप नए दौर में पूरी क्षमता के साथ खुद को स्थापित कर सकते हैं।

आश्विन सांघी के साथ विशेष सत्र

सत्र में डॉ. नीलमकमल कपूर ने अश्विन सांघी के साथ बातचीत की। विश्वरंग महोत्सव के सहनिदेशक सिद्धार्थ चतुर्वेदी भी इसमें शामिल हुए। जाने माने अंग्रेजी लेखक अश्विन सांघी ने लेखन पर बात करते हुए बताया कि एक लेखक बनने के लिए आपको सबसे पहले लेखन शुरू करना पड़ता है और धीरे-धीरे आप चीजें सीखते चले जाते हैं। उन्होंने अपनी यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि मेरे माता और पिता बनिया परिवार से थे और उनसे गद्दी पर बैठने की ही उम्मीद की जाती थी, लेकिन उनके नाना के बड़े भाई ने उन्हें लेखन के लिए प्रेरितकिया।

उन्होंने 300 किताबें भी अश्विन सांघी को भेंट की। अमेरिका से एमबीए करने के बाद 15 साल तक उन्होंने पैतृक व्यापार संभाला, पर इसके बाद उन्होंने लिखना शुरू किया। बाद में भारतीय पौराणिक कथाओं पर उनके लेखन को खासी पहचान मिली।

विश्व कविता समारोह

दूसरे विश्व कविता समारोह में दुनिया भर के जाने माने चुनिंदा कवियों की कविताओं का पाठ हुआ। सत्र का संचालन जैनेन्द्र कुमार ने किया, जिसमें लेबो माशिल, तेनजिंग, सुमन पोखरेल, नजीब बरवर, मारिया लानोट, ओबेद आकाश, खुजेस्ता इल्हाम, माजिद महमूद और इगोर सिड की कविताएं पढ़ी गई। इस सत्र में दुनिया की संस्कृति, इतिहास और भूगोल के दर्शन हुए। यह कार्यक्रम विश्वरंग के पहले संस्करण की याद के तौर पर शामिल किया गया था, जिसमें दुनियाभर के कवि शामिल हुए थे। इसके बाद लेखक से मिलिए कार्यक्रम में संतोष चौबे और अरुणेश शुक्ल के बीच बातचीत हुई। लीलाधर मंडलोई, राकी गर्ग, बलराम गुमास्ता, मुकेश वर्मा और धनंजय वर्मा भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

सत्र में निराला और अज्ञेय जैसे कई महान कवियों की कविताओं का पाठ हुआ। इस सत्र का संचालन विश्वंरग के निदेशक संतोष चौबे ने किया। कार्यक्रम का नाम था कविता यात्रा। इस सत्र में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, नागार्जुन, अज्ञेय, गजानन माधव मुक्तिबोध, रघुवीर सहाय, केदारनाथ अग्रवाल, केदारनाथ सिंह, कुंवर नारायण, अशोक वाजपेयी और श्रीकांत वर्मा की कविताओं का पाठ हुआ। ये कविता यात्रा पिछले 70 सालों में देश की यात्रा भी थी इस कार्यक्रम में सभी महान कवियों की कविताओं की नाट्य प्रस्तुति ने सभी का दिल जीत लिया।

प्रवासी भारतीयों के साहित्य के मूल्यांकन की चुनौतियों पर भी इस दौरान चर्चा हुई, जिसमें नासिरा शर्मा, अनिल शर्मा, उषा राजे सक्सेना, तेजेन्द्र शर्मा, दिव्या माथुर, संध्या सिंह और जय वर्मा शामिल हुए। विश्वरंग महोत्सव में आगे होली के रंग संतोष चौबे के संग कार्यक्रम की प्रस्तुति हुई। रंगो के त्योहार पर बात करते हुए विश्वरंग के निदेशक संतोष चौबे ने देशभर में होली के आयोजन पर चर्चा की।

उन्होंने बताया कि आगरा की होली में मिठास ज्यादा है, जबकि मैनपुरी की होली में गति और ऊर्जा ज्यादा है। देश के कई क्षेत्रों से होली के लोकगीतों पर नृत्य हुआ। सबसे पहले उन्होंने यमुना की होली की प्रस्तुति हुई, जिसे पीयूष गायक ने गाया था। बाद में इसी गाने पर नृत्य की प्रस्तुति भी हुई। इसके बाद वृंदावन की होली पर नृत्य की प्रस्तुति हुई। होली के ऊपर आधारित सभी नृत्यों की प्रस्तुति क्षमा मालवीय ने की, जिनमें कत्थक की झलक भी दिखाई दी।

होली के गीतों की प्रस्तुति के बाद विश्वरंग विदेशी फिल्मों की प्रस्तुति की गई, जिसमें त्रिदिनाद, श्रीलंका, स्वीडन, यूक्रेन, बल्गेरिया, कजाकिस्तान, यू.ए.ई, रूस और अमेरिका की फिल्मों का प्रदर्शन हुआ। दिन के आखिरी सत्र में अंकुर तिवारी विश्वरंग का हिस्सा बने और अपने शानदार संगीत से सभी दर्शकों का दिल जीत लिया।

बाल साहित्य, कला और संगीत महोत्सव की झलकियां

गोंट आर्ट वर्कशॉप

देश के प्रसिद्ध पेरेंटिंग यू ट्यूब चैनल गेट सेट पेरेंट विद पल्लवी द्वारा आयोजित पहले बाल साहित्य, कला और संगीत महोत्सव में अकांक्षा गोयनका की आर्ट वर्कशॉप के साथ शुरू हुआ उन्होंने इस सत्र में गोंड आर्ट पर चर्चा की और बच्चों को गोंड आर्ट बनाना भी सिखाया। गोंड आर्ट जनजातीय कला का एक रूप है, जिसमें प्राकृतिक चीजों की चित्रकारी की जाती है। कला का यह रूप मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के गांवों में ज्यादा प्रचलित है। गोंड का शाब्दिक अर्थ होता है हरियाली। कला के इस रूप में इसी से संबंधित चीजों की चित्रकारी होती है। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने मछली और मोर जैसे कई जीवों की चित्रकारी की।

अशोक राजगोपालन के साथ बातचीत

दूसरे सत्र में पल्लवीराव चतुर्वेदी ने अशोक राजगोपालन के साथ बातचीत की। इस सत्र में जानी मानी पुस्तक गजपति कुलपति के लेखक अशोक राजगोपालन ने अपनी कहानियों से बच्चों का मनोरंजन किया और उन्हें जीवन में काम आने वाली सीख भी दी। अलग-अलग शहरों से कई बच्चे भी इस सत्र में अशोक राजगोपालन के साथ जुड़े और उनकी कहानियों से लाभान्वित हुए। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने गजपति कुलपति की कहानी भी सुनाई। इसके बाद उन्होंने पल्लवीराव चतुर्वेदी के साथ बातचीत करते हुए अपनी पुस्तक गजपति कुलपति के बारे में बात की और अपनी लेखन यात्रा के बारे में भी बताया।

हेलेन ओ ग्रेडी दवारा थिएटर वर्कशॉप

आखिरी सत्र थिएटर वर्कशॉप के नाम रहा, जिसमें शिक्षा में नाटक के महत्व पर चर्चा हुई। नूतन राज ने शिक्षा में नवाचार के महत्व को समझाया इसके जरिए हम अपनी शारीरिक भाषा को भी बेहतर कर सकते हैं। यह हमें खुद पर बेहतर नियंत्रण करना सिखाता है। इसमें शरीर को पांच भागों में बांटा जाता है। सिर, गला, कंधे, छाती और पीठ। कार्यक्रम में आगे उन्होंने हर भाग के उपयोग और उसके प्रभाव को भी समझाया। यह सत्र बच्चों से ज्यादा उनके माता-पिता के लिए जरूरी था, जिसमें उन्हें कई रोचक बातें जानने को मिली। वर्कशॉप के अंत में 10 माइम कलाकारों ने बेहतरीन माइम शो की प्रस्तुति दी। माइम कलाकारों की इस शानदार प्रस्तुति के साथ ही बाल साहित्य, कला और संगीत महोत्सव समाप्त हुआ।

■

विश्वरंग 2020

'पूर्व रंग' का भव्य शुभारंभ 'कथादेश' पर केन्द्रित 'कथायात्रा'

सम्पूर्ण कहानियां : नवीन सागर का लोकार्पण

विश्व रंग के अंतर्गत पूर्व रंग 'कथादेश के अट्ठारह खंडों पर केन्द्रित कथायात्रा' का भव्य शुभारंभ विश्व रंग के स्वप्नदृष्टा- निदेशक, वरिष्ठ कवि-कथाकार एवं रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे की अध्यक्षता में वर्चुअल प्लेटफार्म पर किया गया।

इस अवसर पर लोगो एवं पोस्टर जारी किया गया। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर आईसेक्ट पब्लिकेशन भोपाल द्वारा हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कथाकार नवीन सागर की ताजा पुस्तक 'सम्पूर्ण कहानियां: नवीन सागर' आकर्षक कलेवर में प्रकाशित की गई है इसका लोकार्पण भी अतिथियों द्वारा किया गया। कथायात्रा के शुभारंभ अवसर पर वरिष्ठ कथाकार एवं वनमाली सृजन पीठ भोपाल के अध्यक्ष मुकेश वर्मा ने नवीन सागर की चर्चित कहानी 'मोर' का यादगार पाठ किया गया। सुविख्यात शिल्पकार एवं रचनाकार शम्पा शाह ने नवीन सागर के रचना संसार एवं कथा प्रवृत्तियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। संतोष चौबे ने नवीन सागर को कथागुरु मानते हए रचना प्रक्रिया के दौरान उनसे जुड़े आत्मीय पलों को साझा किया।

आयोजन 20 से 29 नवंबर तक किया गया। इसमें 72 से अधिक महत्वपूर्ण सत्रों का ऑनलाइन आयोजन हुआ। 50 से अधिक देशों से 1000 से अधिक लेखक एवं रचनाकार इसमें रचनात्मक एवं सृजनात्मक भागीदारी थी। विश्वभर से एक लाख से अधिक प्रतिभागी इसमें सम्मिलित हुए।

मुख्य आकर्षण

युवा चित्रकारों की चित्र प्रदर्शनी, पुस्तक विमोचन, संवाद और प्रदर्शनी, टैगोर और उनके साहित्य पर केंद्रित-उत्सव, साहित्य और सिनेमा, अंतर्राष्ट्रीय मुशायरा, विश्व के 50 से अधिक देशों से 1000 से अधिक लेखक एवं रचनाकार, विश्व कविता सम्मेलन, विज्ञान कथा कोश (6 खंड) एवं विज्ञान कविता कोश का विमोचन , नाट्य समारोह , भारत के शीर्ष लेखकों से मुलाकात, हिन्दी का विश्व, विश्व की हिन्दी , बाल साहित्य उत्सव, लघु फिल्म फेस्टिवल, दास्तानगोई, प्रवासी भारतीय साहित्य, संगीत के लोकप्रिय बैंड्स, विश्वभर से 1,00,000 से अधिक प्रतिभागी।

6-8 नवंबर 2020 तक विश्व के 11 देशों में विश्व रंग उत्सव का आयोजन

इस वर्ष के विश्व रंग की अनूठी विशेषता है, मुख्य उत्सव से पहले 6-8 नवंबर के बीच 11 देशों- अमेरिका, कनाडा, यू.के., नीदरलैंड्स, रशिया, उजबेकिस्तान, आरमेनिया, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, श्रीलंका, फिजी में विश्व रंग उत्सव आयोजित हुए। जिनमें न केवल उस देश में रह रहे भारतीय समुदाय को शामिल किया गया बल्कि उस देश की कला और संस्कृति को भी बढ़ावा दिया गया, एवं विश्व रंग के मुख्य कार्यक्रम में प्रत्येक देश के उत्सव के प्रमुख आकर्षण प्रदर्शित किये गये। पूर्व रंग का शुभारंभ 2 अक्टूबर 2020 विश्व अहिंसा दिवस गांधी जयंती पर कथायात्रा की शुरूआत से हुआ। इसमें कथादेश के अट्ठारह खंडों पर 2 अक्टूबर से 8 नवंबर 2020 तक प्रत्येक शुक्रवार, शनिवार, रविवार, शाम 7 बजे विमर्श एवं कहानी पाठ का आयोजन हुआ। साथ ही इन दिनों युवा कलाकारों की चित्रकला प्रतियोगिता, लघु फिल्म प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक समारोह, विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिये प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ।

■

फिर मिलेंगे के भाव के साथ विश्वरंग महोत्सव का समापन

- महोत्सव में आयोजित हुए 200 से ज्यादा ऑनलाइन सत्र
- 16 देशों से एक हजार से ज्यादा कलाकार महोत्सव शामिल हुए
- कविश सेठ की कविताओं में दिखा आज के दौर का नया भारत
- शिलॉन्ग चैम्बर चॉयर बैंड की सुरीली शाम के साथ खत्म हुआ दिन

भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में रचित साहित्य और कला को नई पहचान दिलाने के लिए आयोजित किया जाने वाले 'टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव' (विश्वरंग) के आखिरी दिन की शुरुआत कविश सेठ के गायन के साथ हुई। कविश सेठ ने अपनी प्रस्तुति शुरू की। उन्होंने दुनिया के साथ मेरा देश बड़ा हुआ है, कविता सुनाई, जिसमें भारत के मौजूदा हाल का बयान था। इसके बाद उन्होंने न जाने कब से गीत सुनाकर सबका दिल जीत लिया।

अमीश त्रिपाठी के साथ बातचीत

विश्वरंग के सहनिदेशक सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने जाने माने लेखक अमीष त्रिपाठी के साथ बातचीत की। आज के समय में अमीष त्रिपाठी भारतीय पौराणिक कथाओं के लेखन में बड़ा नाम हैं। 2019 में उन्हें भारत के सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में भी जगह मिली थी। उन्होंने अपनी पहली किताब 2010 में लिखी थी और अब तक उनकी 8 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। अपनी यात्रा के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा 'कुछ लोग लेखक के रूप में पैदा होते हैं, कुछ लोग मेहनत करके लेखक बन जाते हैं और कुछ लोगों पर लेखन थोप दिया जाता है। मैं तीसरी श्रेणी का लेखक हूं।' उन्होंने आगे बताया कि लेखन के बारे में उन्होंने कभी नहीं सोचा था, हालांकि उन्हें पढ़ना बहुत पसंद था। उन्होंने खुद के लिए लिखना शुरू किया था और उस समय उन्हें कोई उम्मीद नहीं थी कि

उनका लेखन लोगों को इतना पसंद आएगा। भगवत गीता से कृष्ण का संदेश याद करते हुए उन्होंने कहा कि वो भी उस समय सिर्फ काम करने पर ध्यान दे रहे थे, उन्हें फल की कोई चिंता नहीं थी। इसके बाद उन्होंने युवाओं को नासमझ कहने वालों को गलत ठहराया और उनकी अहमियत भी समझाने की कोशिश की। अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने बताया कि अक्सर उनसे बहुत ही बेहतरीन सवाल पूछे जाते हैं और उनमें से अधिकतर सवाल युवाओं के होते हैं।

बातचीत के दौरान उन्होंने समझाया कि हर इंसान किसी के लिए अच्छा और किसी के लिए बुरा होता है। इस बात को समझाने के लिए उन्होंने हिटलर और चर्चिल का उदाहरण दिया। हिटलर को दुनिया बुरा कहती है, पर उसने किसी भारतीय को नहीं मारा। चर्चिल कई लोगों के लिए हीरो हैं, पर उन्होंने हजारों भारतीयों की हत्या की है। उन्होंने आगे बताया की सत्य क्या है यह सिर्फ शिव को पता है। इसके बाद उन्होंने कहा कि धर्म पंथ से कहीं ऊपर है। रामायण और महाभारत की वास्तविकता के सवाल पर उन्होंने कहा कि रामायण और महाभारत वास्तविक घटनाएं हैं। उनसे जुड़ी कुछ कहानियां अतिश्योक्ति हो सकती हैं, पर ये घटनाएं इतिहास में घटित हुई हैं। सत्र के अंत में उन्होंने अनुवाद के महत्व पर बोलते हुए बताया कि आने वाले समय में अनुवाद के जरिए चीजें और आसान होने वाली हैं। उनकी सभी पुस्तकों का एक से अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। आगे इसका महत्व और भी बढ़ेगा तथा लोगों को ज्ञान प्राप्त करने में सुविधा होगी।

कविता सत्र

अमीश त्रिपाठी के साथ बातचीत के बाद विश्व कविता सत्र का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में मैसेडोनिया के निकोला माजदिरोव, यूके से हॉली, इटली से विलोरियो मागरेलि, श्रीलंका से शिरानी राजपकसे और भारत के रॉकी गर्ग शामिल हुए। इन कवियों ने अंग्रेजी और मैसोडेनिया की भाषा की कविताएं पढ़ी। ये कविताएं हमें उन गलियों में ले जाती हैं, जहां हमें गालिब अनायास ही याद आ जाते हैं। इस दौरान अंग्रेजी और मैसोडेनिया की कविताओं का अनुवाद भी सुनाया गया।

समापन समारोह की झलक

आखिरी दिन समापन सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें विश्वरंग के दूसरे संस्करण के सुखद अनुभव एक बार फिर से हमारे दिमाग में तरोताजा हो गए। विश्वरंग अब सिर्फ भोपाल या भारत का सपना नहीं है, बल्कि अब यह पूरे विश्व का सपना बन चुका है। कथादेश के संपादक मुकेश वर्मा, सहनिदेशक सिद्धार्थ चतुर्वेदी, लीलाधर मंडलोई और विश्वरंग के निदेशक संतोष चौबे इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

फिर मिलेंगे के भाव के साथ विश्वरंग 2020 महोत्सव का समापन हुआ। इस दौरान महोत्सव के निदेशक संतोष चौबे ने कहा कि विश्वरंग का यह समापन कोई समापन नहीं है, बल्कि यह एक अल्पविराम है। उन्होंने भरे दिल के साथ स्वीकार किया कि हम विश्वरंग के समापन सत्र में हैं। इसके साथ ही उन्होंने उम्मीद जताई कि अगले साल यह महोत्सव और भी हर्षोउल्लास के साथ मनाया जाएगा और पहले से ज्यादा सफल होगा। उन्होंने पूरे आईसेक्ट नेटवर्क की और से सभी का आभार प्रकट किया।

इस पूरे महोत्सव में 200 से ज्यादा सत्र आयोजित हुए। जिनका आयोजन दुनिया के 16 देशों में हुआ। इसमें एक हजार से ज्यादा कलाकारों ने भाग लिया। इस दौरान 70 किताबों का विमोचन हुआ। कोरोना ने जो अवसाद पूरे विश्व में फैलाया था उससे उबारने में इस महोत्सव का बड़ा योगदान है। इसके बाद संतोष चौबे ने उन सभी कलाकारों का शुक्रिया अदा किया, जिन्होंने ऐसे मुश्किल समय में सकारात्मक्ता फैलाई और उदासीनता भारे जीवन में रंगों का संचार किया। ऐसे लोगों की बदौलत ही यह महोत्सव सफल हुआ। विदेशों में हिंदी कार्यक्रम में शिक्षण पर चर्चा हुई, जिसमें यूरी बोत्विकिन, डॉ. इंद्रा गजियोवा, सिरजुद्दीन नर्मातोव, प्रो. सुब्रमणी और निदेशक संतोष चौबे शामिल हुए।

विज्ञान कथा कोश का विमोचन और कबीर कैफे की प्रस्तुति

कार्यक्रम में आगे विज्ञान कथा कोश का विमोचन हुआ। इस सत्र में संतोष चौबे और देवेन्द्र मेवाड़ी शामिल हुए। दोनों महानुभावों ने शुकदेव प्रसाद के विज्ञान नाटक गैलालियो का प्रदर्शन किया। इसके बाद दास्तान गोई नाटक का मंचन हुआ। दास्तान गोई के बाद विज्ञान कविता कोश के विमोचन में

विश्वरंग के निदेशक संतोष चौबे, लीलाधर मंडलोई, अनामिका, नरेश चंद्रकर, शार्दुला नोगजा शामिल हुए। इसके बाद अनूप भार्गव, सुचि मिश्रा, मोहन सगोरिया और बलराम गुमास्ता ने इन्हीं कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में अमीर खुसरो और अरुण कमल की कविताओं का पाठ भी हुआ। कबीर कैफे बैंड की शानदार प्रस्तुति के साथ 'टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव' का समापन हुआ।

बाल साहित्य, कला और संगीत महोत्सव की झलकियां

रोहिनी नीलकनी की स्टोरीटेलिंग

पहले बाल साहित्य, कला और संगीत महोत्सव का आखिरी दिन रोहिनी नीलकनी की स्टोरीटेलिंग के साथ शुरू हुआ। सत्र में उन्होंने आसमान में रहने वाले छोटे राक्षस की भूख की कहानी सुनाकर बच्चों का मनोरंजन किया। इसके बाद उन्होंने पल्लवीराव चतुर्वेदी के साथ अपनी यात्रा पर बातचीत की। पल्लवीराव चतुर्वेदी के साथ बात करते हुए उन्होंने बताया कि आपका जन्म जिस घर में होता है, वह आपके करियर पर बड़ा प्रभाव डालता है।

आनंद नीलकांतन के साथ बातचीत

दिन के दूसरे सत्र में बाहूबली सीरीज और असुर कहानियों के लेखक आनंद नीलकांतन के साथ पल्लवीराव चतुर्वेदी ने बातचीत की। इस सत्र में अलग-अलग जगहों से कई बच्चे भी शामिल हुए। उन्होंने बहुत ही मजेदार अंदाज में खुद को असुर कहते हुए वार्तालाप की शुरुआत की। कार्यक्रम में उन्होंने सबसे पहले अपनी असुर कहानी सुनाकर सभी का मनोरंजन किया। इसके बाद बाहूबली के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि बाहूबली फिल्म का पहला विचार विजेन्द्र प्रसाद के अंदर आया था। एस.एस. राजमौली ने फिल्म का स्क्रीनप्ले लिखा और उन्हें बाहूबली की बैक स्टोरी लिखने का काम दिया गया था, जिसे उन्होंने कई भारतीय पौराणिक कहानियों के किरदारों से प्रेरित होकर लिखा था।

शिलॉन्ग चैम्बर कॉयर की प्रस्तुति

बाल साहित्य, कला और संगीत महोत्सव के आखिरी सत्र में शिलॉन्ग चैम्बर चॉयर ने शानदार संगीत की प्रस्तुति दी। इस सत्र की शुरुआत में पल्लवीराव चतुर्वेदी ने सभी सहयोगी संस्थाओं और लोगों का आभार जताया। शिलॉन्ग चैम्बर चॉयर बैंड ने बॉलीवुड और क्षेत्रीय गानों का अनोखा मेल प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में भारतीय फिल्मों के गाने भी गाए और कई क्षेत्रीय गानों की प्रस्तुति भी दी। इसके साथ ही उन्होंने कई तरह के गानों के मेल से नए गाने भी बनाए।

श्रद्धांजलि

ललित सुरजन

साहित्यकार कवि, वरिष्ठ पत्रकार तथा देशबंधु के प्रधान सम्पादक

जन्म : 22 जुलाई 1946 निधन : 02 दिसम्बर 2020

मंगलेश डबराल

सुविख्यात साहित्यकार, कवि

जन्म : 16 मई 1948 निधन : 09 दिसम्बर 2020

अस्ताद देबू

मशहूर नर्तक (पद्मश्री सम्मान से सम्मानित)

जन्म : 13 जुलाई 1947 निधन : 10 दिसम्बर 2020

अहद प्रकाश

बाल साहित्यकार

जन्म : 17 जून 1951 निधन : 08 दिसम्बर 2020

'कला समय' परिवार की ओर से

विनम्र श्रद्धांजलि...

कच्छ, गुजरात के कुम्हारों के मिथक -ऑनलाइन प्रदर्शनी -29

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय द्वारा अपनी ऑनलाइन प्रदर्शनी श्रृंखला के उन्तीसवीं सोपान के तहत आज मिथक वीथी मुक्ताकाश प्रदर्शनी के कच्छ, गुजरात के कुम्हारों के मिथक से सम्बंधित विस्तृत जानकारी तथा छायाचित्रों एवं वीडियों को ऑनलाईन प्रस्तुत किया गया है।

इस संदर्भ में संग्रहालय के निदेशक डॉ. प्रवीण कुमार मिश्र ने बताया कि मिथक वीथी मानव संग्रहालय की एक रोचक एवं अनूठी प्रदर्शनी है जहां मिथकों और किंवदंतियों को विभिन्न माध्यमों जैसे टेराकोटा, पत्थर, धातु, लकड़ी आदि में दर्शाया गया है। मिथक का कोई मूर्त रूप नहीं होता है। इसलिए उसे हमेशा व्यक्त नहीं किया जा सकता है। इस प्रदर्शनी के मुख्य उदेश्यों में से एक उद्देश्य मिथक के अमूर्त पहलुओं को मूर्त रूपों में बदलना है ताकि जनमानस उसमें छिपे भाव को अच्छी तरह से समझ सकें। इस प्रदर्शनी में कई जनजातीय तथा लोक कलाकारों ने अपने मिथकों, मान्यताओं, अनुष्ठानों को अपने-अपने माध्यम व विशिष्ट पारम्परिक शैली में मूर्त रूप दिया है। इनमें से कुछ तो मिथकों का निरूपण करते आये है, किन्तु कई ऐसे भी है जिन्होंने पहली बार ऐसा किया है। इस संदर्भ में की गई पहल पर आधारित कहानी मानव संग्रहालय के मिथक वीथी प्रदर्शनी में देखने को मिलती है जो कि कुम्हारों के मिथक से जुडी हुई है । यहां प्रदर्शित मिट्टी के बर्तन गुजरात के कच्छ जिले के भुज तालुक के एक छोटे से गाँव खवड़ा के हैं। जोकि रण के निकट स्थित है। यहाँ पर पानी और अनाज के भंडारण के लिए विभिन्न प्रकार के मटके, तश्तरियां, बड़े थाल, कटोरे, दीयें आदि बनाए जाते हैं।

खावड़ा गांव की महिला सारा इब्राहिम विगत 40 वर्षों से मृद्भाण्ड शिल्प को जीवंत रखे हुए है। मध्यप्रदेश सरकार ने उनके मिट्टी शिल्प और बर्तनों पर चित्रकला में निरंतर रचनात्मकता कार्यों के प्रति समर्पण भाव के लिए उन्हें वर्ष 2001- 02 में देवी अहिल्या राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया। वह पिछले तीस सालों से इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के साथ जुड़ी हुई हैं। उन्होंने समय-समय पर मानव संग्रहालय द्वारा भारत के विभिन्न हिस्सों में आयोजित कार्यशालाओं और कलाकार शिविरों में भाग लिया। वह कई बार संग्रहालय के शैक्षणिक कार्यक्रमों का हिस्सा बनीं और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया। सारा इब्राहिम के पति इब्राहिम कासम भी मिट्टी के बर्तन बनाने में कुशल हैं। ये दोनों ही यों से चली आ रही धरोहर को आगे बढ़ा रहे हैं । पुरुष मिट्टी को गढ़ने का काम करते हैं तथा महिलाएं बिना पहिये के प्लेट, कटोरे आदि बर्तन बनाती हैं और सजावट करती हैं।

इस सम्बन्ध में संग्रहालय एसोसिएट सुश्री पी अनुराधा ने बताया कि बर्तनों को आम तौर पर एक मोटी दीवार और तले के साथ बनाया जाता है, जबकि गर्दन और मुंह को अंत में आकार दिया जाता हैं। आधे सूखे बर्तन को अंदरूनी भाग में पत्थर की एक गोल थापी से सहारा देकर बाहरी सतह पर लकड़ी के पटटे से पीटा जाता है। जिसके पीटने से यह मिट्टी फैलती है और बर्तन को एक आकार देती है। इस प्रक्रिया से बर्तनों की दीवार भी पतली की जाती है। महिलायें सफेद बाहरी सतह वाले बर्तनों पर लाल एवं काले रंग से जबकि लाल बाहरी सतह वाले बर्तनों पर काले एवं सफेद रंग से चित्र बनाती है। चित्र बनाने के लिए ब्रश के रूप में बांस की टहनियों का उपयोग किया जाता है। सभी डिज़ाइनों को संकेंद्रित वृत्तों के अंदर बनाया जाता है जिसे स्थानीय रूप से 'लिख' कहा जाता है। इनके अधिकांश डिज़ाइन प्रकृति से प्रेरित होते हैं जो इनकी बुनाई में भी दिखाई देते हैं।

एक दिलचस्प कहानी को कलाकार सारा इब्राहिम ने दीवार पर मिट्टी में दर्पणों के साथ कम उभरे नक्काशी कार्य के रूप में दर्शाया है, जो आम तौर पर कच्छ और काठियावाड़ के क्षेत्र में दीवारों, दरवाजों, आलों और भंडारण पात्रों में पाया जाता है। कहानी कुछ इस प्रकार से है पुराने समय में कुम्हार के बर्तन पकने में छः महीने लगा करते थे। एक दिन कुम्हार ने अपनी भट्टी सुलगाई ही थी कि भागते हुए कुछ किन्नर आये जिनका पीछा राजा के सैनिक कर रहे थे। जान बचाने के लिये वे कुम्हार के लाख मना करने पर भी आवे में रखे बड़े मर्तबानों में जा छिपे।

राजा के लोग कुम्हार के घर की छान-बीन कर चले गये। जलते हुए आवे में किसी के छिपे होने की बात तो कोई सोच भी नहीं सकता था। आवा सुलगने के बाद थके-हारे कुम्हार की आंख लग गई। कुछ समय बाद स्वप्न में कुम्हार के कानो में आवाज पड़ी 'आवे में रखे तुम्हारे बर्तन सुनहरे हो गए है' लेकिन उसने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई। फिर आवाज आयी 'तुम्हारे बर्तन रुपहले हो गये' लेकिन कुम्हार ने इसे भी सुना-अनसुना कर दिया। थोड़ी देर बाद वही आवाज फिर बोली 'तुम्हारे बर्तन आधे कच्चे, आधे पक्के निकले' यह सुन कुम्हार आवे की तरफ भागा और उसने पाया कि जिन बर्तनो में किन्नर छिपे हुए थे, वे कच्चे रह गए और इस तरह उनकी जान बच गयी। तब से कुम्हार का आवा एक दिन में ही पक जाता है पर कुछ बर्तन सदा कच्चे रह जाते है। कुम्हार चाहता तो अपने लिए सुनहरे या रुपहले बर्तन चुन सकता था, लेकिन उसने नुकसान झेलते हुए भी किन्नरों का जीवन बचाने को चुना। कच्छ में आज भी किन्नर,कुम्हार और उसकी पत्नी को अपने माता-पिता के रूप में मानते हैं, महत्वपूर्ण अवसरों पर उनका आशीर्वाद लेते हैं और उन्हें पैसे और कपड़े भेंट करते हैं।

दर्शक इसका अवलोकन मानव संग्रहालय की अधिकृत साईट (https://igrms.com/wordpress/?page id=1928) एवं फेसबुक (https://www.facebook.com/NationalMuseumMankind) के अतिरिक्त यूट्यूब लिंक (https://youtu.be/x098FYVOuNA)पर ऑनलाइन के माध्यम से घर बैठे कर सकते हैं।

■

मानव संग्रहालय

परा - समृद्धि का प्रतीक-जनवरी माह का प्रादर्श

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के अंतरंग भवन वीथि संकुल में 'माह के प्रादर्श' श्रृंखला के अंतर्गत माह जनवरी, 2021 के प्रादर्श के रूप में केरल के मन्नारडी जिले के ''परा'' समृद्धि का प्रतीक का उदघाटन डॉ. पी. के. मिश्र, निदेशक, मानव संग्रहालय द्वारा किया गया। इस अवसर पर अनेक गणमान नागरिक उपस्थित थे। इस प्रादर्श का संकलन एवं संयोजन डॉ. सूर्य कुमार पाण्डे (सहायक कीपर) द्वारा किया गया है।

प्रदर्शनी में प्रदर्शित प्रादर्श के बारे मे डॉ. सूर्य कुमार पाण्डे। सहायक कीपर ने बताया कि पर्रा या परा एक मापक पात्र है जो फसल कटाई के पश्चात धान मापने के लिए परंपरागत रूप से उपयोग किया जाता रहा है। केरल के कृषि जीवन से जुड़ा हुआ परा मापन की आधुनिक प्रणालियों के आगमन तक कई घरों में उपयोग किया जाता था। पुराने समय में अच्छी फसल आने के बाद गांव वासी स्थानीय मंदिर में उत्सव के आयोजन के लिए देवी- देवताओं को एक या अधिक परा धान/ चावल अर्पित करते थे। त्योहारों के दौरान निकलने वाली शोभायात्रा के अवसर पर पारंपरिक हिंदू घरों के सामने धान एवं अन्य सामग्रियों से भरे परा देखे जा सकते हैं।

एक परा में 8 या 10 इदांगाझी (एक छोटा मापक पात्र) के बराबर धान/चावल आता है। इसे समृद्धि का प्रतीक भी माना जाता है। बड़े धान के खेतों को उनमें बोये जाने वाले बीज की मात्रा अनुसार 100/200/300/500/1000 परा भूमि के रूप में जाना जाता है।

वर्तमान में परा का उपयोग अनाज को मापने के लिए सामान्यत: नहीं किया जाता परंतु अनुष्ठान और अन्य पारंपरिक उद्देश्यों के लिए यह अब भी प्रचलन में है। केरल के लोग इस मापक पात्र को शुभ का द्योतक मानकर घरों में रखते हैं क्योंकि यह उनकी कृषक संस्कृति का स्मरण कराता है। केरल में मुख्यत: दो प्रकार के परा उपलब्ध हैं। उनमें से एक बेलनाकार होता है जो लकड़ी के एक कुंदे से बना होता है, जिसके चारों ओर धातु का छल्ला होता है तथा दूसरा चौकोर आकार का होता है। लकड़ी या पीतल का बना परा विभिन्न शुभ अवसरों जैसे विवाह, पूजा, गृह प्रवेश, राजतिलक आदि के लिए एक महत्वपूर्ण वस्तु माना जाता है। चावल से ऊपर तक भरा हुआ और नारियल के फूलों से सुसज्जित परा विपुलता को दर्शाता है।

परा सामान्यत: कटहल की लकड़ी से बनाया जाता है जिस की बाहरी सतह पर सजावटी बीडिंग लगाई जाती है जो मौसम संबंधी परिवर्तनों के कारण परा में होने वाले फैलाव या संकुचन को रोकती है। जब यह शुभ मापन यंत्र पुन: लोकप्रिय हुआ तो इसे एक नया रूप मिला और यह पूर्ण रूप से पीतल से निर्मित होकर एक सजावटी वस्तु के रूप में स्थापित हो गया।

■

इस सप्ताह का प्रादर्श है : 'गरुड़'- ओडिशा में प्रचलित काष्ठ शिल्प

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के नवीन श्रृंखला 'सप्ताह का प्रादर्श' के अंतर्गत जनवरी माह के पहले सप्ताह के प्रादर्श के रूप में 'गरुड़' ओडिशा में प्रचलित काष्ठ शिल्प, जिसका माप-ऊँचाई-28 सेमी, चौड़ाई-27 सेमी। इसे संग्रहालय द्वारा सन,1998 में ओडिशा के पुरी जिले में निवासरत लोक जनजाति समुदाय से संकलित किया गया है। इस प्रादर्श को इस सप्ताह दर्शकों के मध्य प्रदर्शित किया गया।

इस सम्बन्ध में संग्रहालय के निदेशक डॉ. प्रवीण कुमार मिश्र ने बताया कि 'सप्ताह के प्रादर्श' के अंतर्गत संग्रहालय द्वारा पूरे भारत भर से किए गए अपने संकलन को दर्शाने के लिए अपने संकलन की अति उत्कृष्ट कृतियां प्रस्तुत कर रहा है जिन्हें एक विशिष्ट समुदाय या क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास में योगदान के संदर्भ में अद्वितीय माना जाता है। अनादिकाल से ही

मानव प्रकृति में उपलब्ध विभिन्न माध्यमों में अपनी कलात्मकता को अभिव्यक्त करता रहा है। लकड़ी वन्य क्षेत्रों में बहुतायत से उपलब्ध एक ऐसा ही लोकप्रिय माध्यम है। गरुड़ (भगवान विष्णु का वाहन) की नक्काशीदार प्रतिमा ओडिशा में प्रचलित काष्ठ शिल्प परंपरा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है । इसे लकड़ी के एकल टुकड़े पर उकेरा गया है। गरुड़ की आकृति को एक गोलाकार आसन पर बैठे हुए नमस्कार की मुद्रा में दर्शाया गया है। गरुड़ की यह प्रतिमा अत्यंत जटिल और सूक्ष्म नक्काशी कर तैयार की गई है। भगवान जगन्नाथ के विशेष संदर्भ सहित विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियां साथ ही पशु-पक्षी, खिलौने, पालकी, मंडप, लकड़ी की पेटी, दरवाजे आदि कुछ लोकप्रिय कृतियां हैं जो ओडिशा के विभिन्न हिस्सों में उत्कीर्ण की जाती हैं। खंडपड़ा, पुरी, दस्पल्ला और केंद्रापाड़ा के काष्ठ शिल्पकार इस शिल्प में प्राचीन काल से ही अत्यंत कुशल हैं।

■

मानव संग्रहालय

मां नंदा देवी के जात्रा पर केन्द्रित एक प्रदर्शनी

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल द्वारा 14 जनवरी 2021 को मां नंदा देवी के जात्रा पर केन्द्रित एक प्रदर्शनी लगाई जा रही है। प्रदर्शनी के संयोजक डॉ आर एम् नयाल ने बताया की उत्तराखंड में नंदा देवी पर्वत शिखर, रूपकुंड व हेमकुंड नंदा देवी के प्रमुख पवित्र स्थलों में एक हैं। कैनोपनिषद में हिमालय पुत्री के रूप में हेमवती का उल्लेख मिलता है। जिनमें शैलपुत्री नंदा को योग माया व शक्ति स्वरूपा का नाम दिया गया है। मां नंदा को सुख समृद्धि देने वाली हरित देवी भी माना गया है।

मां नंदा देवभूमि उत्तराखंड की अगाध आस्था का पर्याय है। यही कारण है कि यहां कई नदियों, पर्वत श्रृंखलाओं व नगरों के नाम भी मां नंदा के नाम पर रखे गए हैं। मां नंदा की पूजा शक्ति स्वरूपा माँ पार्वती के रूप में की जाती है। नंदा देवी मेला भाद्र माह की शुक्ल षष्ठी से प्रारंभ होता है। इसी दिन मा नंदा की पूजा की जाती है। देवी का अवतार जिस पर होता है उसे देवी का डंगरिया कहा जाता है। मां नंदा की पूजा के लिए केले के वृक्षों से मूर्तियों का निर्माण किया जाता है। केले के वृक्षों के चयन के लिए डंगरिया हाथ में चावल और पुष्प लेकर उसे केले के वृक्षों की ओर फेंकते हैं। जो वृक्ष हिलता है उसकी पूजा कर उसे मां के मंदिर में लाया जाता है। देवी की मूर्तियों के निर्माण का कार्य सप्तमी के दिन से शुरू होता है। जबकि अष्टमी को मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की जाती है। इस दौरान नंदा देवी परिसर में भव्य मेले का आयोजन भी किया जाता है। इस जात्रा में हजारों लोग शामिल होते है। इस प्रदर्शनी में जात्रा से संबंधित अनेक प्रादर्श, छायाचित्र वेशभूषा वाद्ययंत्र आदि देखने को मिलेंगें। ■

'अतुल्य भारत मध्य प्रदेश' की पारम्परिक लोक गीतों की प्रस्तुति

देश की संस्कृति को जनजन तक पहुंचाने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र प्रयागराज के सहयोग से संग्रहालय में आठ से दस जनवरी 2021 तक 'अतुल्य भारत कार्यक्रम' का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय सांस्कृतिक विशिष्टता को वैश्विक मंच पर उभारना है।

उल्लेखनीय है कि भारत विश्व के पाँच शीर्ष सास्कृतिक पर्यटक स्थलों मे से एक है भारत अपने भौगोलिक क्षेत्र द्वारा सातंवा सबसे बड़ा देश है जो दक्षिण एशिया में स्थित है। सुदंरता हमारे देश को हर पहलू से घेरती है अपने खुब सूरत पहाडों, झीलों, जंगलों, समुद्रों, महासागरों तथा समृद्ध ऐतिहासिक मंदिरों सांस्कृतिक क्षेत्र परम्पराओं एवं विविध भाषाओं के कारण भारत

विविधता में एकता का प्रतिनिधत्व करता है। अतुल्य भारत कार्यक्रम के तहत आज वीथि संकुल भवन के मुक्ताकाश मंच पर श्री अमन चौरसिया के दल द्वारा बरेदी नृत्य से प्रारंभ हुआ, और बधाई नोरता ढिमराई नृत्य की प्रस्तुति सुश्री पायल सेन के नेतृत्व में की गई, तत्पश्चात श्री संजय पांडेय के दल ने बधाई नृत्य प्रस्तुत किया, जबलपुर की जानकी महिला मंडली के सदस्यों ने पारम्परिक लोक गीत प्रस्तुति दी। फिर सुश्री लता मुंशी भोपाल के सदस्यों द्वारा भारत नाट्यम और सुश्री बिंदु जुनेजा के शिष्यों द्वारा ओडीसी नृत्य की प्रस्तुति दी गई। ■

चौकट : पर्वतीय जीवन और संस्कृति में सौहार्द का प्रतीक एक पारम्परिक आवास –ऑनलाइन प्रदर्शनी – 30

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय द्वारा अपनी ऑनलाइन प्रदर्शनी श्रृंखला के तीसवां सोपान के तहत आज हिमालय ग्राम मुक्ताकाश प्रदर्शनी में सुदूर हिमालयी राज्यों से संकलित कर पुर्नस्थापित किये गये आवास प्रकारों के बेजोड़ नमूने एक चौकट के अवलोकन को समर्पित है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में आकारीय भिन्नता के अनुसार आवास प्रकारों की एक परम्परा रही है, इससे सम्बंधित विस्तृत जानकारी तथा छायाचित्रों एवं वीडियों को ऑनलाईन प्रस्तुत किया गया है।

इस संदर्भ में संग्रहालय के निदेशक डॉ. प्रवीण कुमार मिश्र ने बताया कि पहले–पहल मकान यानि शुरुआत में एक मंजिला मकान होते थे जिन्हें 'पण्डलू' कहा जाता था। कालान्तर में संभवत: परिवार के विस्तार के साथ दो या तीन मंजिला मकान बनने लगे जिन्हें 'हवेली' कहा जाता है, फिर 'चौकट' और 'पचपूरा' कहलाने वाले क्रमश: चार और पांच मंजिले मकान भी बनने लगे। अब तो आठ मंजिले मकान भी देखे जा सकते हैं। 'चौकट' का प्रचलन उत्तराखण्ड में यमुना घाटी और उसकी सहायक नदी टौंस के सीमान्त क्षेत्र में प्राचीन काल से ही रहा है। चौकट की सामान्य लम्बाई तेरह हाथ (यह एक प्रचीन भारतीय माप पद्धति है जिसमें 1 हाथ बराबर 1.5 फीट होता है) और

चौड़ाई नौ हाथ होती थी एवं ऊँचाई, मंजिलें जिसे स्थानीय भाषा में पुर कहते थे, के अनुसार होती थी। आवासीय संरचनाओं की नामावली में विविधता भी इस क्षेत्र के वास्तु वैभव की विशेषता है। जैसे चौकट के अतिरिक्त अन्य मकान 'कुडु' कहलाते है, जिन मकानों में कोई ऊपरी मंजिल नहीं होती उनका उपयोग पशुओं को बांधने के लिये तो होता ही है साथ ही उन्हें गांव के बाहर बनाते हैं और 'छान' या 'दोबरी' कहते है।

इस सम्बन्ध में सहायक क्यूरेटर डॉ. राकेश मोहन नयाल ने बताया सामुदायिक सहभागिता है। देवी-देवताओं के चौकट तथा क्षेत्रवासियों की सामूहिक चौकट कभी भी एकाकी रूप से निर्मित नहीं होते बल्कि उसके लिये जंगल से लकड़ी लाने और निर्माण की विभिन्न प्रक्रियाओं को आपसी सहयोग से पूर्ण किया जाता है। चौकट की भव्यता और सुंदरता ही आपसी सौहार्द और भाई चारे का प्रतीक है। सामान्यत: चौकट में देवदार वृक्ष की लकड़ी और हरी झाई युक्त पत्थर प्रयुक्त होता है जिसकी चुनाई मिट्टी से की जाती है। किन्तु देवताओं की चौकट की चुनाई उड़द दाल को पीसकर बनाई गई लेई से की जाती है और इसमें रिश्तेदार और ग्राम विशेष जहां चौकट बननी है, के लोग ही सहभागी होते हैं। प्रत्येक घर से निश्चित मात्रा में प्रतिदिन पिसी हुई उड़द एकत्रित की जाती है। वृक्षों की कटाई से हो रहे पर्यावरण क्षरण को देखते हुऐ चौकट का निर्माण अब असंभव हो गया है। इस अर्थ में अब यह एक अमूल्य धरोहर बन गयी है। कोल-किरात जाति से प्रारम्भ हुई चौकट निर्माण की कला आज विलुप्ति की कगार पर है। संग्रहालय द्वारा वर्ष 2006 में ग्राम फर्री, तहसील बड़कोट जिला उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड से संकलित यह आवास प्रादर्श पर्वतीय वास्तुकौशल की कहानी कहता है। दर्शक इसका अवलोकन मानव संग्रहालय की अधिकृत साईट (https:igrms.com/wordpress/?page id = 2004)) एवं फेसबुक (https://www.facebook.com/National MuseumMankind) के अतिरिक्त यूट्यूब लिंक (https://youtu.be/zBoqy&CZzjE) पर ऑनलाइन के माध्यम से घर बैठे कर सकते हैं।

■

अतुल्य भारत मध्य प्रदेश में मोहिनी अट्टम, निमाड़ी,मालवी, गणगौर, भगोरिया, नृत्य के साथ ध्रुवा बैंड की प्रस्तुति

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल निरंतर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन कर देश की संस्कृति को जन-जन तक पहुंचाने में अपनी महति भूमिका निभाता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र प्रयागराज के सहयोग से संग्रहालय में अतुल्य भारत का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय सांस्कृतिक विशिष्टता को वैश्विक मंच पर उभारना है। अतुल्य भारत कार्यक्रम के तहत वीथि संकुल भवन के मुक्ताकाश मंच पर एवं संग्रहालय विभिन्न स्थानों पर सुश्री पूर्णिमा चतुर्वेदी का निमाड़ी गायन एवं सुश्री कविता शाजी के द्वारा मोहिनीअट्टम नृत्य की प्रस्तुति दी गयी तत्पश्चात ध्रुवा बैंड संस्कृतिक गायन का आयोजन हुआ इसके बाद उज्जैन के स्वाती उखले द्वारा मालवी गायन और मटकी नृत्य की प्रस्तुति दी गई इसके बारे में स्वाति जी ने बताया कि मटकी मालवा का एक

समुदाय नृत्य है, जिसे महिलाएं विभिन्न अवसरों पर पेश करती है।

इस नृत्य में नर्तकियां ढोल की ताल पर नृत्य करती है, इस ढोल को स्थानीय स्तर पर मटकी कहा जाता है। स्थानीय स्तर पर झेला कहलाने वाली अकेली महिला, इसे शुरू करती है, जिसमे अन्य नर्तकियां अपने पारंपरिक मालवी कपड़े पहने और चेहरे पर घूंघट ओढे शामिल हो जाती है। उनके हाथों के सुंदर आंदोलन और झुमते कदम, एक आश्चर्यजनक प्रभाव पैदा कर देते है। इसके बाद बड़वाह से आये श्री संजय महाजन के समूह द्वारा गणगौर नृत्य की प्रस्तुति दी गई उन्होंने बताया कि यह नृत्य मुख्य रूप से गणगौर त्योहार के नौ दिनों के दौरान किया जाता है। इस त्योहार के अनुष्ठानों के साथ कई नृत्य और गीत जुड़े हुए है। यह नृत्य, निमाड़ क्षेत्र में गणगौर के अवसर पर उनके देवता राणुबाई और धनियार सूर्यदेव के सम्मान में की जाने वाली भक्ति का एक रूप है। फिर भगोरिया नृत्य

की प्रस्तुति श्री कैलाश सिसोदिया के समूह द्वारा दी गई उन्होंने बताया कि भील जनजाति का 'भगोरिया नृत्य प्रस्तुत कर किया। भील जनजाति का भगोरिया नृत्य, भगोरिया हाट में होली तथा अन्य अवसरों पर भील युवक-युवतियों द्वारा किया जाता है।

फागुन के मौसम में होली से पूर्व भगोरिया हाटों का आयोजन होता है। भगोरिया हाट केवल हाट न होकर युवक-युवतियों के मिलन मेले हैं। यहीं से वे एक-दूसरे के सम्पर्क में आते हैं, आकर्षित होते हैं और जीवन सूत्र में बंधने के लिये भाग जाते हैं। इसलिये इन हाटों का नाम भगोरिया पड़ा। भगोरिया नृत्य में विविध पदचाप समूहन पाली, चक्रीपाली तथा पिरामिड नृत्य मुद्राएं आकर्षण का केन्द्र होती हैं। रंग-बिरंगी वेशभूषा में सजी-धजी युवतियों का श्रृंगार और हाथ में तीरकमान लिये नाचना ठेठ पारम्परिक व अलौकिक सरंचना है। पूर्णिमा चतुर्वेदी के समूह द्वारा निमाड़ी गायन में जिसमें गणेश वंदना आज म्हारा अंगणा देव गणेशा आया जी..., नर्मदा भजन माय वो नर्बदा थारी सेवा करूंगा..., संस्कार गीत तुम तो आवजो न रे अंबा वन की प्रस्तुति दी गई।

■

'झारी' मिश्र धातु से बना मदिरा पात्र

नवीन श्रृंखला 'सप्ताह का प्रादर्श' के अंतर्गत जनवरी माह के दूसरे सप्ताह के प्रादर्श के रूप में बस्तर, छत्तीसगढ़ राज्य के बाइसन-हॉर्न मारिया समुदाय से संकलित जिसका माप- ऊँचाई-27 सेमी, चौड़ाई-26.6 सेमी है। इसे संग्रहालय द्वारा सन, 1996 में बस्तर, छत्तीसगढ़ के बाइसन-हॉर्न मारिया समुदाय से संकलित किया गया है। इस प्रादर्श को इस सप्ताह दर्शकों के मध्य प्रदर्शित किया गया।

इस सम्बन्ध में संग्रहालय के निदेशक डॉ. प्रवीण कुमार मिश्र ने बताया कि 'सप्ताह के प्रादर्श' के अंतर्गत संग्रहालय द्वारा पूरे भारत भर से किए गए अपने संकलन को दर्शाने के लिए अपने संकलन की अति उत्कृष्ट कृतियां प्रस्तुत कर रहा है जिन्हें एक विशिष्ट समुदाय या क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास में योगदान के संदर्भ में अद्वितीय माना जाता है। झारी मिश्र धातु से बना एक मदिरा पात्र है। इसका उपयोग बस्तर, छत्तीसगढ़ के बाइसन हॉर्न समुदाय के लोगों द्वारा स्थानीय शराब (महुआ दारू या सल्फी) के भंडारण के लिए किया जाता है। पात्र का आधार गोलाकार है, मध्य भाग बाहर की ओर उभरा हुआ है और इसकी वृत्ताकार परिधि को चारों ओर धुंघरुओं से सजाया गया है। ये गोल लटकनें हिलने पर ध्वनि उत्पन्न करती हैं। ऊपरी हिस्से में ज्यामितीय प्रतिमानों में विस्तृत रूपांकन हैं। पात्र में शराब डालने के लिए इसमें एक ढक्कन भी है। शराब परोसने और पीने के लिए घुंघरुओं से सुसज्जित घुमावदार टोंटी लगाई गई है।

इस प्रादर्श के बारे में डॉ सुदीपा रॉय ने बताया कि, महुआ शराब, एक स्थानीय मादक पेय के रूप में, पारंपरिक मारिया जीवन के सामाजिक-धार्मिक और आर्थिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसे ये स्वयं तैयार करते हैं और अपनी आवश्यकता के अनुसार उपभोग के लिए संग्रहीत करते हैं।

उत्सवों या सामाजिक समारोहों के दौरान पत्तियों से बने दोनों में झारी से शराब परोसी जाती है। बाइसन-हॉर्न मारिया जनजाति आमतौर पर घढ़वा कारीगरों से झारी लेते हैं जो लॉस्ट वैक्स तकनीक से बनाए जाने वाले पारंपरिक धातु शिल्प में विशेषज्ञता रखते हैं। समय के साथ, इस तरह के स्थानीय बाजारों में सुलभ और सस्ते में उपलब्ध हैं।

■

युग पुरुष स्वामी विवेकानंद की जयंती के अवसर पर मानव संग्रहालय में मनाया गया युवा दिवस

युवाओं के प्रेरणास्त्रोत, समाज सुधारक युग पुरुष 'स्वामी विवेकानंद' की जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर मानव संग्रहालय की मुक्ताकाश प्रदर्शनी 'जनजातीय आवास' में युवक-युवतियों का भ्रमण कराया गया एवं वास्तु संरचना से परिचित कराया गया। राष्ट्रीय युवा दिवस पर कार्यक्रम की परिकल्पना डॉ. प्रवीण कुमार मिश्र ने तैयार की तथा उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि भारत की कतिपय जनजातियों में प्रचलित युवा गृह महत्वपूर्ण आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक प्रयोजन का वहन करने वाली एक सामाजिक संस्था है। ऐसा माना जाता है कि यह जनजातीय युवक-युवतियों को सामाजिक

जीवन में प्रवेश एवं अपनी भूमिका का उपयुक्त तरीके से निर्वहन हेतु प्रेरित करने वाली अनौपचारिक शैक्षणिक संस्था है। संग्रहालय की मुक्ताकाश प्रदर्शनी 'जनजातीय आवास' में प्रदर्शित विभिन्न युवागृहों में मणिपुर की मराम जनजाति का रेहांग, नागालैंड की कोन्यक नागा का मोरुंग, मिजो का जालबुक, असम की जेमी नागा का मोरंग एवं तिवा जनजाति का समादि, छत्तीसगढ़ की मरिया का घोटल और ओडिशा की जआंग का मजांग दर्शकों के आकर्षण का केंद्र हैं। जनजातीय युवाओं और उनकी संस्कृति के युवागृह से अंतर्संबंध को इन युवागृहों की वास्तु संरचना में भली भांति समझा जा सकता है।

युवाओं के प्रेरणास्त्रोत, समाज सुधारक युग पुरुष 'स्वामी विवेकानंद' की जयंती है। इसे राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर मानव संग्रहालय अपने दर्शकों को कुछ छाया चित्रों के माध्यम से जनजातियों के इन युवा गृहों के महत्व एवं वास्तु संरचना से परिचित करा रहा है।

– डॉ. अशोक कुमार शर्मा
प्रभारी अधिकारी, जनसंपर्क, मो.: 09425019303

कला समय

कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

के सदस्य बने

मैं ..... कला समय पत्रिका का ..... एक वर्ष : 150/– रूपये, दो वर्ष : 300/– रूपये, चार वर्ष : 500/– रूपये, आजीवन : 5000/– रूपये का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। पत्रिका का शुल्क रूपये .....

ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर ..... दिनांक ..... संलग्न है।

नाम : .....

पता : .....

.....

पिन : ..... मो.: .....

हस्ताक्षर

सदस्यता सहयोग राशिः

वार्षिक	: 150 /–	(व्यक्तिगत)
	: 175 /–	(संस्थागत)
द्वैवार्षिक	: 300 /–	(व्यक्तिगत)
	: 350 /–	(संस्थागत)
चार वर्ष	: 500 /–	(व्यक्तिगत)
	: 600 /–	(संस्थागत)
आजीवन	: 5,000/–	(व्यक्तिगत)
(केवल 15 वर्षों के लिए)	: 6,000/–	(संस्थागत)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा कला समय के नाम से उक्त पते पर भेजे)

कार्यालय सम्पर्क :

संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग

जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016
फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :

'कला समय' का बैंक खाता विवरण

पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

- कृपया सदस्यता शुल्क 'कला समय' के नाम भेजें।
- सदस्यता शुल्क प्राप्त होने के बाद अगले अंक से पत्रिका भेजना प्रारम्भ की जावेगी।
- सदस्यता शुल्क निम्न पते पर भेजे:- जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.) 462016

-प्रबंध संपादक

संस्था आयोजन

नगरीय जीवन से आगे है जनजातीय समुदाय - सुश्री उषा ठाकुर
आध्यात्मिकता में जीते हैं जनजातीय समुदाय - डॉ. कपिल तिवारी

जनजाति समाज नगरीय समाज से आगे है। जनजाति समाज का आतिथ्य मन को गदगद कर देने वाला होता है। जब जनजाति समाज के यहाँ कोई अतिथि आता है, तब वे अतिथि को अपने कमरे में सुलाकर स्वयं खुले आसमान के नीचे सो जाते हैं। जनजाति समाज अतिसंवेदनशील, अतित्यागी और अनुशासन प्रिय समाज है। जनजाति समाज की धार्मिक परंपरा और देवलोक विषय पर आयोजित यह राष्ट्रीय संगोष्ठी अपने आप में एक अद्भुत आयोजन है।

यह बातें 09 जनवरी दिन शनिवार को भोपाल स्थित जनजातीय संग्रहालय में दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान व आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, संस्कृति विभाग के तत्वावधान में आयोजित जनजातीय धार्मिक परंपरा और देवलोक विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि संस्कृति व पर्यटन मंत्री सुश्री उषा ठाकुर ने कही। इस अवसर पर अकादमी द्वारा प्रकाशित डॉ. धर्मेन्द्र पारे की पुस्तक 'भारिया देवलोक' का लोकार्पण भी हुआ।

इस अवसर पर बीज वक्तव्य देते हुए लोक संस्कृति अध्येता डॉ. कपिल तिवारी ने कहा कि जनजाति समाज ऐसा अनुशासन प्रिय समाज है, जो सब कुछ स्वयं करता है। वह किसी पर निर्भर नहीं रहता। नगरीय समाज अपनी छोटी-छोटी आवश्यकताओं के लिए सरकारों पर निर्भर रहता है, किंतु जनजाति समाज की सरकारों व किसी अन्य से कोई अपेक्षा नहीं होती। जनजातीय समुदाय गहरी आध्यमिकता में जीते हैं। डॉ. तिवारी ने कहा कि जो लोग धर्म में नहीं, धार्मिकता में थे, राज्य में नहीं, एक अनुशासन में थे, उनको हमने पिछड़ा कहा और जो रोज-रोज राज्य के गुलाम हो रहे थे, हर छोटी चीज के लिए राज्य की ओर आशा भरी निगाहों से देखते हैं, वे कथित रूप से विकसित कहलाने लगे।

दुर्भाग्य है कि यूरोप की मैथोडॉलॉजी के भरोसे चला शास्त्र

उन्होंने कहा कि जिस मनोविश्व की रचना से देवता प्रकट होते हैं, उनको समझने के लिए उसी मनोविश्व में प्रवेश करना पड़ता है। वह समाजशास्त्र के भरोसे नहीं जाना जा सकता। दुर्भाग्य है कि सांस्कृतिक विषयों की दिशा में भी भारत का एक अकादमिक समूह यूरोप की दृष्टि से देखता आया है। यूरोप के नेतृत्व में समाजशास्त्र और उसी की मैंथोडॉलॉजी के भरोसे ही शास्त्र चला है।

विदेशियों ने हमारी संस्कृति को पहुँचाया नुकसान - रामचंद्र खराड़ी

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री रामचन्द्र खराड़ी ने कहा कि देश में अभी तक जनजातियों के बारे में वही पढ़ाया जाता था, जो विदेशी लेखक लिखकर गये। हमारी जनजाति संस्कृति को मिशनरियों द्वारा नष्ट करने का प्रयास किया गया, लेकिन जनजाति समाज के लोग अपने मूल और अपनी संस्कृति से नहीं हटे।

जनजातीय समुदाय को भटकाने का हो रहा प्रयास - मनोज श्रीवास्तव

प्रथम अकादमिक सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता अपर मुख्य सचिव मनोज श्रीवास्तव ने उपनिवेशवाद और नव उपनिवेशवाद को समझाते हुए बताया कि किस प्रकार अंग्रेजों ने जनजातियों को हिन्दू धर्म से अलग दिखाने का षडयंत्र किया है, जो पूर्णतया कल्पनाओं पर आधारित है। नव उपनिवेशवाद में वनवासियों को हिन्दू पौराणिक का अंग बताते हुए उन्हें असुर बताया है। वास्तविकता यह है कि जनजातीय लोग जिन देवताओं की पूजा अर्चना करते हैं, वे हिन्दू धर्म में भी मौजूद हैं। हमें यूरोप की साजिश को भी समझने की आवश्यकता है। इसी सत्र में घुमन्तू जनजातियों में देवलोक की संकल्पना पर गिरीश प्रभुणे ने विचार व्यक्त किया। वहीं, अध्यक्षता कर रहे इतिहासकार डॉ. सुरेश मिश्र ने गोंड राजाओं के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। इस सत्र में धीरा शाह ने जनजातीय धार्मिक अनुष्ठान एवं देवलोक और डॉ. मालती सोलंकी ने जनजातीय समाज में इंदल पूजा विषय पर शोधपत्र पढ़ा। द्वितीय सत्र में मानव संग्रहालय भ्रमण कार्यक्रम आयोजित हुआ। यहाँ की वीथियों को देखकर प्रतिभागी मंत्रमुग्ध हो गये अंतिम सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें कोरकू दशहरा नृत्य की प्रस्तुति हुई।

ठेंगड़ी शोध संस्थान के निदेशक डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा ने बताया कि 10 व 11 जनवरी, 2021 को भारतीय आख्यान परंपरा, जनजातीय समुदायों में धार्मिक अंर्तसंबंध, जनजातीय-वैदिक तथा पौराणिक देवलोक, देवलोक सम्बन्धी जनजातीय नृत्य/गीत-संगीत, शिल्प/चित्रांकन/वाद्य इत्यादि कला-रूपों में अभिव्यक्त जनजातीय देवलोक आदि विषयों पर व्याख्यान के अतिरिक्त परिचर्चा सत्र भी संचालित हुए। उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य रूप से संस्कृति विभाग के संचालक अदिति कुमार त्रिपाठी, आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी निदेशक डॉ. धर्मेंद्र पारे, वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामचंद्र खराड़ी, बुधपाल, नेहा तिवारी उपस्थित रहे। ■

वैदिक, पौराणिक और आरण्य जगत सब एक ही है - डॉ. धर्मेन्द्र पारे

दूसरे दिन भी कई शोध पत्र प्रस्तुत हुए। इस अवसर पर विद्वानों ने भारतीय आख्यान परंपरा, पौराणिक लोक और जनजाति आख्यान परंपरा और जनजातीय समुदाय में धार्मिक अंतर्संबंधों पर प्रकाश डाला।

'भारतीय आख्यान परंपरा-पौराणिक, लोक और जनजातीय आख्यान' विषय पर चर्चा करते हुए डॉ. महेन्द्र मिश्र ने कहा कि पुराने समय में जिन लोगों ने अग्नि को स्वीकार नहीं किया उन्हें असुर कहा गया। भारतीय सभ्यता के चार स्तंभ - मूलाचार, लोकाचार, देशाचार, शिष्टाचार हैं। शिष्टाचार सभी में हैं, चारों तत्व आपस में जुड़े हुए हैं। भारत के बाहर शोध करने जायेंगे तो भारतीय विखंडन को पायेंगे। भारतीय जीवन धार्मिक परंपरा है, आध्यात्मिक परंपरा है। प्रकृति पूजा के मानवीकरण को विदेशी लोगों ने विखंडन के रूप में प्रचलित किया है। उन्होंने कहा कि वास्तव में जनजातीय स्वरूप वैदिक स्वरूप है। बैतूल के सांसद दुर्गादास उइके ने कहा कि जनजाति समाज का गौरवशाली इतिहास है। जनजाति समाज में देवी-देवताओं की सार्थकता है, जनजाति समाज प्रकृति पूजक है। हमारे पूर्वजों ने नदियों को माँ माना है। जनजाति समाज शिव-पावर्ती के ही वंशज हैं। शिव आरण्यक निवासी है। उनके वंशज भी वहीं हैं इस कारण से पूजन करने की मान्यता है। इतिहासकारों ने जो इतिहास लिखा है उसमें विषयों की संवेदनशीलता में जाकर अन्तरमन को स्पर्श नहीं कर सके। इतिहास में गलतियाँ हुई हैं। राम ने सबरी के जूठे बैर खाये, हिडिम्बा की शादी भीम से हुई। रामायण में भी जनजाति समाज का गौरव है।

धनेश परस्ते ने कहा कि आदिम जनजाति प्रकृति पूजक है, सभी क्षेत्रों के अलग-अलग

देवी-देवता हैं इन क्षेत्रों के लोग अपनी-अपनी तरह से पूजा करते हैं। जनजातियों के आख्यान उनके दार्शनिक चिंतन होते हैं। जल, जंगल, जमीन जनजातियों के जीवन दर्शन कला का मूल है। आधुनिकता के प्रभाव से धीरे-धीरे जनजातियों की संस्कृतियाँ खत्म हो रही है।

'भारत में जनजातीय धार्मिक अंतर्संबंध' विषय पर चर्चा करते हुये दिल्ली से पधारी लेखिका सुश्री संध्या जैन ने कहा कि जनजाति और हिन्दुओं में कोई फर्क नहीं है, जनजाति को हिन्दू कहो या हिन्दू को जनजाति। जाति व गोत्र के प्रति हीन भावना नहीं होनी चाहिए। ऐसा होने पर जनजाति समाज को खतरा है। जनजातीय, वैदिक तथा पौराणिक देवलोक विषयक डॉ. धर्मेंद्र पारे ने अपने वक्तव्य में कहा कि वैदिक, पौराणिक और आरण्य जगत सब एक ही है जिस प्रकार ऋचाएँ जो वेद की किसी ऋचा में अभिमंत्रित हैं वहीं लोकगीतों के मनुहार में है। देव वही हैं, अनुष्ठान वही हैं, भावभूति, विचार और आकांक्षाएँ समान हैं।

डॉ. श्रीराम परिहार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि लोक और वेद में कोई विभेद नही है जो लोक में है वही शास्त्र में है। दोनों के मूल में प्रकृति के पंचतत्व ही हैं वही विभिन्न रूपों में पूजनीय है।

■

हम किसी जनजाति के व्यक्ति, उनकी संस्कृति को बाहरी आदमी क्या बता सकता है, जितना हमें उनसे सीखने की जरूरत है - डॉ. कपिल तिवारी

11 जनवरी, जनजातीय संग्रहालय में दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान व आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, संस्कृति विभाग के तत्वावधान में आयोजित 'जनजातीय धार्मिक परंपरा और देवलोक' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र के सप्तम् सत्र में शिल्प / चित्रांकन / वाद्य इत्यादि कला-रूपों में अभिव्यक्त जनजातीय देवलोक विषयक डॉ. महेश चंद्र शांडिल्य, भोपाल, डॉ. सुमेर सिंह सोलंकी (राज्यसभा सांसद) तथा पुरातत्वविद डॉ. नारायण व्यास ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये एवं डॉ. व्यास ने स्लाइड शो के माध्यम से विषय विशेष को समझाया।

डॉ. सोलंकी जी ने ढोल और मांदल के धार्मिक व अनुष्ठानिक महत्व को विस्तार से समझाया तथा जनजाति समाज के परंपरागत वाद्य के बारे में भी अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही डॉ. नारायण व्यास ने वनवासी क्षेत्रों में व्याप्त जनजातीय चित्रांकन परंपरा को शैल चित्रों के माध्यम से यह बताया कि हजारों वर्ष पूर्व वनवासियों ने इन इलाकों में हिन्दू देवी-देवताओं, प्रतीक चिह्नों और शुभ चिह्नों का चित्रण किया था। जिससे यह बात सपष्ट है कि भारत में आरण्यक समुदाय भी सनातन ही अंग थे। डॉ. रेखा नागर ने भिलाला समाज के अनुष्ठानों को समझाते हुए अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ. महेश शांडिल्य ने जनजातीय कला रूपों में

अभिव्यक्त देवलोक की अवधारणा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वास्तव में जनजाति समाज ही भारतीय संस्कृति का संरक्षक है। उसने हजारों वर्षों से मिथकों के माध्यम से देवलोक की संकल्पना को अपने भीतर बसा कर रखा है।

समापन सत्र के दूसरे सत्र 'जिज्ञासा समाधान एवं उन्मुक्त चर्चा' विषयक डॉ. कपिल तिवारी एवं डॉ. धर्मेन्द्र पारे ने देशभर के जनजाति अंचलों से पधारे अतिथि, शोधार्थी तथा श्रोताओं के प्रश्नों और जिज्ञासाओं का समाधान किया। डॉ. हेरे कुमरा नागु, भाग्यनगर से पधारे अतिथि वक्ता ने भी अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि जब तक सूरज-चाँद रहेगा तब तक जनजाति धार्मिकता व उनके देवलोक का अस्तित्व रहेगा।

डॉ. कपिल तिवारी ने समापन वक्तव्य में प्रश्नों के समाधान के साथ ही सम्पूर्ण संगोष्ठी को केन्द्र में रखकर अपने विचार साझा किये। उन्होंने कहा **हम कब तक एक-दूसरे की बातों से कुण्ठित होते रहेंगे और शिकायत करते रहेंगें, हमें अपनी शक्ति खुद अर्जित कर अपने पैरों पर खड़ा होना होगा।**

डॉ. तिवारी ने कहा कि किसी एक जनजाति पर पूरे वर्ष की धार्मिक परंपरा, अनुष्ठान और पर्व पर भी काम हो इसकी जरूरत है। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में शोध करने के लिये पूरा जीवन कम है लेकिन साहस के साथ हमें पहला पैर रखने की जरूरत है, हम किसी ना किसी तरह अपनी मंजिल, उद्देश्य तक पहुँच ही जायेंगे'। 'किसी जनजाति समुदाय के व्यक्ति को, उनकी संस्कृति को बाहरी आदमी क्या बता सकता है, जितना हमें उनसे सीखने की जरूरत है।' आवश्यकता है कि हम एकात्मता के सूत्रों को पहचानें और धार्मिकता के समष्टि को देखें, इससे विषयों की समष्टि दिखाई देगी। विदित हो कि जनजातीय परंपरा और देवलोक पर आधारित इस तीन दिवसीय संगोष्ठी में देश के अनेक हिस्सों से जनजातीय अध्येता, सामाजिक कार्यकर्ता और विद्वान सम्मिलित हुए। दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान के निदेशक डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा ने बताया कि राष्ट्रीय संगोष्ठी में लगभग सभी जनजातियों के प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए।

सारांश सत्र का संचालन डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा ने किया। सभी अतिथि, शोधार्थी और सभागार में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार भी फीडबैक के माध्यम से दिये। इस अवसर पर डॉ. मिश्रा ने सभी का सार्थक व सफल संगोष्ठी के लिये अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए आभार व्यक्त किया।

शोध संस्थान के निदेशक डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा ने कार्यक्रम का संचालन किया और अतिथि परिचय कराया। इस अवसर पर सैकड़ों चिंतक, विद्वान, शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

-डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा, निदेशक, 7388868888
(दत्तोपन्त ठेंगड़ी शोध संस्थान, भोपाल, म.प्र.)

सम्मान

राष्ट्रीय कवि प्रदीप अलंकरण समारोह

कुँअर बेचैन और डॉ. शिवओम अम्बर को प्रदीप सम्मान

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा मंचीय कविता के क्षेत्र में श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट अवदान के लिए कवि/कवयित्रियों को सम्मानित करने के उद्देश्य से वार्षिक राष्ट्रीय कवि प्रदीप सम्मान की स्थापना वर्ष 2012 में की गई। इस सम्मान के अंतर्गत 2 लाख रूपये की राशि एवं सम्मान पट्टिका भेंट की जाती है। वर्ष 2019 का यह सम्मान डॉ. कुँअर बेचैन व वर्ष 2020 का यह सम्मान डॉ. हरिओम अम्बर को प्रदान किया गया। उक्त सम्मान संस्कृति, पर्यटन मंत्री सुश्री उषा ठाकुर द्वारा रविन्द्र भवन सभागार, भोपाल में प्रदान किए गए। प्रारंभिक वक्तव्य संस्कृति, पर्यटन, जनसंपर्क प्रमुख सचिव श्री शिवशेखर शुक्ला द्वारा दिया गया। प्रशस्ति वाचन संस्कृति संचालक श्री अदिति कुमार त्रिपाठी द्वारा वाचन किया गया।

संगीत विदुषी मंजु कृष्ण स्मृति में भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट द्वारा संगीत, नृत्य, सम्मान समारोह

परम्परा समारोह 2020 संपन्न

-पं. विजयशंकर मिश्र

शास्त्रीय गायन व नटवरी कथक नृत्य की अनूठी प्रस्तुतियों एवं भव्य सम्मान-समारोह के साथ सम्पन्न हुआ द्वि-दिवसीय परम्परा समारोह 2020

- संगीत-विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण नाम के अनुरूप संगीत व चित्रकला की सच्ची साधिका थीं: पद्मश्री से सम्मानित मोहनस्वरूप भाटिया
- इस आयोजन से नारियों के प्रति असहिष्णु लोगों को लेनी चाहिए प्रेरणा: आचार्य पण्डित अनुपम राय
- पहले दिन पं. समीर भालेराव व पूर्वी भालेराव के गायन और सुश्री श्रिया पोपट के कथक नृत्य ने बाँधा समां
- दूसरे दिन युवा गन्धर्व अनुरत्न राय की प्रस्तुतियों ने किया श्रोताओं को मंत्रमुग्ध
- विदुषी रीता शर्मा राय को मिला संगीत परम्परा रत्न सम्मान
- देश की 11 लब्ध प्रतिष्ठित हस्तियों को मिला मंजुश्री सम्मान

मथुरा। संगीत विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण की एकादश पावन स्मृति में भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट द्वारा संगीतांजलि, मुम्बई एवं राष्ट्रीय संगीतज्ञ परिवार के विशेष सहयोग से आयोजित परम्परा 2020 के प्रथम दिवस का शुभारंभ शंखनाद के मध्य मुख्य अतिथि पद्मश्री से सम्मानित मोहन स्वरूप भाटिया द्वारा संगीत-विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप-प्रज्ज्वलन के साथ हुआ।

मुख्य अतिथि श्री भाटिया ने कहा कि मंजु कृष्ण जी अपने नाम के अनुरूप संगीत और चित्रकला की सच्ची साधिका थीं। उन्होंने जीवनभर नि:स्पृह भाव से संगीत की सेवा कर देश-विदेश के हजारों लोगों तक उसे पहुँचाया। उनकी पावन स्मृति में आयोजित यह आयोजन कोई समारोह न होकर उनके प्रति सच्चा कृतज्ञता अनुष्ठान है।

नृत्य-संगीत समारोह की पहली प्रस्तुति के रूप में सुविख्यात गायक पं. समीर भालेराव एवं उनकी सुयोग्य पुत्री और शिष्या सुश्री पूर्वी भालेराव (झाँसी) ने राग रागेश्री में पहले विलंबित रूपक ताल में निबद्ध 'राखो पत मोरी, दीनन के दुखहारी', फिर तीनताल में 'सजन बिन सूनी' तत्पश्चात एकताल में 'राग संग रागिनी' की प्रस्तुति कर ऑनलाइन जुड़े देशी-विदेशी श्रोताओं और दर्शकों को रससिक्त करते हुए संगीत-विदुषी को श्रद्धांजलि दी। समारोह की

दूसरी प्रस्तुति थी प्रख्यात् नाद और तालयोगी आचार्य पण्डित अनुपम राय की प्रमुख शिष्या सुप्रसिद्ध युवा कथक नृत्यांगना सुश्री श्रिया पोपट (मुम्बई) का नटवरी कथक नृत्य, जिसके अंतर्गत उन्होंने जहाँ लय - बांट और तत्कार आदि का अद्भुत प्रदर्शन किया वहीं अनूठी भाव-भंगिमाओं द्वारा सुधी दर्शकों की भरपूर वाहवाही ली।

समारोह के अध्यक्ष आचार्य पं. अनुपम राय (मुम्बई) ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि मैं संगीत-विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण जी के संगीत वैदुष्य और सहज व्यक्तित्त्व से सदैव प्रभावित रहा। मेरे उनके पारिवारिक सम्बन्ध थे और वह सही मायनों में सच्ची कलाकार थीं। मेरे अनन्य मित्र डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल जी द्वारा उनकी पावन-स्मृति में प्रतिवर्ष आयोजित इस आयोजन से नारियों के प्रति असहिष्णु लोगों को प्रेरणा लेनी चाहिए।

भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष संगीताचार्य डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक' द्वारा सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन एवं अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया गया। संगीत परंपरा समारोह के दूसरे दिन का कार्यक्रम दो चरणों मे सम्पन्न हुआ।

प्रथम चरण में युवा गन्धर्व अनुरत्न राय, मुम्बई के शास्त्रीय गायन की अद्भुत और अनूठी प्रस्तुति हुई। उन्होंने अपने गायन से पूर्व संगीत-विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण को श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहा कि यह कोई समारोह नहीं है। यह तो उनको श्रद्धांजलि स्वरूप मेरी एक छोटी-सी स्वरांजलि है। उन्होंने अपने गायन का प्रारंभ मंजु कृष्ण जी के ही सर्वाधिक प्रिय राग जोग में एक विलंबित ख्याल की अद्भुत प्रस्तुति से किया। तत्पश्चात् अपने पिता व गुरु आचार्य पं. अनुपम राय द्वारा राग अहीरी व तीनताल में निबद्ध द्रुत रचना - 'तुम सन मेरो मन लागा' व इसकी जोड़ी की ही राग चारुकेशी व झपताल में निबद्ध रचना - 'सुन प्यारी सांची कहूँ मान मान' सुनाकर न केवल गुनिजनों को बल्कि उपस्थित सभी रसिकों को रससिक्त कर दिया।

दूसरा चरण सम्मान-समारोह का था। इसके प्रारम्भ में डॉ. राजेन्द्र कृष्ण द्वारा संगीत-विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण का परिचय देते हुए परम्परा समारोह पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने 'संगीत परम्परा रत्न' तथा 'मंजुश्री'

सम्मान से सम्मानित होने वाले सभी महानुभावों का परिचय भी विविध क्षेत्रों में किए गए उनके अनुकरणीय योगदान का उल्लेख करते हुए कराया। इस अवसर पर प्रतिवर्ष एक महिला कलाकार को उल्लेखनीय योगदान के लिए दिए जाने वाले अति प्रतिष्ठित संगीत परम्परा रत्न सम्मान से विदुषी रीता राय (मुम्बई) को नटवरी कथक नृत्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं हेतु नवाजा गया। सम्मान-पत्र का वाचन करते हुए डॉ. राजेन्द्र कृष्ण ने कहा कि-

परम्परा के हित किए / तुमने बहुत प्रयत्न।
इसीलिए हमको लगीं / तुम परम्परा - रत्न।।
तुम पर परम्परा - रत्न / नटवरी मान बढ़ाया।
अनुपम गुरु पा धन्य हुईं / अनुपम यश पाया।।
पाकर तुमको रजक /धन्य हो गई ये धरा।
यूँ ही चलती रहे / परम्परा पे परम्परा।।

इसी प्रकार मंजुश्री सम्मान प्राप्त करने वाली सभी विभूतियों का भी एक कुण्डलिया के माध्यम से स्वागत करते हुए कहा कि-

मंजु आपके काज हैं,और मंजु पहचान।
हमहुँ मंजु मन दे रहे,मंजुश्री सम्मान।।
मंजुश्री सम्मान, मंजु इस आयोजन में।
सदा रहो तुम मंजु, मंजु जन-जन के मन में।।
कहें 'रजक' मन मंजु-मंजु हो रहा आज है।
लख तव कारज मंजु,मंजु मन करत नाज है।।

मंजुश्री सम्मान पाने वाली 11 विभूतियों में 88 वर्षीय विश्वप्रसिद्ध संगीत लेखक, सम्पादक, अनुवादक व फिल्म निर्देशक डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग (हाथरस) सुप्रसिद्ध संगीत चिंतक, लेखक व सम्पादक डॉ. मुकेश गर्ग (नई दिल्ली) संगीत लेखन, प्रशिक्षण व संरक्षण-संवर्द्धन में प्राणपण से जुटे तबला वादक पं. विजय शंकर मिश्र (दिल्ली) शास्त्रीय गायन,तबला व संगीत लेखन के लिए अहर्निश समर्पित पं. देवेंद्र वर्मा 'ब्रजरंग' (फरीदाबाद) पद्मविभूषण से सम्मानित पण्डित किशन महाराज के वरिष्ठ शिष्य सुप्रसिद्ध तबला वादक एवं संगीत-गुरु पं. ललित महन्त (उज्जैन) राष्ट्रपति द्वारा फर्स्ट लेडी अवार्ड से सम्मानित प्रथम महिला सन्तूर वादिका प्रो. डॉ. वर्षा अग्रवाल (उज्जैन) इटली की सुप्रसिद्ध कम्पनी के जनरल मैनेजर व पं. किशन महाराज के ही शिष्य प्रसिद्ध तबला वादक पं. सुसमय मिश्र (दिल्ली) प्लास्टिक सर्जरी के विख्यात् सर्जन और गायन व चित्रकला मर्मज्ञ प्रो. डॉ. कपिल अग्रवाल (मुम्बई) भोपाल न्यू सेंट्रल जेल के चित्रकला शिक्षक सुप्रसिद्ध चित्रकार डॉ. शैलेन्द्र हरि नामदेव (भोपाल) बाल कहानी, लघु कथा, काव्य, नाट्य-लेखन के क्षेत्र में चर्चित डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' (मथुरा) और व्यंग्य, लघुकथा, कहानी व उपन्यास लेखन में दक्ष श्रीमती चेतना भाटी (इंदौर) जैसी हस्तियाँ शामिल थीं।

इस अवसर पर द्विदिवसीय समारोह में गायन व नृत्य की अनूठी प्रस्तुतियाँ देने वाले चारों कलाकारों- पं. समीर भालेराव व सुश्री पूर्वी भालेराव (झांसी) तथा युवा गन्धर्व अनुरत्न राय (मुम्बई) को शास्त्रीय गायन एवं प्रख्यात् युवा नृत्यांगना सुश्री श्रिया पोपट (मुम्बई) को कथक नृत्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु सम्मान-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि पद्मश्री मोहनस्वरूप भाटिया को सांस्कृतिक क्षेत्र एवं समारोह अध्यक्ष आचार्य पण्डित अनुपम राय को संगीत के क्षेत्र में अविस्मरणीय व अनुकरणीय योगदान के लिए सम्मान-पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया।

समारोह के अध्यक्ष आचार्य पण्डित अनुपम राय, मुम्बई ने संगीत-विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण जी का भावपूर्ण स्मरण करते हुए कहा कि संगीत और चित्रकला आदि की साधना के अतिरिक्त संस्कृति व समाज-सेवा के क्षेत्र में भी किए गए उनके अनुकरणीय और अनुसरणीय योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। अंत में ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष संगीताचार्य डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल द्वारा मुख्य अतिथि, अध्यक्ष सहित सभी कलाकारों, सम्मान प्राप्तकर्ताओं और ऑनलाइन जुड़े दर्शकों व श्रोताओं सहित प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडियाकर्मियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

प्रसिद्ध संतूर वादक पं. सतीश व्यास को राष्ट्रीय तानसेन सम्मान 2020

राजा मानसिंह तोमर राष्ट्रीय सम्मान से अलंकृत हुए अभिनव कला परिषद के सचिव पं. सुरेश तांतेड़

ग्वालियर में 26 दिसम्बर विश्व प्रसिद्ध तानसेन समारोह का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर प्रदेश की संस्कृति मंत्री मान. उषा ठाकुर, ऊर्जा मंत्री प्रद्युमन सिंह तोमर, संभागायुक्त ग्वालियर आदि ने मध्यप्रदेश शासन का प्रतिष्ठित राजा मानसिंह तोमर 2020 अलंकरण अभिनव कला परिषद भोपाल के सचिव पं. सुरेश तांतेड़ को शाल, श्रीफल, सम्मान पट्टिका तथा सम्मान निधि एक लाख रूपये का चेक भेंट कर प्रदान किया। कार्यक्रम में प्रख्यात संतूर वादक पं. सतीश व्यास को प्रदेश शासन ने राष्ट्रीय तानसेन सम्मान से सम्मानित किया गया।

ज्ञातव्य है कि अभिनव कला परिषद भोपाल में गत सत्तावन वर्षों से सक्रिय एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्था है जिसने हजारों कलाकारों को मंच और सम्मान देने का काम निष्ठापूर्वक किया। इस संस्था ने संस्कृतिकर्मी और तबला वादक पंडित सुरेश तांतेड़ के सघन परिश्रम से अपना बड़ा स्थान बनाया है। संस्कृति मंत्री ने साहित्य, संगीत, कला और संस्कृति के क्षेत्र परिषद के अवदान की सराहना की। इस अवसर पर पं. सुरेश तांतेड़ ने परिषद को यह सम्मान प्रदान करने हेतु मध्यप्रदेश शासन के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

समवेत

अभिनव शब्द शिल्पी अलंकरण

संस्था अभिनव कला परिषद् द्वारा वरिष्ठ साहित्यकार श्री बलराम गुमास्ता, श्री हरेराम वाजपेयी, श्री प्रेम सक्सेना, श्री श्याम मुंशी, श्री दिनेश मालवीय, श्री दिनेश पाठक, श्रीमती कांता राय को विभूषित किया गया।

मानस भवन भोपाल के सभागार में वरिष्ठ साहित्यकार मंत्री संचालक श्री कैलाश पंत की अध्यक्षता तथा श्री संतोष चौबे कुलाधिपति रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के मुख्य आतिथ्य में 58 वें अभिनव शब्द शिल्पी सम्मान सात वरिष्ठ साहित्यकारों को प्रदान किये गये।

अभिनव कला परिषद की ओर से सभी सम्मानित साहित्यकारों को शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया संस्था द्वारा दो दिवसीय आयोजन में दूसरे दिन सांस्कृतिक प्रस्तुति युवा खोज समारोह 2020 की प्रस्तुति रखी गई जिसमें सांई ऐश्वर्य महाशब्दे, अमित मलिक, सिद्धांत गंदेचा की संगीतमय प्रस्तुति सम्पन्न हुई।

कृति 'एक कम साठ राजूरकर राज' (जीवनी संग्रह) लेखक वामनकर लोकार्पित

27 दिसम्बर 2020 को दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्राहलय के सभागार में संग्रहालय निदेशक राजुरकर राज के जीवन पर आधारित जीवनी संग्रह के लोकार्पण में मुख्य अतिथि वरिष्ठ कथाकार कुलाधिपति टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल, डॉ. शिवशंकर मिश्र 'सरस' (सीधी) के विशिष्ट आतिथ्य में रचनाकार श्री रामराव वामनकर, राजूरकर राज समीक्षक घनश्याम मैथिल अमृत ने अपनी समीक्षात्मक टिप्पणी की वामनकर ने सभी को पुस्तक के बारे में विस्तार से बताया कुलाधिपति संतोष चौबे ने कृति की प्रशंसा की कहा कई कहानी और उपन्यास इस पर तैयार हो सकते हैं। प्रकाशक तथा वामनकर को बधाई दी उन्होंने कहा दुष्यंत संग्रहालय आना मुझे अच्छा लगता है। राजुरकर राज ने अपनी सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। लोकार्पण समारोह में शहर के कई गणमान्य साहित्यकार भी उपस्थित थे। अंत में सभी ने सामूहिक भोज का आनंद लिया।

प्रो. एस.के. मावल का निधन

भोपाल। प्रख्यात फोटोग्राफर प्रो. एस.के. मावल का निधन 93 वर्ष में हुआ। वे प्रेस फोटोग्राफर रहे रज़ा मावल के पिता थे। प्रो. मावल ने प्राच्य निकेतन और पॉलिटेक्निक के अप्लाइड फोटोग्राफी विभाग में लंबे समय तक पढ़ाया। उनके कई शिष्य देश भर में नाम कमा रहे हैं। वे ग्वालियर सिंधिया स्टेट के ऑफिसियल फोटोग्राफर एचके के मावल के पुत्र थे। उन्हें प्रयोगात्मक फोटोग्राफी के लिए जाना जाता है। उनके पास डेढ़ सौ साल पुराने कैमरे भी थे।

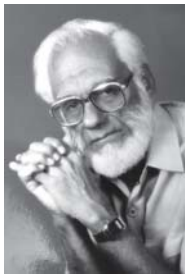

उन्हें इस विधा का पितामह कहा जाता था। प्रो. मावल फोटोग्राफी का चलता फिरता इनसाइक्लोपीडिया माने जाते थे। भोपाल जब राजधानी बना तब तमाम पुरानी इमारतों और बाजारों के उन्होंने यादगार फोटो खींचे थे। उनके फोटो कई सरकारी रिकार्ड और पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। इस विधा के लिए उन्हें कई पुरकार भी मिले। वे अपने पीछे पुत्र रज़ा मावल, अता मावल और शिफा मावल के साथ ही भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

भूरी बाई और डॉ. कपिल तिवारी को पद्मश्री सम्मान

वैसे आज अवसर था भारतीय संस्कृति व वाचिक ज्ञान परम्परा के अतुलनीय नायक डॉ कपिल तिवारी को मिले श्रेष्ठ नागरिक सम्मान 'पद्मश्री' के उत्साह और उत्सव का लेकिन सुयोग ऐसा बना कि दो और विभूतियों का सानिध्य प्राप्त हो गया। कपिल जी के साथ ही इस बार मध्यप्रदेश की झोली में एक और पद्मश्री आया है श्रीमती भूरी बाई के रूप में। वह एक जनजाति समुदाय–भील परिवार से आती हैं जो कभी झाबुआ से चलकर मजदूरी करने भोपाल आयी थीं। आज प्रसिद्ध हो चुके भारत भवन के शिल्पी श्री स्वामीनाथन ने वहीं मजदूरी कर रही भूरी बाई की कला को पहचाना, जगाया और उनको इस दिशा में बढ़ने का अवसर दिया। आज वह देश की सर्वोच्च नागरिक सम्मान से अलंकृत हुई हैं।

तीसरी विभूति पद्मश्री रमेश चंद्र शाह जी से भेंट हुई जो कई वर्ष पूर्व इस सम्मान के हकदार माने गए। वह एक विलक्षण साहित्यकार होने के साथ साथ जीवटता की मिसाल हैं। 82 से अधिक ग्रंथों के रचनाकार हैं। डॉ शाह और कपिल जी पड़ोसी हैं।

अब इस पोस्ट की मूल बात पर आते हैं। आज कपिल तिवारी जी के साथ जिस भूरी बाई को भी पद्मश्री मिला है, उनकी कहानी के कुछ हिस्सों को जानकर न केवल आश्चर्य होगा बल्कि आपको मानवीय रिश्तों की एक खास तासीर देखने को मिलेगी। आज जब मैं कपिल जी के घर पर बधाई देने पहुंचा था तभी स्वयं भूरी बाई भी कपिल जी को बधाई देने पहुंच गईं और वह भी किसी रिपोर्टर की बाइक पर बैठकर। आते ही उन्होंने कपिल जी के पैर छुए। दोनों भाव विभोर हो गए।

दैनिक भास्कर के जिस होनहार रिपोर्टर की बाइक पर वह आई थीं उन्होंने दोनों के एक साथ इंटरव्यू की गुजारिश की और फिर कुछ बातचीत कैमरे के सामने शुरू हो गई।

मैं यह सुनकर और अपनी आंखों से देखकर हैरान था कि भूरी बाई ने बेहिचक यह कहा कि उनकी ज़िंदगी डॉ कपिल तिवारी की देन है। शुरू में आदिवासी लोककला अकादमी में नौकरी देने और फिर उनको स्थाई कराने का पूरा श्रेय तिवारी जी को दिया। साथ ही यह बताया कि एक बार उनको कोई गंभीर बीमारी हो गई थी तब उनके घर वाले चार बार मृतक मान चुके थे लेकिन कपिल तिवारी ने उनका बेहतर इलाज कराया। जिससे उनको दुबारा जीवन मिला और आज वह इस पद्मश्री तक पहुंच सकी हैं।

उधर कपिल जी लगातार यह कहते रहे कि उन्हें इस बात की अधिक खुशी है कि भूरी बाई को सम्मानित किया गया है।

यकीन मानिए आप भी उस समय उपस्थित होते तो अपनी आँखों पर काबू नहीं कर पाते।

मित्रो, आज के दौर में किसी की मदद करने का संकल्प और उस सहायता के प्रति कृतज्ञता का यह भाव लुप्त हो गया है। लेकिन यह सत्य कथा यही बताती है कि संसार अभी रिक्त नहीं हुआ है और शायद कभी नहीं होगा।

यह सब देखकर बरबस ही यह बात कौंध गई कि कुछ लोग हमारे जनजाति समाज को उनकी जड़ों से उखाड़ने में लगे हैं और उनको नक्सली बनाने की फैक्ट्री चला रहे हैं तो कुछ लोग भारत की विराट सांस्कृतिक विरासत को सँजोने में जिंदगी खपाने को भी कम समझते हैं। इन सभी विभूतियों का अभिनंदन।

– डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा की फेसबुक वाल से साभार

■

कला समय संस्था का संस्कृति पर्व -4 में वरिष्ठ छायाकार जगदीश कौशल के दुर्लभ छायाचित्रों की प्रदर्शनी

किसी देश की पहचान होती है उसकी लोक कला, संगीत, साहित्य और उन सबका प्रतिनिधित्व हमें दिखाई देता है चित्रपट (फ़िल्म) में । जिसे हम उस देश की संस्कृति का नाम देते हैं। यह संस्कृति धरोहर होती है भावी पीढ़ी के लिए । ऐसी ही 'समय की धरोहर' से साक्षात्कार हुआ 21 जनवरी को रविन्द्र भवन में। जहाँ 'कला समय संस्कृति, शिक्षा समाज सेवा के क्षेत्र में सक्रिय संस्था कला समय ,संस्था प्रमुख श्री भंवर लाल श्रीवास्तव जी ।

जिसमे अपर संचालक जनसंपर्क के पद से सेवानिवृत्त वरिष्ठ छायाकार श्री जगदीश कौशल जी के द्वारा लिए दुर्लभ चित्र देखने को मिले। एक और बस्तर की लोक कला थी तो दूसरी ओर शास्त्रीय संगीतकारों में उस्ताद अलाउद्दीन खां, पंडित रवि शंकर सितार वादक, बांसुरी वादक रघुनाथ सेठ, पखावज वादक स्वामी पागल दास, वाइलिनवादिका एम राजन तथा शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के छायाचित्र आकर्षित करते हैं। तो दूसरी ओर उनके कैमरे में कैद निराला, महादेवी, पंत, प्रसाद, माखन लाल चतुर्वेदी, गोपालदास नीरज, बालकवि बैरागी, पंडित विद्या निवास मिश्र, नई कविता के प्रणेता दादा भवानी प्रसाद मिश्र और गिरिजाकुमार माथुर की भी मुखाकृतियां देखने को मिली। इसके अतिरिक्त अंध विद्यालय के आचार्य राममूर्ति, हरिशंकर परसाई, शरद जोशी आदि जैसे महान साहित्यकार भी आपके कैमरे की हद में रहे।

वहीं फिल्मिस्तान की महान हस्तियाँ पितृ पुरुष पृथ्वीराज कपूर, से लेकर शबाना आजमी, रंगकर्मी हबीब तनवीर तक उपस्थित थे। भारत के एतिहासिक स्थल ताज महल, कुतुब मीनार, खजुराहो की प्रस्तर कला की विभिन्न झलकियां इसमे शामिल थी। इस चित्र प्रदर्शनी को देखकर कहा जा सकता है कि कौशल जी का छाया कौशल न केवल उनके तकनीकी कौशल को दर्शाता है अपितु इस क्षेत्र में उनके विस्तृत फलक से भी दर्शकों को परिचित कराता है। इसमें हारमोनियम बजाते सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी का छाया चित्र काफी चर्चा में रहा। इसकी चर्चा करते हुए मंचासीन वरिष्ठ साहित्यकार विजय बहादुर सिंह ने कहा यह चित्र अनूठा है,जो निराला जी के नये व्यक्तित्व से रु ब रु कराता है। जिसे उन्होंने सबसे पहले वागर्थ में प्रकाशित किया था।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सूचना आयुक्त श्री विजय मनोहर तिवारी जी ने इस प्रदर्शनी को देश हित में बताते हुए कहा यह अमूल्य धरोहर है इसे संजोकर ही हम आने वाली पीढ़ी को अपने दुर्लभ अतीत से रु ब रु कर सकते हैं। सुप्रसिद्ध अभिनेता एवं नाटककार राजीव वर्मा जी ने कौशल जी के इन छायाचित्रों को अद्भुत एवं संग्रहणीय बताया। वरिष्ठ पत्रकार एवं व्यंग्यकार श्री घनश्याम सक्सेना जी ने कौशल जी के व्यक्तित्व को अनुकरणीय एवं कृतित्व को कर्मयोगी बताया ।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों में सुविख्यात अंतर्राष्ट्रीय शिल्पकार देवीलाल पाटीदार ,राजेंद्र कोठारी, डॉ लता अग्रवाल, श्री महेश अग्रवाल सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इस आयोजन के आयोजक भंवर लाल जी ने सभी मंचासीन अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर उनका सम्मान कर आभार व्यक्त किया।

-डॉ. लता अग्रवाल की फेसबुक वाल से साभार

■

छायाकार–जगदीश कौशल

समय की धरोहर

स्वामी पागल दास

जन्म : 15 अगस्त, 1920 **निधन : 20 जनवरी, 1997**

जिस प्रकार उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ ने शहनाई जैसे लोक वाद्य यंत्र को संगीत की दुनियाँ में शिखर तक पहुँचाया है उसी प्रकार स्वामी पागलदास जी को पखावज जैसे लुप्त प्राय लोक वाद्ययंत्र को संगीत जगत में पुन: प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण योगदान है पद्म भूषण से सम्मानित उस्ताद अलाउद्दीन खाँ ने तो उन्हें अपना मानस पुत्र ही बना लिया था और वह इन्हें 'दूसरा कोदऊसिंह' कहने लगे थे।

अल्प समय की स्कूली शिक्षा के बावजूद अपने स्वाध्याय से लिखी गई 'मृदंग तबला प्रभाकर' (दो भाग) 'गए दिन' 'रसना रसायन' 'राष्ट्रीय व भक्ति परक पद' जैसी पुस्तकों के अलावा संगीत मासिक पत्रिका के मृदंग अंक सहित सैकड़ों शोधपरक लेख प्रकाशित हुए हैं स्वामी पागलदास जी को सुरसिंगारसंसद मुम्बई द्वारा 'तालविलास' उत्तरप्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरुस्कार, अवध विश्व विद्यालय की मानद उपाधि डी.लिट के अलावा दर्जनों प्रतिष्ठित संगीत संस्थानों के सम्मान और उपाधियाँ प्राप्त थी जिनमें मृदंग सम्राट, मृदंग मार्तण्ड, मृदंगमणि, मृदंग केशरी, तबला शास्त्री, पखावज विर्जाड आदि प्रमुख है।

जगदशी कौशल ने वर्ष 1967 में विन्ध्य संगीत समाज रीवा द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संगीत समारोह में स्वामी पागलदास जी द्वारा परवावज वादन करते समय यह फोटो क्लिक किया था।

मुख्यमंत्री किसान कल्याण
योजनान्तर्गत

5 लाख किसानों को 100 करोड़ रुपये का लाभ वितरित

समृद्ध एवं सुरक्षित भविष्य की राह पर मध्यप्रदेश में कृषि और किसान

पिछले 8 माह में 2 करोड़ 10 लाख किसान हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं के तहत 46 हजार करोड़ रुपए से अधिक की राशि अंतरित।

कृषि का विकास आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश की बुनियाद का निर्माण करने जैसा है। कृषि को लाभ का धंधा बनाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार द्वारा हर संभव प्रयास किये जा रहे हैं। कम लागत से ज्यादा उत्पादन, उपज का सही दाम, सिंचाई सुविधाएँ, कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर तथा खेती में आधुनिक तकनीकों का उपयोग सुनिश्चित कर किसानों के जीवन में समृद्धि और खुशहाली लाना हमारा सर्वोच्च संकल्प है।

शिवराज सिंह चौहान

कृषि को उन्नत बनाने के लिए किए गए प्रयास

- कृषि अधोसंरचना विकास फंड में मध्यप्रदेश देश में सबसे आगे। अधोसंरचना विकास के लिए आत्मनिर्भर कृषि मिशन का गठन।
- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि में पात्र किसानों को केंद्र सरकार द्वारा प्रतिवर्ष मिलने वाली 6 हजार रुपए की राशि पर प्रदेश सरकार द्वारा दो किश्तों में प्रतिवर्ष 4 हजार रुपए की अतिरिक्त सहायता। किसानों को अब प्रतिवर्ष 10 हजार रुपए की सहायता।
- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के पात्र किसानों को केंद्र सरकार द्वारा 5348 करोड़ रुपए तथा प्रदेश सरकार द्वारा 3500 करोड़ रुपए की राशि का भुगतान।
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत वर्ष 2018-19 में 18.46 लाख किसानों की 3228 करोड़ एवं वर्ष 2019-20 में 23.59 लाख किसानों की 5418 करोड़ रुपए दावा राशि का भुगतान।
- लॉकडाउन की कठिन स्थितियों के बावजूद उपार्जन के कुल 50 दिनों में लगभग 16 लाख किसानों से 1 करोड़ 29 लाख मीट्रिक टन गेहूं का उपार्जन। मध्यप्रदेश देशभर में सबसे अधिक गेहूं उपार्जन करने वाला राज्य।
- उपार्जन कार्य में प्रदेश के किसानों के खातों में 27 हजार करोड़ रुपए से अधिक की राशि अंतरित।
- शून्य ब्याज दर पर ऋण योजना का वर्ष 2019-20 के लिए क्रियान्वयन। वर्ष 2020-21 में भी दिए जाने का निर्णय।
- उद्यानिकी फसल बीमा के लिए 100 करोड़ रुपए की राशि।
- मंडी नियमों में आवश्यक परिवर्तन। मंडी टैक्स में कमी जैसे महत्वपूर्ण निर्णय। किसानों को उनकी उपज का बेहतर दाम दिलाना सुनिश्चित।
- सहकारी बैंकों की वित्तीय स्थिति को सुधारने के लिए 800 करोड़ रुपए जारी।
- मनरेगा अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण, वाटरशेड प्रबंधन, सिंचाई, वनीकरण, भूमि विकास एवं सुधार, आजीविका गतिविधियों के लिए शेड निर्माण, पशुपालन, मछली पालन जैसे कार्य बड़े पैमाने पर प्रारंभ। 10 लाख 26 हजार से अधिक कार्यों पर 2 हजार 7 सौ 48 करोड़ रुपए से अधिक का व्यय।
- पिछले 8 माह में लगभग 8 हजार करोड़ रुपए से अधिक की 7 सिंचाई परियोजनाओं को स्वीकृति।
- एक जिला एक उत्पाद योजना लागू। एक्सपोर्ट आधारित क्लस्टर बनाकर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मध्यप्रदेश के कृषकों को सशक्त बनाने के प्रयास।
- कृषि को अधिक व्यापक और लाभप्रद बनाने के लिए जैव प्रौद्योगिकी, रिमोट सेन्सिंग, जीआईएस, डाटा एनालिसिस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोबोटिक्स जैसी नई तकनीकों का कृषि में उपयोग। इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी तथा मोबाइल बेस्ड एप्लीकेशंस के साथ किसानों के लिए उपयोगी सूचना तंत्र के विकास को बढ़ावा।

आत्मनिर्भर रोडमैप के तहत

आगामी तीन वर्षों में किए जाने वाले प्रयास

- फसलों की उत्पादकता में वृद्धि तथा विविधीकरण।
- कृषि में जोखिम प्रबंधन हेतु नवीन तथा उन्नत तकनीक के कृषि क्षेत्र में शीघ्र उपयोग को प्रोत्साहित करना।
- कृषि अधोसंरचना का विकास ताकि घरेलू एवं विदेशी उपभोक्ताओं हेतु उत्पादन एवं कुशल वितरण तंत्र को सहयोग मिले।
- प्रमाणित जैविक कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी।
- एक राष्ट्र एक बाजार के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कृषि विपणन कानूनों में सुधार।
- कृषि एवं उद्यानिकी उत्पादनों का मूल्य संवर्द्धन।
- पशुपालन विकास।
- ग्रामों में डेयरी व्यवसाय का विकास।
- अतिरिक्त रोजगार हेतु मत्स्य पालन एवं रेशम पालन विकास।

समृद्ध किसान, समृद्ध मध्यप्रदेश

D-19049

www.vishwarang.com

विश्व रंग 2020

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग

20 से 29 नवम्बर (भारत)

टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव

72 से अधिक महत्वपूर्ण सत्र ऑनलाइन
50 से अधिक देशों से 1,000 से अधिक लेखक एवं रचनाकार
विश्वभर से 1,00,000 से अधिक प्रतिभागी

- टैगोर और उनके साहित्य पर केन्द्रित उत्सव
- युवा चित्रकारों की चित्र प्रदर्शनी
- पुस्तक विमोचन, संवाद और प्रदर्शनी
- साहित्य और सिनेमा
- अंतर्राष्ट्रीय मुशायरा
- विश्व के 50 से अधिक देशों से 1000 से अधिक लेखक एवं रचनाकार
- विश्व कविता सम्मेलन
- विज्ञान कथा कोश (6 खंड) एवं
- विज्ञान कविता कोश का विमोचन
- टैगोर, गांधी और उनकी समकालीनता
- नाट्य समारोह
- भारत के शीर्ष लेखकों से मुलाकात
- हिंदी का विश्व, विश्व में हिंदी
- बाल साहित्य उत्सव
- लघु फिल्म फेस्टिवल
- दास्तानगोई
- प्रवासी भारतीय साहित्य
- संगीत के लोकप्रिय बैंड्स
- विश्वभर से 1,00,000 से अधिक प्रतिभागी

एवं

विश्व के पंद्रह देशों में विश्व रंग उत्सव

6-8 नवंबर 2020

यू.एस.ए, कनाडा, यू.के., नीदरलेंड, रशिया, उज़बेकिस्तान, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, श्री लंका, फिजी, यूक्रेन, कज़ाकिस्तान, स्वीडन, त्रिनिदाद, संयुक्त अरब अमीरात (यू.ए.ई.)

पूर्व रंग

1 अक्टूबर - 8 नवंबर 2020

कथादेश (18 खंड) पर चर्चाएं | युवा कलाकारों की राष्ट्रीय चित्रकला प्रदर्शनी | लघु फिल्म प्रतियोगिता
नुक्कड़ नाटक समारोह | विश्वविद्यालयों में छात्रों के लिये प्रतियोगितायें

आयोजक

Rabindranath TAGORE UNIVERSITY MADHYA PRADESH, BHOPAL AN AISECT GROUP UNIVERSITY

Tagore International Centre for Arts & Culture

संपर्क

सभी सत्रों की विस्तृत जानकारी एवं फेस्टिवल में रजिस्ट्रेशन हेतु हमारी वेबसाइट पर लॉग ऑन करें : www.vishwarang.com
फोन : +91-755-2700480/9826332875/9099006302

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016 से प्रकाशित। संपादक-भँवरलाल श्रीवास